श्रीः ।

श्रीसीतारमणो विजयते ।

बृहद्भजनरत्नमाला

अथवा

भजनावली

यह पुस्तक

सब संप्रदायोंके महात्माओंको परमोपयोगी है.

इसे

अनेक प्राचीन पुस्तकोंके आधारसे

संग्रह करके

हरिप्रसाद भगीरथजीने

मुम्बईके

'जगदीश्वर' छापखानेमें छपवायके

प्रसिद्ध किया.

संवत् १९६६, सन १९१०.

अथ

भजनरत्नमालाकी अनुक्रमणिका.



अनुक्रमणिका.

विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ.

सानोंवारकी गौरी.

(गुरुवारकी गौरी)

(शुक्रवारकी गौरी.)

अनुक्रमणिका.

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

सोमवारकी गौरी ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

हरिप्रसाद भगीरथजी.

ठि० कालबादेवीरोड रामवाडी मुंबई.

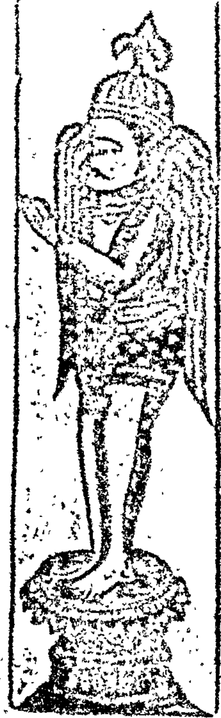
श्री

वृहद्भजनरत्नमालाप्रारंभः ॥



॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥





अथ प्रभाती ॥ राग भैरवी ॥

जागियेब्रजराजकुँवर, नंदकेदुलारे ॥ मथुरामैंजन्मलि
यो, गोकुलासिधारे ॥ जोइजोइहमपतितसुने, सोइ
सोइतुमतारे ॥ १ ॥ यमुनामेंगेंदपरो, ग्वालबालहारे ॥
कालिनागनाथलाये, कृष्णमयेकारे ॥ २ ॥ ग्राहतेगज
राखिलियो, देवताउबारे ॥ धनिधनितुलसीकेस्वामि,
ध्रुवप्रल्हादतारे ॥ ३ ॥ १ ॥

जागियेरघुनाथकुँवर, पंछीबनबोलैं ॥ टेक ॥ शशिकि
रनशीतलभई, चकईपियमिलनगई ॥ त्रिविधमंदचल
तपवन, पल्लव द्रुमडोलैं ॥ १ ॥ प्रातभानुप्रगटभयो, रजनी

कोतिमिरगयो। भृंगकरतगुंजगान, कमलनदलखोलैं ॥ २ ॥ द्रुरिकरिकेअंचलमुखसे, नयननपलकखोलैं॥छग नमगनप्यारेराम, आंगनमेंडोलैं ॥३॥ ब्रह्मादिककरत गान, सुरनरमुनिधरतध्यान॥जागनकीबेरभई,नयन पलकखोलैं ॥ ४ ॥ तुलसिदासअतिअनंद,निरखिकैमु खारविंद॥दीननकोदेतदान, भूषणअनमोलैं ॥५॥ २॥ सीतापतिरामचंद्र, रघुपतिरघुराई ॥ टेक ॥ रस नारसनामलेत,संतनकोदर्शदेत ॥ विहसतमुखमंदम द,सुंदरसुखदाई ॥ १ ॥ ऐनवैनदृगविशाल, दशनबीच चमत्कार ॥ भृकुटीविचअनलपक्ष, नासिकासोहाई ॥ २ ॥ केसरकोतिलकभाल,मानोरविप्रातकाल॥श्रव णकुंडलझलमलात,रतिपतिछबिछाई॥३॥मोतिनकी कंठमाल,तारागणउरविशाल॥मानौगिरिशिखरफो रिसुरसरिचलिआई॥ ४ ॥सुरनरमुनिसकलदेव,शिव विरंचिकरतसेव ॥ कीरतिब्रह्मांडखंड, तीनलोकछा ई॥५॥ संगसखासरजुतीर, विहरतरघुवंशवीर ॥हर [illegible]तुलसिदास, चरणनरजपाई ॥ ६ ॥ ३ ॥ [illegible]रामचंद्र, बाजतपैंजनिया ॥ टेक॥किलक त उठिचलतधाय,परतभूमिलटपटाय,धायमातगोद [illegible]थकीरानिया ॥ १ ॥अंचलरजअंगझार,वि [illegible]रदुलार॥तनमनधनवारिडारि, कहतमृ [illegible] ॥ २ ॥ मोदकमेवारसाल, भावेसोलेहु

लाल ॥ औरलेहुरुचिरपान, कंचनकनछुनिया ॥ ३॥ विद्रुमसेललितअधर, बोलतसुखवचनमधुर ॥ नासा
अग्रअधरबीच, लटकतलटकनिया ॥४॥ सुपसाशशि
कंबुकंठ, ग्रीवेरेखरुचिरचिबुक ॥ कमलवदनबोलैम
धुर, मंदसीहसनिया ॥५॥ भृकुटीत्रिभंगअंग, कछनी
कछेकटिनिषंग॥रेखात्रयउदरबीच, सिंहसीठवनिया
॥६॥अद्भुतछबिअतिअपार,कोकविजोवर्णैपार ॥ क
हिनसकतशेषजाके, सहसहैंरसनिया॥७॥ तुलसिदास
अतिअनंद, निरखिकैमुखारबिंद ॥ रघुवरकीछबिस
मान, रघुवरछबिबनिया ॥ ८ ॥ ४ ॥

रुनुकझुनुकचलतिचाल, जनकनंदिनी ॥ टेक ॥ दामि
निद्युतिचपलगात,चरणधरतडगसगात ॥ मधुरबचन
तोतरी, त्रितापदुःखभंजनी ॥ १॥ शोभतशुभनीलबस
न, मंदहासरुचिरदशन ॥ झलकतउरमालजाल,जगत
देववंदिनी ॥२॥ नूपुरपगबजतगातमानो,सासबेदकर
तगान॥ क्षुद्रघंटिरुचिरनाद,उरअनंदिनी ॥३॥ मंगल
सबकरतगान,शारदाशिवसंगफिरत ॥ देखोअतिराज
ति, मिथिलेशनंदिनी ॥३॥ जगतमातुसखिनसंग,बिह
रतिबहुकरतिरंग ॥ बालानंदछबिनिरखिनिरखि, भव
निकंदिनी ॥ ४ ॥ ५ ॥

जागीश्रीजनककुँवरि, अयोध्यापटरानी ॥ टेक ॥ ज
न्मजन्मरमारूप,अगमनिगमजानी॥सनकादिकधर

तध्यान, परमहंसदानी ॥ १ ॥ कोटिसखीचँवरढुरैं, प्रेमरससानी ॥ निकटसरजूगंगवहै, मुक्तिभरैपानी ॥ ॥ २ ॥ तीनलोकप्रतिपालक, शरणहैतुम्हारी ॥ संतन कोदर्शदेत, असुरनभयज्ञानी ॥ ३ ॥ सुरनरमुनिधरत ध्यान, योगीश्वरज्ञानी॥ दासतुलसिशरणआयो,भाव प्रीतिजानी ॥ ४ ॥ ६ ॥

जगमगायउठेमहल, जागीमातुजानकी ॥ टेक ॥ जानकीकेमहलऊपर, किरनउगेभानुकी ॥ १ ॥ सर्वदेवकरतसेव, चौकीहनुमानकी ॥ कोटिसखीचँवरढुरैं, सेज सीतारामकी ॥ २ ॥ आसपासचंचरीक, लियेपीकदानकी ॥ मानोचमेलीफूलिरही,सुनोरसभानुकी ॥ ३॥ अवधपुरीकीसरसनारी, अपनेअपनेभानकी ॥ सियाजीकोरूपनिहारैं ,कोटिशोभाभानुकी ॥४॥ चित्रकलसुखविलास,शोभाबनीरामकी ॥ प्रातकालकीबिनती, तुलसीदासगुलामकी ॥ ३ ॥७॥

जगमगातकनकमहलमें, जागीमाईजानकी ॥ कौशल्याकेपांयलागु, जीवोजनकरायकी ॥ टेक ॥ आसपाससखीखड़ी, धुनिनूपुरकी ॥ चंपकीकलीमानो, फूलीआसमानकी ॥ १ ॥ सकलदेवकरतसेव, चौकी हनुमानकी॥लक्ष्मणकुँवरचँवरढोरैं,सेजसीतारामकी ॥ २ ॥ प्रातप्रीतमअपनेमहल, रामलक्ष्मणजानकी ॥ साधुसंतकरतसेव, औरवातज्ञानकी ॥३॥ अयोध्या

कीसरमनारी, अपनेअपनेधामकी ॥ सियाजीकोरूप मानो, उगीकिरणभानुकी ॥ ४ ॥ चित्रकूटअतिविलास, अधिकमहिमारामकी ॥ उठतप्रातविनतीकरत तुलसिदाससियारामकी ॥ ५ ॥ ८ ॥

चलोसखीभोरभयोभूपतिकेवारे, नौबतबाजनलागी ॥ ॥टेक॥ करतकुलाहलकनकभवनमें, जनकनंदिनीजागी ॥ १ ॥ मधुरमधुरपंछीवनबोले, कोकशोकभयत्यागी ॥ होतप्रातरविकिरणप्रकाशी, तिमिरनिशासबभागी ॥ २ ॥ सरजूतीरचलेसंजनको, भूसुरगुरुबैरागी ॥ अरुणाशिखाधुनिकरतपरस्पर, प्रेमप्रीतिअनुरागी ॥ ३ ॥ दासीदासचलेचरणनके, प्रेमसहितबैरागी ॥ पहिलेजायकमलसुखनिरखे, कान्हरसोबड़भागी ॥ ४ ॥ ९ ॥

भोरभयोसबहिलिमिलिनारी, कौशल्यापैआई ॥ टेक ॥ हमरोप्रीतमतुम्हरोढोटा, वेगिजगावोमाई ॥ १ ॥ चकवीमिलनचलीचकवासों, हमहूँचहतरघुराई ॥ भानुउदयबिनकमलनफूलें, भ्रमररहेमुरझाई ॥ २ ॥ कनकभवनमेंरत्नसिंहासन, जहँसोवतरघुराई ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, शोभाबरणिनजाई ॥ ३ ॥ इतनावचनसुन्योकान्हरको, हर्षिउठेरघुराई ॥ पटपीतांबरउघारैमुखसे, मधुरमधुरमुसकाई ॥ ४ ॥ ब्रह्मादिकजाकोपारनपावैं, निगमनेतियशगाई ॥ कान्हरलाहुकहांलगिवरणौ, शेषसहसमुखगाई ॥ ५ ॥ १० ॥

आजसखीसपनेमेंदखे, रामलखनसियाजनकल्ली॥ ॥टेक॥ वेदोउठादेसिहपौरपै,मैंअपनेगृहसोंनिकसी॥ रूपदेखिव्याकुलभईसजनी, मानौकालभुजंगडसी॥ ॥ १ ॥ क्याछविवरणौंश्रीरामचंद्रकी,अमृतबूंदघटाउमँगी॥ मानौलक्ष्मणधनुषचढ़ावें,ज्यौंबादलविजुलीचमकी ॥ २ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल,चंदनखौरललाटलसी॥लालकमानबाणकरसोहै,पीताम्बरसोंकमरकसी॥३॥ब्रह्माजाकोपारनपावें,ध्यानधरेंवाकोयतीसती ॥ तुलसिदासगंधर्वगुणगावें, जन्मजन्मकीविपतिनसी ॥ ४ ॥ ११ ॥

श्रीरामानुजअवतारमनोहर,सुंदरसुभगशरीरं ॥टेक॥ अखिललोककेशोकविनाशन,भयेकरुणाकरगंभीरं ॥ ॥१॥खलखंडितरणमंडितपंडित, कररुचिदंडत्रिदंडं॥ तिलकश्रीचूरणशशिमुखझलकै, कुंडलमंडितगंडं ॥ २ ॥ अरुणभँवरधरेचरणभुजायुत,सरससुवरदउदारं॥शांतिदांतिवेदांतकांतिअति,महिमाअमितअपारं ॥ ३ ॥ तिमिरप्रचंडवितंडविखंडन, मंडनद्रविडविकासं॥आदिब्रह्मसहोदरभूधर,यशकरुणावलिभासं ॥४॥ मायावादविवादविशारद, मुक्तिप्रतिपालविनीतं॥सेवकरामनिष्कामस्वस्तिकृत,भक्तिविभूषितगीतं॥५॥ ॥ १२ ॥

मोहनजागोहो,वलगई ॥ टेक ॥ ग्वालवालसबद्वारेठा

है, भैरवनकीमई ॥ १ ॥ पीतपटकरिदूरमुखते, छोड़ दैअलसई ॥ २ ॥ अतिअनंदितहोतयशुमति, देखि द्युतिनितनई ॥ ३ ॥ जागेजंगमजीवपशुखग, औरस बव्रजमई ॥ ४ ॥ सूरकेप्रभुदरशदीजे, अरुणकिरण नाक्षितिछई ॥ ५ ॥ १३ ॥

जागोहोतुम, नन्दकुमार॥टेक॥बलिबलिजाउँमुखार बिंदकी, गोसुतमिलेअसकंसमुआर॥१॥आजकहासो वतात्रिभुवनपति, औरबारतुमउठतसबार ॥२॥बारंबा रजगावतिमाता, कमलनयनभयेत्रिभुवनउजार॥३॥ दधिमथिहौंमाखनतुम्हैंदेहौं, संगसखाठाढ़ेसबद्वार ॥ ॥ ४ ॥ उठिकैमोहनबदनदेखावहु, सूरदासकेप्राण अधार ॥ ५ ॥ १४ ॥

अथझांझकेसंगगानेकीप्रभाती ॥ प्रातसमयरघुवीर जगावै, कौशल्यामहतारी॥टेक॥उठोलालजीभोरभ योहै, सुरनरमुनिहितकारी ॥ १ ॥ इंद्रादिकब्रह्मादिदे वता, सनकादिकऋषिचारी ॥ वाणीबेदबिमलयशगा वैं, रघुकुलयशविस्तारी ॥ २ ॥ बंदीजनगंध्रबगुणगा वैं, नाचैंदैदैतारी ॥ सेनसहितशिवद्वारेठाढ़े, होत कुलाहलभारी ॥ ३ ॥ जागेभरतलखनरिपुसूदन,जा गीजनकदुलारी ॥ अवधपुरीनरनारीजागे, सरजूपंथ निहारी ॥ ४ ॥ भरतशत्रुहनचँवरछत्रलिये, जनकसु तालियेझारी॥मेवापानलियेकरलक्ष्मण, भरकंचनकी

थारी ॥ ५ ॥ मुनिप्रियवचनउठेरघुनंद, नयननपलक उघारी॥चितवनमेंकियेअभयचराचर, मुदितभयेनर नारी ॥६॥ करिअस्नाननदानन्पदीन्हो, गौगजकंच नझारी ॥ रत्नसिंहासनमध्यविराजैं, सुंदरअवधविहा री ॥ ७ ॥ कीटमुकुटकरधनुषविराजैं, कुंडलकीछबि न्यारी ॥ जयजयकारकरतजनमाधव, तनमनधनब लिहारी ॥ ८ ॥ ॥१५ ॥

भोरभयेपक्षीवनबोले, जागीजनककिशोरी ॥ टेक ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता, देतपरस्परजोरी ॥ चोवाचं दनऔरअरगजा, मुखमलबेकोरोरी ॥ १ ॥ बंदीजन गंध्रवगुणगावैं, करिमृदंगटंकोरी ॥ पाँयपीताम्बरखा सामलमल, रत्नजड़ावकीचोली ॥ २॥ रुमकझुमकमह लनविचविहरै, नूपुरशब्दकरोरी॥शब्दसुनतमुनिजन मनमोहे, अस्तुतिनिगमकरोरी॥३॥ बेंदीभालविशाल विराजे, रविशशिद्युतिनिंदोरी ॥ घूंघुरवारेशिरपरसो हैं, मधुकरभूलिरहोरी ॥ ४ ॥ कोउसखीकरअलकसँ वारे, कोउदर्पणलियेदोरी ॥ तुलसिदासछबिदेखिमग नभये, कावरनोंमतिथोरी ॥ ५ ॥ १६ ॥

प्रातसमयउठिजनकनंदिनी, त्रिभुवननाथजगावैं ॥ ॥ टेक ॥ उठोनाथममनाथप्राणपति, भूपतिभवनबु लावैं ॥ १ ॥ हस्तकमलदैचरणपलौटैं, लयलयहृगनल गावैं ॥ सोइपदपरासिनारिगौतमकी, तुरतपरमपदपा

वैं ॥२॥ उरझीमालगलेमोतियनकी, कर अँगुरीसुरझा
वैं ॥ घूंघरवारे अलकवदनपर, पागकीपेंचसँवारैं ॥ ३ ॥
कनककलशसरजूजलझारी, विप्रनदानकरावैं॥कमल
नयनमुखनिरखिरामको, आनँदउरनसमावें ॥ ४ ॥
संतजननकीयहीवीनती, आरतवचनसुनावैं॥कान्हर
दाससियारघुवरकोहरखिनिरखिगुणगावें ॥५॥ १७ ॥
भयोप्रभातकहतकौशल्या, जागोरामपियारे ॥टेक॥
उगेउभानुकमलनदखोले, मधुकरकरतगुँजारे ॥
चरणकमलमुखनिरखिरामके, हर्षतनयनहमारे॥१॥
जननीवचनसुनतउठिबैठे, नयननपलकउघारे ॥गा
वैंगुणमुनिजनगंध्रवमिलि ,द्विजवरनिगमउचारें ॥२॥
शिवसनकादिभेषधरिआवें, दर्शनहेतुतुम्हारे ॥अनुज
सखासबद्वारेठाढे, सोहतन्यारेन्यारे ॥३॥ करिअस्ना
नदानन्टपदीनो, भूषणबसनसवाँरे ॥ तुलसीदासआ
सरघुबरके, लेसंतनउरधारे ॥ ४ ॥ १८ ॥

प्रातसमयकौशल्यारानी, अपनेपुत्रजगावैं ॥ टेक ॥
नीलअंगपरपीतझँगुलिया, हरखिनिरखिपहिरावैं ॥
सुंदरश्यामकमलदललोचन, निरखिपरमसुखपावैं १
नेतिनेतिकहिवेदबखाने,ब्रह्माध्यानलगावैं॥ सोइकरु
णामयरामदयानिधि, दशरथपुत्रकहावैं ॥ २ ॥ क
बहुँपालनाघालिझुलावैं, कबहुँकगोदखेलावैं ॥ कब
हुंपांवनचलनासिखावैं, मातुसबैसुखपावैं ॥ ३ ॥ धन्य

धन्यरानीकौशल्या, दशरथधन्यकहावैं ॥ धन्यअयो ध्यानगरनिवासी, तुलसीदर्शनपावैं ॥४॥ १९ ॥

लक्ष्मणरामकौशल्यामाई, अँगनामेंगोदखेलावैं ॥टेक रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, पलनामाहिझुँलावैं ॥ १ ॥ घरसेपौंरपौंरसेबाहर, पांवनचलनसिखावैं॥हाथलिये वृंदीकेलाड्ड, काकभुशुंडचुगावैं ॥ २ ॥ जरकसपागके सरियाजामा हरषिनिरखिपहिरावैं ॥ क्रीटमुकुटमक राक्तकुंडल,उरवनमालसोहावैं॥ ३ ॥काटिकिंकिनिनू पुरधुनिवाजे,ठुमकचालमनभावैं॥शेषसहसमुखरटत निरंतर, सोऊपारनपावै ॥४॥ शिवसनकादिआदिब्र ह्मादिक, नारदध्यानलगावैं ॥ तुलसिदासधनिधनि कौशल्या, मुखचूंवतलाड़लड़ावैं ॥ ५ ॥

अथ दातून करानेकी प्रभाती ।

दातूनकीजैलाड़िलेरघुनाथदुलारेसरजूकोजलभरला इजनकदुलारी॥ टेक ॥ रत्नजडितचौकीबनी, प्रभुआ पसिधारे॥सुरनरमुनिजनमोहिरहेसब,कौतुकहारे॥ १ करदर्पणलक्ष्मणलिये, विधिपागसवाँरे ॥ तुलसिदास परयहीकृपानितदर्शन तिहारे ॥ २ ॥ २० ॥

अथ श्रीवालभोग ।

॥ वालभोगकीजै, रामजीलला ॥ टेक ॥ तुममेरेप्रा णजीवनधनवारो, नेकनन्यारेहोउलला ॥१॥ बहुमेवा

पक्वानमिठाई, खाझाखुरमाऔरफला ॥ २ ॥ बहुत मुगंधमिलायकेमिसरी, औरहुसरजूगंगजला ॥ ३ ॥ लेवोलक्ष्मणकुँवरलाड़िले, भरतशत्रुहनचपलकला ॥ ॥ ४ ॥ जयअनूपसंतनहितकारी,लीलानटवरअनंत कला ॥ ५ ॥ मातकौसल्याकरतआरती, अग्रदासब लिजाउँलला ॥ ६ ॥ १ ॥

बालभोगकीजेकृष्णलला ॥ टेक ॥ श्रीब्रजपतिपुराण पुरुपोत्तम,नेकनन्यारेहोउलला ॥ १ ॥ मोतीचूरमगद केलाड्डू, माखनमिसिरीऔरफला ॥२॥ दूनोभैयामि लिजेंवनबैठे,गौरश्यामसुखझलकझला ॥ ३ ॥ संगस खापरसादीलीन्हे,अँचवनकीजेयमुनजला ॥४॥राधा कृष्णदासहितकारी,बीरीपावोसुगंधमिला ॥५॥ मातु यशोदाकरतआरती,सूरदासबलिजाउँलला ॥६॥२॥

बाललीलाखेलैंरघुवीर ॥ टेक ॥ भोरहोतउठिभोजन मांगैं,मुखधोवनकोसरजूनीर ॥ १ ॥ रुनुकझुनुकपगनू पुरबाजे,गजगतिचालचलैंरघुवीर ॥२॥ रत्नजडितशु भटोपविराजे, गलेविराजैंमुक्ताहीर ॥ ३ ॥ सुंदरवदन कमलदललोचन, सोहतरघुवरश्यामशरीर ॥ ४ ॥ क्री टमुकुटमकराकृतिकुंडल,गलेविराजेंमुक्ताहीर ॥ ५ ॥ शारंगधनुषबाणकरराजे,पीताम्बरपहिरेपटचीर॥६॥ संगसखासरजूतटविहरे,भरतशत्रुहनलक्ष्मणवीर ।७। सुरनरमुनिसबदर्शनकोआये, दशरथद्वारेहोरहीभीर

॥ ८ ॥ तुलसिदासहरिरूपनिहारे,नितउठगावैंगुणगंभीर ॥ १ ॥ ३ ॥

वालभोगकोजेसियारघुवीर ॥ टेक ॥ अवधपुरीमेंरत्नसिंहासन,वैकुंठधामवहेसरजूनीर ॥ १ ॥ द्राखवदामखोपराकेरा,दूधदहीमेवारसखीर ॥ २ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन,जेंवनबैठचारोंवीर ॥ ३ ॥ कौशल्यावलिजायरामकी, पावतओटकरैंपटचीर ॥ ४ ॥ वैठेरामवामकरसीता, दहिनेविराजैंश्रीलक्ष्मणवीर ॥ ५ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल,गलेविराजैंमुक्ताहीर ॥ ६ ॥ शारंगधनुषवाणकरराजे, पीताम्बरपहिरेपटचीर ॥ ७ ॥ सनमुखपवनपुत्रकरजोरे,अग्रदासझारीभरिनीर ॥ ८ ॥ ४ ॥

वालभोगकोजेकोशलचंद ॥ टेक ॥ व्यंजनसकलसँवारेजननी, पावतदेतसरसरसगंध ॥ १ ॥ कंचनथारसँवारिसुमित्रा, लैआईमधुरेफलकंद ॥ २ ॥ चारौभइयामिलिजेंवनबैठे, दशरथसुतअरुआनँदकंद ॥ ३ ॥ पायअघायचलेखेलनको,रंगमहलमेचारोंबंद ॥ राजकाजगजवाजिसँवारे,सकलसुधारेश्रीरघुनंद ॥ ५ ॥ लाहारामदासभजोपूरण, कौशल्यासुतआनँदकंद ॥ ६ ॥ ५ ॥

वालभोगकीजेगोकुलचंद ॥ टेक ॥ खोवामेवामाखनमिसिरी,पेड़ाकिसमिसिमीठेकंद ॥ १ ॥ दोनोंभैयामिलिजेंवनवैठे,रोहिणिसुतअरुवालमुकुंद २ पायअघायचलेखेलनको, यमुनातटलियेग्वालनसंग ३ ग्वालवालस

चकरतकोलाहल, कंसपछारेश्रीयदुनंद ॥ ४ ॥ रत्नज डितशिरटोपीसोहै, कौस्तुभमणिअरुबाजूबंद ॥ ५ ॥ सूरदासहरिरूपनिहारें, भक्तिदानदीजेगोविंद ॥६॥६॥

बालभोगकीजेश्रीमहाराज ॥ टेक ॥ कनकवेदिकारत्न सिंहासन, तापरबैठेश्रीरघुराज ॥ १ ॥ कंचनथारमेवा दिकभोजन, जानकिलेआईभरिथार ॥ २ ॥ भरतश त्रुहनचँवरछत्रलिये, पानसँवारेलक्ष्मणयुवराज ॥ ३ ॥ रत्नजड़ावकेबनेबिछौना, तापरबैठेराजकुमार ॥ ४ ॥ हनूमानकरझारीलीन्हे, अँचवनकीजेश्रीमहाराज॥५॥ लक्ष्मीनारायणस्वामीसमयपायकै, चरणकमलसेवै तजिलाज ॥ ६ ॥ ७ ॥

बालभोगकीजेबंकटमोर ॥ टेक ॥ दूधनहानोदूधैपानो दूधैकेनानारसभोग ॥ १ ॥ दाखबदामचिरोंजीकेरा, माखनलागेनितउठिभोग ॥ २ ॥ घनरघनरधुनिघंटा बाजे, शंखशब्दव्हैसुंदरघोर ॥ ३ ॥ देशदेशकेसाधूआये दर्शनपावैंनितउठिभोर ॥ ४ ॥ फूलनकेजामाअँगअति राजें, केसररंगसोहैशिरमौर ॥ ५ ॥ जनहाथीरामजीबं कटजीकेशरण, चरणकमलपरचितरहैमोर ॥ ६ ॥ ८ ॥

बालभोगकीजेनंदकिशोर ॥ टेक ॥ भांतिभांतिकेव्यं जनमोहन, केरानारियरमीठेबोर ॥ १ ॥ उतमैयामुख धोवनआई, हलधरकरअरुमाखनचोर ॥ २ ॥ हलधर गिरिधरजेंवनबैठे, ग्वालबालबैठेचहुँओर ॥ ३ ॥ मा

खनखावतमुखलपटावत, केलिकरतश्रीनंदकिशोर ॥ ॥ ४ ॥ रत्नजड़ावकीवनीहैझँगुलिया, मुरलीदेहसोहि अनमोल ॥ ५ ॥ परमानंददासहितकारी, रोहिणिसुतअरुयुगलकिशोर ॥ ६ ॥ ९ ॥

करतकलेवाप्रातहीमिलिचारौभाईहांहां ॥टेक॥ कंचनथारसँवारिकें, मैयालेआई ॥ १ ॥ व्यंजनवनेबहुतभांतिनकेः बहुदधिदूधमिठाई ॥२॥ खेलतखातदुरावहिं, झगरैंचारौभाई ॥ ३ ॥ राजादशरथजीकेपौरमें, कुमकुमाउडाई ॥४॥ रुनुकझुनुकपगजपैंजनी, औकछनीछविछाई ॥ ५ ॥ उरमणिहारविराजै, मोतियनछविछाई ॥ ६ ॥ अवधपुरीकेकुंजभवनमें, विहरैंचारौभाई ॥ ७ ॥ सुंदरमधुरीबोलनिबोलहिं, मोकहँलगतसोहाई ॥ ८ ॥ रामलखनलीलारचे, भक्तनसुखदाई ॥ ९ ॥ अग्रदासश्रीरामचन्द्रको, मानोलेतबुलाई ॥ ॥ १० ॥ १० ॥

कनककटोराप्रातही, दधिघृतमिठाईहांहां ॥ टेक ॥ चौकीरत्नजड़ावकी, वैठेदोउभाईहां ॥ १ ॥ नंदरायजीकीपौरमें, दधिकांकीचमचाईहां ॥ २ ॥ खेलतखातदुरायकै, यशोदाबलिजाईहां ॥ ३ ॥ अरसपरसचुटियागहि, कछुलहुरबड़ाईहां ॥ ४ ॥ महादीठमानैंनहिंझगरैं, दोऊभाईहां ॥ ५ ॥ इतसेआईमैयारोहिणी, यशुदाबलिजाईहां ॥ ६ ॥ गृहगृहकीसबगोपिका, द

संनकोआईहां ॥ ७ ॥ रामकृष्णकीऐसीलीला, सवसं तनसुखदाईहां॥८॥ जगन्नाथचरणीधरमाधव, चारवा रवलिजाईहां ॥९ ॥ ११ ॥ ॥ इतिश्रीवालभोगसंपूर्ण

अथ जगन्नाथजीकी मंगलआरती ।

॥ आरती जगन्नाथस्वामी, मंगलाकरी ॥ टेक ॥ निरखतमुखारविंदपरसतचरणारविंद, आपदाहरी॥ ॥१॥कंचनमणिदीपदान, ज्योतिजगमगी॥गलितधूप अगरवाति,पावकेजरी॥२॥घननघननघंटवाजै, बाजै वेणुवांसुरी॥तालतोमृदंगवाजै,औरनादखंजरी ॥ ३ ॥ इंद्रदमनसिंधुगाजै, रोहिणीयाखड़ी॥मारकंडेसेतुगंगा आनंदकीभरी ॥ ४ ॥ संतनकीभीरभारी,यात्राजुरी॥ वेतनकीमारपरै, कवकीखरी ॥ ५ ॥ सुरनरमुनिद्वारे ठाढ़े,ब्रह्मावेदउच्चरी ॥ धन्यधन्यमाधोदास,आजुकी घरी॥६॥इतिश्रीजगन्नाथजीकीमंगलआरतीसंपूर्ण १

अथ सीतारामकी धुन लिख्यते ।

जयजयवोलोसीतारामकी॥जैवोलौहनुमानकी,भरत लखनरिपुदलनसुजानकी॥रघुपतिराघवराजनराम प तितपावनसीताराम॥जैरघुवरकीश्यामसुन्दरकी,सी तावरकीवलिहारी॥जयरघुनंदनजैसियाराम जानकी वल्लभसीताराम॥जैरघुनंदनअवधविहारी,जोरीसुंदर मंगलकारी ॥ जयरघुनंदलालकी, सवसंतनकेपाल

की ॥ जैरघुनंदनजानकीनाथा, सीतारामसकलकेदा
ता ॥ जैरघुनंदनजनककिशोरी, सीतारामममनोहरजो
री ॥ जैरघुनंदनजनकदुलारी, जोरीसुंदरमंगलकारी॥
श्रीकमलाविमलामिथिलाधाम, अवधसरजूसीतारा
म ॥ रघुनंदनराघवराम सियावररामारघुनंदन, राघ
वरामसियावररामसियावररामा ॥ सीतेराघव ॥राघ
वसीते॥श्रीरामरघुवररामरघुवररामरघुवरपाहिमां ॥
श्रीजानकीवरमधुरमूरतिरामरघुवररक्षमां ॥ २ ॥
इतिप्रातःकालकीधुनसंपूर्ण ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ भयेप्रगटकृपालादीनदयाला, कौशल्या
हितकारी॥हर्षितमहतारीमुनिमनहारी, अद्भुतरूपनि
हारी ॥ लोचनअभिरामातनघनस्यामा, निजआयुध
भुजचारी॥भूषणवनमालानयनविशाला, शोभासिंधु
खरारी ॥ कहदुहुँकरजोरीअस्तुतितोरी, केहिविधिक
रौंअनन्ता ॥ मायागुणज्ञानातीतअमाना, वेदपुराण
भनन्ता ॥ करुणासुखसागरसवगुणआगर, जेहिगाव
हिंश्रुतिसंता ॥सोममहितलागीजनअनुरागी, प्रगटभ
येश्रीकंता ॥ ब्रह्मांडनिकायानिर्मितमाया, रोमरोप्रति
वेदकहै ॥ ममउरसोवासीयहउपहासी, सुनतधीरमति
थिरनरहै॥उपजाजवज्ञानाप्रभुमुसकाना, चरितवहुत
विधिकीन्हचहै।कहिकथासुनाईमातुबुझाईजेहिप्रकार
सुतप्रेमलहै ॥ मातापुनिबोलीसोमतिडोली, तजहुता

तयहरूपा॥ कीजेशिशुलीला अतिप्रियशीला, यहसुख
परमअनूपा ॥ सुनिवचनसुजाना रोदनठाना, हैबाल
कसुरभूपा ॥ यहचरितजोगावहिंहरिपदपावहिं, तेनप
रहिंभवकूपा॥दोहा ॥विप्रधेनुसुरसंतहित, लीन्हमनुज
अवतार॥निजइच्छानिर्मिततनु,मायागुणगोपार १।२

अथराधेश्यामकीधुन ।

जयजयबोलोराधेश्यामकी,जयबोलोयादवनाथकी॥
माधवपुरुषोत्तमकुँवरकल्याणकी॥यदुपतियादवराधे
श्याम,पतितपावनहरिकोनाम॥ जययदुवरकीश्याम
सुंदरकी, राधावरकीबलिहारी॥जययदुनंदनराधेश्या
म,रुक्मिणिवल्लभशोभाधाम ॥जययदुनंदनजयगोपा
ल,संतनकेतुमहोरक्षपाल ।जययदुनंदनलाड़िलिनाथ।
राधेश्यामसकलकेदाता। जययदुवरवृषभानुकिशोरी
राधेश्याममनोहरजोरी॥ जययदुवरवृषभानुदुलारी,
जोरीसुंदरमंगलकारी ॥ श्रीकालिंदीमथुराधाम, वं
सीवटश्रीराधेश्याम ॥ यदुनंदनराधेश्यामराधावर
श्यामराधावरश्यामराधावरश्यामा ॥ राधेकेशव॥के
शवराधे॥ राधे ॥ केशव ॥ श्रीकृष्णकेशवकृष्णकेशव
कृष्णकेशवपाहिमाम् ॥ श्रीराधिकावरमधुरमूरति
कृष्णकेशवपाहिमाम् ॥ १ ॥ ३ ॥

अथछन्दकृष्णजन्मको ।

भयेप्रगटगोपालादीनदयाला,यशुमतिकेहितकारी॥

हर्षितमहतारीरूपनिहारी, मोहनमदनमुरारी॥ कंसासुरजानामनअनुमाना, पूतनावेगिपठाई॥ सोमनमुसुकाईहर्षितधाई, गईजहांयदुराई॥ तेहिंजाइउठाईहृदयलगाई, पयोधरमुखमेंदीन्हो॥तबकृष्णकन्हाईमनमुसुकाई, प्राणतासुहरिलीनो॥ तबइंद्ररिसायेमेघनलाये, वर्षाकरेतेहिमोरी॥ गौवनहितकारीसुरमुनिझारी, नखपरगिरिवरधारी॥कंसासुरमारीअतिहंकारी, वत्सासुरसंहारी॥बक्कासुरआयोबहुतडेरायो, ताकोवदनविनाशी॥ तेहिअतिदिनजानीप्रभुचक्रपाणी, ताहिदीननिजलोका॥ ब्रह्मासुरराईअतिसुखपाई, मगनहुयेगयेशोका॥यहछंदअनूपाहैरसरूपा, जोनरयाकोगावै॥ तेहिसमनहिंकोईत्रिभुवनमोई, मनबांछितफलपावै॥ दोहा॥नंदयशोदातपकरो, मोहीसोंमनलाय॥ देखचाहतबालसुख, रहोंकछुकदिनजाय॥ जिहिनक्षत्रमोहनभये, सोनक्षत्रपरोआइ॥ चारुबधाईरीतिसब, करतयशोदामाइ॥ २॥ इतिछंदसंपूर्ण॥ ३॥ इतिसीतारामछंदराधेश्यामकृष्णकोछंदसंपूर्ण॥

सातोवारकीमंगलआरती।

गुरुवारकीमंगलआरती।

मंगलआरतिसियारघुवरकीरामरघुवरकी, गौरवरणमनश्यामसुंदरकी॥टेक॥मंगलरूपभूपदशरथके, सुर

हितदेहधरीनरहरिकी ॥१॥ मंगलअशनवसनआभूष
ण, मंगलबाणशरासनहरिकी ॥ २ ॥ मंगलधनुषबाण
कर राजे, मंगलशोभाराजकुँवरकी ॥ ३ ॥ मंगलभाल
तिलकशिरसोहै, मंगलखौरबनी चंदनकी ॥ ४ ॥ मंगल
भरतलखनरिपुसूदन, मंगलसियशोभासबघरकी ॥५॥
मंगलगानकरें सुरबनिता, मंगलहर्षिसुमनसुरवर्षे ॥६॥
मंगलथारलियेकौशल्या, आरतिकरनचलीरघुबरकी
॥ ७ ॥ मंगलनीरवहैसरजूको, मंगलबीथीश्रीअवधन
गरकी ॥ ८ ॥ मंगलरूपवसोतुलसीउर, हरहुसकलदु
खदारुणजनकी ॥ ९ ॥ १ ॥

शुक्रवारकीमंगलआरती ।

मंगलआरतीश्रीवेंकटकीश्रीलक्ष्मणकी, शेषाचलपर
आपविराजे ॥ टेक ॥ मंगलशेषाचलअतिराजे, मंगल
श्रीहरिआपुबिराजें ॥१॥ मंगलपाँवननूपुरबाजे, मंगल
पीतापितांम्बरराजे॥२॥मंगलकटिपराकिंकिणिराजे, मं
गलमुक्तामणिछविछाजे ॥३॥ मंगलशंखचक्रकरराजे,
मंगलकीटमुकुटशिरराजे ॥ ४ ॥ मंगलअधरदशनकी
शोभा, मंगलहासदेखशशिलाजे ॥ ५ ॥ मंगलमालगले
मोतियनकी, मंगलश्रवणमेंकुंडलभ्राजे ॥ ६ ॥ मंगल
रूपदेववरशोभित, मंगलसकलजगतछविराजे ॥७॥
रामचरणछविदेखिमगनभये, मंगलशरणागेयप्रतिपा
ले ॥ ८ ॥ १ ॥

शनिवारकीमंगलआरती।

॥मंगलआरतिश्रीनरसिंहकीश्रीनरहरिकी,मंगलमोद उठतारंगा ॥ टेक ॥ मंगलजनप्रल्हादकेकारन,प्रगट भयेश्रीकरुणाकंदा ॥ १ ॥ मंगलझांझऔरकतालैं, मंगलशब्दउठेवहुरंगा॥२॥मंगलढोलमृदंगबजावे,मंगल वँसुरीअरुसुरचंगा ॥ ३ ॥ मंगलआरतिकरमेंलीन्हे, मिलिगावेसारंगा ॥४॥ मंगलभोजनथारसँवारे,मंगलझारीभरिजलगंगा ॥ ५ ॥ मंगलआरतिकरमेंलीन्हे, अर्पणकराहँसच्चिदानंदा ॥ ६ ॥ मंगलकराहिंप्रणामसवैमिलि,दंडवतकराहिंपराहिंजिमिदंदा ॥७॥ मंगलउदयअमंगलनाशे,मंगलप्रभुमिलेपरमानंदा ॥ ८ ॥१॥

रविवारकीमंगलआरती।

॥ मंगलआरतिरामकृष्णकी, राधावरसीतावरकी ॥ ॥टेक॥ मंगलअवधपुरीसरजूजल, मंगलमथुरायमुनाजलकी ॥ १ ॥मंगलकौशल्यादशरथसुत,मंगलयशुदानंदकुँवरकी ॥ २ ॥मंगलक्रीटमुकुटशिरसोहै, मंगल शोभामोरमुकुटकी ॥३॥ मंगलधनुषबाणकरराजे, मंगलमुरलीमुखमोहनकी ॥ ४ ॥ मंगलकेसरभालतिलकछवि, मंगलगोरोचनशिरछविकी ॥ ५ ॥ मंगलसीताबांयेविराजे, मंगलराधाशोभाधरकी ॥ ६ ॥ मंगलचरणअहिल्यातारी, मंगलरुचिररूपकुब्जाकी ॥ ७ ॥

मंगलरावणअसुरसँहारे, मंगलकंसपछारनकरकी ८
मंगलभक्तविभीषणथापे, मंगलछत्रधरेउग्रसेनकी ॥९॥
मंगलरूपवसोयेजोरी, रामदासनिरखैयाछबिकी १०

सोमवारकी मंगलआरती ।

मंगलआरतिराघोजीकीकीजै रामजीकीकीजै, तनमनधनसबअर्पणकीजै ॥टेक॥मंगलआरतिसदासुखसाजै, दशरथकेगृहनौबतबाजै ॥१॥ कीटमुकुटकरधनुषविराजै, जनकसुतालियेआरतिसाजै॥२॥भरतशत्रुहनलक्ष्मणभाई, रामजीकीशोभावरणिनजाई॥३॥सनकसनंदनपारनपावैं,नारदादिमुनिगुणगणगावैं ॥४॥ शेषसहसमुखरटतनिरंतर, शिवचतुराननध्याननआवै ॥५॥ मोहनदासद्वारझुँकिगावै, विमलभक्तिश्री रामजीकीपावै ॥ ६ ॥ १ ॥

॥मंगलआरतिराजकुँवरकीराजकुँवरकी, संकटमोचनशारँगधरकी ॥टेक॥ कनकथारमणिमाणिकमोती, कोटिभानुशशिसमद्युतिजोती ॥१॥मंगलआरतिसजेसुनयना,परमसुधारसबोलीबैना ॥२॥ परमउदारदीनदुखमोचन,करुणासिंधुबड़ेबड़ेलोचन ॥३॥ वामभागमिथिलेशकिशोरी, यहछबिबरणिसकैकाविकोरी ॥ ॥४॥छत्रलियेकरलक्ष्मणसोहै, अंजनीसुतसन्मुखकरजोरै ॥५॥भरतशत्रुहनचँवरढुरावें,नारदादिमुनिगणगुणगावें॥६॥तुलसिदासरघुवरछबिनिरखै, पुलकिगा

तलोचनजलवरखै ॥ ७ ॥ १ ॥

मंगलवारकी मंगलआरती ।

॥मंगलआरतिसजनीसाजे,मंगलमोदआनंजबढ़ावैं॥ ॥टेक॥मंगलपियप्यारीसुखपावैं, मंगलवचनरचनउरलावैं ॥ १ ॥मंगलकेलिबेलिसरसावैं, मंगलकरकपोलपरसावैं ॥२॥ मंगलकोककेलिदरशावैं, मंगलउरलैहृदयलगावैं॥ ३ ॥मंगलमंदमंदमुसकावैं, मंगलअंगअंगलपटावैं ॥४॥ मंगलसदनकपोलनसाजे, मंगलअलकझलकमुखराजे॥५॥मंगलअधरअरुणताभ्राजे, मंगलपानपयोधिपराजे ॥६॥मंगलअँचवनउमँगिकरावैं, मोहनदासजीअतिसुखपावैं ॥ ७ ॥ १ ॥

बुधवारकी मंगलआरती ।

मंगलआरतिनंदकुँवरकी,यशुमतिसुतश्रीराधावरकी ॥ टेक ॥ मंगलजन्मकर्मकुलमंगल,मंगलयशुमतिमाखनचोरकी॥१॥ मंगलमोरमुकुटकुंडलछबि, मंगलमुरलीरवघनघोरकी॥२॥मंगलब्रजवासीसबमंगल, मंगलगानकरैंचहुँओरकी ॥३॥ गलगे ।पीग्वालसबमंगल, मंगलराधानंदकिशोरकी ॥४॥मंगलनंदयशोदामंगल,मंगलसुतहिंखिलावैंगोदकी ॥ ५॥ मंगलगिरिगोवर्धनमंगल, मंगलवृंदावनघनघोरकी ॥६॥ मंगलकुंजवासिसबमंगल,मंगलहैशोभाचहुँओरकी ॥७॥ मंगल

श्यामयमुनजलमंगल, मंगलधारवहैतीक्षणकी ॥ ८॥ मंगलश्रीहलधरसबमंगल, मंगलराधायुगलकिशोर की ॥ ९ ॥ मंगलश्यामसूरतिमनमोहै, चंद्रसखीब- लिजाउँचरणकी ॥ १० ॥

मंगलआरतिकीजैभोर ॥ टेक ॥ मंगलमथुरामंगलगोकुल, मंगलराधेनंदकिशोर ॥ १ ॥ मंगललकुटमुकुट बनमाला, मंगलमुरलीहैघनघोर ॥ २ ॥ मंगलनंद गामबरसानो, मंगलगोवर्धनकीसोर ॥ ३ ॥ मंगलवंशी वटतटयमुना, मंगललताकुंकीचहुँओर ॥ ४ ॥ चंद्रसखी भजुबालकृष्णछवि, मंगलब्रजवासिनकीओर ॥ ५ ॥ २ ॥

॥ इति सातोंवारकीमंगलआरतीसंपूर्ण ॥

अथ गुरुवारके मंगल ।

आजुअवधपुर, भारीभीर ॥ टेक ॥ यकआवतयकजा तबटोहींयकठाढ़ेसरजूकेतीर ॥ १ ॥ यकन्हावतयकचं दनचढ़ावत, यकसुमिरतहैंसियरघुवीर ॥ २ ॥ येकन कोनृपदानदेतहैं, येकनकोपहिरावतचीर ॥ ३ ॥ यक रघुपतिकोरूपनिहारें, यकगावतहैंगुणगंभीर ॥ ४ ॥ यकदोउकरजोरेठाड़े, यकडारतनयननसेनीर ॥ ५ ॥ तुलसिदासकरजोरेठाढ़े, भक्तिदानदीजेरघुवीर ॥ ६ ॥ १

आजुमहामंगलकोशलपुर, रामचंद्रअवतारलियेटेक अवधपुरीमेंरत्नसिंहासन, भूतलभारउतारलिये ॥ १ ॥ आवतहीताडकासंहारी, एकनबाणहरिप्राणलिये ॥ २ ॥

जयजयकारभयोसुरपुरमें, देवनदुंदुभिनादकिये॥३॥ विश्वामित्रकोयज्ञसफलकियो, गौतमनारिउधारिलिये॥४॥सबभूपनकोमानमथनकियो, परशुराममदमारिलिये॥५॥सीताब्याहिअवधहरिआये, घरघरमंगलचारभये ॥६॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, शेषसहसमुखगायरहे ॥७॥ मातुकौशल्याकरतआरती, तुलसिदासगुणगायलिये ॥ ८ ॥ १ ॥

परमधामसाकेतछोंड़िकै, अवधपुरीहरिआयोरी।टेक निर्गुणब्रह्मसगुणवपुधारे, संतनकेहितलायोरी ॥ १ ॥ रामजन्मदशरथगृहलीनो, कौशल्यागुणगायोरी॥२॥ धनिवड़िभाग्यराजादशरथके, जासुपरमसुखपायोरी ॥३॥ घरघरमंगलबजतबधाई, ध्वजपताकछबिछायोरी॥४॥केशरकुमकुमऔरअरगजा, गलियनमाँहिंसिँचायोरी ॥५॥ बाललीलाखेलेंचारौभाई,जननिदेखिसुखपायोरी ॥६॥संगसखासरजूतटबिहरें, चपलतुरंगनचायोरी ॥७॥ रामचरणछबिदेखिमगनभये, बारबारबलिजायोरी ॥ ८ ॥ गोकुलदाससियारघुवरके, चरणकमलचितलायोरी ॥ ९ ॥ ३ ॥

आजमहामंगलकोशलपुर, सुनिनृपकेसुतचारभये ॥ ।टेक। सदनसदनसोहिलोसोहावन, नभअरुनगरनिसानहये॥१॥सजिसजियानअमरकिन्नरमुनि, जानसमयशुभगानठये ॥नाचहिंनभअप्सरामुदितमन,पुनि

मुनिवपेहिंसुमनचये ॥ २ ॥ अतिसुखवेगबोलिगुरुभूसुर, भूपतिभीतरभवनगये।जातकर्मकरिकनकवसनमणि भूपितसुरभिसमूहदये॥३॥दलरोचनफलफूलदूबदधि, युवतिन्हभरिभरिथारलये॥ गावतचलींभीरभइभारी, वंदिनवाकुरविरदवये ॥४॥कनककलशअरुचँवरपता का, ध्वजऔवंदनवारनये ॥ भरहिंअबीरअरगजा छिरकहिं,सकललोकयकरंगरये॥५॥ उमगचल्योआ नंदलोकतिहुँ, देवसवनमंदिररितये॥ तुलसिदासपुनि भरेदेखियत, रामकृपाचितवनचितये ॥ ६ ॥ ४ ॥

आजसखीसुनुअद्भुतलीला, कौशल्यासुतजायोरी ॥ ॥टेक॥सुंदरवदनकमलदललोचन,निरखतनयनजुड़ा योरी॥१॥सबसुखसदनवदनअतिराजे, कोटिकामछ विलाजेरी॥२॥तिमिरनाशकेकारणप्रगटे, रविसुतआ पविराजेरी॥३॥घरघरमंगलवजतवधाई, आनँदउरन समायोरी॥४॥गायकगुणगावेसुरमधुरे, बाजाविविध बजायोरी॥५॥आनँदसिंधुवढ़्योराजाके,बहुविधिकेसु खपायोरी ॥६॥ रामलखनपरकरीनिछावर, दियोजा हिजोभायोरी ॥७॥ रामसुयशगावेंपुरवासी,प्रेममगन लौलायोरी॥८॥गोकुलदासकुँवररघुवरके,चरणकमल अनुरागेरी ॥ ९ ॥ ५ ॥

आजअवधमहाराजसदनसखि, बाजतविविधवधाई री ॥ टेक ॥ कुँवररूपधनिनृपघरप्रगटे, चारिपदार

थआईरी ॥ १ ॥ प्रमुदितफिरतसकलपुरवासी, मन
हुँरंकधनपाईरी ॥ २ ॥ हँसिहँसिमिलतउठेनरनारी,
छाँड़िकोधईपाईरी ॥ ३॥ कहिनजातसुंदरतेहिअवसर,
बहुविधिपुरीसुहाईरी ॥ ४ ॥ आइसांझदिनमांझसुनो
सखि,प्रभुहिमिलनजनुआईरी॥५॥अगरकपूरकोहोम
धूपगृह, अंधकारअधिकाईरी ॥६॥उड़तअबीरगुलाल
महोत्सव, सहजसदनअरुणाईरी ॥ ७ ॥ गृहमणिगण
उडुगणसमसोहैं, कलशइन्दुछबिछाईरी॥८॥मागधबे
दबंदीमधुरधुनि,मनुखगवरसुखदाईरी॥९॥शिशुकोब
दनविलोकिहपिंडर, थकटकरहेलुभाईरी॥१०॥संध्या
समयकरतबंदनमुनि, देहदशाबिसराईरी ॥११॥ चिरं
जीवमहराजकुँवरवर,चरणदासबलिजाईरी॥१२॥६॥
आजुसखीमहराजराजगृह, आनँदबजतबधाईरीटेक
प्रगटभयेरघुनाथलालजी, सुरनरमुनिसुखदाईरी॥१॥
शुभनक्षत्रशुभघरीमहूरत, योगवारसमुदाईरी॥२॥ज
यजयकारभयोतिहुँपुरमें,देवनदुंदुभिबजाईरी॥३॥चो
वाचंदनऔरअरगजा,केशरकीचमचाईरी ॥४॥ दधि
दूर्वारोचनफलफूला,वंदनवारबनाईरी ॥ ५ ॥ नचहिन
वलअप्सरामुदितमन,अबिरगुलालउड़ाईरी ॥६॥ हर्षें
देवसुमनबहुवर्षें,आनँदउरनसमाईरी॥७॥बाललील
रघुनाथलालके,शेषसकतनहिंगाईरी॥८॥तुलसिदास
छबिकहँलगिवरणौं, निगमपारनाहिंपाईरी ॥ ९ ॥७॥

रामजन्मआनंदबधाई॥टेक॥सुरतरुकामधेनुचिंतामणि, अवधपुरीमेंघरघरआई ॥१॥ प्रफुलितरहैंनगरकेवासी, वालरुदनसबभांतिसोहाई ॥२॥ भईभीरन‍चतनरनारी, बाजाबहुतकहैंनहिजाई ॥३॥ सुवरणकलशचौकमोतियनके, द्वारेबंदनवारबनाई ॥४॥ शिशुकोवदननिहारिनारिसब, वारतभूषणलेतबलाई ॥ ५ ॥ धन्यकोखिकौशल्यारानी, धन्यभाग्यहैंकीर्तिबड़ाई ॥ ६ ॥ दशरथरायआयभयेठाढ़े, कनकवसनअरुधेनुमँगाई॥७॥परमपुनीतदेवपदवंदित, दानमानसोंदेतबधाई ॥८॥ मागधसूतभाटवंदीजन, आपनमनकरवांछितपाई ॥ ९ ॥ तुलसिदासआनंदमगनन्रप, खुसीकियेपुरलोगलुगाई ॥ १० ॥ ८ ॥

आजसुदिनशुभघरीसुहाई,कहाकहौंअधिकाईरी टेक ॥ रूपशीलगुणधामरामनृप, भवनप्रगटभएआईरी ॥ अतिपुनीतमधुमासलगनग्रह,बारयोगसमुदाईरी ।१। हर्षवंतचरअचरभूमिसुरतनरुहपुलकजनाईरी ॥ बर्षैं विबुधनिकरकुसुमावलि,नभदुंदुभीबजाईरी ।२।कौशल्यादिमातुमनहर्षत,यहसुखवरणिनजाईरी ॥ सुनिदशरथसुतजन्मलियोहै,गुरुजनविप्रबुलाईरी॥३॥वेदविदितकरिक्रियापरमशुचि,आनँदउरनसमाईरी ॥सदनवेदधुनिकरतमधुरमुनि,बहुविधिबजतबधाईरी ४॥ पुरवासीप्रियनाथहुतेनिज, निजसंपदालुटाईरी ॥ म

णितोरणबहुकेतुपताका, पुरीरुचिरअतिछाईरी ॥ ५ ॥ मागधसूतद्वारबंदीजन, जहँतहँकरतबड़ाईरी ॥ सहज सिंगारकियेबनिताचलि, मंगलविपुलबनाईरी ॥ ६ ॥ गावतदेतअसीससमुदितमन, चिरंजीवसुनिसुखदाईरी ॥ बीथिनकुमकुमकीचअरगजा, अगरअबीरउड़ाईरी ॥ ॥ ७ ॥ नाचहिंपुरनरनारिप्रेमभरि, देहदशाबिसराईरी ॥ अमितधेनुगजतुरगबसनमणि, जातरूपअधिकाईरी ॥ ८ ॥ देतभूपअनुरूपजाहिजोइसकलसिद्धिगृहआईरी ॥ सबैसुमनविकसतरविनिकसत, कुमुदबिपिनबिलखाईरी ॥ ९ ॥ जोसुखसिंधुसुकृतशीकरते, शिवविरंचिप्रभुताईरी ॥ सोसुखअवनिउमंगदशौदिशि, कवनयत्नकहिगाईरी ॥ १० ॥ जोरघुवीरचरणचितदीन्हे, तिनगतिप्रगटदिखाईरी ॥ अविरलअमलअनूपभक्तिदृढ़, तुलसिदासतहँपाईरी ॥ ११ ॥ ९ ॥

नौमीकेदिननौबतबाजे, सुतकौसल्याजायोरी ॥ टेक ॥ सातघरीदिनबीतिगयोहै, सखियनमंगलगायोरी ॥ १ ॥ दशरथकेआनंदभयोहै, रघुवंशीगृहआयोरी ॥ विप्रबोलायशोधनाकीनी, अक्षयभंडारलुटायोरी ॥ २ ॥ कंचनकेबहुकलशभराये, मोतियनचौकपुरायोरी ॥ घरिएकशोचनिगमयोंभाष्यो, रामचंद्रगृहआयोरी ॥ ३ ॥ घरघरतेकुलवधूबोलाये, मंगलगावतआयोरी ॥ राय अँगनमेंडारिदुलीचा, आदरकरिबैठायोरी ॥ ४ ॥ कं

प्योंसिंधुकेंग्रराछाये, लंका अगम जनायोरी ॥ सवलंका मेंशोचमयोहै, राजकुँवर कहुँआयोरी ॥ ५ ॥ दशरथउ ठिभंडारपधारे, सारोसुरँगमँगायोरी ॥ जोजैसोजिन केमनभावै, तिनतैसोपहिरायोरी ॥६॥ खांसाझीनाचीरपितांवर, हर्षितजनपहिरायोरी ॥ कमलानंदकहांल गिवरणौं, तीनलोकयशगायोरी ॥ ७ ॥ १० ॥

अवधनगरचलोदेखोमेरीसजनी राजादशरथजीकेरामजीभये॥१॥टेक ॥ कौनघरीभारतभयेसजनी, कौन घरीराजारामजीभये ॥२॥ वाजततालमृदंगझांझडफ, औनौवतपरचोपभये॥३॥तँबुवनतँबुवननचततायफे, सवरघुवंशीमगनभये॥४ ॥ हरेहरेगोवरअँगनालिपाये, मोतियनचौकपुराये ॥५॥ अपनेअपनेभवनतेनिकसीं, गजमोतियनकेथारलये ॥ ६ ॥ चैतमासनौमीकीपूजा, सूखेसरोवरनीरभरे॥७ ॥ कहतकबीरदयासतगुरुकी, घरघरमंगलचारभये ॥ ८ ॥ ११ ॥

हंसवंशराजादशरथके, देहधरीअविनाशीहो॥टेक॥अंशनसहितकरनसुखसंतन, भंजनभवकीफांसीहो॥१॥ मधुसुमासदिननौमीसौमी, शुक्लपक्षपरकाशीहो ॥ २॥ युगलयामवरपरमपुनर्वसु, प्रगटेविश्वविलासीहो ॥ प्रेममगनमुनिभयोमहामुनि, सवकौशलपुरवासीहो॥ ॥ ४॥ नचतलाजतजिगयेविसारिसुधि, वस्तुअगोचरभासीहो ॥ ५ ॥ ध्वजाअवलिफहरातसुनौवत, मृदुघ

हगतघटासीहो ॥६॥ देतबाजिगजरत्नअमोले, खोले कोसलख्वासीहो ॥ ७ ॥ जोसुखसिंधुनलहतवेदविधि, कंतसमेतउमासीहो ॥८॥ मनसुखनाथअनूपदासके, अमितरूपरसराशीहो ॥ ९ ॥ १२ ॥

अवधनगरवरनृपदशरथगृह, देहदयानिधिधारीहो ॥ निर्गुणनित्यनिरंजनसोहैं, हरणभारभुवभारीहो ॥१॥ अतिपुनीतमधुमासलग्नग्रह, नौमीशुभउजियारीहो॥ ॥ २ ॥ युगलयामवरचढ़तपुनर्वसु, प्रगटेरामखरारी हो ॥ ३ ॥ बिसरेसदनकेकारजनाना, महामग्ननर नारीहो ॥ ४ ॥ भरेसुहागभागकौसल्या, नाचतलाज बिसारीहो ॥ ५ ॥ बाजावजैंपढ़तगुणगावत, पढ़तसु भाटपुकारीहो ॥ ६॥ हयगजरथनलुटावतनृपजू, रत्न जड़ितकीझारीहो ॥ ७ ॥ सुरनरमुनिजाकोपारनपावें, शंभुसमाधिनटारीहो ॥८॥ चिरंजीवहोमनसुस्वामी, जलथलअवधविहारीहो ॥ ९ ॥ १३ ॥

एनृपदशरथकेपुत्रभयोसखि, सुरपुरवजतबधाईरी ॥ टेक॥घरघरमंगलचारअवधपुर, वंदनवारबँधायोरी ॥ १ ॥ चतुरसखीमिलिसाथआदिले, विधिसोंसीकब नाईरी ॥२॥ चंदनचौकरचोअँगनामें , रत्ननभूमिज ड़ाईरी॥ ३ ॥ करतकौतुककोशलपुरवासी, याचकअ मयधरायोरी॥४॥लक्षधेनुनृपवरसंकल्पी, हस्तिसमू

हलुटायोरी ॥ ५ ॥ अग्रदासरघुपतिकेआगम, सबसं तनसुखपायोरी ॥ ६॥ १४ ॥

सुभगसेजशोभितकौसल्या,रुचिररामशिशुगोदलिये ॥ टेक ॥ बारबारविधुवदनविलोकत, लोचनचारुच कोरकिये ॥ १॥ कबहुँपौढ़िपयपानकरावति,कबहुँक राखतिलायहिये॥ २ ॥ बालकेलिगावतिहलरावति, पुलकितप्रेमपियूषपिये ॥३॥ विधिमहेशमुनिसुरहुसरा हत, देखतअंबुदओटदये ॥ ४ ॥ तुलसिदासऐसोसुख दायो, कहुँतोपायोनपियो ॥ ५ ॥ १५ ॥

सुंदररामपालनेझूलैं,कौसल्यागुणगायोरी ॥ टेक ॥ ब लिबलिजाउँमुखारविंदकी, राजिवलोचनभायोरी ॥ ॥१॥दशरथपलनासरसगढ़ायो,सबचंदनकोसाजेरी॥ हीराजड़ितपाटकीडोरी, रेसमबानबनायोरी ॥२॥ रा तेंचरणकमलकरराते,सुभगश्यामतनशोभेरी ॥सबस खियांमिलिमंगलगावैं,दशरथपौरझुलावैरी॥३॥तुलसि दासहरिरूपनिहारै, चरणकमलमनलागोरी॥४॥१६॥ चारोंभाइपलनाझूलैं,जननीहर्षिझुलावैरी ॥ टेक ॥ दे वमुनीजनध्यानधरतहैं, ध्यानहुँआवतनाहींरी ॥ १ ॥ ब्रह्माशिवसनकादिकनारद,निरखिपरमसुखपावैंरी॥ ॥२॥पूरणब्रह्मअखिलअविनाशी, नृपसुतआयकहा वैरी ॥ ३ ॥ भक्तवत्सलभक्तनहितकारी, बहुगुणरूप दिखावैरी ॥ ४ ॥ देखिचरणमनभयोहैकृतारथ,तुलसि

दासमनलावैरो ॥ ५ ॥ १७ ॥ इतिगुरुवारकेमंगल समाप्त ॥

अथ शुक्रवारके मंगल ।

रूपनिहारोआलीरूपनिहारो, सियारघुवरजीकोरूप निहारो ॥ टेक ॥ छोटेभैयालक्ष्मणबड़ेरघुनंदन, सूर्य वंशउजियारो ॥ १ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, दश रथराजदुलारो ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, ग लेबिचमुक्ताहारो ॥ ३ ॥ जरकसिपागकेसरियाजामा, पीतांबरपटवारो ॥ ४ ॥ हाथधनुषकटिभाथासोहै, अ सुरनगंजनहारो ॥ ५ ॥ रत्नसिंहासनरघुवरबैठे, तीन लोकउजियारो ॥ ६ ॥ मातकौसल्याकरतआरती, वारवारवलिहारो ॥ ७ ॥ तुलसिदासहरिरूपनिहारे, जी वनप्राणहमारो ॥ ८ ॥ १ ॥

आजुमहामंगलशेषाचल, घरघरवजतबधाईरी ॥ टेक ॥ जयजयकारभयोसुरपुरमें, देवनदुंदुभिवजाईरी ॥ १ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, केसरकीचमचाईरी ॥ २ ॥ दधिदूर्वारोचनफलफूला, वंदनवारवनाईरी ॥ ३ ॥ क्री टमुकुटमकराकृतकुंडल, उरवनमालसोहाईरी ॥ ४ ॥ कम्बुकंठकौस्तुभमणिराजै, शोभावरणिनजाईरी ॥ ५ ॥ आठपहरफूलनकेजामा, पीतांबरछबिछाईरी ॥ ६ ॥ शेष सहसमुखरटतनिरंतर, वाकोपारनपाईरी ॥ ७ ॥ जन हाथीरामवेंकटकेशरण, चरणकमलचितलाईरी ८ ॥ २

आजमहामंगलकोशपाचल, श्रीवेंकटेशपधारेरी ॥ टेक ॥ मंगलकोशपाचलसुभराजे, मंगलपदहरिधारेरी ॥ १ ॥ मंगलकटिपरकिंकिणिराजे, उरवनमालसुहावेरी ॥ २ ॥ मंगलपांयनन्पुरबाजे, वसनपीतांबरधारेरी ॥ ३ ॥ मंगलशंखचक्रकरराजे, भृगुपदअधिकसुहावेरी ॥ ४ ॥ मंगलमालगलेमोतियनकी, श्रवणकुंडलझलकावेरी ॥ ५ ॥ मंगलअधरदशनसुखसोहैशशिद्युतितिलकलजावेरी ॥ ६ ॥ मंगलकीटमुकुटशिरसोहै, मंदमंदमुसकावेरी ॥ ७ ॥ मंगलतालपखावजबाजे, मंगलसुरपदगावेरी ॥ ८ ॥ रामचरणवेंकटशरणागत, अभयपरमपद पावेरी ॥ ९ ॥ ३ ॥

चलोसखीलक्ष्मणछविनिरखैं, पंचवटीहरिआयोरी ॥ टेक ॥ यकश्यामलयकगौर मनोहर, अरुसियसंगसोहायोरी ॥ १ ॥ जटामुकुटमुनिवेषधरेहैं, उरवनमालसोहायोरी ॥ २ ॥ शूर्पणखाकोरूपहरोहै, खरदूषणसंहारेरी ॥ ३ ॥ सिवरीकोनिजधामपठायो, गीधजटायुकोतारोरी ॥ ४ ॥ एकबाणबालीकोमारो, सुमनमालपहिरायोरी ॥ ५ ॥ सागरसेतुनामसेबांधे, कपिदलपारउतारोरी ॥ ६ ॥ लंकाजारिअसुरसबमारे, राजबिभीषणपायोरी ॥ ७ ॥ लंकाजीतिरामघरआए, गृहगृहबजतबधाईरी ॥ ८ ॥ सीतासहितसिंहासनबैठे, भरतजीचँवरढुरायोरी ॥ ९ ॥ रावणमारिअहिरावणमारो, सखियन

मंगलगायोरी ॥ १० ॥ मातुकौसल्याकरतआरती, तुलसिदासगुणगायोरी ॥ ११ ॥ ४ ॥

चलोसखिशेषाचलचलिये, लक्ष्मणजहांविराजेंरी ॥ ॥टेक ॥वर्षतपुष्पदेवमुनिहर्षे, प्रीतिसदाउरछायोरी॥ ॥१॥ त्रिपतीमेंसीतारामजीविराजैं, लक्ष्मीअधिकसो हायोरी ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपुविराजैं, शोभावर्णिन जायोरी ॥ ३ ॥ जयऔविजयदोउपौरियाबिराजें, पुष्करिणीमनभायोरी॥४॥कीटमुकुटमकराकृतकुंड ल,उरवनमालसोहायोरी ॥ ५ ॥ शंखचक्रगदापद्मबि राजैं, श्यामसुरतिमनभायोरी॥६॥भोगमढ़ीमेंभोगल गतहै,वेदनकीधुनिलायोरी ॥ ७ ॥ रामदासवंकटकेश रणै, चरणकमलचितलायोरी ॥ ८ ॥ ५ ॥

कंकंकंकंकीटमुकुटाशिर,धारिलियोश्रीवंकटजी।टेक ॥ चंचंचंचंचक्रविराजे,शंशंशंखसोहायोरी ॥ १ ॥ गंगं गदाहाथमेंलीन्हो, पंपंपद्मसोहायोरी॥२॥ जंजंजंकर जोरेठाढ़े,झंझंझांझवजायोरी ॥ ३ ॥ घंघंघंघंघंटावाजे, मंमंमोगलगायोरी ॥ ४ ॥ रंरंरंभानृत्यकरतिहैं, इंद्र पुष्पझरिलायोरी ॥५॥ दंदंदंदयातुम्हारी, ब्रह्मावे दसुनायोरी ॥ ६ ॥ मंमंमयामोहसवत्यागे,शंशंशंकर गायोरी ॥ ७ ॥ हंहंहाथीरामजीखेले, संसंसंगतु म्हारेजी ॥ ८ ॥ ६

प्रातसमयमधुवनकेभीतर,मोहनवेणुवजायोरी।टेक।

मोरमुकुटकरमुरलीसोहै, मधुरमधुरधुनिलायोरी ॥१॥ तनंतनंतननंतननंतं, सोवतमदनजगायोरी ॥ २ ॥ वं शीकोटरसुनीव्रजवनितन, करिसिंगारउठिधायोरी ॥३॥ झनंझनंझननंझननंतं, नूपुरशब्दसुनायोरी ॥४॥ हि मत्रुतुविकटजाड़बड़लागे, रसनावचननआवैरी ॥५॥ सनंसनंसननंसननंसं, पवनमाधुरीआवैरी ॥ ६ ॥ सरं सरंसरनंसरनंसं, आरतवचनसुनावैरी ॥ ७ ॥ सूरदास व्याकुलव्रजवनिता, ढूंढतश्यामनपावैंरी ॥ ८ ॥ ७ ॥ भक्तिदानमोहिंदीजिए, बंकटमहराजलक्ष्मणमहरा ज ॥१॥ टेक ॥ सखिक्रीटमुकुटमाथेबन्यो, हीरारत्न जड़ाय ॥ केसरतिलकबिराजही, कुंडलकीछविछाय ॥१॥ सखिकमलनयनमुखचन्द्रमा, अच्छेललितकपोल ॥ चितवनिमेंचितचोरहैं, मधुरेमीठेबोल ॥२॥ सखिरत्न जड़ितगलेगुंजहै, हैंमुक्तावनमाल ॥ बैजंतीमालागले, अ च्छेसदन सिंगार ॥ ३ ॥ सखिबाजूबंदबिराजहीं, अ च्छेबाहुबिशाल ॥ करकंकनपहुँचीबनी, मुद्राजड़ेहैंला ल ॥४॥ सखिभृगुलक्षणउरराजही, नाभिरुचिरगंभीर ॥ नीलकंजमणिराजही, अच्छेगौरशरीर ॥ ५ ॥ सखिक टिकिंकिणिपगपैंजनी, कीधुनिअधिकसोहाय ॥ ठुम कचालगवनीमनो, चित्तलियोहैचोराय ॥६॥ सखिचर णकमलपरगुंजहै, संतनकोमनभृंग ॥ रामदासहृदय धरे, स्वामीपरमानंद ॥ ७ ॥ ८ ॥

ब्रजराजकुमारमहराजकुमार, गोपीनाथबिराजहि ॥ ॥टेक॥सखिमोरमुकुटमाथेवनो,मुखमेंमुरलिबजाय। चितवनमेंचितचोरहै,मोहैब्रजकीनारि।१।सखिकृष्ण बरनघनश्यामहै, अम्बुजऐसेनैन॥ केसरतिलकबिराजही,बिंदुबहुतछबिदैन॥२॥सखीकटिपरपीतलपेटिहै हैकिंकिणिघनघोर॥ करगहिकमलफिरावहीं,मानोहै रविभोर॥ ३ ॥सखीवृंदाविपिनसोहावनो,सरियमुना केतीर॥संगसखालियेविहरत,हरिहलधरदोउबीर।४। सखीगोकुलतेमथुरागये, श्रीपतिश्रीबलबीर॥ नरनारीमोहतफिरें,मनमोधरतनधीर ॥५॥ सखीतबकुब्जा परकृपाकरि,प्रभुअतिदीनदयाल॥ यदुकुलसबपालन कियो,दुष्टनकेहैकाल॥६॥ सखीकृष्णभक्तिजानेनहीं, तौउपजेनहिंज्ञान॥मूरखजन्मगँवावहीं,मूलेहैंभ्रमजाल॥७॥सखीभक्तिशिरोमणिपावनी,राखोयहदृढ़नेम॥ मुखमनसंतसमाजमें,देखोधरिकैध्यान ॥ ८ ॥ सखी अगजगव्यापकब्रह्महै, रसनासोंगुनगाय॥दाससुदर्शलगावही, सोपावैसुखधाम ॥ ९ ॥ ९ ॥

संतसमागमदीजिये, टीकममहाराजदोऊमहराज ॥ ॥ टेक ॥ प्रभुवामनह्वैवलिकोछल्यो, बलिसोंलियोहै दान॥तीनपैरवसुधासकल,करिअतिशयहर्षान॥१॥ प्रभुब्रह्मलोकलगिशीसहै,गयेचरणपाताल॥बलिराजा पैशोकहै,तुमसमनाहींआन॥२॥ प्रभुभक्तवत्सलमहा

राजहै, श्रीआरतिहरनाम ॥ चलिद्वारेठाढ़ेभये, तीनि लोककेप्रान ॥ ३ ॥ प्रभुसंतजननहृदयहिंधरैं, कोइपावै नपार॥श्रुतिशारदसबथकिरहे,प्रभूजगतआधार ॥४॥ प्रभुब्रह्माविष्णुमहेशहैं,नारदकरेंहैंगान ॥ रामदाससु मिरनकरै, सोपावैसुखधाम ॥ ५ ॥ १० ॥

जुरिआयेयादवसबै, भूपतिकेदरबार ॥टेक॥ सखीकृ ष्णद्वारिकादूरिहैं,पातीकोलेजाय॥ मेरीसुधिपहुँचाइ ये,फिरिआवैगोधाय १सखीचहुँदिशिसिंधुविराजही, बेड़ीलगैनपार।कसविधिपारउतारिये,कीजेकौनउपा य ॥ २ ॥ सखीरुक्मिणीजीबिनतीकरैं, सुनियेप्रभुचि तलाय ॥ जैसेजलबिनुमीनहै,तलफतलफमरिजाय॥ ॥ ३ ॥ सखीजैसेगजकीटेरसुनि, सुनतैहीउठिधाय ॥ गरुड़छोड़िपहुँचेतहां,कटिपटचक्रसुधार॥४॥सखीहल धरसंगविराजहीं,रथमैंहैंअसवार।गिरिजापूजनजात ही,लियनिजरथहिंचढ़ाय॥५॥सखीभक्तवत्सलभगवा नहैं, संतनकेरक्षपाल॥श्रीभटकेप्रभुहैदिबसो, श्रीहरि यादवराय ॥ ६ ॥ ११ ॥

छगनमगनश्रीवेंकटजीकी,यहछबिकीबलिहारी॥टेक रुनुकझुनुकपगनूपुरबाजैं,लागतहैमोहिंप्यारी ॥ १ ॥ त्रिपतीमेंसीतारामजीबिराजैं, लक्ष्मणआज्ञाकारी ॥ ॥ २ ॥शेषाचलपरआपविराजैं, हनुमतआज्ञाकारी ॥ ॥ ३ ॥ जयऔविजयदौपौरियाबिराजैं, बजैघंटधु

निभागी ॥ ४ आठपहरफूलनकेजामा, पीतांबरछावि न्यारी ॥ ५ ॥ कीटमुकुटकरधनुपविराजैं कुंडलकीछ विभारी ॥ ६ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजैं, कटिपराकिं किणिधारी ॥ ७ ॥ शिवब्रह्माजाकोपारनपावें, सनका दिकऋपिचारी ॥ ८ ॥ ब्रह्माजाकेकरतरसोई इंद्रभरेजहँ पानी ॥ ९ ॥ भोगमद्धीमेंभोगलगतहै, वेदनकीधुनि भारी ॥ १० ॥ आसपासगिरवरकीशोभा, बीचमेंको इलभारी ॥ ११ ॥ जनहाथीरामवंकटजीकेशरणे, चर णकमलवलिहारी ॥ १२ ॥ १२ ॥

आएरीदोउराजकुँवरवर, सुंदरश्यामलगोरे ॥ टेक ॥ आगेआगेविश्वामित्रमहामुनि, सँगहंसनकेजोरे ॥ १ ॥ कहाकहूंगुणरूपआगरी, लगतादिननकेथोरे ॥ २ ॥ बड़ेबड़ेलोचनहैंअघमोचन, शोभासिंधुहिलोरे ॥ ३ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल, धनुषबाणकरजोरे ॥ ४ ॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकियो, कठिनधनुषकोतोरे ॥ ५ ॥ जयजयकारभयोत्रिभुवनमें, भूपनकेमुखमोरे ॥ ६ ॥ उड़तगुलालललालभयेवादर, रायजनकजीकी पौरे ॥ ७ ॥ अग्रअलीप्रभुकीछविनिरखैं, चितवनमें चितचोरे ॥ ८ ॥ १३ ॥

॥ इतिशुक्रवारकेमंगलसमाप्त ॥

अथ शनिवारके मंगलप्रारंभ ।

अवधपुरीविहरैंरघुवीर ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतश

त्रुहन, संगसखनकीसोहैसीर ॥ १ ॥पीताम्बरकीकछ
नीकाछे, करमेंसोहैसारंगतीर ॥ २ ॥चपलतुरंगचढ़ेर
घुनंदन, चलेजातसरजूकेतीर ॥ ३ ॥भरतशत्रुहनदुहुँ
दिशिराजें, पीछेलक्ष्मणहैंरणधीर ॥ ४ ॥ विहरतफिर
तप्रमोदविपिनमें, केलिकरैंहैंश्रीरघुवीर ॥५॥सरजूदास
परकिरपाकीजे, भक्तिदानदीजेरघुवीर ॥ ६ ॥ १ ॥
आजमहामंगलत्रिभुवनमें, खंभफोरिहरिप्रगटभये ॥
॥ टेक ॥ देवनमुदितनिशानबजाये,सुखउपजेदुखदूरि
गये ॥ १ ॥ असुरमारिप्रल्हादउबारो,संतनकेआनंद
भये ॥ २ ॥ श्रवणसुन्योनयननहिंदेख्यो,अद्भुतरूप
अनूपभये॥ ३ ॥नरहरिरूपधर्योअविनाशी, भक्तहेत
अवतारलये ॥ ४ ॥ ब्रह्मादिकजाकेनिकटनआवें, ल
क्ष्मीलखिकेचकितभये ॥५॥ खंभफोरिहरिनाकुसमा
र्यो, जनप्रल्हादउबारिलिये ॥ ६ ॥ कहतकबीरदया
सतगुरुकी, घरघरमंगलचारकिये ॥ ७ ॥ २ ॥
शुक्लपक्षवैशाखमासमें, चौदशिकोहरिजन्मलियो ॥
टेक॥ खंभफोरिहिरनाकुसमारे,जनप्रल्हादकोअभय
कियो ॥१॥चोवाचंदनऔरअरगजा, बीथिनकीचम
चायरहे॥२॥दधिदूर्वारोचनफलफूला, घरघरबंदनवा
रनये॥३॥सुरनरमुनिसबप्रेमविवशभये, सुखसंपतिस
बछायरहे ॥४ ॥ शेषसहसमुखरटतानिरंतर, वाकोपा
रनपायोरी ॥५ ॥ शिवसनकादिकआदिब्रह्मादिक, नि

गमनेतियशगायरहे ॥ ६ ॥ संतदासनरसिंहचरणपर, वारवारवरमांगिलिये ॥ ७ ॥ ३ ॥

आजसखीहरिजन्मलियोहै, भक्तवत्सलनरसिंहसही ॥ टेक ॥ पाहनतंपरमेश्वरप्रगटे, सारभक्तिप्रल्हादलही ॥ ॥१॥ कामक्रोधममताअरुतृष्णा, इनकोमारिकैदूरदही ॥२॥ हरिकेचरणप्रीतिअतिबाढी, रामनामकीटेकगही ॥३॥ घुरतनिशानदेवसबहपें, पुष्पनछाईसकलमही ॥४॥ संतदासआनंदसंतजन, जयजयजयतिहुँलोकसही ॥ ५ ॥ ४ ॥

आजसखीहरिप्रगटभयेहैं, भक्तहेतुनरसिंहसही ॥ टेक ॥ अद्भुतरूपधरोअविनाशी, कहुँतोदेख्योसुन्योनकही १ ब्रह्माआदिशेषशिवनारद, लक्ष्मीरूपनिहारिरही ॥२॥ संतनकेआनंदभयेहैं, असुरनकेमनशंकभई ॥३॥ संतदासतिहुँलोकआनँदभये, सदाभक्तकीटेकरही ॥४॥५

आजुसखीनरसिंहजन्मलियो, भक्तनकोआनंददियो ॥ टेक ॥ हिरनाकुसप्रल्हादभक्तको, लैकेखंभमेंबांधिदियो ॥१ ॥ रामकहांतेरेमोहिंबतावो, ऐसोकहिकेखड्गलियो ॥२॥ मोमेंतोमेंखड्गखंभमें, सबमेंजोईप्रतीतिकियो ॥३॥ खंभफोरहिरनाकुसमारे, देवनजयजयकारकियो ॥ ४ ॥ लियोगोदप्रल्हादभक्तको, हस्तकमलशिरफेरिदियो ॥ ५ ॥ माधोदासआसनरहरिके सकलविघ्नकोदूरिकियो ॥ ६ ॥ ६ ॥

आजुसखीहरिजन्मलियोहै, भक्तनकेहितकारी॥टेक॥
शुभनक्षत्रशुभघरीमहूरत, योगवारसमुदाईरी॥ १ ॥
खंभफोरिहिरनाकुशमारे, नखसेउदरविदारेरी॥ २ ॥
गहगहगगनदुंदुभीबाजी, आनँदउरनसमाईरी॥ ३ ॥
नचहिंनवलअप्सरामुदितमन, सुरनपुष्पझरिलाईरी।
॥ ४ ॥ चोवाचंदन औरअरगजा, केसरकीचमचाईरी
॥ ५ ॥ संतदासनरसिंहआसरे, बारबारवरमांगोरी ॥
॥ ६ ॥ ७ ॥

श्रीनरसिंहप्रगटभयेजनहित, देववजायोवाजाजू॥टेक
हिरनाकुसप्रल्हादभक्तसों, बूझतकहासहायोजू॥ १ ॥
मोमेंतोमेंखड्गखंभमें, व्यापरहेरघुराजाजू ॥२॥ हरना
कुसकोउदरविदारेउ, असुरडरेसबभागेजू॥ ३ ॥ लप
किलियोकहिंजाननपइहौ, कोइनपरेसुखआगेजू॥४॥
ब्रह्मादिकसबथरथरकांपें, लक्ष्मीप्रभुकोत्यागेजू ॥५॥
जनप्रल्हादगोदमेंबैठें, चाटनचूंबनलागेजू॥ ६ ॥ जय
जयकारभयोत्रिभुवनमें, सिंहासनपरराजेजू॥७॥ कुंज
बिहारीप्रभुयशगावें, सकलअमंगलभागेजू ॥ ८ ॥ ८ ॥
याचकजननरसिंहजन्मसुनि, याचनआयेद्वारघने ॥
॥ टेक ॥ उतसेआवतमहारंकसे, इतसेजावतभूपबने
॥ १ ॥ एकहिआवतएकहिजावत, बिदाहोननहिंचैन
परे ॥ २ ॥ सुरनरमुनिसबप्रेमविवशभये, बोलेहरि
आनंदघने ॥ ३ ॥ जबप्रल्हादबोलमंडारी, द्रव्यलुटाये

सर्वधनं ॥ ४ ॥ माणिकमुक्ताअरुहयहस्ती, संतदास जीकवनागिने ॥ ५ ॥ ९ ॥

श्रीरघुनाथजन्मकीसेवा, वेदविमलयशगायोरी ॥ टेक ॥ पौढेहैंप्रभुक्षीरसागरमें, ब्रह्माआनिजगायोरी ॥ १ ॥ अवनीदुखीदुखीसवदेवा, लोकपालदुखपायोरी ॥ २ ॥ चालोदेवतुमवनचरहोइहौ, हमपीछेचलिआवैंरी ॥ ३ ॥ भूकोभारउतारनकारण, शेषसंगलैआवैंरी ॥ ४ ॥ रावणकुंभकर्णअपराधी, देवनवहुतसतावैंरी ॥ ५ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, उरवनमालसोहावैंरी ॥ ६ ॥ पीताम्वरकीकछनीकाछे, धनुषवाणकरधारेरी ॥ ७ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नारदध्यानलगावैंरी ॥ ८ ॥ शेषसहसमुखरटतनिरंतर, वाकोपारनपायोरी ॥ ९ ॥ द्वापरमेंटिकियोयुगत्रेता, लिखियाफेरिमिटायोरी ॥ १० ॥ माधोदासआसरघुवरके, सूरजवंश कहायोरी ॥ ११ ॥ १० ॥

गोविंदगुनागोपालगुना, गायलेरेगोविंदगुना ॥ टेक ॥ ऐसोसमयवहुरिनहिंपैहो, फिरपछितैहौमेरेमना ॥ १ ॥ जिनतुमकोतनमनधनदीन्हो, नयननासिकामुखरसना ॥ २ ॥ जाकोरचतमासदशलागे, ताहिनसुमिरोएक छिना ॥ ३ ॥ वालापनहँसिखेलगमायो, तरुणभयोतव रूपगना ॥ विरधभयोतवआलसउपजो, उठगईहाटक हनवना ॥ ४ ॥ अधमतरेअधिकारभजनते, जेजेआये

हरिशरना ॥ नामानोतोसाखिवताऊं, अजामीलगणि कासधना ॥ ५ ॥ धनयौवनअँजुरीकोजलजस, घटत जातछिनपलहिपला ॥ असजियजानिभजोरघुनंदन, नामदेवजीआयेहरिशरना ॥ ५ ॥ ११ ॥

॥ इतिशनिवारकेमंगलसमाप्त ॥

अथ रविवारके मंगल ।

अवधपुरीआनँदकोरूप ॥ टेक ॥ ठाढ़ेमुनिजनवेदवखा नें, दशरथरायबड़ेकुलभूप ॥ १ ॥ जाकोनिगमनेतिय गावैं, योगेश्वरसेवेंनिजरूप ॥ २ ॥ सोइखेलैदशरथके अँगना, अंगअंगमेंसुधासरूप ॥ ३ ॥ राजादशरथके चारिपुत्रहैं, तिनमेंरघुवरश्यामसरूप ॥ ४ ॥ रघुवरलक्ष्म णभरतशत्रुहन, जोरीसुंदरमंगलरूप ॥ ५ ॥ क्रीटमुकुट मकराकृतकुंडल, गलेबिराजेमोतिअनूप ॥ ६ ॥ सारँ गधनुषवाणकरराजे, सैलकरनकोनिकसेभूप ॥ ७ ॥ अ वधपुरीमेंरत्नसिंहासनःजहँबैठेदशरथकुलभूप ॥ ८ ॥ घरघरकामधेनुचिंतामणि, कल्पवृक्षअरुनगरअनूप ॥ ९ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नारदध्यानधरें निजरूप ॥ १० ॥ तुलसिदाससेवेंरघुनंदन कनककल शपंचायनधूप ॥ ११ ॥ १ ॥

कौशल्याप्यारेरामको, लियेगोदखेलावेहां ॥ टेक ॥ सुंद ररूपनिहारके, मनमोदवढ़ावैहां ॥ १ ॥ चलनासिखा वैप्यारेरामको, पगनूपुरवाजेहां ॥ २ ॥ कुंडलबनेहैंज

झावके, मणिमाणिकमोतीहां ॥ ३ ॥ शशिमंडलकेमध्यमें, उडुगणकीजोतीहां ॥ ४ ॥ पीतझँगुलियाअधिकवनी, कोटिनछविलाजेहां ॥ ५ ॥ सीससुभगकुलहीवनी, माथेविंदुविराजेहां ॥ ६ ॥ नीलकंजनखकेहरि, करकंकनराजेहां ॥ ७ ॥ बाललीलारघुनाथके, सुरनरमुनिगावेंहां ॥ ८ ॥ तुलसिदासपरयहीकृपानित, दर्शनपावेंहां ॥ ९ ॥ २ ॥

पलनाझुलावेंश्रीरामको, कौसल्यामाईहां ॥ टेक ॥ रत्नजड़ितकेपालना, रेसमडोरीलगाई ॥ १ ॥ जननीहर्षिझुलावें, झूलेरघुराई ॥ २ ॥ रुनुकझुनुकपगपैंजनी, धुनिअधिकसोहाई ॥ ३ ॥ बालसखालेसँगमें, सरजूतटजाई ॥ ४ ॥ कौसल्याश्रीरामको, बोलनकोजाई ॥ ५ ॥ आवतदेखेमातुके, प्रभुचलहिँपराई ॥ ६ ॥ बारबारश्रीरामको, तुलसीवलिजाई ॥ ७ ॥ ३ ॥

बाणधनुहियांकितैधरी, देदेमेरीमाईहांहां ॥ टेक ॥ प्रातहोतहरिखेलनगये, सबसखाबोलाईहांहां ॥ १ ॥ अपनेअँगनामेंखेलियो, सिखिचारोभाईहांहां ॥ २ ॥ खेलरचोवहुभांतिके, सरजूतटजाईहांहां ॥ ३ ॥ बिबिधभांतिवैठकवनी, फुलवारीलगाईहांहां ॥ ४ ॥ भांतिभांतिकेपंछीवोलहिं, मोकहँलगतसोहाईहांहां ॥ ५ ॥ एकबाणमेरोचोरीगयो, सरजूतटमाईहांहां ॥ ६ ॥ नीरानिकटहमनाहिगये, बाबाकीदोहाईहांहां ॥ ७ ॥ वृझोभरत

बोलायकै, लक्ष्मणकैभाईहांहां ॥ ८ ॥ मातुकौशल्या
कैगोदमें, बोलतुतलाईहांहां ॥ ९ ॥ तुलसिदासहरिम
गनभये, शरधनुहीपाईहांहां ॥ १० ॥ ४ ॥

कनकमुरलियाकितेधरी, देदेमेरीमाईहांहां ॥ टेक ॥
भोरहोतहरिखेलनगये, सबसखाबोलाईहांहां ॥ १ ॥
अपनेअँगनामेंखेलियो, मिलिहूनोभाईहांहां ॥ २ ॥खे
लरचेबहुभांतिके, यमुनातटजाईहांहां ॥ ३ ॥ गृहगृह
कीसबगोपिका, दर्शनकोआईहांहां ॥ ४ ॥ इनमेंसुता
वृषभानुकी, मेरीबंसीचोराईहांहां॥५॥दधिमाखनमे-
रोखायके, मोहिंचोरीलगाईहां ॥६॥दधिगोरसऊंचेध
रे,मोहिंपहुँचिनजाईहां ॥ ७ ॥ मातुयशोदाकीगोदमैं,
बोलेंतुतलाईहां ॥ ८ ॥ घुंघुटबदनाछिपाइके, बंसीलै
आईहां ॥ ९ ॥ श्रीभटकेआनंदभये, हरिबंसीपा
ईहां ॥ १० ॥

पूरणब्रह्मसनातनकहिये, सरजूबेदबखानी ॥ टेक ॥ ब्र
ह्मलोकसेधाराआई,उचरतजयजयबानी॥निशिदिन
सरजूबहतदूधकी,मूरखजानतपानी ॥१॥ स्वर्गद्वारपर
सहस्त्रधारा, मुक्तिभरेजहँपानी ॥ निशिदिनसरजूलहर
लेतहै, बोलतमधुरीबानी ॥ २ ॥ रामघाटअस्नानकर
नको, आयेहैंमुनिज्ञानी॥रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन,
हनूमानअगवानी ॥ ३ ॥ सरजूकेतीरअयोध्यानगरी,
जहँबिहरेंरजधानी ॥ तुलसीदासअवधकीमहिमा, श्री
मुखआपुबखानी ॥ ३ ॥ ६ ॥

वेदपुराणविमलयश गावैं, जययमुनामहाराणी ॥टेक॥ गोलोकसेंधाराआई बोलतमधुरीबानी ॥ निशिदिन यमुनावहतदूधकी, सूरखजानैंपानी ॥ १ ॥ कालीदह परसहस्रधारा, मुक्तिभरेजहँपानी ॥ निशिदिनयमु नालहरलेतहै, बोलतजयजयबानी ॥ २ ॥ चीरघाटअ स्नानकरनको, आयेहैंमुनिज्ञानी ॥हलधरगिरिधरमद नमनोहर, विनतासुतअगवानी ॥ ३ ॥ धीरसमीरेयमु नातीरे, जहँविहरेरजधानी ॥ सूरदासयमुनाकीमहि मा, श्रीमुखआपुवखानी ॥ ४ ॥ ७ ॥

जयनारायणब्रह्मपरायण, श्रीपतिकमलाकंतं ॥टेक ॥ नामअनंतकहांलगिवरणौं, शेषनपावतअंतं ॥ शिवस नकादिआदिब्रह्मादिक,नारदध्यानधरंतं ॥ १ ॥ मच्छ कच्छसूकरनरहरिप्रभु,वामनरूपधरंतं॥परशुरामसो इरामचन्द्रभये, लीलाकोटिकरंतं ॥ जन्मलियोवसु देवदेवकी,यशुमतिगोदखेलंतं ॥ पैठपतालकालिया नाथ्यो, फणपरानिरतकरंतं ॥ ३ ॥ बलभद्रहोइअसुर संहारे,कंसकेकेशगहंतं ॥जगन्नाथजगमगचिंतामणि, वैठरहोनिहाचिंतं ॥ ४ ॥ कलियुगहरनकलंकीहोइहै, वेदपुराणभनंतं ॥ दशमस्कंधभागवतगीता,सूरशरण भगवंतं ॥ ५ ॥ ८ ॥

गलिकानंदश्यामसुंदरभजो,पूरणब्रह्मअनंता ॥टेक॥ मुक्तिनाथहरिजन्मलियोहै, अवधपुरीविचरंता॥ १ ॥

चरणोदकजाकोपापहरतरहै, जरामरणभवहंता ॥ २ ॥ धूपदीपनैवेद्यआरती, तुलसीपुष्पचढ़ंता ॥ ३ ॥ छप्पनभोगछतीसोव्यंजन, नितप्रतिभोगलवंता ॥ ४ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, रूपराशिभगवंता ॥ ५ ॥ शेषसहसमुखरटतनिरंतर, सोजाकोपावैंनअंता ॥ ६ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नारदध्यानधरंता ॥ ७ ॥ माधवदासआसचरणनकी, भवसागरउतरंता ॥ ८ ॥ ९ ॥

अवधछोंड़िकहिंअंतनजैहौं, रामनामगुणगैहोंजी ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, नितउठिदर्शनपैहोंजी ॥ १ ॥ शारँगधनुषबाणकरराजे, पीताम्बरपहिरैहोंजी ॥ २ ॥ रत्नसिंहासनआणुविराजे, तुलसीपुष्पचढ़ैहोंजी ॥ ३ ॥ छप्पनभोगछत्तिसोव्यंजन, नितउठिभोगलगैहोंजी ॥ ४ ॥ कीटमुकुटमकराकृतिकुंडल, उरवनमालपहिरैहोंजी ॥ ५ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नारदध्यानलगैहोंजी ॥ ६ ॥ तुलसीदासआशरघुवरके, चरणकमलचितलैहोंजी ॥ ७ ॥ १० ॥

सीतारामअवधपुरबासी, नितउठिदर्शनपैहोंजी ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, शोभावरणिनजावैजी १ ॥ संगसखासरजूतटविहरें, रामलषणदोउभाईजी ॥ ५ ॥ सुंदरवदनकमलदललोचन, उरवनमलसोहावैजी ॥ २ ॥ अवधपुरीनरनारिनिहारें, निरखिपरमसुखपा

वेंजी ॥ ४ ॥ मातुकौशल्याकरतआरती, अग्रदासब
लिजावेंजी ॥ ५ ॥ ११ ॥

खेलतहैंअँगनामेंरघुवर, जननीलेतवलैयारी ॥ टेक ॥
चलिअवतारदेवमुनिवंदित, राजिवलोचनभावेरी ॥ १ ॥
किरीटमुकुटमकराकृतिकुंडल, उरवनमालसोहावेरी ॥ २
शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, इंद्रपुष्पझरिलायेरी ॥ ३ ॥
सुंदरवदनकमलदललोचन, मुनिमनलेतचोरायेरी ॥ ४ ॥
तुलसिदासहरिरूपनिहारे, चरणकमलचितलायेरी ॥
॥ ५ ॥ १२ ॥ इतिरविवारकेमंगलसमाप्त ॥

अथ सोमवारकेमंगल ।

आजुजनकपुर, मंगलभाई ॥ टेक ॥ दधिदूर्वारोचनफ
लफूला, जहँतहँवंदनवारबनाई ॥ १ ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादि
देवता, आनँदउरनसमाई ॥ २ ॥ जहँतहँबाजाबाज
नलागे, गावहिंनौतमनारिबनाई ॥ ३ ॥ नचहिंनवल
अप्सरामुदितमन, पुनिपुनिबर्षहिंसुमनसोहाई ॥ ४ ॥
करिअस्नानदाननृपदीन्हो, गोगजवाजिभूमिसमुदाई
॥ ५ ॥ जोइजोइभावेसोइसोइदीनो, बिदाकियेबहुभां
तिबनाई ॥ ६ ॥ जनकनंदिनीवदनबिलोके, तुलसिदा
सबलिजाई ॥ ७ ॥ १ ॥

आजुजनकपुर, मोहिनीडारी ॥ टेक ॥ सुंदरश्यामराम
रघुनंदन, मोहिलियेपुरनरनारी ॥ १ ॥ देशदेशके
भूपतिआये, उठैनधनुषमहाअतिभारी ॥ २ ॥ गुरु

आज्ञालैउठेरामजी, तोऱ्योधनुरघुनाथखरारी॥ ३ ॥ आईहैसीतासंगसहेली, जयमालासियपियउरमेली ॥ ॥ ४ ॥ तुलसिदासदुल्हरघुनंदन, दुलहिनिजनककुमारी ॥ ५ ॥ २ ॥

रंगमहलसियजनकदुलारी ॥टेक॥प्रगटभईमिथिलापुरमाहीं, अद्भुतरूपधरेमहरानी॥१॥भँवरकेशशिरसोहैंसुंदर, सुरँगचूनरीप्रेमापियारी ॥ २ ॥ रुनुकझुनुकपगनूपुरवाजैं, मोहिलियेसुरपुरनरनारी ॥ ३ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, वर्णतशेषशारदाहारी ॥ ॥४॥ तुलसिदाससेवेरघुनंदन, दशरथसुतअरुजनकदुलारी ॥ ५ ॥ ३ ॥

दोउराजकुमारमहाराजकुमार, मुनिसँगमिथिलाआयेहैं॥टेक॥सखिकरीटमुकुटमाथेबन्यो, घूंघुरवालेकेश॥ वैजंतीमालागले, अच्छेसुंदरवेश॥१॥सखिभालतिलकमाथेबन्यो, भौंहैंचढ़ीहैंकमान॥सुरनरमुनिसबमोहिगये, अच्छेसरसनिधान॥२॥सखिअग्रकोरनासाबनी, मुखचंद्रमासमानु ॥ जगमगज्योतिबिराजही, मानोकोटिकभानु ॥३॥ सखिकरकोदंडबिराजही, कटिमेंभाथातीर॥मनहरिलियोमाइमाधुरी, मूरतिमोहेरघुवीर॥ ॥४॥ सखिअनब्याहीहुलसोफिरैं, ब्याहीलेतउसास गौनेकीमौनेरहीं, लागीरघुवरआस॥५॥सखिवचनसबनऐसोकह्यो, गुरुजनपुरजनलोग। नाहकवैदबुलाइये,

जावैनहिंतनरोग ॥ ६ ॥ सखिशिवधनुकठिनकठोरहै, होउनागरपान॥ भरीसभामेंमारिहैं, सबभूपनकोमान ॥ ७ ॥ सखिनयननमेंवसबोकरो, मेरेदिनअरुरात॥ बीरभजोरघुवीरको, यांचौंनाहींआन ॥ ८ ॥ सखिराम लक्ष्मणदोभ्रातहैं, सीताअधिकसोहाय ॥ तुलसिदा सहृदयेधरे, चरणनमहँचितलाय ॥ ९ ॥ ४ ॥

सीतारामविराजहीं, श्रीअवधेशकुमार ॥ महाराजकुमार ॥टेक॥ सखीक्रीटमुकुटशिरराजहीं, हीरारतनजड़ाव॥ द्युतिकुंडलछविराजहीं, मोतियनकीछबिछाय॥ ॥ १ ॥ सखीकटिपरपीतलपेटिहैं, करमेंशारंगबण ॥ चितवनमेंचितचोरहैं, मानोकंद्रपबाण ॥ २ ॥ सखीसंगसखासबराजहीं, सरजूतटकोजात॥ चपलतुरंगनचावहीं, मोहैंनरअरुनारि ॥ ३ ॥ सखीसुमनबागविचरा॥ जहीं, सँगमेंचारोंभाइ॥ पवनतनयकरजोरिकै करेमधुरीवयार ॥ ४ ॥ सखीब्रह्माविष्णुमहेशहैं, सनकादिक चारोंभाई ॥ अस्तुतिकरोंकरजोरिकै, विनवोंमैसन्मान॥५॥ सखीकुंभजऋषिअरुआवहिं, नारदकरेहैंगान॥ रामस्वरूपहृदयधरे, चित्तलियोहैचोराय ॥ ६ ॥ ५ ॥

आजुमहामंगलमिथिलापुर, घरघरवजतवधाईरी ॥ टेक॥ रामरूपगुणधामजानकी, सुरनरमुनिसुखदाईरी ॥ १ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, केसरकीचमचाईरी ॥२॥ घूंघुरवारेअलकवदनपर, मधुकररहेलोभाईरी ३॥

कटिकिंकिणिपगनूपुरबाजें,मुनिमनरहेलोभाईरी॥४॥
हर्षेदिवसुमनवहुवर्षे, आनँदउरनसमाईरी ॥ ५ ॥ शिव
ब्रह्माजाकोपारनपावें, नारदध्यानलगावैंरी ॥ ६ ॥ शेष
सहसमुखरटतनिरंतर, वाकोपारनपावैंरी ॥ ७ ॥ मातु
सुनयनाकरतआरती,तुलसिदासगुणगायोरी ॥ ८६ ॥
भूपकुमारनदानसखीरी,तातकठिनप्रणठानोरीटेक॥
बालमराललालअतिकोमल,अंगपुष्पदलभीनोरी॥१॥
प्रेमविवशजलभरेनयनमें,चुनरीअंचलभीनोरी ॥ २ ॥
कोइसमुझावेजायपिताको,कौनऐसीमतिदीनोरी॥३॥
कुलिशकठोरपिनाकशंभुको, रावणबलहरिलीनोरी
॥४॥ देखतहालबिहालजानकी,नाथधनुषकरलीनोरी
॥५॥तोऱ्योधनुषसियासुखदीनो,भाँवरिकोसमकीनो
री ॥६॥ सीताब्याहिअवधपुरआये, दशरथद्रव्यलुटा
योरी ॥ ७ ॥ याचकसकलअयाचककीने, तुलसिदा
सवरपायोरी ॥ ८ ॥ ७ ॥

रँगभीनेरघुनाथकुवँरको, इनगलियनकोइल्यावोरी॥
॥टेक॥ अँटाचढ़ीसवछटानिहारें, तनकीतपनबुझावो
री ॥ १ ॥ मिथिलापुरनरनारिनिहारें घरियककोउबि
लमावोरी ॥ २ ॥ जरकसपागकेसरियाजामा, पैंजनि
याझमकावोरी ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल,
उरवनमालसोहावोरी ॥४॥ सियासखीगोखनमगजो

हैं, रसभरिगारीगावोरी ॥ ५ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर, हँसिहँसिकंठलगावोरी ॥ ६ ॥ ८ ॥

रत्नजड़ितमंडपतरराजै, रघुबरश्यामसलोनारी टेक। मिथिलापुरनरनारिसबनपर, डारिदियोपढ़िटोनारी ॥१॥ यकश्यामलयकगौरमनोहर, मुनिजनकेमनहर नारी ॥२॥ सुंदरबदनकमलदललोचन, उरबनमालसोहवनारी ॥ ३ ॥ चंद्रवदनपरअलकैंझलकैं, मनहुँनागकेछौनारी ॥ ४ ॥ कृपानिवासकहांलगिबरणों, यहछबिऔरवनौनारी ॥ ५ ॥ ९ ॥

चलोसखीरघुबरछबिनिरखैं, रंगभवनहरिआयोरी ॥ ॥टेक॥ यकश्यामलयकगौरमनोहर, संगमहामुनिआयोरी ॥१॥ सांचकहोंसखिझूंठनबोलों, समाचारसुनिपायोरी ॥२॥ देशदेशकेभूपतिआये, काहुनचापचढ़ायोरी ॥३॥ तोऱ्योधनुषरामनेसजनी, भूपसबैमुरझायोरी ॥ ॥४॥ आईहैसीतासंगसहेली, वरमालापहिरायोरी ॥५॥ हरेहरेगोबरअँगनालिपाये, मोतियनचौकपुरायोरी ६ हरेहरे बांसनमंडपछायोरी, कंचनकलशभरायोरी ॥७॥ रामसियादोउच्चौकमेंबैठे, ब्रह्मावेदउचाऱ्योरी ॥८॥ रामसियाजीकीफिरतभाँवरी, सखियनमंगलगायोरी ॥९॥ धनिधनिभाग्यसियाजीतुम्हारे, रामचंद्रबरपायोरी ॥१०॥ धनिधनिभाग्यजनकराजाके, दशरथसमधीपायोरी ॥ ११ ॥ धनिधनिभाग्यनगरबासिनके, रामचं

द्रपुरआयोरी ॥ १२ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर, सबहिंप्राणप्रियपायोरी ॥ १३ ॥ १० ॥

सुभगचालसुंदरअतिप्यारी, भरतराममोहिंभावैरी ॥ ॥टेक॥राजादशरथजीकेचारिपुत्रहैं,शोभावरणिनजावैरी॥ १ ॥ रामरुलक्ष्मणभरतशत्रुहन, वेदविमलयशगावैरी ॥ २ ॥ सरजूकेतीररखेलरचोहै, सुंदरबाणचलावैरी ॥३॥ सरजूअन्हायचलेरघुनंदन, चपलतुरंगनचावैरी ॥ ४ ॥ अवधपुरीकीबधूअटाचढ़ि,निरखिपरमसुखपावैरी ॥५ ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता, इंद्रपुष्पझरिलावैरी ॥ ६ ॥ मातुकौशल्याकरतआरती, आनँदउरनसमावैरी ॥७॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर, चरणकमलचितलावैरी ॥ ८ ॥ ११ ॥

सोसुखउमाकहांलगिबरणौं, सीतारामजीअयोध्याआयेरी॥टेक॥बनमेंजायअसुरसंहारे,देवसबैसुखपायेरी॥१॥बिश्वामित्रकोयज्ञसुफलकियो, काटेपापशिलाकेरी॥२॥ जायजनकपुरधनुषउठायो, भूपसबैमुरझायेरी ॥ ३ ॥ जानकीहाथलियेवरमाला, रघुवरउपरहिरायेरी ॥४॥ सीताब्याहिअवधपुरआए, घरघरबजतवधाईरी॥५॥ लंकाजायकेरावणमाऱ्यो, राजविभीषणपायोरी ॥ ६ ॥ पुष्पविमानचढ़ेरघुनंदन, नगरनिकटहरिआएरी ॥ ७ ॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता, पुष्पनकीझरिलायेरी ॥८॥ वर्षतपुष्पदेवमुनिहर्षे, आनँदमं

गलगायेरी ॥ ९ ॥ सीतासहितसिंहासनबैठे, भरत जीचँवरढुरायेरी ॥ १० ॥ मातकौशल्याकरतआरती, आनँदउरनसमायेरी ॥ ११ ॥ तुलसिदासहरिरूपनि हारें, चरणकमलचितलायेरी ॥ १२ ॥ १२ ॥

दशरथसुतअरुजनकनंदिनी, चितवनमेंचितचोरेंरी॥ ॥ टेक ॥ नान्हीनान्हीबूंदपवनपुरवाई, वर्षहिथोरेथो रेरी ॥ १ ॥ हरिहरिभूमिघटाझुँकिआई, सरजूलेतहि लोरेरी ॥ २ ॥ उपवनबागविहंगमबोले, दादुरमोरच कोरेरी ॥ ३ ॥ हयदलपयदलगजदलरथदल, कोटिब नेचहुँओरेरी ॥ ४ ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ, शंख नकीघनघोररी ॥ ५ ॥ नागरिनामलियावैंपियको, सि याजीहँसीमुखमोरेरी ॥ ६ ॥ अग्रदासहरिरूपनिहारे चरणकमलबलिहारी ॥ ७ ॥ १३ ॥

छयछलबीलेराजादशरथजीके राजकुँवरदोउबांकेरी ॥ टेक ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, तापरकलँगीरा खेरी ॥ १ ॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकियो, असुरमा रसुरराखेरी ॥ २ ॥ मारिचमारसुबाहूमारे, काटेपाप शिलाकेरी ॥ ३ ॥ सखीसयानीमिथिलापुरकी, भाग उदयभयेवाकेरी ॥ ४ ॥ चारोंकुवरविवाहेराजादशर थ, अवधपुरीरथहांकेरी ॥ ५ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसु खसागर, उपमावदनभाखेरी ॥ ६ ॥ १४ ॥

बांकीचालश्रीराघोजीकी, बांकीचितवनपरबलिहारी

॥टेक॥ बांकीशिरजरकसकीपगिया, बांकीकलँगीकी छविन्यारी ॥ १ ॥ बांकोभालतिलकशिरसोहै, बांकी अलकैंघूंघुरवारी ॥ २ ॥ बांकेहारगलेमोतियनके, बां कोकुंडलकीछविन्यारी ॥३॥ बांकेधनुषबाणकरराजें, बांकीकछनीमोहिलगेप्यारी॥४॥बांकीचरणकमलकी शोभा, बांकीनूपुरकीछविभारी ॥५॥ रामसेवकजीके प्रभुसुखसागर, बांकेलक्ष्मणमोहेनरनारी ॥ ६ ॥ १५॥

इति सोमवारके मंगल समाप्त ।

अथ मंगलवारके मंगल ।

रामकृष्णकहियेउठिभोर॥टेक॥ओहिअवधेशओही व्रजजीवन, धनुषधरनअरुमाखनचोर ॥ १ ॥ इतमेंअ योध्यानिर्मलसरजू, उतयमुनाजलकरतकिलोल ॥२॥ इतमेंदशरथपुत्रकहाये, उतमेंकहायेबाबानंदकिशोर॥ ॥ ३ ॥ इतमेंकौशल्यामैयागोदखेलावै, उतमें यशोदा जीझुलावेहिंडोल ॥ ४ ॥ इतमेंकीटमुकुटशिरराजे, उ तमेंमोरमुकुटकोओर ॥५॥ इतमेंधनुषबाणकरराजे, उतमुरलीधरेमुखकीओर ॥ ६ ॥ इतमेंचरणअहल्या तारी, उतकुब्जासेकियोहैकलोल॥ ७॥ इतमेंजानकी बांयेबिराजें, उतराधेसंगयुगलकिशोर ॥ ८ ॥ इतमें सागरशिलाउतराने, उतगिरिवरधरेनखकीओर॥९॥ रावणकेदशमस्तकछेदे, कंसकोमारिकियेझकझोर ॥ ॥ १० ॥ इतमेंराजाविभीषणदीनो, उग्रसेनाकियोअप

नीओर ॥ ११ ॥ नंददासजोकेयेदोउठाकुर, दशरथ सुतत्रावानंदकिशोर ॥ १२ ॥ १ ॥

आयेहोसियारघुनंदनआये, अवधपुरीसुखदेनरामर घुनंदनआये॥टेक ॥ सीतासहितसुमित्रानंदन, औसु ग्रीवसोहाये॥जामवंतहनुमाननीलनल, औअंगदमन भाये॥१॥हनुमतआयभरतसोंभेंटे, समाचारसुनिपा ये॥रावणमारिअसुरसबमारे,राजबिभीषणपाये ॥२॥ श्रवणनसुनतभरतउठिधाये,दर्शनपावनपाये॥पाँवन परतअनुजदोउभेंटे, हरिहँसिकंठलगाये ॥ ३ ॥ पुष्प विमानदूरतेदेख्यो,एकटकध्यानलगाये॥नौतमनारि अयोध्यापुरकी, कंचनकलशभराये ॥ ४ ॥वर्षतपुष्प देवमुनिहर्षे,गुरुकेआश्रमआये ॥सुरनरमुनिब्रह्मादिदे वता, नभदुंदुभीवजाये ॥ ५ ॥ पुनिगृहआयमिलेमात नसों,मोतियनचौकपुराये ॥गृहगृहकेमाणिकबहुबनि ता, मंगलगावतआये ॥ ६ ॥ मंदिरभीरभईबहुतेरी, आनँदउरनसमाये ॥ फूलेफिरतअयोध्याबासी,घरघ रवजतवधाये ॥ ७ ॥बहुमेवापकवानमिठाई, सीतारा मकोभोगलगाये॥मातकौशल्याकरतआरती,मनवां छितफलपाये ॥ ८ ॥ सीतासहितसिंहासनबैठे,भरत जीचँवरढुराये ॥ तुलसिदासतिहुँलोकअनँदभये, चार वेदयशगाये ॥ ९ ॥ २ ॥

आयेअवधपुरीअभिराम,रामनिजधामपधारे॥टेक॥

पुण्यपुंजपावनयहनगरी,निरखतहृदयजुड़ाये ॥ जरा
मरणदुखमिटतपलकमें, रामदरशजनपाये ॥ १ ॥ रा
मभक्तिउपजैयहमनमें, दिनदिनआनँदहोई ॥ सुरमु
निसंततातिहिपरशंसत, महिमालखैनकोई ॥२॥ कोटिन
अधमगयेहरिपुरको, अवधपुरीतजिदेहा ॥ फेरिकबहुँ
भवजालनआवे, रामचरणपरनेहा ॥ ३ ॥ तुलसीभ
क्तिमुक्तिजोचाहै, अवधकरैसोइवासा ॥ परमधामवै
कुंठ नगरमें, होइहैतासुनिवासा ॥ ४ ॥ ३ ॥

आयेहोकृष्णयदुनंदनआये,मथुरापरीसुखदेन॥टेक॥
गोपनसहितरोहिणीनंदन,औअक्रूरसोहाये ॥ सखामं
डलीराजतमोहन,नटवरभेसबनाये ॥१॥ रथपरबैठच
लेयदुनंदन,सखितनमदनजगाये ॥ विलपतरुदननय
नजलबरसे,विरहअनलतनछाये ॥ २ ॥ गोपीग्वालक
रतकोलाहल, यमुनातटप्रभुआये॥सुफलकसुतजबमं
जनकीन्हो, जलबिचरूपादिखाये ॥ ३ ॥ उतरतपारव
सनहरिलीन्हे,सबहिआपपहिराये ॥ शिरकेतलेतलेके
ऊपर,अद्भुतरूपबनाये ॥४॥ कुब्जातोचंदनाघिसिलाई
चर्चितरुचिरबनाये॥परसतचरणरूपभयोअद्भुत रवि
शशिकोटिलजाये ॥ ५ ॥ गजकेदंतउखारिकृपानिधि,
दशविधरूपादिखाये ॥ मुष्टिकचाणूरयुगलगहिमारे,
मृगपतिठवनिलजाये ॥ ६ ॥ केशपकरहरिकंसपछारे,
देवनदुंदुभिबजाये॥विपुलसुमनशिवनारदशारद,जय

जयकारमनाये॥७॥उग्रसेनकोराजातिलकदियो, यदु
वर अधिकसोहाये॥घुरतानिशानभेरिसहनाई, घरघर
व्रज तवधाई ॥८॥ पुनिगृहआयमिलेजननीपितु,कर
जोरे शिरनाये ॥ सुरनरवृंदविमलयशगावें,सखियन
मंगल गाये ॥ ९ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक,
अहिपतिपारनपाये॥ चेतनदासधन्यव्रजदूलह, चार
वेदय शगाये ॥ १० ॥ ४ ॥

आयेमथुरापुरीसुखदेन,कृष्णअघमोचनआये॥टेक॥
नंदभवनआनंदभयोहै,निरखतमुखनँदलाला॥ घरघ
रगोकुलव्रजतवधाई,जन्मेमदनगोपाला॥१॥यशुमति
गोदलियेवनमाली,मंगलगावतनारी॥देतअशीसचूंब
मुखभामिनि, मोहनमदनमुरारी ॥ २ ॥ जाकीदृष्टिप
रेवँनवारी,तेहिँनहिभवनसोहाये॥ देखिसुरासुरपलक
नटारें,रहेचरणलपटाये ॥ ३॥ माधवसमयजानिब्र
ह्मादिक, गोकुलआयेहैंधाये ॥ सुरनरमुनिइंद्रादिदेव
ता,अस्तुतिकरतवनाये ॥ ४ ॥ ५ ॥

आयेश्यामसुंदररघुनाथ,रामफुलवारीमेंआये॥टेक॥
विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकियो, ऋषिपत्नीमनभाये ॥
सुरसरिकथावूझिकौशिकसे,जनकनगरहरिआये।१।
जयजयकारभयेसुरपुरमें,देवनदुंदुभिवजाये॥गुरुअनु
शासनपायकृपानिधि, तुलसीलेनसिधाये ॥ २ ॥ ते
हिअवसरसियसखिनसंगलै, सरमंजनकरवाये ॥ हर्ष

समंतपूजिगिरिजाको, मनवांछितफलपाये ॥ ३॥ एक सखीसियसँगसोंविछुरी, रघुनंदनलखिपाये ॥ देखतु रूपमगनभईतेहिछिन, आनँदउरनसमाये ॥४॥ तेहिं पुनिआइकहीसखियनसेंदरसलागिअकुलाये।तुलसि दासप्रभुसियाहिंलखाये,सियाजीपरमसुखपाये॥५६॥ आयेएकसखीहर्षायकही, दोउनृपसुतआयेआयेहो सखीदोउ०।टेक।श्यामगौरकिमिकहौंवखानी,कोटि मनोजलजाये।क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल,माथेतिल कबनाये ॥ १ ॥ सुंदरअधरकपोलनासिका,भृकुटीकु टिलसोहाये ॥ सुभगग्रीवमोतियनछबिछाये,धनुषबा णमनभाये ॥ २ ॥ उरभृगुलतामनोहरराजे, कटिकिं किणीसोहाये॥उदररेखत्रिभुवनछबिछाये, चरणनेह अनुहारे ॥ ३ ॥ अवतरेरेजगमंगलहेतु, निरखिकेचंद्र सुमानभये ॥ हरीदासछबिकहँलगिबरणौं, शेषपारन हिपाये ॥ ४ ॥ ७ ॥

आयेमिथिलापुरीसुखदेन, रामकौशिकसँगआये॥ टे क॥क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल,उरवनमालसोहाये॥ प्रगटतदुरतकरतमगकौतुककौशिकतपनिधिआये १ मारगचलततांडकामारी, गौतमनारिउधारी॥ केवट तारिसुरसरीउतरे, मगवासिननसुखपाये ॥ २ ॥ मुनिप दपूजिराउसन्माने, कौशिककुँवरबोलाये ॥ बालमरा लसमानबंधुदोउ, निरखिविदेहपरमसुखपाये ॥ ३ ॥

श्यामवरणसुंदरतनुशोभा, कटितूणीरसोहाये ॥ पीछे गौरमनोहरबंधू, शरदइंदुछबिछाये ॥ ४ ॥ केहरिठव निचलतदोउढोटा, वीथिनसुगंधसिंचाये ॥ सुनिनर नारिहर्षिउठिधाये, निरखिपरमसुखपाये ॥ ५ ॥ मुनि अनुशासनपाइबंधुदोउ, सुमनवाटिकाआये ॥ जनक सुताविलोकिरघुवरछबि, गौरीसेवरपाये ॥ ६ सबभू पनकोमानमथनकियो, धनुसमीपप्रभुआये ॥ तोरेउ धनुपभूपसबहारे, देवसुमनझरिलाये ॥ ७ ॥ बाजतताल मृदंगझांझडफ, मंजीरासहनाये ॥ जानकीहाथलियेब रमाला, रघुवरउरपहिराये ॥ ८ ॥ तोरेउधनुषशब्दभ योभारी, भृगुनायकचलिआये ॥ टूटपिनाकदेखितेहि अवसर, भ्रुकुटीकुटिलबनाये ॥ ९ ॥ मधुरवचनलक्ष्मण परितापे, अनलआहुतीपाये ॥ देतहिधनुषआपुचढ़िग यऊ, बदरीविपिनसिधाये ॥ १० ॥ मुनिअनुशासनपा यजनकनृप, दूतनअवधपठाये ॥ दूतबचनसुनिदशरथ हर्षे, नगरनिसानबजाये ॥ ११ ॥ दूतबचनसबभरतसुना ये, पुनिउठिगुरुगृहआये ॥ दूतबचनसबगुरुहिसुनाये, पुनिपुरबजतजनाये ॥ १२ ॥ गुरुअनुशासनपायस चिवसब, तुरतबरातबनाये ॥ गुरुसमेतदशरथरथचढ़ि के, जनकनगरनियराये ॥ १३ ॥ भरिभरिथारहेमभरि भामिनि, रघुवंशिनपहँआये ॥ गावतगीतमनोहरबा नी, कोकिलकंठलजाये ॥ १४ ॥ गजमोतियनकेचौक

पुराये,पुण्यनमंडपछाये ॥ रामजानकीफिरतभांवरी, सखियनमंगलगाये ॥१५॥रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन चारोंकुँवरविवाहे॥दायजभूरिजनकनृपदीन्हो, दशरथविदाकराये॥ १६ ॥मंगलगानकरतनरनारी,आनँद उरनसमाये ॥ वधुनसमेतविलोकतजननी,विप्रनदा नदिवाये ॥ १७ ॥ मातुकौशल्याकरतआरती,त्रिभुवनमंगलगाये॥गिरिधरदासआसरघुवरकी,चारिवेद यशगाये ॥ १८ ॥ ८ ॥

होयानचढ़ेरघुनंदनआये,हनुमतचँवरढुरायोरी।टेक। जामवंतसुग्रीवविभीषण, अरुअंगदमनभायोरी।१। करतपुनीतदेवसबहर्षे,दंडकबनप्रभुआयोरी।२।देखिसियादंडकबनशोभा, ऋषिविचरेभयत्यागेरी ॥ ३ ॥ चरितपुनीतकियेरघुनंदन, अवधनिकटहरिआयोरी ॥४॥ उतरेपुष्पनिकटसरजूके, रघुपतिआज्ञापाईरी ॥ ॥ ५ ॥ चलततृषितअतिगयेसकुचमानो, मरुतसजल जलआयोरी ॥ ६॥ व्याकुलअंधअवधजेहिकारण, उदितअरुणहोइआयोरी ॥ ७ ॥ होतअवधआनंदबधाई, सखियनमंगलगायोरी ॥ ८॥ सुखअवलोलिलोक जिहिलाजै, रघुपतिपुरीसुहायोरी ॥ ९ ॥ चरअरुअचरहर्षयुतजहँतहँ, रघुपतिकीरतिगायोरी ॥ १० ॥ द्विजनसहितआयेनृपद्वारे, अग्रदासगुणगायोरी॥११॥९॥ लंकाजीतिरघुनंदनआये,हनुमतदासकहायोरी।टेक।

अंजनिनंदनसबजगबंदन,तीनलोकयशगायोरी॥१॥
बागउजारिसमुद्रविचडारे,जनकसुतासुधिल्यायोरी
॥ २ ॥ जोसागरकोगर्वकरतहै, तापरशिलउतरायोरी
॥३॥ सेतुबांधिउतरेरघुनंदन, कपिदलकियेसहायोरी
॥ ४ ॥ रावणकेदशमस्तकछेदे, राजबिभीषणपायोरी
॥५॥पुष्पविमानचढेरघुनंदन,अवधनगरनियरायोरी
॥६॥नरनारीसबसुकृतमनाएं, रामसियाघरआयोरी
॥७॥ सिंहासनसियबैठिरामसँग, द्विजनदानबहुपायो
री ॥ ८ तुलसिदासकोभक्तिदानादियो, दीनजानि
मनभायोरी ॥ ९ ॥ १० ॥

देखोरीदोउदशरथनंदन, नगरअयोध्याआयोरी॥टे
क॥पुष्पविमानचढेरघुनंदन, भक्तबिभीषणसाथेरी ॥
॥ १ ॥ लक्ष्मणसहितअयोध्याआये, जानकीबांयेअं
गेरी ॥ २ ॥ हनूमानसेपायकजिनके, लंकाजीतिघर
आयेरी ॥ ३ ॥ चरणधोयचरणामृतलीनो, सिंहासन
बैठायेरी ॥ ४ ॥ सीतासहितसिंहासनबैठे, भरतजीचँ
वरढुरावैंरी ॥५॥ सुरनरमुनिब्रह्मादिदेवता, पुष्पनकी
झरिलायेरी ॥ ६ ॥ नगरअयोध्याहोतकोलाहल, शो
रभयोअतिभारीरी ॥ ७ ॥ बिप्रनकोबहुदानादियोहै,
अखिलभँडारलुटायोरी ॥ ८॥ फूलेभरतशत्रुहनभाई,
फूलीकौशल्यामाईरी ॥ ९ ॥ माधवदाससंतजनफूले,
आनँदउरनसमाईरी ॥ १० ॥ ११ ॥

जलकैसेभरूंसरजूगाहिरी, सन्मुखराजारामजीखड़े ॥ टेक॥ अवधनगरसेचलीमेरीसजनी, हाथघड़ाशिरपर ईंडुरी॥१॥ अपनेअपनेभवनतेंनिकसीं, कोउश्यामल कोउहैगोरी॥२॥ठाढ़ेभरोंमोहिलाजलगतिहै, बैठिभरों भीजैचुनरी॥३॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, सन्मुख हैंहनुमानवली॥४॥ धीरेचलोंमोहिंवारलगतहै, ठुमक चलोंछलकेगगरी ॥ ५ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसा गर, चेरीहौंकेचरणपरी ॥ ६ ॥ १२ ॥

सखीरामजीअयोध्याआये, आजमहामंगलकोसलपु र ॥ टेक॥ पुष्पविमानचढ़ेरघुनंदन, भक्तविभीषणसा थे ॥ १ ॥ नगरअयोध्याहोतकोलाहल, घरघरबजतब धाई ॥ २ ॥ हनूमानसेपायकउनके, लंकाजीतघरआ ये॥विप्रनकोबहुदानदेतहैं, अखिलभंडारलुटाये॥४॥ फूलेभरतशत्रुहनफूले, फूलीकौशल्यामाई ॥ ५ ॥ सी तासहितसिंहासनबैठे, भरतजीचँवरढुराये ॥६ ॥ मा धवदाससंतसबफूले, आनँदउरनसमाये ॥७॥ १३ ॥

लंकाजीतिघरआये, रघुपतिरणधीर॥टेक॥ साखजी मवंतसुग्रीवहैंनल, अंगदहनुमतवीर ॥ अवधनगरआ नँदभये, सरजूनिर्मलनीर ॥ १ ॥ सखीसुवरनकलश सँवारिये, पुरजनकीबहुभीर॥सखियनमिलिमंगलगा इये, सुंदरसुभगशरीर ॥ २ ॥ सखीरत्नसिंहासनसोह हीं, सुखसागरक्षीर ॥ बामेंअंगजयजानकी, दहिनेल

क्ष्मणवीर ॥ ३ ॥ सखीसुरनरमुनिजयजयकारकरें, सबवर्षेंसुरवरफूल ॥ सरजूदासशरणगये, सुमिरेश्रीरघुवीर ॥ ४ ॥ १४ ॥

इति मंगलवारके मंगल समाप्त ।

अथ बुधवारके मंगल ।

राधामोहनरूपनिहारो ॥टेक॥ छोटेभैयाकृष्णबड़ेबलदाऊ,चंद्रवंशउजियारो॥ १॥मोरमुकुटमकराकृतिकुंडल,पीतांबरपटवारो ॥२॥ हलधरगिरिधरमदनमनोहर, यशुमतिनंददुलारो ॥ ३ ॥ शंखचक्रगदापद्मबिराजें, असुरनभंजनहारो ॥४ ॥ यमुनाकेनीरेतीरेधेनुचरावें, ओढ़ेकामरकारो॥५॥निर्मलजलयमुनाजीकोकीन्हो,नागनाथलियोकारो ॥ ६ ॥इंद्रहुकोपचढ़योव्रजऊपर,नखपरगिरिवरधारो ॥७॥ कनकसिंहासनयदुवरबैठे,कोटिभानुउजियारो ॥ ८ ॥ मातयशोदाकरतआरती, वारवारबलिहारो ॥ ९ ॥ सूरदासहरिरूपनिहारो, जीवनप्राणहमारो ॥ १० ॥ १ ॥

परमधामगोलोकछोड़िके,वृंदावनहरिआयोरी॥टेक॥ कृष्णजन्मवसुदेवदेवकी, नंदभवनपहुँचायोरी ॥ १॥ धनिबड़िभाग्यनंदयशुमतिके, जासुपरमसुखपायोरी ॥२॥ फूलेफिरतसकलव्रजवासी, आनंदउरनसमायोरी॥३ ॥खबरभईजबकंसरायको, पुतनाबेगिपठायोरी ॥ ४ ॥ मारनआईआपुनसाई, जननीकीगतिपायो

री ॥ ५ ॥ शिवसनकादि आदिब्रह्मादिक, देवनदुंदुभि बजायोरी ॥ ६ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, हरिके चरणसुखदाईरी ॥ ७ ॥ २ ॥

आजुसखीनँदनंदनप्रगटे, गोकुलबजतबधाईरी ॥ टेक ॥ रोहिणिनक्षत्रमासभादोंकी, योगलग्नतिथिआईरी ॥ १ ॥ गृहगृहसेसबवनिताबनिकै, मंगलगावतआईरी ॥ २ ॥ जोजैसेतैसेउठिधाई, आनँदउरनसमाईरी ॥ ३ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, दधिकीकीचमचाईरी ॥ ४ ॥ यमलाअर्जुनवृक्षउपारे, यशुमतिसुतउरलाईरी ॥ ५ ॥ वंदीजनगंध्रबगुणगावैं, शोभावरणिनजाईरी ॥ ६ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, चरणकमलचितलाईरी ॥ ७ ॥ ३ ॥

आजुमहामंगलगोकुलमें, कृष्णचंद्रहरिजन्मलियेटेक ॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै, जगतपहरुवासोइगये ॥ १ ॥ जननीजायेजलअन्हवाये, लैवसुदेवकीगोददये ॥ २ ॥ लैवसुदेवचलेगोकुलको, उमगिकैयमुनाचरणलये ॥ ३ ॥ भादोंमासरैनिअँधियारी, शेषनागफनफेरिरहे ॥ ४ ॥ लैवसुदेवपौरभयेठाढ़े, हर्षियशोदामैयागोदलये ॥ ५ ॥ उलटीरीतिभईगोकुलमें, कन्यादेकेपुत्रलये ॥ ६ ॥ सूरदासहरिरूपनिहारे, नंदकेघरआनंदभये ॥ ७ ॥ ४ ॥

आजुमहामंगलगोकुलमें, कृष्णचंद्रअवतारलियेटेक ॥ गृहगृहसेसबगोपीआई, मधुरसुरसेगानकिये ॥ १ ॥ मारणकारणचलीपूतना, दूधपियतहरिप्राणलिये ॥ २ ॥ अ

वासुरमारिवकासुरमारे, दावानलकोपालकिये ॥ ३ ॥ यमलाअर्जुनवृक्षउपारे, यादवकुलकोतारिलिये ॥ ४ ॥ पैठिपतालकालियानाथे, फणपरनृत्यकरायलिये ॥ ५ ॥ सातदिवसगिरिनखपरधारे, इंद्रहुकोमदमारिलिये ॥ ६ ॥ केशिपकरिहरिकंसपछारे, उग्रसेनकोराजदिये ॥ ७ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, चरणकमलचितलायलिये ॥ ८ ॥ ५ ॥

आजुसखीश्रीनंदमहरघर, आनँदवजतबधाईरी ॥ टेक ॥ प्रगटभयेगोपाललालजी, संतनकेसुखदाईरी ॥ १ ॥ गृहगृहसेसबगोपग्वालिनी, मंगलगावतआईरी ॥ २ ॥ बाजाविविधनंदगृहबाजे, ढोलमृदंगसहनाईरी ॥ ३ ॥ दधिदूर्वारोचनफलफूला, केशरकीचमचाईरी ॥ ४ ॥ जयजयकारभयोसुरपुरमें, इंद्रपुष्पझरिलाईरी ॥ ५ ॥ शिवब्रह्माजाकोपारनपावें, नारदध्यानलगाईरी ॥ ६ ॥ सूरदासहरिरूपनिहारे, वेदविमलयशगाईरी ॥ ७ ॥ ६ ॥

आजुमहामंगलगोकुलमें, पुत्रयशोमतिजायोहो ॥ टेक ॥ पूजेसकलमनोरथमनके, भयोआनँदमनभायोहो ॥ गावतचलींसकलव्रजवनिता, नंदभवनचलिआयोहो ॥ १ ॥ पांयलागिउठिआदरकीन्हो, यशुदानिकटबुलायोहो ॥ नामकरणशुभधरोगर्गजू, रोचनद्रव्यमँगायोहो ॥ २ ॥ गुरुजनपुरजनसकलसंतजन, सबकोसासनवायोहो ॥ घरीनक्षत्रभरेशुभनीके, यासुनिसब

अनुरागेहो ॥ ३ ॥ धन्यधन्यनरनारिगोपकहि, नंदप
रमबड़भागीहो ॥ वासुदेवभगवानकृष्णजू, नामतुम्हा
रोगायोहो ॥ ४ ॥ नामअनंतकहांलगिबरणों, वर्णत
पारनपायोहो ॥ नाचतगोपकुलाहलपुरमें, भीरनका
हुसमायोहो ॥५॥ देखतअमरविमाननचढ़िचढ़ि, आंग
नवजतवधाईहो ॥ यासुनिमुनिनविरतिविसराई, हम
नभयेव्रजवासीहो ॥ ६ ॥ जाकारणहमजपतपकीन्हो
प्रगटभयेअविनासीहोदेतअसीसपसारतअंचलचिरं
जीवनँदलालाहो ॥७॥ कंसवधेभूभारउतारे, तीनलोक
सुखदाईहो ॥ मानदासप्रभुकेगुणगावे, बारबारबलि
हारीहो ॥ ८ ॥ ७ ॥

आजुमहामंगलगोकुलमें, ढोटायशुमतिजायोरी॥टेक
जाकोध्यानधरतब्रह्मादिक, नंदमहरघरआयोरी॥१॥
बाजाविविधनंदगृहबाजें, घरघरशब्दसुनायोरी ॥ सु
निसुनिनगरनारिनरधाये, तनमनअतिपुलकायोरी॥
॥२॥ वरवरविप्रबोलसबलीने, जन्मकर्मकरवायोरी ॥
विधिवतकरिनवग्रहकीपूजा, देवनसबनमनायोरी ३॥
दधिदूर्वारोचनफलफूला, केसरकीचमचायोरी ॥ जय
जयकारभयोसुरपुरमें, इंद्रपुष्पझरिलायोरी ॥ ४ ॥ शि
वब्रह्माजाकोपारनपावें, नारदध्यानलगायोरी ॥ सूर
दासहरिरूपनिहारे, वेदविमलयशगायोरी ॥ ५ ॥ ८ ॥
आजुकहांतेयागोकुलमें, अद्भुतवर्षाआईरी ॥ टेक॥

मणिगणहारहेमकोधारा,ब्रजपतिअतिउरलाईरी॥१
वाणीविमलपढ़तद्विजद्वारे, होयहर्षअधिकाईरी ॥२॥
दधिघृतक्षीरनीरनानारँग,बहिचलपारपनारेरी ॥३॥
घुमरिनिशानभेरिसहनाई, महागरजकोघोरेरी ॥४॥
मागधसूतवंदीजनचातक,बोलतवंदीमोरेरी ॥५॥आ
नँदभरेनचहिनरनारी, पहिरिरंगरँगसारीरी॥ ६॥ ब
रनबरनबादरदलबैठे, विघुटतन्यारीन्यारीरी ॥७॥
भूषणवसनअमोलनंदजू, नरनारिनपहिरायेरी ॥८॥
शाखादलफलफूलनिआने,उपवनझालरिआईरी॥९।
दारिददवनमिलोहैसबनको,याचकसरवरपूरेरी ॥१०
बाढ़ीसुभगसुयशकीसरिता,दुरिततीरतरुचेरेरी १ १उ
रलख्योमालबालपकमोती, भयोसबनमनफूलेरी १ २
दायाहितअंकुलातगदाधर,ताकेचरणकेभूलेरी १ ३ ९
मदनमोहनजीसेलगनलगीहै,यातनडारूंमैवारी टेक
करुणासिंधूहैजगबंधू, संतनकेहितकारी ॥ १ ॥ मोर
मुकुटपीतांबरसोहै,कुंडलकीछबिन्यारी॥२॥गलेसोहै
बैजंतीमाला, निरखतराधाप्यारी ॥ ३ ॥ यमुनाकेनी
रतीरधेनुचरावैं, ओढ़ैकामरिकारी ॥४॥ पैठिपताल
कालियानाथ्यो,निरतकरतगिरिधारी॥५॥इंद्रहुकोपि
चढ़ैब्रजऊपर,नखपरगिरिवरधारी॥६॥वृंदावनकीकुं
जगलिनमैं, मोहननिरतैगिरिधारी ॥७॥ चंद्रसखीभ
जुबालकृष्णछबि,चरणकमलबलिहारी ॥ ८ ॥ १० ॥

सुंदरवदनकुँवरिकाहूको, नितदधिबेचनआवै ॥टेक॥
कबहुँकआवदहीलुटावै, कबहुँकमुखलपटावै ॥ १ ॥
कबहुँकमुरलीछीनलेतहै, कबहुँकआपुत्रजावै ॥ २ ॥
कबहुँपीताम्बरछीनलेतहै, कबहुँकआनिओढावै॥३॥
चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, यहलीलामोहिँभावै ॥
॥ ४ ॥ ११ ॥

चलोसखीवृंदावनचलिये,मोहनवेणुबजावेरी ॥टेक॥
वेणुसुनतब्रह्मादिकमोहे, वेदपढननहिँपायेरी ॥१॥ वे
णुसुनतशिवशंकरमोहे, ध्यानधरननहिँपायेरी॥२॥वे
णुसुनतइंद्रादिकमोहे, राजकरननहिँपायेरी ॥३॥वेणु
सुनतसुरनरमुनिमोहे, भजनकरननहिँपायेरी ॥४॥
वेणुसुनतयमुनाजीमोहीं, नीरवहननहिँपायेरी ॥५॥
वेणुसुनतगौबछरामोहे,दूधपियननहिँपायेरी ॥६॥ वे
णुसुनतब्रजवनितामोहीं, झुंडझुंडउठिधायेरी ॥७॥वे
णुसुनतसबगोपीमोहीं, घरअँगनानसुहायेरी ॥८॥वे
णुसुनतखगपंछीमोहे, चुगाचुगननहिँपायेरी॥९॥चंद्र
सखीभजुबालकृष्णछवि, हरिचरणनचितलायेरी ॥
॥ १० ॥ १२ ॥

मोरमुकुटवंसीवारेने,मनमेरोहरिलीनो ॥टेक॥मंदिर
सेचकसुंदरिनिकसी, ओढ़िपीतांबरझीनो ॥रत्नजड़ि
तासिरईडरीसोहै,यमुनामारगलीनो ॥१॥ मैंयमुनाज
लभरनजातती, बीचमिलोरँगभीनो ॥ मोहिँदेखिमुस

कानमांवरो, चितवनमेंकछुकीन्हो ॥२॥ विमनभईज
लभरनाविसारिगई, घड़ाधरणिधरिदीनो॥लोकलाजकु
लकीमरजादा, तनमनअर्पणकीनो ॥३॥ वृंदावनकी
कुंजगलिनमें, ग्वालिनिझगराकीनो ॥ ग्लालबालसब
सखाकृष्णके, दानदहीकोलीने ॥४॥ कृपासखीभईरू
पदिवानी, प्रेमसुधारसपीनो ॥ श्रीगोपालहृदयमहँध
रिकै, जन्मसुफलकरिलीनो ॥ ५ ॥ १३ ॥

गागरियाजिनफोरोलालजी, मैतोहिदऊंगीगारी॥टेक
हमयमुनाजलभरनजातरही, बीचमिलेगिरिधारी १॥
गगरीफोरीवैयांमरोरी, मोतियनकीलरतोरी ॥२॥ले
करचीरकदमचढ़बेठै, हमजलमांझउघारी ॥ ३ ॥चीर
तुम्हारोजवहमदेंगे, जलसेहोजावन्यारी ॥४॥ जलसे
न्यारीकैसेहोंगी, तुमहोपुरुषहमनारी॥५॥पुरइनिपात्र
पहिरिराधानिकसी, कृष्णहँसेदेतारी ॥ ६ ॥ मथुराके
सबलोगहँसतहैं गोकुलकीव्रजनारी ॥७॥ तुमतोढो
टानंदरायके, हमवृषभानुदुलारी ॥८॥ जायपुकारों
कंसरायसे, भूलजावोचतुराई ॥९ ॥ चंद्रसखीभजुबा
लकृष्णछवि; तुमजीतेहमहारी ॥ १० ॥ १४ ॥

इति बुधवारके मंगल समाप्त

जेंवनकी गारी (राजभोग) प्रारंभः ।

प्यारीप्रेमलुभानी, प्रियाजीपरमसुखपाइयां ॥ टेक॥
आज्ञाप्रभुपाऊं, रुचिकरिबिंजनबनाइयां ॥१॥हलुआ

सरससुहारी, मूंगभातफुलकारियां ॥ २ ॥ घृतकरपाक मिठाई, खाझाखुरमाजलेबियां ॥ ३ ॥ दूधदहीलेआऊं, भाजीअनेककटोरियां ॥ ४ ॥ रुचिरथारसँवारूं, आ नधरींप्रभुआगियां ॥ ५ ॥ जेंओप्रभुप्यारे.देतसखीस बगारियां ॥ ६ ॥ निर्मलजलसरजू, रत्नजड़ावकीझा रियां ॥ ७ ॥ आचमनप्रभुकीजे,रंगमहलपगधारियां॥ ॥८॥रुचिरसेजसवारूं, रत्नजड़ावकीसेजियां ॥ ९ ॥ जापरहरिपौढ़ावूं, करगहिविजनाडोलाइयां ॥ १० ॥ चापूंपांवलालके,हितकरिबिरियांपाइयां ॥११॥ हँसि बोलेप्रीतमप्यारे, नैनसेनैनमिलाइयां ॥ १२ ॥जबनि द्राझुकिआई, ब्रह्माविष्णुमहेशियां ॥ १३ ॥ जागेसोई पावे, मुकुंददासबलिजाइयां ॥ १४ ॥ १ ॥

चरणकमलबलिहारी,रघुनाथकुंवरकी॥टेक॥दशरथ सहितऔरनृपबैठे, आदरचरणपखारी ॥ १ ॥ जेंवन बैठेराजादशरथ, बामेदाहिनेसुतचारी ॥२॥ रत्नजड़ि तमणिकनककटोरा, षट्रसभोगलागाये ॥ ३ ॥ छबिं निहारिरनिवाससमुदितभये,देतपरस्परगारी ॥४॥ ती नसौसाठमातुरघुवरकी, सोवहिँकनकअटारी ॥५॥ सत्यसुकृतकेसेकरिनिबहैं, वर्षदिननकीबारी ॥ ६ ॥ तीनसौसाठमातुरघुवरके एकपुरुषकीनारी ॥ ७॥ता मेंएकजनकजाकोदीजे,होइहैसुयशतुम्हारी ॥८॥ जब बोलेदशरथपुरोहित,सुनहुजनकजाकीनारी ॥९ ॥गा

गंकेमेंदेहुमेरेरामजीललाको, बोलहुवचनसँवारी ॥१०॥ जोचाहोसोलेहुपरीक्षा,राखहुअपनीअटारी॥११॥नि र्मलजलसरजूजीकोअँचवन,रत्नजड़ावकीझारी॥१२ करिअँचवनसिंहासनबैठे,राजतअवधविहारी ॥१३॥ हितकरिबीराजानकीलाई,देतहैंहाथपसारी ॥१४॥ तु लसिदासएसीछविरघुवर, हर्षितगातनिहारी ॥१५॥२ मिलिजेंवतजानकीरामजी, सखीहरखेंनिरखेंमिथि लापुरकी॥ टेक॥ पंचशब्दबाजंत्रबजावें,गारीगावतपं चमसुरकी॥१॥जनकभवनमेंडारिदुलीचा, ओटकरी पीतांबरकी॥२॥कुँवरिकुँवरगारीदेत, परनारीहँसींन्ट पकेकुलकी ॥३॥ श्रीलालजीमंदमंदमुसक्याने,सिया लाड़िलीघुंघटमेंमुसकी ॥ ४ ॥ जोउरझेसुरझेनपरेंआ ली,मोहनिदृष्टिपरीउनकी ॥ ५ ॥ हासविनोदसुधारस सींचत,आनंदबेलबढ़ीउनकी॥६॥चारोंभैयामिलिजें वनबैठे, रायजनकजोरीनिरखी॥७॥कीटमुकुटमक राकृतिकुंडल, श्यामघटाविजुलीचमकी॥८॥रत्नसिं हासनरघुवरबैठे,मोतियनकीकलँगीझलकी ॥ ९ ॥ ग रुड़विमानचढ़ेसुरहर्षे, पुष्पनकीवरषाबरसी ॥ १० ॥ अग्रदासबलिजातसुनयना, बारबारसीतावरकी ॥ ॥ ११ ॥ ३ ॥

भोजनसमयजानिमिथिलापति, दशरथबोलिपठाये जू॥टेक॥सुतनसमेतसंगप्रियपरिजन, द्विजनसहितनु

प आयेजू॥सहितसनेहजनकनृपभेंटे,नृपमंदिरलैआये जू॥कनककलशभरिलियेगंगाजल,निजकरपांवपखा रेजू ॥ चंदनचौकीसुठिसुंदर, तापरनृपबैठायेजू ॥ जनजनप्रतिकंचनकीथारी,जनप्रतिविपुलकटोरेजू ॥ व्यंजनविविधपरोसनलागे,चतुरसुआरनथोरेजू॥खा झाखुरसातपतजलेबी, पापरपुआसोहारीजू ॥ खोवा खांडचिरौंजीपेड़ाकूंचदहीलैआयेजू॥ झुमकिझुमकिप रसतदोउओरी, झुंकिझुंकिझांकतनारीजू॥भोजनचा रिप्रकारसुधारे,षट्‌रसस्वादसोहायेजू ॥पंचकवरकरि जेंवनलागे,देतनारिसबगारीजू ॥उमारमाशारदब्रह्मा णी,सुरवनितापुरनारीजू॥निरखिरामसुखकमलमह सुख,पावतगारीगायेजू ॥ लैलैनामपुरुषमिथिलापुर, अवधपुरीकीनारीजू॥लैलैनामजनकराजाके, नृपदश रथकीनारीजू ॥ गारीतुमहिंसुनाईभूपति, गारीपरस सोहाईजू ॥मुनिमहिपालबिलगजिनिमानो, कहियेब तबनाईजू॥ सुंदरिमुखदसुशीलसुलोचनि, सुरपतिना रिपियारीजू॥तुमगोरेकौशल्यागोरी,श्यामकुँवरकैसे जायेजू॥तरुणिबैसनहींसुतउपजे, मखहितमुनिहिंबो लायेजू॥भीतरभवनमहामुनिराखे, तिनऐसेसुतजाये जू॥रामजीकीमातुभरतजीकीजननी,दोउमुनिनयन लगायेजू॥पतिदेवतासुमित्रारानी, तिनकेबालकगोरे जूयचापतुमसमरथसबलायक,सुरपतिसखाकहायेजू

जनकरायजीकीकन्याब्याही,ऐगुनसकलदुरायेजू॥स
हितसमाजहँसतनृपदशरथ, रसरसभोजनपायेजू॥स
हितरामसुनिवचनव्यंगयुत,प्रेमसुधारससानेजू॥हास
विलासपरस्परसुनिसुनि,विनुगथमोलविकायेजू ॥भो
जनकरिउठिअँचवनकीन्हो, पानसुभगशुचिपायेजू।
भौजनप्रीतिपुनीतदेखिकै,तुलसिदाससुखपायेजू ४।४
जादिनरामजनकपुरआये,देखनधाईंसबसखियाजू॥
॥टेक॥कोउसखिठाढ़ीकोउसखिबैठी,कोउसखिफिर
तदिवानीजू॥१॥ अशनवसनसबभूलिगईहैं, उरजकि
रहीचितवनियाजू॥माथेमुकुटगलेबैजंती, बिप्रचरण
सोहनियाजू॥ जनकभवनमेंकनकबेदिका, बीचहिरा
खिचमनियाजू।जेंवनबैठेहैंचौभाई, पियरिपहिरिपरद
नियाजू।पीतांवरकेओढ़ेदुपाटा,हाथनपंचरतनिआजू,
कदलीखंभकलशगंगाजलदीपकधरेकमनियाजू।काटि
केहरिऐसेपतरीकमरी नाभीगहिरिगुमनियनाजूसुआ
कीसीचोंचनासिकासोहै,रत्नजड़ावझुलनियाजू।सीस
फूलमुक्ताकीशोभा, बेंदीगूंथीहैनगिनियाजू॥सारीसबु
जकुसुमकेलहँगा, अँगियाकेसरतानियाजू।दुइदुइचबि
चौतनियासोहैं, मंदरचीहैअँगुसियाजू॥ अम्मधवरस
मपहुँचीसोहै, बाजाअधिकलवनियाजू॥अष्टरतनकी
डोरीसोहैं, घूँघुरअधिकबजनियाजू॥ गारीगावैंप्रेमपि
यारी, सारीसरहजिनियाजू॥ श्रीरामललाजीकीमातु

कौशल्या,सवरनियानशिरोमनियाजू॥लषनलालजी कीमातुसुमित्रा,कोकहिसकैवरवनियाजू ॥ भरतलाल जीकीमातुकेकेई, उनपटतरनाहिंरनियाजू॥तीनसैसा ठिरामममातुतुम्हारि, एकपुरुषकीरनियाजू॥नितप्रतिध मरहतहैकैसेवरिसदिवसकीपरियाजू॥तामेंएकजनक जीकोदीजे,सेवाकरनहँसनियाजू॥तबउठिकैउपरोहि तबोलेसुनहुजनकजीकीरनियाजू॥राजादशरथजीकी लेहुपरीक्षा,राखोअपनीमहलियाजू॥भोजनकरिउठि अँचवनकीन्होपानसुभगशुचिपायेजू ।तुलसिदासआ सीसासियाबर,भक्तिसुरहैनिधनियाजू ॥ ५ ॥ ५ ॥

आरोगोरघुवीरमहाप्रभु,आरोगो ०॥टेक॥प्रफुलितहो यपरोसेजननी,ढोरतशीतलसमीर ॥ १ ॥कनकथारस णिजड़ितकटोरा,मेवामिठाईअरुखीर ॥ २ ॥ छप्पन भोगछतीसोव्यंजन,नानाविधिकोसीर ॥ ३॥ रघुवर लक्ष्मणभरतशत्रुहन,राजतचारोवीर ॥ ४ ॥ जनकसु ताझारीभरिलाई,सरजूकोनिर्मलनीर ॥ ५॥ चोवाचंद नमिलिकेपरघोरी,चरच्योश्यामशरीर ॥६॥ अचवन करकेबीरीलीजे,गावतदासकबीर ॥ ७ ॥ ६ ॥

आरोगोनरसिंहमहाप्रभु,आ० ॥टेक॥ नारदमुनिपन वारोल्याये, जनभरिल्यायेश्रीगंग ॥ १ ॥ लक्ष्मीजी भोजनआपसुधारे, मनसेंकरतअनंद ॥ २ ॥छप्पनभो गछत्तिसोव्यंजन, नानाविधिकेरंग ॥ ३ ॥भावप्रीति

करि भोजनकीजे, तुममेरोप्रानआनंद ॥ ४ ॥ अंतरघट केअंतरजामी, सबविधिजाननहार ॥ ५ ॥ आरतिसाज हुंलेआवे, खोलदियोपटद्वार ॥ ६ ॥ सनकसनंदनचँवरढुरावें, गारीगावतदासअनंद ॥ ७ ॥ ७ ॥

सिलिजेंवतलाड़िलिलालदोऊषटव्यंजनचाररसबैसरसे ॥ टेक ॥ मनमेंरसकीरुचिजोउपजै, सखीमाधुरीकुंजसुधाबरसे ॥ १ ॥ हटकेमनमोहनहाररहे, बटहाथजिमावतकौतरसे ॥ २ ॥ करकंपतबीचहिछूटिपरे, कबहूंगरमासुखलौंपरसे ॥ ३ ॥ सखिसौजलियेचहुँओरखड़ी, हरखौनिरखेंदरसेपरसे ॥ ४ ॥ सुखसिंधुअपारकह्योनपरे, अवशेषसखीहरिवंशलसें ॥ ५ ॥ ८ ॥

सिलिजेंवतरामजनकमंदिरमें, सबमिलिनारिजिमावेंजू ॥ टेक ॥ चारोंवीरथारमिलिएकै, कवरलेतसुखपावेंजू ॥ १ ॥ नवलवधुनवनेहनेहसों, कुलवधुसवेजुरिआवेंजू ॥ २ ॥ कुंवरनिनिरखतअतिमनहरखत, रसभरिगारीगावेंजू ॥ ३ ॥ शेषमहेशनिगमनारदमुनि, उनहुकेध्यानआवेंजू ॥ ४ ॥ जनहरियात्रियाधन्यजनकपुर, हँसिहँसिलाड़लड़ावेंजू ॥ ५ ॥ ९ ॥

बैठेलालाकुंजनमें, जोपावोश्यामाश्याम ॥ भावतिजोसोअपनेहाथजिमावो ॥ टेक ॥ दूधपकान्नमिठाईमेवा, रुचिरुचिभोगलगावो ॥ १ ॥ सखासहितहरिजेंवनबैठे, बहुविधव्यंजनगावो ॥ २ ॥ चंदनचर्चीपुष्पकीमाला

हरखिनिरखिपहिरावो ॥ ३ ॥ श्रीभटदेतपानकीवीरी युगलचरणचितलावो ॥ ४ ॥ १० ॥

नंदनंदनजीको, भोगलगे ॥टेक॥ महाशंखध्वनिघंटा बाजे ॥ १ ॥ अमृतभोक्ताश्रीयदुराई, छप्पनभोगश्रील क्ष्मीजीलाई॥२॥सत्यभामाजीनेवताकीन्हो, हरिहल धरजीकोनेवतादीन्हो ॥३॥चंदनकेजलभवनसिंचाये, सखासहितहरिजेंवनआये॥४॥दूधदहीपकान्नमिठाई, छप्पनभोगजीमेंदोउभाई ॥ ५ ॥ छप्पनभोगछतीसो व्यंजन, रुचिरुचिसोंजेंवेंयदुनंदन ॥ ६ ॥ सागपात जोजिनकेहोई,अमृतकरिजेंवेंहरिसोई ॥७॥ हरिजेंवेंह रिजनयशगावें, ललिताविशाखाचँवरढुरावैं॥८॥जन नामदेवद्वारेयशगावे,सोहरिकोपनवारोपावे ॥९॥११॥

भोजनकीजेसीताराम, सारग्राहीभावग्राहीप्रीतग्राही राम॥टेक॥दक्षिणलक्ष्मणअनुजशोभित, जनकसुता लियेवाम ॥ १ ॥ पवनसुततोसन्मुखविराजे,रटतनि शिदिननाम ॥ २ ॥ चारोंविधिसोंभोजनलीजे, रुचि रुचिअभिराम ॥ ३ ॥ मेवामिसिरीपौंपचावल, खोवा द्राखबदाम ॥ ४ ॥ भक्तहेतुआरोगियेप्रभु, सकलपू रनकाम ॥ ५ ॥ दासविठ्ठलदर्शनपावै, परमकरुणा राम ॥ ६ ॥ १२ ॥

रामजीप्रसादीपावोपवनसुत, रामजी० ॥टेक॥ पूरव पश्चिमउत्तरदक्षिण, चारोदिशासेआवो ॥ १ ॥ जहँज

हँ भोगलगें रघुवरको, श्रवणसुनतउठिधावो ॥ २ ॥ शि
वसनकादि आदिब्रह्मादिक, सबमिलिकेबरतावो ॥ ३ ॥
खट्टेमीठेओरचरपरे, रुचिरुचिभोगलगायो ॥ ४ ॥ ले
लेनामसकलव्यंजनको, आपनमेंबरतायो ॥ ५ ॥ जो
कनिकाकोब्रह्मादिकललचें, शंकरध्यानलगावें ॥ ६ ॥
श्रुतकीरतिउर्मिलामांडवी, सरजूजलअँचवावें ॥ ७ ॥
जनकसुताअपनेबालमको, शीतलपवनढुरावें ॥ ८ ॥
तुलसिदासछबिदेखिमगनभये, चरणकमलचित
लावें ॥ ९ ॥ १३ ॥

इति जेंवनकी गारी समाप्त।

अथ आचमनप्रारंभः ।

अँचवनकरत, किशोरकिशोरी ॥टेक॥ कोउसखीप्रभु
कोझारीभरिलाई, कोउखरिकालैदौरी॥१॥ कोउसखि
पानदानलियेठाढ़ी, कोउदर्पणलैदौरी॥कोउसखिप्रभु
जीकोबागोलैआवे, सियाजीकीपीतपिछौरी ॥३॥ को
उसखीप्रभुकीछबिनिरखत, कोउहँसेमुखमोरी ॥४॥
करिअँचवनसिंहासनबैठे, भलीबनीयहजोरी ॥५॥ से
वासखीयुगलछबिनिरखे, बीरादेतकरजोरी ॥ ६ ॥ १ ॥
अँचवनकरतसियारघुराई ॥टेक॥ कंचनझारीजलसर
जूको, सखीसुशीलालाई ॥ १ ॥ चंद्रकलासखीदेतअँ
गोछा, रतिखिरचालेआई ॥२॥ सुधामुखीसखिविरि
यापचावै, लावैअतरसुखदाई॥३॥ रूपशीलशोभानिधि

जोरी, निरखतदृगनअघाई ॥४॥ रामसेवकजीकेप्रभु सुखसागर, शेषप्रसादीपाई ॥ ५ ॥ २ ॥

युगलकिशोरी, अँचवतयुगलकिशोरी॥भोजनकरबैठे सिंहासन,मिलियेविराजतजोरी॥ टेक ॥कोउसखिच रणपछालतिठाढी, कोउसखिकरतनिहोरी ॥ कोउस खिलाईकुंपनखरिचा, युगलचरणहितजोरी॥१॥कोउ सखिप्यारेजीकोवागोलाई, कोईराधेजीकीसुरँगपटो री॥एकसखीदर्पणलैआई, एकदेतबीरीभरझोरी ॥ २ ॥ निजमंदिरबैठेपियाप्यारी कोउडारततृणतोरी॥सेवा सखिश्रीवल्लभजीकी जूंठनलैकैकरतनिहोरी ॥३॥३॥

अँचवनकीजै,अवधविहारी।शीतलसुंदरजलसरजूको निकटधरीभरिकंचनझारी ॥ टेक॥खांसाझीनाअमल अँगोछा, लियेठाढीहैजनकदुलारी ॥ सोलैकैकरवदन अँगोछो, वचनकहैंनिजमातुउचारी ॥१॥ कत्थाचूनो लौंगइलाची, लखणलगायेंपानसुपारी ॥पाइपानपोढ़ें त्रिभुवनपति,रामसेवककेप्रभुसुखकारी ॥ २ ॥ ४ ॥

अँचवनकीजेकृपानिधान॥टेक ॥ जलझारीललिता दिकल्याई, खिरचाविशाखापान॥ १ ॥कत्थासुपारी लौंगइलायची, बीरीचतुरसुजान ॥ २ ॥ श्रीभटदेतपा नकीबीरी, महिमाव्यासवखान ॥ ३ ॥ ५ ॥

अँचवनकीजे, कृपानिधान ॥टेक॥ जलझारीब्रह्मादि कल्याये,खिरचालायेइंद्रसुजान ॥१॥जयविजयलाये

लौंगइलाची, नारदलायेपान ॥ २ ॥ पनवारोसंतनको उत्तम, गावतजनभगवान ॥ ६ ॥ ६ ॥

इति आचमन समाप्त।

अथ पानकी बीरी और चौपड़ प्रारंभः।

सिंधुसुतामहरानी, खवावतसिंधुसुतामहरानी॥पानपुरानमसालनसंयुत, सांचिसुगंधसुजानी॥टेक॥जगन्नाथसुमुकातखातहैं, प्यारीलखिमुसकानी॥परमानंदअपारपरस्पर, कासोंजातबखानी ॥ १ ॥ बलदेवजीकोदेतरेवती, सुभद्राजीकोवानी ॥ सूदरशनकोसखियांखवावें, चारोंसुखकीखानी ॥२॥ पूगीफलगिरिलौंगजायफल, कपूरकीअरघानी ॥ पीकदानरत्नमयकरलिये, वल्लभसखियसयानी ॥ ३ ॥ १ ॥

खेलतहैंपियाप्यारी, पांसाखेलतहैंपियाप्यारी ॥रत्नजड़ितचौकीपरढारत,हँसतकरतकिलकारी ॥टेक॥ पहिलोदांवपऱ्योश्यामाको, पीतपिछौरीहारी॥अबकीबेरपियामुरलीलगावो, तौखेलौंगिरिधारी॥१॥जानतहोछलबलकरछूटो,कहोलालहरिहारी॥परमानंददासकेठाकुर,जीतीवृषभानुदुलारी ॥ २ ॥ २ ॥

खवावतकरकरबीरीपान, खवावतकरकरबीरी॥यकटकहोसोहनमुखनिरखत,देतपरस्परचीरी॥टेक ॥ हँसतनिहारतवदनश्यामको,तनुकीसुधिबिसरीरी ॥ रसिकरायमोहनकेअँगअँग,करछातियापरसीरी ।१।३।

बीरीलेवो, मेरेकरसों, रँगोलेलाल ॥ नागबेलऔसुगंध सुपारीतुमहींकोलाईघरसों ॥टेक ॥ मुक्ताकोचूनोक त्थालाई, लौंगइलाचीभरके ॥ संतनकोदीजेउधारप्रभु विनतीकरतहूंडरके ॥ १ ॥ ४ ॥

पानखवावतमोहन, प्यारीजीकोपानखवावतमोहन ॥ सुंदरमुखसुखदेखोइचाहत, नंदनँदनपियसोहन ॥ ॥ टेक ॥ यदपिकरतलनलेतलाड़िली, करतविनयपद गोहन ॥ श्रीभटनिपटदीनतनदेखत, मुसकिमुसकि दियोठोहन ॥ १ ॥ ५ ॥

बीरीदेतब्रजनारी, लालजीकोबीरीदेतब्रजनारी ॥पान सुपारीकत्थागुलाबी, लौंगनखीलसवांरी ॥टेक ॥ मृग नयनीखंजनसीठाढ़ी, कंचनवेलसवांरी ॥कमलकरन विचलैलैबीरी, ठाढ़ीकरतमनुहारी ॥ १ ॥ कहतलाड़ि लीबीरील्योप्रभु, श्यामसुंदरशुभकारी ॥ कृष्णदास गिरिधरआरोगो, श्रीवल्लभप्राणअधारी ॥ २ ॥ ६ ॥

पानकीपानकीपानकी, बीरीदेऊंगीबनायरसपानकी ॥ टेक ॥ आवोकृष्णमिलिचौपरखेलें, बाजीबनीदिल जानकी ॥ १ ॥ कत्थाचूनालौंगइलायची, ऐसीदेऊंअनु मानकी ॥ २ ॥ तेरीवंसीनेकान्हासबजगमोह्यो, बेटी मोहीवृषभानकी ॥ ३ ॥ कृष्णजीवनलछीरामकेप्रभु, प्यारेजोड़ीबनीराधेश्यामकी ॥ ४ ॥ ७ ॥

इति पानकी बीरी समाप्त ।

अथ पंगतकी धुनप्रारंभः ।

अवधसोहावनअतिमनभावन, तलेबहैसरजूनीर ॥ सुमिरोमनजैजैजैरघुवीर ॥टेक॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, संगसखनकीभीर ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमराकृतकुंडल, गलेबिचमुक्ताहीर ॥ २ ॥ शारंगधनुषबाणकरराजे, पहिरेपीतांवरचीर ॥ ३ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजे सोहतश्यामशरीर ॥४॥ संगसखासरजूतटबिहरें, रामलक्ष्मणदोउवीर ॥५॥ बामेअंगजानकीविराजे, दहिनेश्रीलक्ष्मणवीर ॥६॥ रूपनिहारिचकितभएरतिपति, शारदशेषमतिधीर ॥ ७ ॥ नामप्रतापतेरेजलथलमें, गीधव्याधकपिकीर ॥ ८ ॥ जिनचरणनकोध्यानधरतहैं, हरतसंतजनपीर ॥९॥ जनबालानंदरघुवरजीकेशरणे, गावतगुणगंभीर ॥ १० ॥ १ ॥

नगरअवधपुरकंचनराजै, बिहरतकमलाधीश॥सुमिरो मनजयजयजयअवधेश ॥१॥भालतिलकगलेहीरासोहै, शिरघूंघुरवालेकेश ॥२॥ कटिपरपीतपितांबरबांधे, रूपधरेनृपभेस॥३॥सुरनरमुनिजयशब्दउच्चारें, वर्षतपुष्पनमेघ ॥ ४॥ शुकसनकादिनारदमुनिगावैं, सेवतशंभुगणेश॥५॥रामचरणजलदाससुदर्शन, मोनमनोपरवेश ॥ ६ ॥ २ ॥

सुमिरुमन, जयजयजयब्रजराज॥टेक ॥मथुरामैहरि

जन्मलियोहै, भक्तवत्सलमहाराज १ मथुरासेहरिगोकु
लआये, कंसकोभईहैअवाज ॥ २ ॥ केशीमारकंसपछारे,
उग्रसेनकोदियोहैराज ॥ ३ ॥ दावानलकोपानकियोहै,
नाथ्योहैकालीनाग ॥ ४ ॥ डूबतसेव्रजराखिलियोहै, न
खपरगिरवरधारी ॥ ५ ॥ पांडुनप्राणदानयदुनंदन, रा
खीहैद्रोपदीकीलाज ॥ ६ ॥ जलडूबतगजराजउबारे,
चक्रसुदर्शनधार ॥ ७ ॥ जनव्रजानंदगोपालजीकेशर
णे, जन्मसुफलभयोआज ॥ ८ ॥ ४ ॥

सुमिरुमन, रामसच्चिनंद ॥ टेक ॥ जोसुमिरेत्रयता
पहरतहैं, परतनयमकेफंद ॥ १ ॥ ऋषिमखराखिनिशा
चरमारे, अभयकियेमुनिवृंद ॥ २ ॥ पदरजपरसिशि
लाभईसुंदरि, धायेउबारगजेंद्र ॥ ३ ॥ जनकस्वयंब
रपावनकीनो, तोरोहैधनुषप्रचंड ॥ ४ ॥ सियाविबाहि
अवधपुरआये, घरघरभयोहैअनंद ॥ ५ ॥ मातकौ
शल्याकरतआरती, निरखतपूरणचंद ॥ ६ ॥ जैजैका
रभयोसुरपुरमें, गावतश्रीबालानंद ॥ ७ ॥ ५ ॥

सुमिरोमन, जयवंकटबलवीर ॥ टेक ॥ ऊंचेसेपर्वत
कोयलविराजे, झाड़ीहैगहिरगँभीर ॥ १ ॥ त्रिपतीमें
सीतारामजीविराजें, चौकीहैलक्ष्मणवीर ॥ २ ॥ शेषा
चलपरआपविराजें, चौकीहैहनुमतवीर ॥ ३ ॥ जय
औविजयदोउपौरियाविराजें, हिगपुष्करिणीनीर ॥

॥ ४ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजैं,शोभतश्यामशरीर ॥
॥५॥क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल,गलेविचमुक्ताहीर॥
॥ ६ ॥ शेषवाहनअसवारीसोहै, सँगसंतनकीभीर ॥
॥ ७ ॥ जनहाथीरामवंकटजीकेशरणे, गावतगुणगंभीर ॥ ८ ॥ ६ ॥

अच्छेरामजीललाकौशल्यानंद,सुरनरमुनिगावेंजय जयजगवंदन॥टेक॥पुरीअयोध्यासरजूतीर, हरिबाल लीलाखेलैंरघुवीर ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटकुंडलवनमाला, हरिभालतिलकसोहैंनैनबिशाला ॥ २॥ कटिकिंकिणि पीतांवरराजे,हरिचारुनिगमधुनिनूपुरबाजे ॥ ३ ॥ ब्रह्मादिकजाकोपारनपावैंहरिताहिकौशल्यारानीगोदखेलावें ॥ ४ ॥ तोतरिबानीअधिकसोहावै, हरिनिरखिकृपासखिवलिवलिजावै॥५॥ ७ ॥

भजोहोमनसीताराम,मिटेदुखद्वंदना॥टेक॥जाकीमाया,जगतभुलाया, तातार्थेईनननना ॥ ब्रह्माजाको पारनपावैं, गावैंसनकसनंदना ॥ १ ॥ देवकीकेगृह आये,जैसेपूरणचंद्रमा॥सुरनरमुनिजाकोध्यानधरत हैं,साधुकरैंवंदना॥२॥हिरणाकुशनखउदरबिदाऱ्यो, प्रल्हादकोराखना॥वलिराजाकेद्वारपधारे,भेखधरेबामना ॥ ३ ॥ मथुरामेंहरिकंसपछारे,लंकापतिरावना॥ द्रुपदसुताकोचीरबढ़ायो,कालीनागनाथना ॥ ४ ॥

औरनकोहरियेढ़ेटेढे, नंदजीकेलालना ॥ साधुनकोह रियेमेलागें, जैसेशीतलचंद्रमा ॥ ५ ॥ भनतनामदेव मुनोहोत्रिलोचन, जोसाधुनकीनिंदाकरेताहिकोनि कंदना ॥ ६ ॥ ८ ॥

इति पंगतकी धुन समाप्त ।

अथ सर्वतीर्थसहित चारों धामकी महाजयप्रारंभः ।

जेवतसंत, हरिहरकरैं ॥ धनपुरुषनकीभाग ॥ जिनकेगृ हपावनभये, संतपधारेआय ॥ बोलियोमधुरीसीबानी प्रेमसेहरे ॥ श्रीमन्नारायणकीजय ॥ ज्योतिस्वरूपनारा यणकी ॥ स्वयंब्रह्मनारायणकी ॥ सच्चिदानंदनारायण की ॥ अव्ययपुरुषनारायणकी ॥ लक्ष्मीनारायणकी ॥ अवधपुरीकी ॥ अवधसरजूकी ॥ रामसरजूकी ॥ आदि सरजूकी ॥ १० ॥ सरजूबिरजाकी ॥ जन्मस्थानकी ॥ रामकोटकी ॥ रंगमहलकी ॥ रंगभवनकी ॥ रत्नसिं हासनकी ॥ कनकसिंहासनकी ॥ कनककोटकी ॥ सप्त सागरकी ॥ हनुमानजीमहाराजकी ॥ २० ॥ सुग्रीव टिलाकी ॥ अंगदटिलाकी ॥ क्षीरसागरकी ॥ वसिष्ठ मुनिकी ॥ वासिष्ठकुंडकी ॥ धनंजयतीर्थकी ॥ चक्रती र्थकी ॥ ब्रह्मघाटकी ॥ राजघाटकी ॥ लक्ष्मणघाटकी

॥ ३० ॥ स्वर्गद्वारीघाटकी ॥ अहल्याघाटकी ॥ वासुदेवघाटकी ॥ जानकीघाटकी ॥ रामघाटकी॥हनुमानकुंडकी॥स्वनरवरकुंडकी॥अनीकुंडकी ॥ सातीकुंडकी ॥विद्याकुंडकी ॥ ४० ॥ त्रिलोकगंगाकी॥मणिपर्वतकी॥सजुहाकुंडकी ॥सूर्य्यकुंडकी ॥ सूर्य्यनारायणकी॥कल्पवृक्षकी॥विलहरघाटकी॥भरतकूपकी॥ नंदिग्रामकी ॥ निर्मलीकुंडकी ॥५०॥ गुप्तारघाटकी ॥ जमथलातीर्थकी ॥ दाशरथीरामकी ॥ दशरथनंदनकी ॥ कौशल्यानंदनकी ॥ केकईनंदनकी ॥ सुमित्रानंदनकी ॥ रघुवंशमणिकी ॥ रघुवंशकुलभूषणकी ॥ रघुवंशभूषणरामरघुनाथकी॥रघुवंशदुलारेरामरघुनाथकी ॥६०॥ दाशरथीरामरघुनाथकी ॥रघुवंशकुलरामरघुनाथकी ॥ दशरथनंदनरामरघुनाथकी ॥ कौशल्यानंदनरामरघुनाथकी ॥ केकईनंदनरामरघुनाथकी॥अवधविहारीरामरघुनाथकी॥अवधेशरामरघुनाथकी॥अवधमंडलरामरघुनाथकी॥अवधरमणरघुनाथकी ॥७०॥ अवधेशकुमाररामरघुनाथकी ॥ जानकीपतिरामरघुनाथकी ॥ जानकीरमणरामरघुनाथकी॥जानकीविहारीरामरघुनाथकी॥जानकीविनोदकरामरघुनाथकी॥जानकीवल्लभरामरघुनाथकी॥गंगास्नोरामाकी॥मुक्तानाथक्षेत्रकी ॥शालग्रामदेवकी

शालग्रामीगंगाकी ॥ ८० ॥ शालग्रामपरमात्माकी ॥ जनकपुरक्षेत्रकी ॥ जनकविदेहकी ॥ जनकमहाराजकी ॥ जनकनंदिनीमहाराणीकी ॥ जनकदुलारीकी ॥ जनककिशोरीकी ॥ जनकलाड़िलीकी ॥ जनकजामहाराणीकी ॥ जनककन्यामहाराणीकी ॥ ९० ॥ जनकपावनीमहाराणीकी ॥ जनककेजमाईकी ॥ आदिवाराहस्वामीकी ॥ कालियाकंतभगवानकी ॥ कंतविलासीकी ॥ ब्रह्मपुत्रीकी ॥ चटगामवालुवाकुंडकी ॥ हयग्रीवभगवानकी ॥ हयग्रीवमाधवकी ॥ कपिलमुनिभगवानकी ॥ १०० ॥ कपिलमुनिदरियाईकी ॥ गंगासागरकी ॥ रामकुंडकी ॥ सीताकुंडकी ॥ लक्ष्मणकुंडकी ॥ रामानुजस्वामीकी ॥ छाछकासिनीकी ॥ क्षीरचौराठाकुरकी ॥ साखीगोपालकी ॥ श्रीजगन्नाथधामकी ॥ ११० ॥ श्रीजगन्नाथस्वामीकी ॥ श्रीवलभद्रसुभद्राकी ॥ श्रीमहाप्रसादकी ॥ नीलचक्रकी ॥ सुदर्शनचक्रकी ॥ इंद्रद्युम्नतीर्थकी ॥ मार्कंडेयतीर्थकी ॥ महोदधिसागरकी ॥ श्वेतगंगाकी ॥ रोहिणीकुंडकी ॥ १२० ॥ वटेकृष्णभगवानकी ॥ सिद्धहनुमानकी ॥ वीरहनुमानकी ॥ अतुलितवलहनुमानकी ॥ मच्छोद्रीहनुमानकी ॥ सिंधुउल्लंघनहनुमानकी ॥ सिंहिकासंहारनहनुमानकी ॥ मैनाकपावनहनुमानकी ॥ लंकिनीदहन

हनुमानकी ॥ विभीषणप्रबोधकहनुमानकी ॥१३०॥
सीताप्रबोधकहनुमानकी ॥ लंकादहनहनुमानकी ॥
अक्षयमर्दनहनुमानकी॥कालनेमिमर्दनहनुमानकी॥
अहिरावणमर्दनहनुमानकी ॥ भरतप्रबोधकहनुमान
की ॥ गोरखमूर्तिहनुमानकी ॥ शबरीनारायणकी ।
राजीवलोचनकी ॥ १४० ॥ अमरकंटकपर्वतकी॥कू
मंधाराकी ॥ सहोद्रीनृसिंहकी ॥ पन्नानृसिंहकी ॥ शे
पाचलवासीकी ॥ सर्वघटनिवासीकी॥प्रसन्नबंकटेश
की ॥ उग्रवंकटेशकी ॥ वारबंकटेशकी ॥ बंकटेशज म
हाराजकी॥१५०॥चरणकुंडकी ॥ पुष्करिणीगंगाकी॥
हनुमानजीमहाराजकी॥त्रिपतीनाथमहाराजकी॥सी
तारामजीमहाराजकी॥धनुषधारीमहाराजकी ॥ वीर
राघवमहाराजकी ॥ पक्षीतार्थकी ॥ रामानुजस्वामी
की ॥श्रीप्रेममधुरकी ॥ १६० ॥ कांचीपुरीकी ॥ कांची
व्रजराजस्वामीकी ॥ वरदराजभगवानकी ॥ श्रीमुष्टी
स्वामीकी ॥ श्रीरंगनाथधामकी ॥श्रीरंगस्वामीकी॥
श्रीरंगभगवानकी ॥ कावेरीगंगाकी ॥ काबेरीमहारा
णीकी ॥ दक्षिणद्वारकाकी ॥ १७० ॥ नवपाषाणकी ॥
श्रीरामनाथधामकी॥धनुषतीर्थकी ॥ राममहोलेकी ॥
द्रव्यसेनभगवानकी॥ठोकरनाथस्वामीकी ॥अलगर्ज
स्वामीकी॥सुंदरबाहुभगवानकी ॥ तोताद्रीनाथकी ॥
लंबेनारायणकी ॥ १८० ॥ कुमारीकन्याकी ॥ आदि

केशवभगवानकी॥पद्मनाभभगवानकी ॥ जनार्दनभगवानकी ॥देवनारायणभगवानकी ॥ जंगजीतगोपालकी ॥ हेमगोपालकी ॥ मैलकोटापाटकी ॥ श्रीचलपलरायभगवानकी ॥ श्रीचलपलस्वामीकी॥१९०कल्याणीगंगाकी॥पुष्करिणीगंगाकी॥श्रीनृसिंहस्वामीकी॥श्रीपंपापुरीकी ॥ वालीसुग्रीवकी ॥ अंगदहनुमानकी ॥ रामलक्ष्मणमहाराजकी॥स्फटिकशिलाकी ॥ गंगातुंगभद्राकी ॥ कृष्णागंगाकी ॥२००॥ परशुरामभगवानकी ॥पंढरीनाथभगवानकी ॥ चंद्रभागागंगाकी ॥ अगस्तिकुंडकी ॥ सर्वतीर्थकी ॥ मैकलपर्वतकी ॥गोदावरीगंगाकी ॥ गंगाद्वारकी ॥ कुशावर्तकी ॥ २१० ॥ चक्रतीर्थकी ॥ नाशिकपुरीकी ॥ रामकुंडकी ॥ पंचवटीनाथकी ॥ सीतारामजीमहाराजकी ॥ लक्ष्मणजीमहाराजकी ॥ तपोवनकी ॥ लंबेहनुमानकी ॥ दंडकारण्यकी ॥ लक्ष्मणकुंडकी ॥ २२०॥ सीताकुंडकी॥रामशय्याकी ॥ तापीगंगाकी ॥ गुमानदेवमहाराजकी ॥नर्मदागंगाकी ॥ शुक्लतीर्थकी ॥ शुक्लनारायणकी॥ शेषनारायणकी ॥ अवंतिकापुरीकी ॥ महाकालेश्वरकी ॥२३० ॥सफरागंगाकी ॥ अंगपातक्षेत्रकी॥डाकोरनाथस्वामीकी॥गोमतीतीर्थकीजय ॥ रणछोड़स्वामीकी॥तुलसीव्यासकी॥माधवप्राचीकी॥ आदिप्राचीकी ।प्रभासपाटनकी॥गिरिनारीध्वजाधा

रीकी॥ हनुमानधाराकी ॥ २४० ॥ शेषावनकी ॥ पादुकातीर्थकी॥रामानुजस्वामीकी॥गोमुखीधाराकी॥ अंबिकादेवीकी॥ दत्तात्रेयभगवानकी ॥दामोदरकुंडकी ॥ सुदामापुरीकी॥गोमतीसंगम की ॥संगमनारायणकी ॥२५० ॥ द्वारिकानाथधामकी ॥ रणछोड़टीकमकी॥ कुँवरकल्याणकी ॥ माधवपुरुषोत्तमकी॥रुक्मिणीमहाराणीकी॥सत्यभामामहाराणीकी॥जाम्बवतीमहाराणीकी॥शैब्यामहाराणीकी ॥नागकन्यामहाराणीकी॥तुलसीमहाराणीकी ॥२६०॥ यमुनामहाराणीकी ॥ वृंदामहाराणीकी ॥शंखनारायणकी ॥ शंखोद्धारकी ॥नारायणक्षेत्रकी ॥ आदिनारायणकी ॥ चपलेश्वरमहादेवकी ॥ नीलकंठमहादेवकी ॥ कोटेश्वरनाथमहादेवकी॥धरणीधरभगवानकी ॥२७० ॥ बिंदुसरोवरकी ॥कर्दमऋषिकी ॥ सरस्वतीगंगाकी॥गोविंदमाधवकी ॥ आबूपर्वतकी ॥ आबूकेसिद्धोंकी॥ हृषीकेशभगवानकी ॥मधुसूदनभगवानकी ॥ वसिष्ठमुनिकी ॥ ब्रह्मखंडकी ॥ २८०॥ नषीतलावकी॥रूपचतुर्भुजठाकुरकी॥लोहागरपुष्करकी॥प्रह्लादजीमहाराजकी ॥ प्रह्लादपुरीकी ॥ प्रह्लादपर्वतकी ॥श्रीनृसिंहस्वामीकी ॥ नृसिंहपहारकी ॥ नृसिंहकटाक्षकी॥शिलोदकागंगाकी॥२९० ॥नागार्जुनकी ॥ त्रिकूटादेवीकी ॥ मणिकर्णिकाकी॥ त्रिलोकीनाथठाकुरकी॥अ

त्रातीर्थकी ॥ रेवालसरतीर्थकी ॥ हरिद्वारपुरीकी ॥ गंगाभागीरथीकी ॥ हृषीकेशभगवानकी ॥ केदारनाथकी॥३००॥ अमरनाथकी ॥ बदरीनाथधामकी ॥बदरीविलासकी ॥योगध्यानीबालाकी॥ तप्तकुंडकी ॥ नारदकुंडकी ॥ अलकनंदागंगाकी ॥ कूर्मधाराकी ॥ नंदप्रयागकी ॥ करणप्रयागकी ॥ ३१० ॥ ब्रह्मप्रयागकी ॥महाप्रयागकी ॥नरनारायणकी ॥ त्रियुगनारायणकी ॥ कौसल्यागंगाकी ॥ रामगंगाकी ॥ वृंदावनचंद्रकी ॥ वृंदावनविहारकी ॥ वृंदावनरक्षपालकी॥वृंदावनपालनकी॥३२०॥ वृंदावनपावनकी ॥ वृंदावनधीरसमीरकी ॥ यमुनामहाराणीकी ॥कालिंदीमहाराणीकी ॥ गोविंदजीमहाराजकी॥ कुंजविहारीभगवानकी॥ धेनुचारीभगवानकी ॥राधामाधवभगवानकी॥राधारमणभगवानकी ॥राधाविहारीभगवानकी ॥३३०॥राधावल्लभभगवानकी ॥राधाविनोदभगवानकी॥राधासुखधामभगवानकी ॥राधाआनंदभगवानकी ॥ राधिकापतिभगवानकी ॥ राधारमणभगवानकी ॥ गोपविहारीभगवानकी ॥ गोपरक्षणभगवानकी ॥गोक्रीडाभगवानकी॥गोपहास्यभगवानकी ॥ ॥३४०॥ गोपीवल्लभभगवानकी ॥ गोपीरमणभगवानकी ॥ गोपिकानंदनकी ॥ गोपांगनापावनभगवानकी॥गोकुलापुरीकी॥नंदनंदनकी ॥ यशोदानंदनकी॥

वसुदेवनंदनकी ॥ देवकीनंदनकी ॥ रोहिणीनंदनकी ॥ कृष्णबलदेवकी ॥ ३५० ॥ वृषभानुदुलारीकी ॥ वृषभानुकिशोरीकी ॥ वृषभानुलाड़िलीकी ॥ वृषभानुकन्याकी॥वृषभानुकेजमाईकी ॥ माखनचोरकी ॥ दधिचोरकी ॥ नंदकिशोरकी ॥ कालीदमनकी॥३६०॥ कालीमर्दनकी॥कालमदमोचनकी॥कालीनवनकी॥ मदनमोहनभगवानकी ॥ मदनगोपालकी ॥बंसीबटधीरसमीरकी ॥ गोवर्धनधारीकी॥गोवर्धनपर्वतकी ॥ गिरिराजमहाराजकी ॥ मानसीगंगाकी ॥ ३७० ॥ मथुरापुरीकी ॥मथुरामुष्टिकमर्दनकी॥चाणूरमर्दनकी॥ कंसमर्दनकी ॥ कंसशत्रुकी ॥ कंसमोक्षणकी ॥ केशीमर्दनकी ॥ केशीउद्धारणकी ॥ कुब्जापावनकी॥बांकेबिहारीकी ॥ ३८० ॥ छैलबिहारीकी ॥ छैलचिकनियाकी ॥ चिकनियाठाकुरकी ॥ मोरमुकुटधारीकी ॥ श्रीधरभगवानकी॥अटलबिहारीकी ॥ लीलापुरुषोत्तमभगवानकी ॥ यदुवंशमणिभगवानकी ॥ यदुवंशभूषणभगवानकी ॥ यदुवंशदीपकभगवानकी ॥ ३९० ॥ यदुवंशउजागरभगवानकी ॥ वासुदेवभगवानकी॥संकर्षणभगवानकी॥ प्रद्युम्नभगवानकी ॥ अनिरुद्धभगवानकी ॥चतुर्व्यूहकभगवानकी ॥ यमुनामहाराणीकी॥विश्रामघाटकी॥कंसानलाकी ॥ नैमिषारण्यमिश्रिखकी॥ ४०० ॥ धेनुमतीगंगाकी॥ कुशावर्तकी ॥ ग

थागदाधरभगवानकी ॥ फल्गुगंगाकी ॥गयापुरीकी॥ काशीपुरीकी ॥काशीविश्वेश्वरनाथकी॥मणिकर्णिका घाटकी ॥ अन्नपूर्णादेवीकी ॥ गंगाभागीरथीकी ॥ ॥४१०॥ प्रयागराजकी॥ तीर्थराजमहाराजकी ॥ मा धवत्रिवेणीकी॥सरस्वतीगंगाकी ॥भरद्वाजमुनिकी ॥ अक्षयवटकी॥संकटमोचनहनुमानकी ॥श्रीचित्रकूट केनाथकी ॥ कामदनाथकी ॥४२०॥ मुखारविंदकी॥ अनसूयामाताकी॥अनसूयाआश्रमकी ॥लक्ष्मणटेक रीकी॥भरतकूपकी॥ हनुमानधाराकी ॥ देवांगनाकी॥ दधिकुल्याकी॥४३०॥मधुकुल्याकी॥घृतकुल्याकी ॥ सर्वतीर्थकी ॥ श्रीसीतारामआश्रमकी॥श्रीसीताराम वनविहारीकी ॥ लक्ष्मणवनविहारीकी ॥ स्फटिक शिलाकी ॥ गंगामंदाकिनीकी ॥ राघवेंद्रकी ॥ ध्रुव यादवेंद्रकी ॥ ४४० ॥ प्रह्लादइंद्रकी ॥ इंद्रपुरीन्द्रकी ॥ वलीइंद्रकी ॥ छलीइंद्रकी ॥ श्रीनृसिंहदेवकी ॥ हनु मानदेवकी ॥ गरुडदेवकी ॥ चारधामकी ॥ चारसंप्रदायकी ॥ बावनद्वारेकी ॥ ४५० ॥ अनंतकोट वैष्णवनकी ॥ दाताभोक्ताकी ॥ स्थानपुरुषकी ॥ अ पनेअपनेगुरुगोविंदकी ॥ श्रीरामकृष्णदेवकी ॥ श्री महाप्रसादकी ॥

दोहा-रामकहेसुखऊपजे, कृष्णकहेदुखजाय॥महिम

महाप्रसादकी, पावोंप्रीतिलगाय ॥ १ ॥ बोलियोमधु रीमोबानीहरे ॥

इति सर्वतीर्थसहित चारों धामकी महाजय संपूर्ण ।

अथ गुरुवारकी गौरीप्रारंभः ।

देवातेरीभक्तिनछांड्रमुक्तिनमाँगूं हरियशसुनहुँसुनाऊं ॥टेक ॥ रामकृष्णअवतारमनोहर, जन्मजन्मयशगाऊं ॥ १ ॥ गंगाजलअसनानकराऊं, पीतांबरपहिराऊं॥ तुलसीआनिगोपालहिपूजौं, चंदनसरसचढ़ाऊं ॥२॥ चुनिचुनिकलियांमैंहारबनाऊं, रघुवरउरपहिराऊं॥धूपदीपनैवेद्यआरती, यहिविधिलाड़लड़ाऊं ॥३॥ हरखिनिरखिहरिकेगुणगाऊं, हाथनतालबजाऊं॥भनतनामदेवसुनहुत्रिलोचन, यहिविधिदासकहाऊं॥ ४॥ १॥ अयोध्याआजसनाथभईहै॥ टेक ॥ राजादशरथगृह रामजन्मलियो, रत्ननभूमिछईहै॥ हीरालाललगेपलनामें, झूलतरामसहीहै ॥ १ ॥ कंचनमहलबनेदशरथके, सरजूनिकटबहीहै॥राजादशरथगृहनौबतबाजे, लंकामेंखबरभईहै ॥ २ ॥ सबसखियनमिलिमंगलगाये, गावतरागसहीहै ॥ राजादशरथजीकेचारपुत्रहैं, लक्ष्मणरामजीसहीहै॥३ ॥गुरुवसिष्ठकुलपूज्यहमारे, मांगतदानसहीहै ॥तुलसिदासधनिधनिकौसल्या, मनसा सुफलभईहै ॥ ४ ॥ २ ॥

अँगनामें, खेलत चारौं भाई श्री अ० ॥टेक॥ राजा दशरथजीके चारि पुत्र हैं चारों कुँवर कन्हाई॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, शोभा वरणि न जाई ॥ १ ॥ चारों रतनको खेल रच्यो है, फूलन गेंद बनाई ॥ तीन लोककी सकल संपदा अवधपुरी चलि आई ॥ २ ॥ ठौर ठौर मुनिजनके आसन, बैठे ध्यान लगाई ॥ राजा दशरथ गृह नौबत बाजे, घर घर बजत बधाई॥ ३ ॥ कल्पवृक्ष तले रत्न सिंहासन, जहँ बैठे रघुराई मात कौसल्या करत आरती, आनँद उर न समाई॥ ४ ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै, दशरथ सुत रघुराई॥ ॥ ५ ॥ सरजूके तीर अयोध्या नगरी, अपने हाथ बनाई ॥ तुलसीदास धन्य कौसल्या, भाग्य बड़े जिन पाई॥ ६ ॥ ३॥ श्री अँगनामें, खेलत दूनौ भाई॥ टेक॥ श्री हलधर जीने खेल रचो है, वर्णत शेष लजाई॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता, चढ़ि बिमान तहँ आई ॥ १ ॥ आस पास सब ग्वाल मंडली, बीचमें खेल बनाई ॥ एक ओर बलदाऊ भैया, एक ओर कुँवर कन्हाई ॥ २ ॥ इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीचमें यमुना आई॥ स्वर्गलोक पाताल लोककी, संपति तहँ चलि आई॥ ३ ॥ नित उत्साह होत ब्रजमंडल, निगम नेति यश गाई गोकुलदास धन्य ब्रजजीवन, भाग्य बड़े जिन पाई॥ ४ ॥ ४॥ बोलनकी बलि जैहों लाल, इन बोलनकी० ॥ टेक ॥ छोटे छोटे चरण अधर तल सुंदर, ठुमकि ठुमकि चलि जैहों॥ क

टिकिंकिणिपगनूपुरबाजे,मधुरेशब्दसुनैहौं ॥ १॥ सब
बालकरघुबरछबिनिरखत,प्रेमप्रीतिलपटैहौं।घूंघुरवा
रे अलकवदनपर, मंदहसनसुखदेहौं ॥२॥जाकोध्यान
धरतब्रह्मादिक, शारदगानकरेहौं ॥ गोदराखिपय
पानकरावत, दशरथलेतबलैयाहौं॥३॥यहछबिदेखि
मगनभयेसुरमुनि, रविशशिकोटिलजैहौं ॥४॥शिवस
नकादिआदिब्रह्मादिक, निगमनेतियशगैहौं ॥अग्रदा
सभजोदशरथनंदन, दिनप्रतिदिनअधिकैहौं ॥५॥५॥
श्रीराघवजीको, दूधपियावतरानी॥टेक॥कौशल्याके
कईसुमित्रा, ढिगढिगबैठिसयानी॥१॥कौतुककरतल
लितसुतचारो, बोलततोतरिबानी॥लेतमँगाइजोइम
नभावै, मातुदेतहितमानी ॥२॥ अवधनारिस्वारथर
तआवैं, रघुबररूपलुभानी ॥ रामसेवकजीकिप्रभुसुख
सागर, गावतसुरपुरबानी ॥ ३ ॥ ६ ॥
अयोध्याबिमलपुरीहमजानी॥टेक ॥बिमलापुरीबिम
लसरजूजल, बिमलरामराजधानी ॥ १ ॥ बिबिधधा
ममणिश्यामअरुणासित,हेमपंकटाचितटानी ॥हरित
मणिनकेखंभजगमगत,हेरतदिशाभुलानी ॥२॥ तोर
णकेतुपताकध्वजाधन,गलियनकोटनवानी ॥सुरतरु
कामधेनुचिंतामणि, मनबांछितफलदानी ॥३॥ भूपभ
वनसबभांतिअलौकिक,केहिबिधिजातबखानी॥मरक
तमणिमयअजिरसोहावन, बिहरतशारंगपानी ॥ ४॥

फूलेनीलफूलसरजूके, सोहैसरितवरपानी ॥ मानहुँबि
पुलवसेसरजूतट, हरिरमाशंभुभवानी ॥ ५ ॥ गुंजतम
धुपप्रागरसमाते, काहेस्वादबखानी ॥ मानहुँरामरसि
करसछाके, गद्गदरसरतिसानी ॥ ६ ॥ सरजूसलिलसुधा
शीतलशुचि, सकलसुखनकीखानी ॥ मानहुँभक्तिधार
भवतरणी, प्रभुपुरनिकटबहानी ॥ ७ ॥ सहिनसकतत
रुभारफूलफल, लमभूमिनियरानी ॥ देतबोलायपथि
कजनुकरगहि, देखतदेहभुलानी ॥ ८ ॥ केकीहंसकपो
तकोकिला, मिलिझुंडनहर्षानी ॥ निरखतमुदितमंड
लीजहँतहँ, युवाबालबृधअवसानी ॥ ९ ॥ निरखिनारि
नरअवधनगरके, मोहतरूपलुभानी ॥ कोकहिसकैरूप
अतिसुंदर, उपमासुरमुनिशेषबखानी ॥ १० ॥ धन्यसर
जूसाकेतनगरते, धन्यसेवकासिवकानी ॥ धन्यधन्यनृप
दशरथराजा, धन्यकौशल्यारानी ॥ ११ ॥ कृपानिवास
विमलकंचनपुरि, गुंजतसकलमनमानी ॥ बिहरतसरजू
पुलिननलिनमिलि, लालललीगहिपानी ॥ १२ ॥ ७ ॥
कहनलागेरघुवर, मैयामैया ॥ टेक ॥ राजादशरथजी
कोबाबाबाबा, लक्ष्मणजीकोभैया ॥ मातुकौशल्याभ
गिसराहै, मेरेरघुबरबलिजैया ॥ १ ॥ दूरिखेलनजानिज
बोप्यारे, रघुवरखेलहुघरअँगनैया ॥ रंगमहलचढ़िटेरै
कौशल्या, लेलेनामरमैया ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृत
कुंडल, उरवनमालसोहैया ॥ मातुकौशल्याकरतआर

तो, आनँदउरनसमैया ॥३॥ खेलतफिरतसकलसरजूतट, करलियेबाणधनुहैंया॥ रामललाजीकीयहछबिऊपर, तुलसिदासबलिजैया ॥ ४ ॥ ८ ॥

कहनलागेमोहनमैयामैया ॥टेक॥नंदरायजीकोबाबाबाबा, बलदाऊजीकोभैया ॥ मातुयशोदाभागिसराहैं,मैंमोहनबलिजैया ॥१॥ दूरिखेलनजनिजावोप्यारेललना,मारेगीकाहूकीगैया ॥सिंहपौंरचढ़िटेरेयशोदालेलेनामकन्हैया ॥२॥मोरमुकुटमकराकृतकुंडल,उरबनमालसोहैया॥मातुयशोदाकरतआरतीआनँदउरनसमैया ॥ ३ ॥खेलतफिरतसकलगोकुलमें,घरघरबजतबधैया ॥ मदनमोहनजीकीयहछबिऊपर,सूरदासबलिजैया ॥ ४ ॥ ९ ॥

देखोसखिराजतअवधविहारी॥टेक॥मणिमंडपमेंरत्नसिंहासन,कोटिभानुउजियारी ॥१॥ रत्नजड़ितशिरकीटविराजे,कुंडलकीछबिन्यारी॥ भालबिशालतिलकअतिसोहै, तीनलोकउजियारी ॥ २ ॥ भृकुटिबिशालमनोहरनासा,चंद्रवदनद्युतिकारी॥नवराजीवनयनकीशोभा,मंदहसनअतिप्यारी ॥३॥ उरमणिमालहारमुक्ताछबि,मनहर्षतउजियारी ॥ बाहुबिशालविभूषणसोहैं, रुचिरपीतांबरधारी ॥४॥ रुमकझुमकपगनूपुरबाजें,मोहतमदननिहारी ॥ कृपानिवासकहांलगिवरणौं, शोभासिंधुखरारी ॥ ५ ॥ १० ॥

बागह्वैतेआवतराजदुलारो ॥टेक॥ फूलनकीकलँगीफूलनकेजामा, औरफूलनगलेहारो ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, धनुषबाणकरधारो ॥१॥ नीलेरामसुरंगरँगलक्ष्मण, आवतअवधमँझारो अवधपुरीनरनारिनिहारैं, झुँकझुँककरतजुहारो ॥२॥ सुंदरवदनकमलदललोचन, कोटिकामछविवारो॥ तुलसीदासधन्यकौशल्या, आरतिसाजउतारो ॥ ३ ॥ ११ ॥

श्रीवनहूँसे आवतअवधविहारी ॥टेक॥ रघुवंशीबालकसँगलीन्हे, गजरथकीअसवारी ॥ चीराकलितललितजरकसको, करगहिकंजसँवारी ॥१ ॥ श्यामवदनद्युतिअधिकजगमगे, पीतांबरछविप्यारी ॥ माथातूणललितकटिऊपर, क्रीटमुकुटछविन्यारी ॥ २ ॥ वनहूँसे आवततुरंगनचावत, सोहेसुरपुरनरनारी ॥ वाजकुही बहुजातिसंगलिये, दारुणजीवसिकारी॥३॥ खेलतफिरतविपिनकुंजनवन, संगसखालियेसारी ॥ मातकौशल्याकरतआरती, बालअलीबलिहारी ॥ ४॥ १२ ॥

देखोसखिआवत, रासविहारी ॥ टेक ॥ सरजूतीरसिंगारविपिनमें, अतिअनूपछविसारी ॥ १ ॥ संगसखीसोहैंअलबेलीबनीठनीछविन्यारी सुमनसिंगारकियोनखशिखलौं, निजकरश्यामसवाँरी ॥२॥ प्रभुआगेसखिखेलतआवें, फूलनगेंदउछारी ॥ झुँकिझुँकितपरस्परफेंकत, अतिआनँदपियप्यारी॥३॥सीतारामसनी

हरजोरी, चितवनकीबलिहारी कुंडलअलकनझलकबु
लाकी, दलकतहृदयहमारी ॥ ४ ॥ आयेदंपतिरामचर
णसखि, भूषणवसनउतारी ॥ नखसिखमणिभूषणसिं
गारकरी, सिंहासनबैठारी ॥ ५ ॥ १३ ॥

देखोसखी, कोउयकनवलशिकारी ॥ टेक ॥ सरजूतीर
प्रमोदविपिनमें, श्यामवरणअनुहारी ॥ १ ॥ कछनीहरि
तहरितचंदनमें, हरितवसनतनुधारी ॥ हरितवसनके
ओटछिपतही, होतलताअनुहारी ॥ २ ॥ बाननतेमारत
मृगराजन, नयननतेनरनारी ॥ रामसखेपियलवनि
तकनिपर, कोटिमदनरतिवारी ॥ ३ ॥ १४ ॥

श्रीराघवजीकी, आजुसजीअसवारी ॥ टेक ॥ दश
रथराजकुमारलाड़िले, शोभान्यारीन्यारी ॥ १ ॥
सजेतुरंगरंगराजनके, औरगजेंद्रनभारी ॥ जगम
गझूलजरीकीसोहै, रत्नजड़ावअमारी ॥ २ ॥ घूम
गरजसोंभरतजीआए, श्रीरघुनाथनिहारी ॥ होतकु
लाहललखनलालको, रिपुसूदनछबिन्यारी ॥ ३ ॥ ह
र्षेदेवसुमनबहुवर्षें, जयजयकारउचारी ॥ ब्रह्मादिकद
र्शनकोआये, मोहतबदननिहारी ॥ ४ ॥ रविशशिको
तिबदनाकिशोभा, चंद्रकलाउजियारी ॥ अग्रअलीप्र
भुकीछबिनिरखे, चरणकमलबलिहारी ॥ ५ ॥ १५ ॥
भजुमनजानकिजीवनरामा ॥ टेक ॥ सुषमासदनस
कलसुखसागर, मधुरमनोहरश्यामा ॥ १ ॥ कामकोटि

शोभातनुविलसै,निरखतलाजैंकामा ॥ वामअंगसोह तिसियसुंदरि, दक्षिणलखनललामा ॥ २ ॥ मनक्रमव चनजासुउरअंतरसियप्रियप्रेमनजामा॥सोशिरधुनि पछितायनिरंतर,दुखपावैंपरिणामा ॥ ३ ॥ सोइमम स्वामीसेवतजेहिहनुमत,जासुजपतहरनामा ॥ बीन बजायगाययशनारद,लहतसकलविश्रामा ॥४॥ कर सरोजकोछांहजोपावै, सोसवविधिसुखधामा॥सकल पापत्रयतापनशावै,तेहिलागतनहिंघामा ॥ ५ ॥ सब लायकसुखदायकमेरो,सोइसुखसागररामा ॥ रामकृ पानिरखतछबिजाकी, चेरीभईबिनुदामा ॥ ६॥१६॥

श्रीरघुनाथ दयानिधिदानी॥टेक॥सियापियप्रेमसक लसुखदायक,जपतपयोगकहानी ॥ १ ॥ कोउजपयो गकरतसहिशंकट, कोमुनिवरविज्ञानी॥कोउतपतीर थकरिसुखचाहत,कोउसुकर्मअभिमानी ।२। कारणर हितकृपालसुयशसुनि,रामकृपासारिवस्यानी सकलभ रोसाविहायकपटतजि,सियपियहाथविकानी॥३ १७॥

भजुमन,सरजूअवधविहारी॥टेक ॥संगसखासरजूत टविहरैं,सुंदरअवधविहारी ॥१॥ नीलकलेवरपीतझँगु लिया,बाहुसघनाजिसतारे ॥ घूंघुरवारेअलकवदनपर मानहुँभँवरगुँजारे ॥ २ ॥ कम्बुकंठअतिचिबुकसोहा ये,आननमदनछविछाये॥कटिकिंकिणिनूपुरछविरा जे,भृगुलक्षणछविछाये ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृत

कुंडल, उरवनमालसोहावै॥शेषसहसमुखरटतनिरंत र, सोवाकोपारनपावै ॥ ४ ॥ शिवसनकादिआदिब्र ह्मादिक, निगमनेतियशगावै ॥ रामानंदप्रभुकीछबि निरखै, चरणकमलचितलावै ॥ ५ ॥ १८ ॥

मनरे तूसरजूतीरकरुवासा॥टेक॥ मानसरोवरप्रग टीवशीटी, अवधपुरीपरकासा ॥ १ ॥ जहँबिहरेंरघुना थरमापति, जगवल्लभसुखदासा ॥ जाकेदर्शपर्शसुख उपजे, कलिमलहोइसबनासा ॥ २ ॥ निर्मलजलअस नानपानकरु, मेटतयमकेत्रासा॥ब्रह्मादिकजाकोपार नपावैं, सेवतहरिकेदासा॥ ३ ॥ रामघाटअस्नानकर नको, अंतरामपुरवासा॥श्रीरघुनाथशरणमोहिंलीजै, गावततुलसीदासा ॥ ४ ॥ १९ ॥

कहनलगेरघुबर, तोतरिबाता ॥टेक ॥श्रीमहाराजक हतदशरथजीसों, कौशल्याजीसोंमाता॥सुनिमुनिब चनप्रेमपरिपूरण, आनंदउरनसमाता॥१॥कुंचितके शलसतघुँघुवारे, श्यामसुंदरमृदुगाता॥सुंदरवदनकम लदललोचन, छबिबरणीनहिंजाता॥२॥रघुबरलक्ष्म णभरतशत्रुहन, खेलतचारौभ्राता॥बिहरतसरजूनी रसखनसँग, भक्तजननसुखदाता ॥३ ॥लखचौरासी जीवचराचर, सबकेगुरुपितुमाता॥जनरघुवीरअवध पुरप्रगटे, दीनजननकेत्राता ॥ ४ ॥ २० ॥

वसीछबिनयनन, रामजीललाकी ॥टेक॥क्रीटमुकुट

मकराकृतकुंडल,कोटिभानुछबिजनकललाकी ॥१॥ धनुषबाणकरकंकणसोहत, पीतलसतअतिबांकी ॥ ॥ २ ॥ लखिलखिश्यामवदनकीशोभा, रतिपतिग तिमतिथाकी ॥ ३ ॥ कहैरघुवीरदासत्रिभुवनमें, उप मादीजैकाकी ॥ ४ ॥ २१ ॥

रुनझुनरुनझुन, रामजीललाआवें ॥ हाथधनुषकरबा णचलावें ॥टेक॥ कनकचौकाबिचखेलतललना, संग सखाबहुबालसुहावें ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटपरकलँगीराजे, मधुरहासमनमोदबढ़ावें ॥२॥ श्यामवदनपरपीतझँगु लिया,अरुणचरणवनमालसोहावें ॥ ३ ॥ उभयभुजा परशारँगराजे, कटिपरकिंकिणिअधिकसुहावें ॥४॥ कौसल्याकेकयीसुमित्रा, रामजीललाजीकोटेरबोला वें॥५॥भरतशत्रुहनसँगलियेललना, लक्ष्मणकुँवरजी चँवरढुरावें॥६॥मातकौशल्याकरतआरती, सुरनरमु नियशगावें ॥ ७ ॥ ब्रह्मदासललामाधुरिमूरति, तीन लोकमेंनाचनचावें ॥ ८ ॥ २२ ॥

श्रीआवतशारँगपाणी,श्रीवनहुसेआ० ॥टेक॥ संगस खासबसोहतनीके, बहुविधिशोभाखानी ॥ १ ॥रघुव रलक्ष्मणभरतशत्रुहन,रूपराशिगुणखानी॥निरखिम धुरलखियेलखिकैकोउ, सखिसबपरमसयानी ॥२॥ हाथपातफलफूललियेसब,सुमनगलेगुथयानी ॥ होत कोलाहलसुनिनपरतकछु, बातजातनहिंजानी ॥ ३ ॥

तुरँगनचावतआवतछबिसों, सैन्यअधिकअभिरामी
संतदासमृगराजपकड़प्रभु, आयेबड़ेसमानी ॥४॥२३॥

इति गुरुवारकी गौरी समाप्त ।

अथ शुक्रवारकी गौरी प्रारंभः ।

भजुमनरामानुजसुखदाई ॥ टेक ॥ श्रीफणिपतिपूरणपु
रुषोत्तम, संतनकेसुखदाई ॥ श्रीरघुवीरचरणअनुरागी,
दशरथसुवनसोहाई ॥ १ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल,
करमेंधनुषसुहाई ॥ तरकसकटिपीतांबरराजे, मृगमद
तिलकसुहाई ॥ २ ॥ अरुणकंजलोचनअतिराजें, भृकु
टीविकटसुहाई ॥ चारुकपोलनासिकासुंदर, अलक
नभँवरलुभाई ॥ ३ ॥ असुरसँहारनभक्तउधारन, सुरनर
मुनिसुखदाई ॥ युद्धविरुद्धक्रुद्धश्रीलक्ष्मण, मेघनादग
तिपाई ॥ ४ ॥ जाकोनामलियेछूटतभव, जन्ममरण
दुखदाई ॥ रामचरणपरकरीकृपाअब, देहुभक्तिसुख
दाई ॥ ५ ॥ १ ॥

भजोमनलखनचरणसुखदाई ॥ टेक ॥ श्रीफणिपति
अवतारलियोहै, संतनकोहितलाई ॥ सूर्यवंशपरशंसत
सुरमुनि, वेदपुराणनगाई ॥ १ ॥ रघुकुलमणिपरकाशदि
वाकर, तिनकेअनुजकहाई ॥ २ ॥ गौरकिशोरबदनअ
तिसुंदर, भृकुटीविकटसोहाई ॥ बाहुबिशालबिभूषण
सुंदर, कांधेधनुषसोहाई ॥ ३ ॥ शिरपरक्रीटश्रवणमणि
कुंडल, मेचकअधिकबनाई ॥ भालबिशालतिलकशिर

सोहै, भृकुटीविकटसुहाई ४ शारंगधनुपबाणकरराजै, शोभावरणिनजाई। फूलनकीवनमालविराजै, सबअँग सुंदरताई ५ तीनलोकऔभुवनचतुर्दश, जानतसबप्रभु ताई ॥ शिवब्रह्माजाकोपारनपावैं, नेतिनेतिकहगाई ॥६॥ असुरनिकंदनहोदुखभंजन, हैजगविदितबड़ाई॥ सरजू दासपरकिरपाकीजे, देहुभक्तिसुखदाई ॥१॥२॥

श्रीबालाजीको, आजुबनोरथनीको श्री०॥टेक॥चोवा चंदनऔरअरगजा, मोतियनचौकपुराये ॥ बंद नवारेबांधेरुचिरुचि, बिचबिचदलतुलसीके ॥ १ ॥ चारोखंभबनेकंचनके, ऊपरकामजरीको ॥ रत्नसिं हासनआणुविराजे, मुकुटधरेतुलसीको ॥ २ ॥ क म्बुकंठकौस्तुभमणिराजे, उरवनमालसोहाई। जयऔ विजयदोउपौरियाविराजैं, सन्सुखसुतअंजनीको ।३। शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, निगमनेतियशगावैं ॥ जनहाथीरामवंकटजीकेशरणै, मनमोहतसबहीको।४

श्रीबालाजीको, आजुबनीछविभारी।टेक।त्रिपतीमेंसी तारामजीविराजें, शेषनागकीछाया॥ लक्ष्मीकमलाच रणपलोटै, छबिनहिंजातबखानी ॥ १ ॥ शेषाचलपर आणुविराजे, सनकादिकऋषिचारी।आसपासगिरिव रकीशोभा, बीचमेंकोयलभारी॥२॥कीटमुकुटमकरा कृतकुंडल, उरवनमालसोहाई ॥ बाहुविशालविभूषण सोहैं, करगहिशारंगधारी॥३॥चंदनचर्चितअंगमनोहर

र, भृगुलक्षणछविछाई ॥ जनहाथीरामबंकटजीके शरणै, गावतसुरपुरनारी ॥ ४ ॥ ४ ॥

श्रीलक्ष्मण, सांचेदीनदयाला ॥टेक॥शेषाचलपरबनो देवाला, कंचनकलशसोहाई ॥ त्रिपतीमेंसीतारामजी विराजैं,चौकीलक्ष्मणवाला॥१॥रामानुजअवतारमनो हर,राजादशरथजीकेलाला ॥जयऔबिजयदोउपौरि याविराजैं,बिजयघंटझनकारा॥२॥आठपहरफूलनकेजा मा,ऊपरमौजदुसाला॥कीटमुकुटमकराकृतकुंडल,उ रबैजंतीमाला॥३ ॥शंखचक्रगदापद्मबिराजे, बांकेनय नविशाला ॥ आशानंदकहेकरजोरे, मिटिगयेदुःखजं जाला ॥ ४ ॥ ५ ॥

देखोमाई, नवलकुँवरदशरथको ॥ टेक ॥ मणिमयज ड़ितकीटअतिसुंदर,शिरमहँकेशकोटीकोअम्बुजनय ननासिकासुंदर, कुंडलझलकतनीको ॥ १ ॥ मणिम यजडितहारअतिसुंदर,हीरामाणिनकनीको॥कलित ललितजरकसकेजामा, आभूषणपुष्पनको ॥ २ ॥ उर सोहैमोतियनकीमाला,भृगुलक्षणछबिनीको॥करकंक णबाजूबँदसोहै,धनुषबिराजतनीको ॥३॥ कटितूणीर बाणकरराजे,कमलफिरावतनीको ॥ आशानंदकहेक रजोरे,मनमोहतसबहीको ॥ ४ ॥ ६ ॥

देखोसखी,लखनललाधनुधारी ॥ टेक ॥ दशरथनंद नचढ़ेतुरंगन,गजरथकीअसवारी॥हीराकलितललित

जरकसकी, जामाकरगहिकंजसुधारी॥१॥गौरवर्णद्यु
तिजोतिजगमगी, कोटिमदनछबिवारी॥माथातूणल
लितकटिऊपर, पीताम्बरछबिप्यारी॥२॥ बनहुँसेआ
वततुरँगनचावत,मोहेपुरनरनारी ॥ कूहीस्वाजश्वान
बहुजातिन,सँगलियेजीवासिकारी॥३॥खेलतफिरतवि
पिनकुंजनमें,संगसखालियेसारी ॥मातुकौशल्याकर
तआरती, बालअलीबलिहारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

देखोसखी,दशरथराजदुलारे॥ टेक ॥ गोरेबरनबदन
अतिसुंदर,पीताम्बरपटवारे ॥ हीरालालजवाहिरमो
ती, मणिमालाउरडारे॥ १ ॥ शिरचौतनियाटोपीसो
है,कुंचितकेशसवांरे॥श्रवणकुंडलअतिबहुछबिछावै,
मनहुँगगनविचतारे॥२॥करमेंबाजूबंदनिजायठ, शारं
गबाणसुधारे॥नवलसखासबसंगमेंखेलन, चलेजातहैं
सकलसिकारे॥३॥चढ़ैतुरंगनचलेउमंगन,पुरनरनारि
निहारे॥रामसखेपुरबाहेरठाढ़े,दर्शनदेप्रभुप्यारे॥४॥८॥
सुनोमन,रामशरणहितकारी॥टेक ॥भजनभरोसा
नहिंहियमोरे, पातकबलमोहिभारी ॥ १ ॥ पापकर
तगणिकाभइपावन, कहतपुराणपुकारी ॥ चढ़िविमा
नगइगगनअहल्या, अस्तुतिकरततुम्हारी॥२॥व्याध
अजामिलगीधतरेसब,रहेसकलअघकारी ॥ पातकस
बकीवातसुधारी,विदितबातयहसारी॥३॥ज्ञानविराग
योगजपसाधन,मोरीसुरतिबिसारी ॥ लखिआचरण

शोचहियभारी, सबप्रकारमैंहारी ॥ ४ ॥ ममहितविन
यकरतअतिपातक,भवभयविकलविचारी॥पातकमो
रमनावततोहिँकहँ ,पातककोबलिहारी ॥ ५॥ पतितपु
नीतशरणसुखदायक, रघुपतिअवधविहारी ॥ बेदबि
दितनिजविरदसम्हारहु, रामकृपाअघटारी ॥६ ॥ ९ ॥
सुनोमन,दीनदुसहदुखहारी ॥ टेक ॥ तनकभरोसोमो
हियनाहीं, निजआचरणनिहारी ॥ १ ॥ कहतसिराहिं
नपातकमोरे,मैंअतिदीनदुखारी॥दोशकोशअघअव
गुणराजा, सबविधिभजनभिखारी ॥२ ॥ निजअपरा
धविपतिअतिदारुण,कहोंकहाविस्तारी ॥ रघुनंदनउ
रअंतरयामी, जानतपीरहमारी ॥३॥ आगमनिगमपु
राणबखानत, परमकृपालुखरारी ॥ शरणसुखदप्रण
तारतिभंजन,कहतप्रचारिप्रचारी॥४॥त्रिभुवनतारण
अधमउधारण,निरखहुनयनउघारी॥बिरदलाजराख
हुकरिमोपर, करुणानिजअनुहारी ॥ ५ ॥ तजिविलं
बलखिआरतिमोरी, सबअपराधबिसारी ॥ तारसक
हुतोतारहुरघुवर, रामकृपाहियधारी ॥ ६ ॥ १० ॥
सुनुमन,शरणसुखदहितकारी ॥ टेक ॥रघुनंदनरघुप
तिरघुराई, दशरथअजिरविहारी॥ १ ॥नाथहाथहित
अनहितमोरा,मोकहँआसतुम्हारी ॥तुमतजिअपरदे
वनहिँजानौं,पुनिपुनिकहौंपुकारी॥२ ॥तुमबिनुत्रिभुव
नकौनकहावत,बिनकारणहितकारी॥मोसमकहहुक

हाकेहिभावत, क्रूरकुटिलकुविचारी ॥ ३ ॥ यद्यपिपो चशोचहियनाहीं, सुनहुँकृपालखरारी ॥सियस्वामिनि सियपियममस्वामी, सोइअवलम्बविचारी ॥ ४ ॥स जिसरोपनिजसेनप्रवलअति, कठिनकृपाणसम्हारी॥ कलिकरालचाहतमोहिघालन, दशनपीशिललकारी॥ ॥ ५ ॥ शरणसुखदकरुणानिधिदोऊ, रघुपतिजनकदु लारी ॥रामकृपाक्षणक्षणगुणगावत, कलिभयभीति विसारी ॥ ६ ॥ ११ ॥

सुनसियराम, विपतिअतिमोरी ॥टेक॥ संतनगुणभा वतहियतोरे, मैंअबअवगुणबोरी॥ १ ॥ आरतबचन कहौंकरजोरे, सत्यशपथकरितोरी ॥ अपरभरोसनहीं हियमोरे, नाथहाथगतिमोरी॥२॥सबविधिमैंसियपिय सियचेरी, ममहियआशनथोरी॥जानकिजीवनजीव नमोरे, जानकिजनककिशोरी ॥३॥ रामकृपामांगतर घुनंदन, सजलनयनकरजोरी ॥ यहवरदेहुविनयवल मोकहँ, जन्मजन्ममैंतोरी ॥ ४ ॥ १२ ॥

आजबनीछबिभारी, श्रीबालाजीकी ॥ टेक ॥ रत्नसिं हासनआपविराजत, देतहैंशोभाप्यारी॥१॥क्रीटमुकु टमकराकृतकुंडल मोतियनकीछबिभारी ॥ वैजयंती मालाअतिसोहै, पीतांबरकटिन्यारी॥२किंकिणदेखि अधिकमनमोहै, क्षुद्रघंटिकाभारी ॥ नूपुरधुनिसुनिमु निमनमोहै, ध्यानधरतत्रिपुरारी।३॥यहछबिदेखिसुम

नसुरत्वपें, कहँलगिवरणौंप्यारी ॥ जयजयकारकरनशो
भापर, हार्थीरामवलिहारी ॥ ४ ॥ १३ ॥
ऐसेराम, दीनहितकारी ॥ टेक ॥ अतिकोमलकरुणा
निधानप्रभु, विनुकारणउपकारी ॥ १ ॥ साधनहीनदी
नानिजअघवश, शिलाभईमुनिनारी ॥ गृहतेगवनिपर
सिपदपावन, घोरशापतेतारी ॥ २ ॥ हिंसारतनिषाद
तामसवश, पशुसमानवनचारी ॥ भेंटो [redacted]
वश, नहींकुलजातिविचारी ॥ ३ ॥ यद्यपिद्रोहकियोसु
रपतिसुत, कहिनजायअतिभारी ॥ सकललोकअवलो
किकहतसो, शरणभयेभयटारी ॥ ४ ॥ विहगयोनिआ
मिषअहारवश, गिद्धकवनव्रतधारी ॥ जनकसमानक्रि
याताकीनिज, करसबबातसँवारी ॥ ५ अधमजातिसेव
रीयोषितशठ, लोकबेदतेन्यारी ॥ जानिप्रीतिदैदर्शकृ
पानिधि, सोरघुनाथउधारी ॥ ६ ॥ कपिसुग्रीवबंधुभ
यव्याकुल, आयोशरणपुकारी ॥ सहिनसकेदारुणदुख
जनको, हत्योबालिसहिगारी ॥ ७ ॥ रिपुकोबंधुबिभी
षणनिशिचर; कौनभजनअधिकारी ॥ शरणगयेआगे
होइलीन्हो; भेंटयोभुजापसारी ॥ ८ ॥ अशुभहोइजिन्ह
केसुमिरनते, बानरऋक्षविकारी ॥ वेदबिदितपावनकि
यतेसब, महिमानाथतुम्हारी ॥ ९ ॥ कहँलगिकहैं दीनअ
गणितमैं, जिनजिनकीतुमबिपतिनिवारी ॥ कलिमलग्र
सितदासतुलसीपर, काहेकृपाबिसारी ॥ १० ॥ १४ ॥

बोलतमधुरीवानी, रघुवरबोलत० ॥टेक ॥ कीटमुकुट मकराकृतकुंडल, छविनहिंजातवखानी॥हमसरजूज लभरनजातरही, बीचरामरससानी ॥१॥ वानकमान केलोचनमारत, तकितकितीरनतानी॥घुंघुटमेरोछुट गयोहै, लाज छोंड़िमुसकानी॥२॥अमरनारिनरमिले अवधके, ये सबफिरतहैसानी॥लोककुटुमअबमोहिँन भावे, दशरथसुतरससानी ॥ ३ ॥ रघुवरलक्ष्मणभ रतशत्रुहन, दशरथराजदुलारी॥रामसखेकोसलपुरजी वन, रघुवरहाथविकानी ॥ ४ ॥ १५ ॥

अवधपुरीवसभाई, मनरेतू ॥टेक॥ सप्तपुरीमेंश्रेष्ठअयो ध्या, तहँबैठेरघुराई ॥ सरजूपापनकीहैहरनी, आयेब सिष्ठजीलाई ॥ १ ॥ जाकेदर्शपर्शअघनाशे, वेदपुराण बखानी ॥ अवधपुरीदेवनकोदुर्लभ, अपनेहाथबना ई॥२॥ब्रह्माशिवसनकादिदेवता, सेवतनितमनलाई ॥ वाल्मीकिनारदघटयोनी, सीखसुनीमनलाई॥३ ॥की टपतंगसुनतगतिपावैं, रामरूपहोइजाई॥स्वर्गलोकअ पवर्गविभूती, अवधपुरीचलिआई॥४॥सहलक्ष्मणरघु नाथजानकी, तहँविहरतसबभाई ॥ अवधपुरीकोध्या नधरतही, भक्तिमुक्तिफलपाई ॥५॥ चारिखानिजग जीवचराचर, अवधवसेगतिपाई॥रामदासभजोनवल सियावर, भवसागरमिटजाई ॥ ६ ॥ १६ ॥

जिनकेप्रियनरामवैदेही॥टेक॥ताजियेतिनहिंकोटिवैरी

सम, यद्यपिपरमसनेही ।१। तजेउपिताप्रह्लादविभीषण बंधुभरतमहतारी। बलिगुरुतजेउ, कंतब्रजबनिता, भये जगमंगलकारी॥२॥ नातोनेहरामसोंकीजै, शीलसनेह जहांलौं अंजनकहाआंखिजोफूटै; बहुतककहींकहांलौं ॥३॥ सोइसज्जनसोइहितूहमारो, प्राणनहूतेप्यारो॥ जासँगबढ़तसनेहुरामपद, तुलसीमतोहमारो॥४॥१७॥

भजुमन, सरजूअवधबिहारी ॥ टेक ॥ जाकोनामलेत अघनाशत, आवागमननिवारी॥१॥ सरजूतीरकल्प तरुछैयां, जहँसिंहासनभारी ।१। लखिप्रकाशरविरथम गथाको, यकटकरहेनिहारी।२। बैठेरामबामसियसोहैं, अतिसिंगारशुभकारी ॥ ३ ॥ सीतारामनोहरजोरी, चितवनकीबलिहारी ॥ कुंडलझलकतझलकनबुलाक की, दमकतहृदयहमारी॥४॥ सुरँगीटोपीशिरपरसोहै कचघुंघुरवारीरी। भालविशालतिलकशिरसोहै, श्रवणनकुंडलभारी॥५॥ नखशिखसेवनमालबिराजत, कौस्तुभमणिशुभकारी॥ ताऊपरगुंजावलिकंठा, भृगुलक्षणशुभकारी॥६॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, करस्वरूपउपकारी॥ शारँगधनुषबाणकरराजे, नटवरछविवपुधारी ॥ ७ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, बिनतीकरतन्यारीन्यारी॥ रामदासयुगलछबिनिरखत, चरणकमलबलिहारी ॥ ८ ॥ १८ ॥

इति शुक्रवारकी गौरी समाप्त ।

॥ अथशनिवारकीगौरीप्रारंभः ॥

ऐसोंसियरघुबरिसरोसो॥टेक॥ बारिनबोरिसकैप्रह्ला दहिं,पावकनाहिंजरोसो ॥ गिरिऊपरसेडारिदियो है, भूमिपरउबरोसो ॥१॥ हिरनाकुसप्रह्लादभक्तसों, हठि हठिबैरकरोसो ॥ मारनचहतदासनरहरिको, आप हिदुष्टमरोसो ॥ २ ॥ लंकाजारिअंजनीनंदन,देखतपु रसगरोसो ॥ ताकेमध्यविभीषणकोगृह,रामकृपाउब रोसो ॥३॥ रावणसभाकठिनप्रणअंगद,हियधरिहरि सुमिरोसो॥मेघनादसेकोटिनयोद्धा,टारिपगनटरोसो ॥४॥ द्रुपदसुताकोचीरदुशासन,राजसभापकरोसो ॥ खैंचतखैंचतदोउभुजहारे,नेकनअँगउघरोसो॥५॥म हाभारतमरुहीकेअंडा,छोहनिदलबटुरोसो ॥६॥ राम नामजपपंछीटेरे,घंटाटूटिपरोसो ॥७॥ मीराकेमारन केकारन,दीन्होजहरखरोसो॥रामकृपासोंअमृतहोय गयो,हर्षितपानकरोसो ॥ ८ ॥ गजअरुग्राहलड़ैजल भीतर,गजकोग्राहगहोसो ॥ गरुड़छोंड़िहरिप्यादेधा ये,डूबतगजउबरोसो ॥ ९ ॥ विप्रसुदामाफिरतदुखि तहोय,कबहुँनउदरभरोसो ॥ रामकृपाकंचनगृहपाये हयगजबाजिखरोसो ॥१०॥ तुलसिदासविश्वासरामस पद, जोनरनारिकरोसो ॥ औरविभूतिकहांलगिबर णोंतेहियसराजउरोसो ॥ ११ ॥ १ ॥

ऐसोराधाकृष्णभरोसो ॥ टेक पालाआनिपऱ्योव्रजऊपर, इंद्रनेकोपकरोसो ॥ सातदिवसगिरिनखपरधारे, भूमिकोभारहरोसो ॥ १ ॥ दावानलकोपानकियोहै, वत्सासुरजारोसो ॥ अघासुरमारिवकासुरमाऱ्यो, वृषभासुरमारोसो ॥ २ संगसखासबकहतकृष्णसों, सबकोदुःखहरोसो ॥ पैठिपतालकालियानाथ्यो, फणपरनृत्यकरोसो ॥ ३ ॥ अंतर्ध्यानभयेगोपियनसें, राधाध्यानधरोसो ॥ व्रजबनितनकोसंगछांड़िकैं, यदुबरनामधरोसो ॥ ॥ ४ ॥ दुःशासनबलवंतजानिकैं, द्रौपदिचीरगहोसो ॥ कृष्णकृष्णकहिद्रुपदिपुकारे, अंबरजातबढ़ोसो ॥ ५ ॥ गजकीटेरसुनीहरिशरणै, वाहनछांड़िचलोसो ॥ विप्रसुदामाहरिपदभेंटेउ, कंचनमहलखरोसो ॥ ६ ॥ पांडवकेदुखहरबेकारण, कौरवनाशकरोसो ॥ कहतकबीरासुनोभाईसाधो, निर्भयध्यानधरोसो ॥ ७ ॥ ॥ २ ॥

प्रगटेनरहरि, जनसुखदायक ॥ टेक ॥ खंभफोरिअद्भुतवपुधारे, कियेसकलसुरपायक ॥ १ ॥ कटकटबाजतउग्रदँतावलि, भाजिगयेसबपायक ॥ लियोगोदप्रह्लादभक्तको, भक्तवत्सलखलघायक ॥ २ ॥ उदरबिदारिपहिरिअंत्रावलि, सिंहनादकरिभारी ॥ मथतसिंधुशोभितमरालइव, दधिकेकुंडमचावत ॥ ३ ॥ भवभंजनभंजनसहिभारा, प्रणतारतिसबहंता ॥ शांतिस्वरूपगोविंदचरणलखि, चारपदारथपावत ॥ ४ ॥ सुरगंधर्वयक्ष

किन्नरमुनि, जयजयकारउचारत ॥ तुलसीदासआस नरहरिकी भक्तिदानवरपावत ॥ ५ ॥ ३ ॥

जिनकेरामसदारखवारे ॥ टेक ॥ जलसेराखिअनलहु सेराखे, गिरितेगिरतउबारे ॥ खंभफोरिहिरनाकुसमारे, नखसेउदरविदारे ॥१॥ रावणरारिकरीहरिजनसे, रणचढ़ायतेहिमारे ॥ नहिंराखेउकुलदीपघरनको, तिलकविभीषणसारे ॥२॥ पाराशरदुर्वासाऋषिको, चक्रसुदर्शनजारे ॥ नहिंराखोहरिजनकोद्रोही, दासहिचक्रनिवारे ॥ ३ ॥ कंसकुमतिकीन्होहरिजनसों, करगहिकंसपछारे ॥ कुंतीपुत्रबंधुभयव्याकुल, आपुहिजायनिवारे ॥ ॥४॥ जहँजहँभीरपरीसंतनके, तहँतहँआपुसिधारे ॥ तुलसीदासआसरघुवरकी, दारुणबिपतिनिवारे ॥५॥४॥

श्रीराघवजीकीभक्तिसदासुखदाई ॥ टेक ॥ सदासुलभ सुखहितचिंतामणि, वेदपुराणबखानी ॥ १ ॥ महाराजरघुवरदशरथके, जनकसुतामहारानी ॥ सेवतसंतविमलयशगावत, अवधपुरीरजधानी ॥२॥ सुंदरश्याम रामरघुनंदन, राजतअवधविहारी ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, करगहिकमलसुधारी ॥ ३ ॥ शिवनारदप्रह्लादविभीषण, हनूमानउरआनी ॥ कृपारामप्रभुजानकिवल्लभ, संतहृदयजेहिआनी ॥ ४ ॥ ५ ॥

ऐसीभक्तिसोहिंभावे, उधोजी ॥ टेक ॥ सर्वसत्यागिमगनहोयतनाचे, जन्मकर्मगुणगावे ॥ १ ॥ कथनीकथै

निरंतरमेरी, चरणकमलचितलावै ॥ मुखहैमुरलीनय नजलधारा, करसौंतालबजावै ॥ २ ॥ जहँजहँचरणदेत जनमेरो, सकलतीर्थचलिआवै ॥ उनकेपदरजअंगल गावै, कोटिजन्मसुखपावै ॥ ३ ॥ उनकीमूरतिमेरेहृ दयबसतिहै, मेरीसुरतिलगावै ॥ बलिबलिजाऊंश्रीमु खबानी, सूरदासबलिजावै ॥ ४ ॥ ६ ॥

सर्वसभगवद्गीता, हमारेधनसर्व० ॥ टेक ॥ गायगायर सनाकोरिझाऊं, हरिजनहरिरसपीता ॥ १ ॥ जोनरगी तापठनकरतहैं, जगमेंरहतउजीता॥उनकोकहामुक्ति कोसंशय, तारेकुटुमसहीता ॥ २ ॥ श्रीमुखवचनसुन तकुंतीसुत, मनआयोपरतीता॥ यागीताकेपराक्रमहिं सों, दुर्योधनदलजीता ॥ ३॥ तीनलोकअरुभुवनचतु र्दश श्रुतिपुराणमतगीता ॥ हृषीकेशस्वामीअघमोच न, सद्गुरुदियोहैपलीता ॥ ४ ॥ ७ ॥

जबतबरामनामनिस्तारो॥टेक ॥ साठिघरीमेंएकघरी भजु, सोउसकलअघजारो॥ १ ॥काशीपुरीबसतगौरीप ति निशिदिननामउचारो॥ कीटपतंगसुनतगतिपाये, रघुकुलयशविस्तारो॥ २ ॥अजामीलगणिकागृहबासी सुतहितनामउचारो ॥ गजअरुगीधतरेहरिसुमिरत, महिमाव्यासबखाने ॥३॥ परमपुनीतनामरघुबरको, हरिजनहारिव्रतधारे ॥ नामदेवसोइभक्तशिरोमणि, चितसेपलनबिसारे ॥ ४ ॥ ८ ॥

निरखतजातजटायूरथकोंनि० टेक विप्ररूपजवधरेउ निशाचर,जयजयकारसुनाई ॥लेकरभिक्षानिकासिजानकीरथपरलेतचढ़ाई ॥ १॥रथऊपरसेबोलीजानकी, शरणशरणरघुराई ॥ हैकोइयोधातीनलोकमें, हमकोलेतछोड़ाई ॥२॥यतनासुनिखगपतिउठिधाये,हांकदेतनियराई ॥ कौनकिहोतुमपरमसुंदरी, कौनहरेलियेजाई ॥ ३॥ अवधनगरराजानृपदशरथ,उनकेसुतरघुराई॥ तिनकीप्रियाममनामजानकी,हरेनिशाचरजाई ॥४ ॥ इतनासुनिखगपतिउठिधायो, राख्योरथबिलमाई ॥जाननपैहैमहाजड़मूरख, जोहरिहोतसहाई ॥ ॥ ५ ॥ चोंचनमारिमहाजुधकीन्हो, रथसेदियागिराई॥अग्निबाणजवहनेउनिशाचर,धरणिगिरेउसुरझाई ॥ ६ ॥ देतअशीशजानकीमाता,प्राणराखुघटमांही ॥ तुलसिदासरघुवरजबऐहैं, कह्योकथासमुझाई ॥७॥९॥ हरिसोंलागिरहोमेरेभाई ॥ टेक ॥ ऐसोयत्नकरोमनमेरे,रामबिसारिजनिजाई ॥ १ ॥ लागेध्रुवप्रह्लादविभीषण, गणिकासधनकसाइ ॥ नामदेवरयदासकबीरा, पीपामीराबाई ॥ २ ॥ लंकालागेवंकालागे, लागेसैनानाई ॥कहौंकहासेवरीकीमाहिमा, मोसेबरणिनजाई ॥ ॥ ३ ॥ निपटसनेहकरोसाधुनसे,छांड़िकपटचतुराई॥ दयाधर्महृदयेविचराखो,सहजमिलेरघुराई ॥४॥जोहरिध्यानधरोघटभीतर,औरनआनँदउपाई रामकृपा

मञ्जुजानकिवल्लभ, तीनोंलोकबड़ाई ॥५॥ १० ॥

हरितुम, बहुतअनुग्रहकीनो ॥ टेक ॥ साधनधामबिबुधदुर्लभतनु, मोहिंकृपाकरिदीनो ॥ १ ॥ कोटिहुमुखकहिजायनप्रभुको, एकएकउपकारो ॥ तदपिनाथकछुऔरमांगिहौं, दीजैपरमउदारो ॥ २ ॥ विषयबारिमनमीनभिन्ननहिं, होतकबहुँपलएक ॥ तातेसहियाबिपातिअतिदारुण, जन्मतयोनिअनेक ॥ ३ ॥ कृपाडोरिबंसीपदअंकुश, परमप्रेममृदुचारो ॥ यहिबिधिबेधिहरहुमेरोदुख, कौतुकराममतुम्हारो ॥४ ॥ हैश्रुतिविदितउपायसकलसुर, केहिनादीननिहारो ॥ तुलसिदासयकजीवमोहरजू, जोइबांध्योसोइछोरो ॥ ५ ॥ ११ ॥

काहेनरसनारामहिंगावहि ॥ टेक ॥ निशिदिनपरअपवादवृथाकित, रटिरटिबादबढ़ावहि ॥ १ ॥ नरसुखसुंदरमंदिरपावन, बसिजिननाहि लजावहि ॥ शशिसमीपरहित्यागिसुधाकत, रविकरजलकहँधावहि ॥ २ ॥ कामकथाकलिकैरवचांदिनि, सुनतश्रवणदैभावहि ॥ तिनहिंहटकीकहिहरिकलकीरति, करणकलंकनशावहि ॥ ३ ॥ जातरूपमतियुवतिरुचिरमणि, रचिराचिहारबनावहि ॥ शरणसुखदरबिकुलसरोजरवि, रामनृपहिंपहिरावहि ॥ ४ ॥ बादबिवादखेदतजिभजिहरि, सरलचरितचितलावहि ॥ तुलसिदासभवतरिहितिहुंपुर, तेहिपुनीतयशगावहि ॥ ५ ॥ १२ ॥

जानकीजीवनकीबलिजैहौं ॥ टेक ॥ चितकहैरामसियापदपरिहरि, अबनकहूंचलिजैहौं ॥१॥ उपजीउरप्रतीतिसपनेहुसुख, प्रभुपदविमुखनपैहौं ॥ मनसमेतएहतनबासी, इहैसिखावनदैहौं ॥२॥ श्रवणनिऔरकथानहिंसुनिहौं, रसनाऔरनगैहौं ॥ रोकिहौंनयनविलोकतऔरहि, शीशईशपदनैहौं ॥३ ॥ नातोनेहनाथसोंकरिसब, नातेनेहनिबैहौं ॥ यहछरभारताहितुलसीजग, जाकोदासकहैहौं ॥ ४ ॥ १३ ॥

केशवकहिनजाय, काकहिये ॥ टेक ॥ देखततवरचनाविचित्रअति, समुझिमनहिंमनरहिये ॥ १ ॥ शून्यभीतिपरचित्ररंगनहिं, विनुकरलिखतचितेरो ॥ धोयेमिटैनमरैभीतिदुख, पाइययहतनहेरो ॥२ ॥ रविकरनिकरवसतअतिदारुण, मकररूपतेहिमाहीं ॥ बदनहीनसोग्रसेचराचर, पानकरनजेहिजाहीं ॥३॥ कोउकहेसत्यझूठकहेकोऊ, युगलप्रबलकरिमानो ॥ तुलसिदासपरिहरहितीनभ्रम, तब आपनपहँचानो ॥ ४ ॥ १४ ॥

मनपछितैहोअवसरबीते ॥ टेक ॥ दुर्लभदेहपाइनरहरिभजु, करमबचनमनहीते ॥ १ ॥ सहसबाहुदशबदनआदिनृप, बचेनकालबलीते ॥ हमहमकरिधनधामसवांरे अंतचलेउठिरीते ॥२॥ सुतवनितादिजानस्वारथरत, नकरनेहउनहींते ॥ अंतहितोहितजैंगेपामर, तूनतजैअबहींते ॥ ३ ॥ अबनाथहिंअनुरागजागजड़, त्याग

दुराशाजीते ॥ बुझहिनकामअग्नितुलसीके, विषयभोगरसघीते ॥ ४ ॥ १५ ॥

ऐसोकोउदारजगमाहीं ॥टेक॥ बिनसेवाजोद्रवतदीनपर, रामसरिसकोउनाहीं ॥१॥ जोगतियोगविरागयत्नकरि, नहिंपावतमुनिज्ञानी ॥ सोगतिदीनगिद्धसेवरीको, रामअधिककरिजानी ॥ २ ॥ जोलंकादशशीसअर्पिकै, रावणशिवपहँलीन्ही ॥ सोसंपदाबिभीषणजनको, सकुचसहितप्रभुदीनी ॥ ३ ॥ तुलसिदाससबभांतिसकलसुख, जोचाहैमनमेरो ॥ तौभजरामकामप्रदपूरण, करहिंकृपानिधितेरो ॥ ४ ॥ १६ ॥

भजुमनरामचरणदिनराती ॥टेक॥ रसनाकसनभजोतुमहरियश, नामलेतअलसाती ॥ १ ॥जाकोनामलेतदारुणदुख, सुनित्रयतापबुझाती ॥ रामचंद्रकोनामअमीरस, सोरसकाहेनखाती ॥२॥ श्रोतासुमतिसुशीलसोहरिजन, देतसलाहसोहाती ॥ लियोसनेहसुयशरघुपतिको, सुनजुड़ातहियछाती ॥ ३ ॥ संवतसोलहसैएकतीसा, ज्येठमासछठिस्वाती ॥ तुलसिदासप्रभुविनयलिखतहै, राममिलनकीपाती ॥ ४ ॥ १७ ॥

कौनकुटिलखलकामी, मोसमकौन० ॥ टेक ॥ तुमसेकाहछिपीकरुणानिधि, तुमउरअंतरयामी ॥ १ ॥भरिभरिउदरविषयरसपीवत, जैसेसूकरग्रामी॥ जोतनदियोताहिविसरायों, ऐसोनिमकहरामी॥ २ ॥ जहँसतसं

गतितहँअतिआलस,विषयिनसँगविश्रामी ॥ श्रीहरिचरणछांड़िऔरनकी, निशिदिनकरतगुलामी॥३॥पापीपातितअधमपरनिंदक,सबपतितनसेनामी॥ कीजेकृपादासतुलसीपर, सुनियोश्रीपतिस्वामी ॥४॥१८॥

मनरेतूरामचरितसुनकाना ॥टेक ॥सनकसनंदनसनतकुमार, नारदयहीवखाना ॥ १ ॥ येहीचरितउमापतिगायो, ग्रुप्तप्रगटसोवखाना॥ याज्ञवल्क्यकहेभरद्वाजसों, तीरथराजसुथाना ॥ २ ॥ बालापनमेंगयेध्रुवराजा,सुनिनारदकोज्ञाना ॥ रामनामकीयहप्रभुताई,गणिकाचढ़ीविमाना ॥३॥काकभुशुंडिकहेखगपतिसों, निश्चयनिर्णयठाना॥कामक्रोधमदलोभनिवारण,आलसउरनहिंआना ॥ ४ ॥ ऋषिकीकृपासेशबरीगायो आगमप्रभुकोजाना ॥ प्रेमसहितवाकेफलपाये, पहुँचायेनिजधामा ॥५॥ यहीचरित्रविभीषणगायो,वैरवंधुसोंठाना ॥ लंकातजिभजिसीतापतिको, मिल्योरामसोंआना ॥ ६ ॥ रामनामकीमहिमामोटी, मनमेरेअनुमाना ॥ तुलसीदासधन्ययहसाधू, गावेवेदपुराना ॥ ७ ॥ १९ ॥

जिनकीरहनिरामसेनाहीं ॥ टेक ॥ तेनरखरकूकरसूकरसम, वृथाजियतजगमाहीं ॥ १ ॥कामक्रोधमदलोभमोहमहँ,भूँखप्यासबहीको ॥मानुषतनुसुरसाधुसराहत, सोतोनहिंसियपीको ॥ २ ॥ शूरासुजनसुनिपु

णसुलक्षण, गुणियतगुणगुरुआई॥ बिनहरिभजननसु
नकेंफूलत, जातनाहिंकरुवाई ॥३॥ कीरतिकुलकरतू
तिहुनौंकी, शीलस्वरूपसलोने॥तुलसिदासप्रभुरागर
हितज्यों, व्यंजनसागअलोने ॥ ४ ॥ २० ॥

रघुवर, मोहिंसंगकरलीजे ॥ टेक ॥ बारबारपुरजान
नाथकहि, कारणआयसुदीजे ॥ १ ॥ यद्यपिहौंअति
अधमकुटिलमति, अपराधिनकोजायों ॥प्रणतपाल
कोमलस्वभावजिय,जानिशरणतकिआयों॥२॥जोमे
रेतजिचरणआनमति, कहौंहृदयकछुराखी ॥तोपरि
हरहुदयालुदीनहित,प्रभुअभ्यंतरसाखी ॥ ३ ॥ ताते
नाथकहतमैंपुनिपुनि, प्रभुपितुमातुगुसांई ॥ भजनही
ननरदेहवृथाकरि, श्वानभेषकेनांई ॥४॥ बंधुवचनसु
निस्रवतनयनजल,राजिवनैनभरिआये॥तुलसिदास
प्रभुपरमकृपागहि बांहभरतउरलाये ॥ ५ ॥ २१ ॥

हिलमिलगोविंदगावें,आवोसाधूहो ॥टेक॥ प्रेमभक्ति
कीरीतसमझके, हितसोंरामरिझावें ॥ १॥ सेवासुमिर
नवंदनअर्चन, नवधासोंचितलावें ॥ तालपखावजझां
झमँजीरा, मुरलीशंखवजावें ॥ २ ॥ सतसंगतिनिशि
वासरकरिकै, ममतामदहिंबहावें ॥ चरणदाससुकदे
वकहतहैं, उरआनंदमनावें ॥ ३ ॥ २२ ॥

॥ इतिशनिवारकीगौरीसमाप्त ॥

॥ अथ रविवारकीगौरीप्रारंभः ॥

श्रीराघवजीकी, आजुबनीछबिभारी ॥ टेक ॥ सहित जानकीरत्नसिंहासन, राजतअवधविहारी ॥ १ ॥ कीटमुकुटमकराकृतकुंडल, तिलकपटलद्युतिकारी ॥ बदनमयंकतापत्रयमोचन, मंदहसनअतिप्यारी ॥ २ ॥ चंदनचर्चितअंगमनोहर, उरवनमालसोहाई ॥ बाहुविशालविभूषणसोहैं, करगहिशारँगधारी ॥ ३ ॥ कटिपर पीतवसनकीशोभा, मोहतमदननिहारी ॥ सुरनरमुनिजनचरणसरोरुह, ध्यानधरतत्रिपुरारी ॥ ४ ॥ चतुरसखीमिलिकरतआरती, भरिकंचनकीथारी ॥ रामसखेप्रभुकीछबिनिरखैं, गावतसुरपुरनारी ॥ ५ ॥ १ ॥

देखोमाईरामजीललाकैसेआवैं ॥ टेक ॥ रघुबंसीबालकसँगलीने, गजरथतुरगनचावैं ॥ हर्षेदेवसुमनबहुबर्षें, बंदीसुयशसुनावैं ॥ १ ॥ कीटमुकुटमकराकृतराजे, करगहिकमलफिरावैं ॥ बहुविधिसाजबनेराजनके, कोउलियेबाजउड़ावैं ॥ २ ॥ कोउलियेहरीछरीफूलनकी, कोउगलेहारपैरावैं ॥ कोउकोउललितलवंगलतातरु, हर्षिनिरखिगुणगावैं ॥ ३ ॥ अवधपुरीकुलबधूनिहारैं, निरखिपरमसुखपावैं ॥ जानकिवल्लभआयेअवधमें, अग्रदासबलिजावैं ॥ ४ ॥ २

श्रीरघुवर, बंधुसखालेसिधारे ॥ टेक ॥ संध्यासमयमंजुमंडपमहँ, खेलतआपुसिधारे ॥ शिकराबाजकुहीसुकर

नपर, चपलतुरंगसवांरे ॥ होतकोलाहलसुधिनीहिंपा
वैं, श्रीपतिसखानिहारे ॥ २ ॥ भरतशत्रुहनलक्ष्मणरा
जें, राघवप्राणपियारे ॥ रघुवरकेशिरछत्रबिराजे, सो
हतन्यारेन्यारे॥ ३॥श्रमजलबिंदुवदनपरराजै, मनहुँस
घनदिशितारे॥पीतांबरदामिनिद्युतिदमके, कीटमुकु
टउजियारे ॥४॥ रघुवरसुखनिरखतकौशल्या, सुंदर
रूपनिहारे।रामानंदप्रभुकीछबिनिरखे, आरतिसाजि
उतारे ॥ ५ ॥ ३ ॥

देखोमाई, आवतअवधबिहारी ॥ टेक ॥ पागसुरंगीपें
चकलंगी, श्रवणकुंडलझलकारी ॥ १ ॥ कंठाकलितल
लितहीरनको, उरबनमालसोहावै॥तुरगनचावतकुँव
रमनोहर, आपुगजनअसवारी ॥ २ ॥ बहरीबाजकुहीं
निजकरमा, चित्ताश्वानसिकारी॥तखतनपरनटानिर
तकरतहैं, निरखतपुरनरनारी॥३॥अँटाचढ़ीसबछटा
निहारें, निरखिपरमसुखपावैं।रंगमहलपहुँचेरघुनंदन
शोभासुखनिधिकारी ॥४॥ धूपदीपनैवेद्यआरती, स
खियनसाजिउतारी।कृपासखीसियपियमुखनिरखे,
बिछुरततपतनवारी ॥ ५ ॥ ४ ॥

श्रीवनहँसेआवतचारौंभाई ।टेक।मणिमयहारितविभू
षणसुंदर, अंगनललितसोहाई ॥ गजरथतुरगबाहिनी
साजे, राजतसंगसोहाई ॥ १ ॥ खेलतफिरतसकलस
रजूतट, संगसखासमुदाई ॥ जेस्तुगरामबापकेलागत,

पावतगतिसमुदाई ॥२॥शिवसनकादिआदिब्रह्मादि
क, छबिवरणीनहिंजाई॥ चढिबिमानसुरकौतुकदेखें
पुष्पमालझरिलाई ॥ ३ ॥कटितूणीरबाणकरलीने,अ
मितकामछबिछाई।नारदादिछबिदेखिमगनभये,देह
दशाबिसराई ॥४॥ज्ञानविरागयोगजपतपकरि, नहिं
पावतमुनिराई ॥ बालअलीकेमनमंदिरमें, बिहरत
श्रीरघुराई ॥ ५ ॥ ५ ॥

श्रीरघुवरलागतहैमोहिप्यारो॥टेक ॥अवधपुरीसरजू
तटविहरे, दशरथप्राणपियारो॥१॥कीटमुकुटमकरा
कृतकुंडल,पीतांबरपटवारो।नयनविशालभालसोति
यनकी, सखीतुमनेकनिहारो॥२ ॥रूपसुरूपअनूपब
नोहै,चितसेटरतनटारो।माधुरिमूरतिनिरखोसजनी।
कोटिभानुउजियारो ॥३ ॥जानकिनायकसबसुखदा
यक, गुणगणरूपअपारो ॥ अग्रअलीप्रभुकीछबिनिर
खे, जीवनप्राणहमारो ॥ ४ ॥ ६ ॥

देखोमाईरघुनंदनप्रभुआवैं।टेक॥उपबनबागसिकार
खेलिकै, चपलतुरंगनचावें ॥१॥ कीटमुकुटमकराकृ
तकुंडल,उरवनमालसोहावें।कटिपरलटपटपीतलपे
टे, करगहिबाजउड़ावें ॥ २ ॥ चतुरंगिणीसैन्यसँगसो
हैं, पचरँगध्वजाउड़ावें ॥ घुरतनिसानभेरिसहनाई,
गरदागगनउड़िजावैं ॥ ३ ॥ बंदीजनगंध्रवगुणगावें,गा
यगायप्रभुकोरिझावैं॥ जयजयकारकरतब्रह्मादिक,औ

द्रुपपझरिलावैं ॥ ४ ॥ अवधपुरीकुलवधूनिहारें, निरखिपरमसुखपावैं ॥मातुकौशल्याकरतआरती, अग्रदासबलिजावैं ॥ ५ ॥ ७ ॥

देखोमाई, यदुनंदनप्रभुआवैं॥ टेक॥सांझसमयगौवनकेपीछे, आछेवनिठनिआवैं॥ १ ॥मोरमुकुटमकराकृतिकुंडल,उरवनमालसोहावैं ।रुमकझुमकपगनूपुरबाजे, करगहिमुरलिबजावैं॥ २ ॥उड़िउड़िगोरजलगतगगनमहँ, गोकुलअतिछबिपावैं।चढ़ेबिमानदेवसुरहर्षे, सुमनमालवरषावैं ॥३॥गोपीग्वालकरतकौतूहल, बाजाबिमलवजावैं ॥कंचनथालकपूरकीबाती,सजिकरभामिनिधावैं॥४॥ द्वारेभीरभईअतिभारी, राहचलननहिंपावैं ॥ सूरदासयदुनंदनकीछबि, निरखिपरमसुखपावैं ॥ ५ ॥ ८ ॥

श्रीबनहुँसेआवतचारौभैया ॥टेक॥दोउश्यामलदोउगौरमनोहर,राजादशरथजीकेछैया ॥ १ ॥ बनहुँसेआवततुरगनचावत,करगहिकमलफिरैया॥अवधपुरीनरनारिनिहारें, द्वौकरलेतबलैया ॥ २ ॥ बिबिधभांतिआभूषणपहिरे,मंदमंदमुसुकैया॥रामललाजीकोरूपविलोके, कोटिकामछाबिछैया ॥३॥ रघुबरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, शोभाबरणिनजैया॥अग्रअलीप्रभुकीछबिनिरखै, करतआरतीमैया ॥ ४ ॥ ९ ॥

अयोध्याराजतभूमिकनकी ॥ टेक ॥ रंगभूमिराजतर

घुनंदन, संगलियसुताजनककी॥रविशशिकोटिउदित तनसंदरपे,जोशोवनहिंवनतकी ॥ १ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, सन्मुखहैहनुमानवली॥मातुकोसल्याकरतआरती ,जयजयजयरघुवरकी ॥ २ ॥ ठुमकठुमकमहलनमेंविहरे, रुमकझुमकपगनूपुरकी ॥ कृपानिवास कहांलगिवरणों,महिमाश्रीअवधनगरकी ॥ ३ ॥ १०

आयेसरसीतारामउपासी ॥टेक॥ सुक्तिनाथहरिजन्मलियोहै, पूरणब्रह्मअविनासी ॥ भालतिलकतुलसीकीमाला,अवधपुरीकेवासी ॥ १ ॥तीरथवरतसवैकरिआये, कोटिगयाअरुकाशी ॥ चरणधोइचरणामृतलीनो, शीतलहोगइछाती ॥ २ ॥ रामनामजाकेहृदयवसतहैं जगमेंरहतउदासी ॥जितचितवेंउतअभयकरतहैं, कटतयमकीफांसी ॥ ३ ॥ रघुवरछोड़िऔरकोभाजिहैं,तेनरयमपुरजासी॥ तुलसिदासरघुवरजीकेशरणै,मिटिगइलखचौरासी ॥ ४ ॥ ११ ॥

आयेमेरेराधाकृष्णउपासी॥टेक॥मथुरामेंहरिजन्मलियोहै,पूरणब्रह्म अविनासी॥भालतिलकपुष्पनकी माला वृंदावनकेवासी ॥१॥ तीरथवरतसवैकरिआये,ब्रजमंडलचौरासी ॥ चरणधोइचरणामृतलीनो, निर्मलहोगइछाती ॥ २ ॥ कृष्णनामजाकेहृदयवसतहैं,जगमेंरहतउदासी ॥ जितचितवेंउतअभयकरतहैं, काटतयमकीफांसी ॥ ३ ॥ यदुवरछोड़िअवरकोभाजिहैं, तेनर

यमपुरजासी ॥ सूरदासगोपालकेशरणै, मिटिगईलख चौरासी ॥ ४ ॥ १२ ॥

भजोमनरामचरणसुखदाई।टेक। जिनचरणनसेनिकसीसुरसरी, शंकरजटासमाई।जटाशंकरीनामधरोहै, त्रिभुवनतारणआई ।१।जिनचरणनकीचरणपादुका, भरतरहेलवलाई ॥ सोकेवटकठरीमेंधोई, लीनोतबहरिनावचढाई ॥ २ ॥ दंडकबनप्रभुपावनकीन्हो, ऋषियनत्रासमिटाई॥सोठाकुरतीनोलोककेस्वामी, कपटमृगासँगधाई॥३॥कपिसुग्रीवबंधुभयव्याकुल, ताशिरछत्रचढाई ॥ रिपुकोअनुजविभीषणभेटे, परसतलंकापाई ॥ ४ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, शेषसहससुखगाई ॥ तुलसिदासमारुतसुतमहिमा, हरिअपनेमुखगाई ॥ ५ ॥ १३ ॥

भजुमनकृष्णचरणसुखदाई ॥ टेक ॥ जिनचरणनकीचरणपादुका, सिंधुसुतामनलाई ॥ जयजयकृष्णकमलदललोचन, दुखमोचनसुखदाई ॥ १ ॥ जिनचरणनकेअरसपरसते, थाहयमुनहोइजाई ॥ नंदभवनमेंजायबिराजे, यशुमतिकेसुखदाई ॥ २ ॥ सोपूरणबसुदेवदेवकी, निरखिपरमसुखपाई॥छूटेबन्दकपाटउघारे, देवसुमनझरिलाई ॥ ३ ॥ पूतनापरसपरमगतिदीनो, गृहादेखिबिसराई ॥ गोवर्धनव्रजराखिमनोहर, कालिनागनथिल्याई ॥४॥कुब्जातोचंदनघसिल्याई, परसपरम

पदपाई॥उग्रसेनकोराजतिलकदियो,जरासिंधुदुखदा ई॥५॥कुंतीपुत्रबंधुभयव्याकुल,ताशिरछत्रचढ़ाई॥ विप्रसुदामाहरिपदभेटे, कंचनपुरीवसाई ॥ ६ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, निगमनेतियशगाई ॥ चेतनदाससंतनकेशरणे,पुलकनयनजलछाई ॥ ७ ॥ १४ ॥

सांचेमनकेमीता, रघुवर ॥ टेक ॥ कबसेवरीकाशीको धाई, कबपढ़िआईगीता ॥ जूंठेफलसेवरीकेखाये, नेकलाजनहिंकीता ॥ १ ॥ चरणछुवततरिगईअहल्या, गिद्धराजगतिकीता ॥ लंकापतिकोगर्वहरोहै, राजबिभीषणदीता॥२॥ सुग्रीवसखाकियेरघुनंदन, बानरकियेपुनीता॥सखानिपादकंदफलल्यायो, कीनोअधिकप्रतीता ॥३॥ सुफलयज्ञमुनिजनककोकीनो,सबभूपनबलजीता॥तुलसिदासछविनिरखिजानकी,मनवांछितफललीता ॥ ४ ॥ १५ ॥

रामभजासोइजीता, जगमें॥टेक॥हाथसुमिरनीबगलकतरनी, पढेभागवतगीता॥ हृदयशुद्धकीन्होनाहिंअवहूं, कहतसुनतादिनबीता॥ १ ॥ आनदेवकीलक्ष्माकीनी, हरिसेरहाअलीता ॥ धनयौवनतेरोयोंहीजायगा, अंतसमयचलरीता ॥ २ ॥ बावरियानेबावरिलूरीफंदजालसबकीता॥कहतकबीरकालजोमारे,ज्योंमिरगाकोचीता ॥ ३ ॥ १६ ॥

साधोभाईगगनघटाघहरानी ॥ टेक॥ पश्चिमदिशासे

उठीबदरिया, पूरबओरसेपानी॥१॥ चंद्रसूर्यदोउईश बनाई, जोतिकियोनिरबानी ॥ अपनीअपनीओरसँभारो, बहिनजाययहपानी ॥ २ ॥ शीलसंतोषकीकरोबावरी, ज्ञानकिबललगावो। दूबघासमदुरीउलटावो बोबोहरकीधानी ॥३॥ चिताचेतनदोउचौकमेंबैठे, चूकनजायमेरीधानी॥भृकुटीकोबाणहाथकरराखो, गुरुगमगोलादानी॥ ४॥उपजाखेतरासघरआई, आनँद मंगलखानी ॥राजाबासेकबहुँनबोलै, निर्भयभईकिसानी ॥ ५ ॥ जिनकोसतगुरुपूरोमिलोहै, तिनयहमारगजानी ॥ कहतकबीरसुनोभाईसाधो, रामनाममनिज जानी ॥ ६ ॥ १७ ॥

बलिछलिकैकाकीन्हो, हरितुम०॥टेक ॥ बांधनगयेबँधायेआपहि, बड़ीसयानीकीनो ॥ १ ॥ लियेलकुटियाद्वारेठाढ़े, निशिवासरआधीनो ॥२॥ तीनपैगबसुधाकेकारण, बलिकोसर्वसदीनो ॥३ ॥ सूरदासप्रभुबलिकीविनती, हरिचरणनचितदीनो ॥ ४ ॥ १८ ॥

रुमझुमरुमझुमराघवजीआवैं, हाथधनुषकरबाणचलावैं॥ टेक ॥ दूरिखेलनजानिजावोप्यारेरघुवर, सांझपरीघरआवोप्यारेरघुवर ॥ १ ॥ कौनकेअँगनामेंतुलसीकोबिरवा, कौनकेअँगनामेंखेलैंप्यारेरघुवर ॥२ ॥ केकयिकेअँगनामेंतुलसीकोबिरवा, कौशल्याकेअंगनामेंखेलेंप्यारेरघुवर ॥ ३ ॥ कौनकेछैयाकौनकेभै

या, कौनरायजीकेरामजीरमैया ॥ ४ ॥ कौशल्याके छैयालक्ष्मणजीकेभैया, राजादशरथजीकेरामजीरमैया ॥५॥ सरजूकेनीरेतीरे तुरगनचावें, संगसखालिये विहरतआवें ॥ ६ ॥ तुलसिदासजीकेअवनाभवना, तीनलोकरमिरहेप्यारेरघुवर ॥ ७ ॥ १९ ॥

झमझुमझमझुमगोविंदआवैं, हाथलकुटमुखमुरली बजावें ॥ टेक ॥ दूरिखेलनजनिजावोप्यारेललना, सांझभईघरआवोप्यारेललना ॥१॥ कौनकेअँगनामेंतुलसीकोबिरवा, कौनकेअँगनामेंखेलेंप्यारेललना ॥ २॥ देवकीकेअँगनामेंतुलसीकोबिरवा यशुदाकेअँगनामें खेलेंप्यारेललना ॥३ ॥कौनकेछैयाकृष्णजीकौनकेभैया, कौनमहरकेकुँवरकन्हैया।४।देवकीकेछैयाबलदाऊजीकेभैया,नंदमहरकेकुँवरकन्हैया।५। यमुनाकेनीरेतीरेधेनुचरावैं, गौवनकेसँगविहरतआवैं॥६॥ कहतकबीरमेरेअवनाभवना, तीनलोकफिरिआवैंप्यारे ललना ॥ ७ ॥ २० ॥

मनरे, तूचित्रकूटवसभाई ॥टेक ॥ जहांरामसुखधाम जानकी, सँगलक्ष्मणसुखदाई ॥ १ ॥ पयसरणीपापनकीहरणी, जाकोक्योंननहाई ॥जोगंगादेवनकोदुर्लभ, सोअनसूयामाई ॥ २ ॥ जोरजकोब्रह्माशिवनारद, मुनिखोजतमनलाई ॥ जोपदरेणुसुरनकोदुर्लभ, लेशिवशीशचढाई ॥ ३ ॥ चित्रकूटद्रुमगुहाकंदरा, जहँ

विहरतरघुराई ॥ रामकृपाभजुजानकिवल्लभ, औरन आनदपाई ॥ ४ ॥ २१ ॥

संतचरणचितलाई, मनरेतूसं० ॥ टेक ॥ कलिमल हरणचरणसंतनके सुमिरतहोतसहाई ॥ १ ॥ गंगायमुनाऔरसरस्वती, तीरथसकलचलेन्हाई॥जहँजहँचरणपरतसंतनके, तहँतहँहोतसहाई ॥ २ ॥ संतचरणदेखतजोपावै, सातसमुद्रफिरआई॥कामक्रोधमदलोभाविषयवश, इनसोंलेतछोड़ाई ॥३॥ सबमुनींद्रनारदादिकवीश्वर, वेदपुराणनगाई॥शेषसहसमुखरटतनिरंतर, महिमातिननाहिंपाई ॥ ४ ॥ सूरअग्रसबसंतआदिले, तुलसिदासमनलाई ॥ रामदाससंतनकीमहिमा हरिअपनेमुखगाई ॥ ५ ॥ २२ ॥

संतनकेवशआई, हरिजीसं० ॥ टेक ॥ जातिबरणकुल जानतनाहीं, लोगकरैंचतुराई ॥ १ ॥ शबरीजातिभिल्लिनीहोती, बेरतोरकेलाई॥प्रीतिजानवाकेफलखाये, तीनउलोकबड़ाई॥२॥ कर्माकौनअचानिनिहोती, हरिसोंप्रीतिलगाई ॥ छप्पनभोगआरोगेप्रभुतुम, पहिलेखिचरीखाई ॥ ३ ॥ नामापीपाऔरइदासा, उनहूंसेप्रीतिलगाई ॥ सैनाभक्तकोसंशयमेटो, आपभयेहरिनाई ॥ ४ ॥ सहसअठासीऋषिमुनिहोते, तबहुँनशंखबजाई॥ कहतकबीरश्वपचकेआये, शंखमगनहोयगाई ॥ ६ ॥ २३ ॥

हरिसोंलगेरहोमेरेभाई, ०॥टेक॥ ऐसोजतनकरोमन मेरे, रामविसरिजिनजाई॥ १॥ लागेध्रुवप्रह्लादविभी षण, गणिकासदनकसाई॥नामदेवरयदासकबीरा, पी पामीराबाई॥ २॥लंकालागेबंकालागे, लागेसेनाना ई॥कहाकहोंसेवरीकीमहिमा, मोसेवरणिनजाई॥ ३॥ निपटसनेहकरोसाधुनसे, छांड़िकपटचतुराई॥दयाध मेंहृदयमेंराखो, सहजमिलेंरघुराई॥४॥ जोहठध्यान धरतघटभीतर, औरनआनउपाई॥ रामकृपाभज जानकिवल्लभ, तीनहुँलोकबड़ाई॥५॥ २४॥

अबतोरामभजनकरभाई, अ० ॥टेक॥ घड़ीघड़ियाल बाजिरहेबाजा, पहरपहरसहनाई॥ रामभजनबिनवृ थाजातहै, कालनिसानबजाई॥ १॥जाकीआशाकरत होआगे, मानुपदेहनरपाई॥करनीतोकछुबनिनहिँआ वै, अबकरभजनसवाई॥२॥जोयहअवसरचूकेपामर, फिरकैनहींभलाई॥ लखचौरासीयोनिकेमाहीं, भट कतहीमरजाई॥ ३॥ बिनहरिभजनभलानहिँतेरा, सत्यकहौंमैरामदुहाई॥ रामहिरामरटोनिशिवासर, अतिशयप्रीतिलगाई॥४॥ नानकदासरामभजुभाई, हितचितसेलौलाई॥ऐसेसंतपुकारकहतहैं, दोउभुजाउ ठाई॥५॥ २५॥

इतिरविवारकीगौरीसमाप्त।

अथ सोमवारकी गौरी प्रारंभः ।

विश्वामित्रअवधपुरआये॥टेक॥ आवनसुनिअतिआतुरहोइकै, श्रवणसुनतउठिधाये ॥ १ ॥चरणधोयबहुविधिकरिपूजा,आदरकरिबैठाये॥रामलखनमोहिंमांगदीजे,ऐसेवचनसुनाये॥ २ ॥ बालकजानिकहोतुमकैसे,वेदपारनहिंपाये ॥विश्वरूपमहिभारउतारन,नरस्वरूपधरिआये ॥ ३ ॥ कंपिततनगद्गदभइबाणी, प्राणरहेयकठाये ॥तुलसिदासहरिरूपनिहारे,चरणकमलचितलाये ॥ ४ ॥ १ ॥

राजन,रामलखनमोहिंदीजे॥ टेक ॥ यशरावरोलाभढोटानहु, मनसनाथसबकीजे ॥ १ ॥ डरपतअबसांचेसनेहवश,सुतप्रभावबिनजाने ॥ बूझियवामदेवअरुकुलगुरु, तुमपुनिपरमसयाने ॥ १ ॥ रिपुरणदलिमखराखिकुशलअति,अलपदिननघरऐहैं॥तुलसिदासरघुवंशतिलककी, कविकुलकीरतिगैहैं ॥ ३ ॥ २ ॥

ऋषिसँग, हर्षिचलेदोउभाई ॥ टेक ॥ पितुपदबंदिसीसलियोआयसु, सुनिशिषआयसुपाई ॥ १ ॥ नीलपीतपाथोजबरणबपु, वयकिशोरबनिआई ॥ शरधनुपाणिपीतपटकटितट, कसेनिषंगबनाई ॥२ ॥ कलितकंठमणिमालकलेवर, चंदनखौरसोहाई॥सुंदरवदनकमलदललोचन, मुखछबिबरणिनजाई ॥ ३ ॥ पल्लवपक्षसुमनशिरसोहत,काकहौंरूपलोनाई। मनहुँमूरतिधरिउभयभागभई, त्रिभुवनसुंदरताई॥४॥ पैठतसरनि

शिलनिचादिचितवत, खगमृगवनरुचिराई ॥ सादरस
मयसप्रेमपुलकिमुनि, पुनिपुनिलेतवलाई ॥ ५ ॥ ए
कतीरतकिहतीताडुका, विद्याविप्रपढाई ॥ राख्योयज्ञ
जीतिरजनीचर, भेजगविदितवड़ाई ॥ ६ ॥ चरणकमल
रजपरसिअहल्या, निजपतिलोकसिधाई ॥ तुलसिदा
सप्रभुकेवृझेमुनि, सुरसरिकथासुनाई ॥ ७ ॥ ३ ॥
सोहतमगदोउभाई, मुनिसंग ॥ टेक ॥ तरुणतमाल
चारुचंपकछवि, कविसुभायकहिजाई ॥ १ ॥ भूषणव
सनअनुहरतअंगपर, ऊगतसुंदरताई ॥ वदनमनोजस
रोरुहलोचन, शोभारहीलुनाई ॥ २ ॥ अंशनिधनुशर
करकमलनकटि, कसेनिषंगवनाई ॥ सकलभुवनशोभा
सर्वसलघु, लागतनिरपिनिकाई ॥ ३ ॥ महिमृदुपथव
नछांहसुमनसुर, हर्षिपवनसुखदाई ॥ जलथलरुहफल
फूलसलिलसव, करतप्रेमपहुनाई ॥ ४ ॥ सकुचसभी
तविनीतसाथगुरु, बोलनिचलनिसोहाई ॥ खगमृगसु
मगविलोकतविचविच, लसतललितलरिकाई ॥ ५ ॥
विद्यादईजानिविद्यानिधि, विद्यहुलह्योवडाई ॥ ख्याल
हिंदल्योताडुकालखिमुनि, देतअसीसअघाई ॥ ६ ॥
वृझतप्रभुसुरसरिप्रसंगकहि, निजकुलकथासुनाई ॥ गा
धिसुवनसनेहसुखसंपति, उरआश्रमनसमाई ॥ ७ ॥ वन
वासीवटुयतियोगीजन, साधुसिद्धसमुदाई ॥ पूजेपेखि
प्रीतिपुलकेतन, नयनलाभलुटजाई ॥ ८ ॥ मखराखेखल

दलदलिभुजवल, वाजतविबुधवधाई॥ नितपथ्थचरित सहिततुलसीचित, वसतलखनरघुराई ॥ ९ ॥ ४ ॥ येदोउ, दशरथकेहैंवारे॥टेक ॥नामरामघनश्यामलष णलघु, नखसिखअँगउजियारे॥१॥ धीरबीरबिरुदैत वांकुरे, महावाहुवलभारे।निजहितलागिमांगिआनेमैं धर्मसेतुरखवारे॥२॥ एकतीरतकिहतीताडुका, किये सुरसाधुसुखारे॥ यज्ञराखिजगसाखितोषिऋषि, निद रिनिशाचरमारे ॥ ३ ॥ मुनित्रियतारिस्वयंबरदेखन, आयेसुनिवचनतुम्हारे ॥येदोउदेखिपिनाकनेकजेहिं नृपतिलाजज्वरजारे॥४॥सुनिसानंदसराहसपरिजन वारहिंवारनिहारे॥ पूजिसप्रेमप्रशंसिकौशिकहिं, भूप तिसदनासिधारे ॥५॥ शोचतअतिसनेहनिशिबासर, नृपहिंनखतगयेतारे ॥ पठयेबोलिभोरगुरुकेसँग, रंग भूमिपगधारे॥ ६ ॥ नगरलोगसुधिपाइमुदितसब, नि जनिजकाजविसारे।मनहुँमघाजलउमँगिउदधिरुख, चलेमिलननरनारे।७॥येकिशोरधनुघोरबहुतकरि, बि लखिविलोकिनिहारे॥ टऱ्योनचापतीन्हजिन्हसुभट न, कौतुककुधरउधारे ८ येजानेबिनुजनकजानिये, क रिप्रणभूपहँकारे ॥ नतरुसुधासागरकोपरिहरि, कूपख नावतखारे।९।सुषमाशीलसनेहकेसाने, मानोरूपबिरं चिसँवारे॥ रोमरोमपरशोभाकामशत, कोटिबारफेरि डारे॥१०॥कोउकहतेजप्रतापपुंजये, चितयेनजातनि

हारे॥छवतशरासनशलभजरंगो,दिनकरवंशदियारे॥
॥११॥एककहेंकछुहोइसुफलमयें,जीवनजन्महमारे॥अ
वलोकभरिनयनआजुहो,तुलसीकेप्राणपियारे॥१२॥५
जातचलेदोउभाई, जनकपुर ॥ टेक॥ गौरश्यामसुंदर
तनराजैं, कोटिकामछविछाई ॥ मंदहासमुसकातजा
तहैं, शोभावरणिनजाई॥१॥ क्रीटमुकुटमकराकृति
कुंडल, करमेंधनुषसोहाई॥जनकपुरीगलियनमेंविहरें
मोहेंनरअरुनारी ॥ २ ॥ बालकवृंदबहुतसँगलागे, र
चनाविविधबनाई ॥ सैनासयनकरतअपसमें, सांझ
भयेघरआई ॥ ३ ॥ करिपरमोदबालसबफेरे, गुरुच
रणनशिरनाई ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर, तन
कीतपनबुझाई ॥ ४ ॥ ६ ॥

भुजनपरआवतधनुषधरे ॥टेक॥ कटितूणीरबाणकर
राजे,येभूभारहरे॥१॥क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल,उ
रबनमालधरे ॥ इनकेदर्शपर्शपायेते, पापपहारतरे ॥
॥२॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकरि,गौतमनारितरे॥
सुंदरश्यामसलोनेसेढोटा, केसरतिलककरे ॥ ३ ॥ ज
नकस्वयंवरपावनकरिकै, सीतारामजीवरे ॥ तुलसि
दासदरबाररामके, मोसेपतिततरे ॥ ४ ॥ ७ ॥

देखोसखी, मुनिसँगबालककाके ॥टेक॥ रविशशिको
टिवदनकीशोभा, गौरश्यामतनजाके ॥ लक्ष्मणराम
कौसल्याकेजाये, दशरथनामपिताके ॥१॥ क्रीटमुकु

टमकराकृतिकुंडल, धनुषबाणकरजाके॥गौतमऋषि कीनारिअहल्या, तारेचरणछुआके ॥२॥ विश्वामित्र कोयज्ञसुफलकियो, गृहआयेराजाके ॥ सबकीअहमि तिहरिहैंरामजी, कारजकरनासियाके ॥ ३ ॥ चतुरस खीमिलिचलींहैंजानकी, पूजाकरनउमाके॥तुलसिदा सविधिआनिमिलोहै, लेखलिखाबिधनाके॥४॥८॥

तुमऋषिसांचेकहो, ऋषिबोले॥टेक॥ किसकेबालक किधरसेआये, जनकनगरऋषिलाये॥जनकनगरकी नारिपुरुषमिलि, सबहीपूंछनधाये ॥ १ ॥अवधनगर मेंदशरथराजा, सरजूउतरसुहाई॥ रघुवरलक्ष्मणभरत शत्रुहन, तीनलोकपतिराई ॥ २ ॥क्रीटमुकुटकरधनु षविराजै, जगमेंकीरतिभारी॥विश्वामित्रकोयज्ञसफ करि, चरणअहल्यातारी॥ ३ ॥ पूर्णब्रह्मसकलघट वासी, रामलखनदोउभाई ॥ गौरश्यामदोउसंगहमा रे, अवधनगरद्विजभोई ॥४॥९॥

सियाजीकेसंग, चतुरसबसखियां॥ टेक ॥ करतप्रका शफिरतफुलवारी, संगलियेसबसखियां॥ १ ॥ भवन समीपतडागबागवर, देखनकोअभिलषियां॥रामरमा पतिकबहुँकेआये, दोउमिलिभईअभिलषियां॥ २ ॥ कहाभयोगौरीकेपूजे, पलकनलागतअँखियां ॥ सुंदर श्यामरामरघुनंदन, हृदयमध्यधरिरखियां॥३॥शारद शेषमहेशजीगावैं, वेदपारनहिंपावैं ॥कृपानिवासराम जीकीमूरति, हृदयमांझलिखिरखियां ॥ ४ ॥ १० ॥

चंदोकुँवर, अयोध्यावारे ॥ टेक ॥ बाललीलासरजूत
टविहर, सुंदरराजदुलारे ॥१॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफ
लकियोअसुरमारिसुरथापे॥गौतमनारिअहल्यातारि
जनकपुरीपगधारे ॥ २ ॥ राजाजनकजीकेयज्ञमेंठाढे,
शोभितराजदुलारे ॥ मानहुँसिंहपेरगजदलमें,नृपनके
यूथविदारे ॥ ३॥ लक्ष्मणकहेसुनुहुँप्रभुमेरे,विश्वकेपा
लनहारे ।कोटिकोटिब्रह्मांडकेकर्ताकितिकधनुषविचा
रे॥४॥ बांयेचरणचापगहिलीन्हो,खंडखंडकरिडारे॥
देखतहीदुरिगईसभासव,सूर्यउदयजिमितारे ॥ ५ ॥
बाजाबाजेविनाबजाये,सोहतन्यारेन्यारे॥नचहिंनव
लअप्सरामुदितमन,बंदीवेदउचारे ॥ ६ ॥ शिवसन
कादिआदिब्रह्मादिक,निगमनेतियशगावें॥तुलसीदा
सआशरघुवरकी,लैसंतनउरधारे ॥ ७॥ ११ ॥
शंभुजीको,तोऱ्योधनुषरघुराई ॥टेक ॥ रघुवरचलेज
नकपुरव्याहन,लक्ष्मणसंगलगाई ॥ देशदेशकेभूपजुरे
हें,बैठेअंगफुलाई ॥१॥ जयजयकारभयोत्रिभुवनमें,दे
वसुमनझरिलाई ॥ बडेबडेबीरगजेंद्रसेयोधा, थकिकै
शीसनवाई ॥२॥ परशुरामक्रोधेइतनासुनि,जनकनग
रचलिआई ।देखिडरेनरनारिसभाके,जहँतहँरहेलुका
ई ॥३॥ ऐसेवीरभयोत्रिभुवनमें,शिवकोचापचढाई ॥
कहुजडजनकधनुषकिनतोऱ्यो,सोतुमदेहुवताई ॥४॥
येतनासुनिलक्ष्मणउठिबोले,फरसालेकेधाई॥ बालक

जानिवर्धोंनहिंतोहीं,जानेंकाप्रभुताई ॥ ५ ॥ सहसर भुजासहस्त्रार्जुनके,काटेवीरकहाई ॥ बहुतदिननको शंभुशरासन,छुवतैदोपलगाई ॥॥६॥ हमक्षत्रियतुमबिप्रगोसाई,हमतुमकौनलराई ॥ जोकोईबीरचढ़ैरणभीतर,कोउनहिंपीठदेखाई॥७॥ रामबचनसुनिज्ञानप्रगटभयो,धनुसौंपेउरघुराई ।तुलसिदासबलिहारीचरणकी,तबमुनिगयेशिरनाई॥ ८॥ १२ ॥

जनकपुर,घरघरबजतबधाई॥ टेक ॥ लक्ष्मणरामसंगकौशिकमुनि,रंगभवनहरिआये ॥१॥ सबमंचनतेमंचश्रेष्ठयक,रत्नजड़ावबनाई ॥ गुरुसमेतसँगतहँरघुनंदन,ताऊपरबैठाई ॥ २ ॥ देशदेशकेभूपतिनाना,धनुषयज्ञसुनिआयेभूपसहसदशएकहिबारा लगेउठावनआई।३।डिगेउनशंभुशराशनकैसेउ, अधिकरगरुआई॥ताहीसमयतानिरघुनंदन,खंडखंडकरिडारी।४।जयजयकारभयोसुरपुरमें,देवनदुंदुभिबजाई ॥नचहिंनवलअप्सरामुदितमन,आनंदइरनसमाई ॥ ५॥ करिसिंगारसखीलैआई,शोभाबरणिनजाई ॥करसरोजजयमालसोहाई,रघुवरउरपहिराई ॥ ६ ॥ सीताब्याहिअवधहरिआयेमंगलचारबनाई मातुकौशिल्याकरतआरती,तुलसिदासगुणगाई ॥७॥ १३॥

जनकजीकेअँगना, भीरभईभारी ॥टके ॥ साजिबरातचलेराजादशरथ,हयगजकीअसवारी ॥ झकतझरो

खेलागिसुंदरी, आवतअवधविहारी ॥ १ ॥ सीताराम युगलमिलिबैठे, देखनआयेत्रिपुरारी ॥ सुरनरमुनिब्र ह्मादिदेवता, जयजयकारउचारी ॥ २ ॥ सियाकरकंक णरघुवरछोरें, गाढ़ीगांठिलगाई ॥ खोलतरामखुलतन हिंकंकण, नारिहँसींदैतारी ॥ ३ ॥ जुरिआयेरनिवास मुदितमन, देतरामकोगारी ॥ तुमसेरघुवरछूटतनाहीं बोलिलेहुमहतारी ॥४॥ बोलीउमासनेहमगनमन, का सकुचावहुनारी ॥ तोरतधनुषविलमनहिंकीन्हो, कंक णकहाविचारी ॥ ५ ॥ अंचलओटसियामुसकानी, त नकीदशाविसारी ॥ नेवछावरसवहीकरिडारे, तुल सिदासबलिहारी ॥ ६ ॥ १४

रामहिंनीके, निरखिसुनयनी ॥टेक॥ मनमहँसमुझिअ गमयहिअवसर, करतसकुचपिकबयनी । १ ॥बड़ेभाग्य मखभूमिप्रगटभइ, सियासुमंगलदेनी ॥ जोकारणलोच नगोचरभइ, मूरतिसबसुखदेनी ॥२॥ कुलगुरुतियकेब चनमधुरसुनि, जनकयुवतिमतिपयनी ॥ तुलसीशिथि लदेहसुधिकरसब, सहजसनेहविषयनी ॥ ३ ॥ १५ ॥

जवदोउ, दशरथकुँवरबिलोके ॥टेक ॥ जनकनगरनर नारिमुदितमन, निरखिनयनपलरोके ॥ १ ॥ वयकिशो रघनतड़ितबरणछवि, नखशिखअंगलोनाई ॥ दैचितके हितलैसबछाविवित, विधिनिजहाथसँवांरे ॥ २ ॥ संक टनृपहिंशोचअतिसीतहिं, भूपसकुचाशिरनाये । उठेरा

मरघुकुलकलकेहरि, गुरुअनुशासनपाये ॥ ३ ॥ कौतुकहीकोदंडखंडिप्रभु, जयअरुजानकिपाये ॥ तुलसिदासकीरतिरघुवरकी, मुनिजनतिहुँपुरगाये ॥ ४ ॥ १६ ॥

कठिनधनुषकैसेतोऱ्यो, श्रीराघवजीने ॥ टेक ॥ बड़ेबड़ेभूपसप्तद्वीपनके, उनहूँनेकनमोरे ॥ १ ॥ पितुअसीसजवदियोहमारे, विश्वामित्रसहाई ॥ यातेजोरभयोजबमेरे, तासोंलियोउठाई ॥ २ ॥ हाथचूममुखचूमतकौशल्या, बाजतअवधबधाई ॥ तुलसिदासरघुवीरवदनपर, वारबारबलिजाई ॥ ३ ॥ १७ ॥

॥ इति सोमवारकीगौरी समाप्त ।

॥ अथ मंगलवारकीगौरी प्रारंभः ।

कौनदिशासेआये, पवनसुत० ॥ टेक ॥ उत्तरखंडअयोध्यानगरी, ऋष्यमूकसेआये ॥ १ ॥ कौनकेपुत्रकौनकेपायक, कवनेकुँवरपठाये ॥ २ ॥ कहांछोड़ेरामकहांछोड़ेलक्ष्मण, कहांतेमुद्रालाये ॥ बनहिमेंरामबनहिमेंलक्ष्मण, वनहीसेमुद्रालाये ॥ ३ ॥ कौनकेसतसेसागरउतरे, कौनसँदेसालाये ॥ सीताकेसतसेसागरउतरे, रामसँदेसालाये ॥ ४ ॥ सुनिसुनिवचनसियाबनचरके, नयननीरभरिआये ॥ अवजिनशोचकरोमेरीमाता, रामसहितदलआये ॥ ५ ॥ रावणमारिअभीलैजाऊं, रामआज्ञानहिंपाये ॥ तुलसिदासहनुमानभरोसे, सोवतसिंहजगाये ॥ ६ ॥ १ ॥

रघुवर, कबकरिहैंगेफेरा ॥ टेक ॥ सैनाजोरिसमुद्रप
रपहुँचे, उतरेजायसुबेला ॥ १ ॥ लालहैंतनुआजरद
किनारी ,रामलषणकेडेरा॥वानरभीलुदईकिलकारी,
जायलंकगढ़घेरा ॥ २ ॥ घरघरलंकाफूंकिदियोहै, ह
नूमानअलबेला ॥ तुलसिदासप्रभुरूपनिहारे, हरिच
रणनकेचेरा ॥ ३ ॥ २ ॥

यकदिन, रामआज्ञाजोपावों ॥टेक॥ सातसमुद्रछिन
हिमेंसोखों, लंकामेंधूरिउड़ावों॥लंकाकेसबखंभउखा
रों, उठायआयाध्येलयावों ॥१॥ पैठिपतालतोरियं
मकातरि, कालिनाथिलैआवों॥इंद्रहुकोइंद्रासनतोरौं,
सूर्यकोरथबिलमावों ॥ २ ॥ लंकाअसकोटसमुद्रअ
सिखाई, बैदसुखेनहिंल्यावों ॥ कालनेमिकोकरोसँ
हारो, मूलसजीवनिल्यावों ॥३॥ रावणकेदशमस्तक
छेदों, जानकीराममिलावों ॥तुलसिदासरघुनाथभरो
से, अंजनीलालकहावों ॥ ४ ॥ ३ ॥

जोमैं, रामरजायसुपायो ॥टेक ॥ गलमेलीमुद्रिकामु
दितमन,कपिराजहिंशिरनायो॥ १ ॥भालुनाथनलनील
साथचले,बलीबालिकोजायो ॥फराकिअंगभयेसगुनक
हतमानो,मगमुदमंगलछायो॥२॥देखिवीरसुधिपायगृ
ध्रसे, सबनिअपनबलपायो ॥ सुमिरिरामतकितराकि
तोयनिधि, लंकल्हमसोआयो ॥३॥ खोजतघरघरज

नुदरिद्रमन, फिरतलागिधनधाये॥तुलसीसियबिलो किपुलक्योतन,भूरिभागभइभायो ॥ ४ ॥ ४ ॥
हरकोदंड, कठिनजिनतोरा ॥ टेक ॥ कहतमँदोदरि सुनुपियरावण,बानरभालुबटोरा॥सेतुबांधिदलपारउ तरिआये, सोरभयोचहुँओरा ॥१॥सूर्पणखाकोरूपह र्योहै,खरदूषणमदतोरा॥उनसेबैरकबहुँनहिंकीजे बि नतीकरौंकरजोरा॥२॥रामलषणदोउबीरधुरंधर ,पव नतनयबलजोरा॥जामवंतसुग्रीवनीलनल, कालसमा नकठोरा॥३॥तामेंमिलोविभीषणदेवर,बंधुलगेपियतो रा॥लंकाजरिकैगरदमिलीहै,जसपत्थरकेरोरा ॥४॥दो उकरजोरिसियालैआगे,मिलनचलोपियमोरा ॥ तुल सिदासप्रभुशीलकेस्वामी,मानुबचनपतिमोरा॥५॥५॥
देखोपिया, जनकसुतापतिआये ॥ टेक ॥ डिगेसुमेरु दसोदिशिहालैं, गरदभानुरथछाये ॥ सियलेमिलोकि पुरतेभाजो, सिंधुसाजिरथआये ॥१ ॥ मिलेआनधा रनदशरथसुत,सोनेकोसिंधुबँधाये॥अबलेमिलौमिल वेकोअवसर, जबलौंपारनआये ॥२॥ अहोपियातुम मानतनाहीं, बहुबिधिकहिसमझाये॥आयोहतोबालि सुतअंगद, काहेनपगहुँसमाये ॥ ३ ॥ अरेनखेदडरत हौअबला, काहेभरमगमाये ॥ मोहिँबरदानदियो हैशंभुने,पायोसोकालबँधावो ॥४॥बंदरएकनामगंधर मा,रामदूतसोइआयो ॥उड़िउड़िदैत्यदसोदिशिभाजे

चहुंदिशिलखनाछायो ॥ ५ ॥ सागरपारसैन्यसबआई, गढ़लंकानमछायो ॥ तुलसिदासप्रभुपारउतरिआये, विनतीकरौंकरजोरी ॥ ६ ॥ ६ ॥

सबतजिमैंरघुपतिपहँजैहौं ॥ टेक ॥ जननीशपथखातहौंतेरी, फिरिनहिंवदनदिखैहौं ॥ १ ॥ तजिहौंराजसमाजलंकको, अनुचरजायकहैहौं ॥ क्षमिहैंसबअपराधरामजी, अपनेशरणलगैहौं ॥ २ ॥ चरणघावउरदियोदशानन, कैसेशूलमिटैहौं ॥ ऐसोहितूसरकोउनाहिंन, जासोंखबरजनैहौं ॥ ३ ॥ बारबारकहेवचनविभीषण, ऐसोदावनपैहौं ॥ तुलसिदासरघुनाथहाथअब, मैंबिनुदामविकैहौं ॥ ४ ॥ ७ ॥

कुटुमतजि, शरणरामकेआये ॥ टेक ॥ तजिगढ़लंकमहलअरुमंदिर, नामसुनतउठिधाये ॥ १ ॥ भरीसभामेंरावणबैठो, परहितलातचलाये ॥ मूरखबंधुकहानहिंमाने, बारबारसमुझाये ॥ २ ॥ आवतहीलंकापतिकीनो, हरिहँसिकंठलगाये ॥ जन्मजन्मकेमिटेपराछित, रामदरशजबपाये ॥ ३ ॥ श्रीरघुनाथअनाथकेबंधू, दीनजानिअपनाये ॥ तुलसिदासभजुनवलसियावर, भक्तिअभयपदपाये ॥ ४ ॥ ८ ॥

तैंमेरोहूबलजायोपवनसुत, तैं० ॥ टेक ॥ लंकाजायकहाकरिआयो, बागमधुरफलपाये ॥ जानकीक्योंनधऱ्योशिरऊपर, लंकाक्योंनहिलाये ॥ १ ॥ यहसुनबातकहतमातासँग, रामआज्ञानाहिंपाये ॥ आज्ञामंगकव

ऊँनाहिंकीजै, यहीपरनमोहिंभाये ॥२॥ मातारोषकरत सुतऊपर, धरणीपर्वतफोऱ्यो ॥ ऐसोदूधकोपीवनहारो, रावणक्योंनाहिंमाऱ्यो ॥ ३ ॥ अंजनीकेपुत्ररामजीकेपायक, शिवजीकेलालकहायो ॥ तुलसिदासलंकापरहंका, हनुमतबीराखायो ॥ ४ ॥

अबगढ़फिरिगईरामदोहाई ॥ टेक ॥ कहतमंदोदरिसुनुपियरावण, कौनकुमतिभरमाई ॥ ओछीबुद्धिकर्मतुमकीन्हो, तिरियाहरतपराई ॥ १ ॥ कंचनकोटदेखिमतिभूली, औरसमुद्रअसिखाई ॥ पवनकेपुत्रमहाबलदाई, छिनमेंलंकजराई ॥ २ ॥ हमरावणदशमस्तकमेरे, कुंभकरणबलभाई ॥ सहस्रयोद्धामेरेरखवारे, कहाकरेंदोउभाई ॥ ३ ॥ जोरावणतुमहरिसोंमिलते, देतअयोध्याठाई ॥ कहतकबीरसुनोभाईसाधो, लंकबिभीषणपाई ॥ ४ ॥ १० ॥

जबकररघवबाणधरैंगे ॥ टेक ॥ सँगरघुनाथभीरबनचरकी, कपिदलकोपिचढ़ैंगे ॥ श्यामघटाघनझुँकीहैं अँधेरी, सूर्यहुगगनछिपैंगे ॥ १ ॥ पँचरँगबाणरामलक्ष्मणके, सागरतीररोपैंगे ॥ जोसागरकोगर्बकरतहै, तापरसेतुबँधैंगे ॥ २ ॥ लंकासोकोटसमुद्रअसिखाई, थरहरभूमिपरैंगे ॥ जामवंतहनुमाननीलनल, महाधुनिगर्जकरैंगे ॥ ३ ॥ रातिभयानकसपनादेखो, लंकाकोटलुटैंगे ॥ नामविभीषणबंधुतुम्हारे, रघुपतिजाय

मिलेंगे ॥ ४ ॥ मेघनादसेपुत्र तुम्हारे, वानोंहि धीर धरेंगे ॥ कुंभकर्णबलबंधु तुम्हारे, रणमें जूझि मरेंगे ॥ ५ ॥ अहि रावणगयेधामसिहैं, लंकामेंशोकपरेंगे ॥ चौंसठियोगि निमंगलगावें, खप्परवीरभरेंगे ॥ ६ ॥ दशशिरछेदि वीसभुजतोरे, एकहिबाणहरैंगे ॥ जोनारदमुनिसुखसे भाखी, सारतरामकरेंगे ॥ ७ ॥ श्रीरघुनाथअनाथकेबंधू, शरणेजायपरेंगे ॥ अग्रकेस्वामीलैमिलोजानकी, कछु दिनराजकरोगे ॥ ८ ॥ ११ ॥

अबदेखोरामध्वजाफहरानी ॥ टेक ॥ झलकतढालफरा कतनेजा, गरदउडीअसमानी ॥ लक्ष्मणवीरबालिसुत अंगद, हनूमानअगवानी ॥ १ ॥ कहतमंदोदरिसुनुपिय रावण, त्रिभुवनपतिसेठानी ॥ जोसागरकोगर्भकतहै ताप्रशिलउतरानी ॥ २ ॥ तिरियाजातिबुद्धिकीओछी उनहीकीकरतबड़ाई ॥ भुवमंडलसेपकरिमँगावों, ओ तपसीदोउभाई ॥ ३ ॥ हनूमानसेपायकउनके, लक्ष्मण सेबलभाई ॥ जरतअगिनिमेंकूदिपरतहैं, कोटगनेनहिं खाई ॥ ४ ॥ मेघनादसेपुत्रहमारे, कुंभकर्णबलभाई ॥ एकबारसन्मुखहोइलडिहौं, युगयुगहोतबड़ाई ॥ ५ ॥ कहतिमंदोदरिसुनुपियरावण, तैंमेरीएकनमानी ॥ रैन कोसपनाऐसोभयाहै, सोनेकीलंकालुटानी ॥ ६ ॥ बंदर एकलंकविचआयो, घरघरधूममचाई ॥ बागउखारिस मुद्रविचडारे लंकामेंआगिलगाई ॥ ७ ॥ गर्वीरावणग

वंनकीजै, गर्वहिलंकलुटाई॥ जायमिलोरघुनाथकुँवर से, लंकअचलहोइजाई॥ ८॥ एकलखपुत्रसवालखनाती, मौत आपनीठानी॥अग्रकेस्वामीगढ़लंकाघेरे, अजहुँनचेतअभिमानी॥ ९ ॥ १२ ॥

जोमैंजानकीनाथकहावों॥टेक॥ सुनुसुग्रीवप्रतिज्ञामेरी, रावणकुटुंबवहावों ॥ १ ॥ जाम्बवानहनुमाननीलनल,बालिसुवनलैजावों॥बांधोंउदधिपद्मअष्टादश,लंकाकोटदहावों॥२॥रावणकेदशमस्तकछेदों, असुरजहांलगिपावों॥ बाणनमारिबेहालकरौंगो,देवनबंदिछोड़ावों॥४॥लंकाराजविभीषणदेहौं,युगयुगछत्रफिरावों तुलसीदासप्रतिज्ञामेरी,सियासहितघरआवों॥४॥१३॥

॥ इति मंगलवारकी गौरी समाप्त ॥

॥ अथ बुधवारकी गौरी प्रारंभः ॥

यशोदामैयादेखतकोकान्होबारो ॥टेक॥मथुरामेंहरिजन्मलियोहै,तीनलोकउजियारो ॥ केशपकरिहरिकंसपछारो, जीतोमल्लअखारो ॥१॥ निर्मलजलयमुनाजीकोकरिकै, नागनाथिलायोकारो ॥फणपरनृत्यकरतमनमोहन, सुंदरश्यामदुलारो ॥ २ ॥ अतिसुकुमारकमलहूतेकोमल,गिरिगोवर्धनधारो॥डूबततेब्रजराखिलियोहै, गर्वइंद्रकोमारो ॥ ३ ॥ हैकोउबड़ोदेवदेवनमें, यशुमातिपुत्रतुम्हारो॥ सूरदासहरिरूपनिहारो जीवनप्राणहमारो ॥ ४ ॥ १ ॥

यदुवर लागतहै मोहिप्यारो ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्मलियोहै, गोकुलमें पगधारो ॥ जन्मतहीपूतनागतिदीनी अधमउधारनहारो ॥ १ ॥ यमुनाकेनीरेतीरेधेनुचरावे, ओढेकामरिकारो ॥ सुंदरवदनकमलदललोचन, पीतांबरपटवारो ॥ २ ॥ मोरमुकुटमकराकृतकुंडल, करमें मुरलीधारो ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजैं, संतनकोरखवारो ॥ ३ ॥ जलडूबतव्रजराखिलियोहै, करपरगिरिवरधारो ॥ मीराकेप्रभुगिरिधरनागर, जीवनप्राणहमारो ॥ ४ ॥ २ ॥

ग्वालिनीक्योंठाढ़ीनँदपौरी ॥ टेक ॥ बारबारइतउतफिरआवे, विजयाखायभईबौरी ॥ नंदनँदनसेकवनकासहै, हमसेक्योंनकहोरी ॥ १ ॥ सुंदरश्यामसलोनेढोटा, उनदधिलेनकहोरी ॥ हमसेकहेंतुमनेकरखडीरहो, आपुनबैठरहोरी ॥ २ ॥ नवलखधेनुनंदबाबाके, तो रोहिलेनकहोरी ॥ यौवनमातीफिरतिग्वालिनी, तेंमेरोलालठगोरी ॥ ३ ॥ इतनासुनिकैनिकसिआयेसोहन, दधिकोमोलकहोरी, परमानंदस्वामीरूपलोभाने ॥ अबदधिमलोविकोरी ॥ ४ ॥ ३ ॥

मगनभईसुनिबंसीकीटेरी ॥ टेक ॥ पनियाकेमिसनिकसीअकेली, गौउआअचवनकीवेरी ॥ १ ॥ गजकीचालचलैमृगनयनी, चपलनयनचितहेरी ॥ आजुकीशोभामोसेवरणिनजाई श्यामघटाघनघेरी ॥ २ ॥

आजुमखीव्रजराजवजायोशंखघंटघनघोरी ॥मुरलीकीधुनिसुनिभईहैंबावरी,श्यामामिलनकीबेरी॥३॥सामृपूंछेसुनहुवहुरिया,कहांलगाईअतिदेरी ॥ परमानंदस्वामीमिलेगैलमें,तातेभईअबेरी ॥ ४ ॥ ४ ॥

ग्वालिनितैंमेरोगेंदचोराई॥टेक ॥ खेलतगेंदगिरोतेरेअँगना,अँगियाबीचछिपाई ॥ १ ॥ सांचेलालझूंठमतिबोलो,अँगियातकतपराई ॥ जोअँगियाबिचगेंदनिकसे,भूलिजाइचतुराई ॥ २ ॥ काहेकोगेंदकाहेकोधागा,कौनकेहाथबनाई, फूलनकोगेंदरेशमकोधागा,यशुमतिहाथबनाई ॥ ३ ॥ हँसिहँसिबातकरतराधेसइतमेंयशोदामैयाआई।सूरदासप्रभुचतुरकन्हैया,एकगेंददुइपाई ॥ ४ ॥ ५ ॥

माईमेरोरूठेबालगोबिंदा ॥ टेक ॥ करिकरिअंगुलीगगनदेखावत, खेलनमांगेचंदा ॥ २ ॥ भाजनमैंजलमेलियशोदा,प्रभुकोचंदादिखावे ॥ रुदनकरतढूंढ़तजलभीतर,चंदधरननाहिँआवै ॥ २ ॥ दूधदहीमाखनघृतरोटी,खावेमेरोछौना ॥ मांगिबोहरिकोऔरनटरहीयहिविधिखेलेललना ॥ ३ ॥ भक्तउधारनअसुसंहारन,मेरेप्रभुकंसनिकंदा ॥ येछबिकीबलिहारियशोदा,वारीपरमानंदा ॥ ४ ॥ ६ ॥

आजुमेरेकहांअटकेगिरिधारी॥टेक॥ खोजतखोजतफिरतिजशोदा,घरघरकरतपुछारी ॥ कारनकवनला

त्नाहिंआये,कंसकालभयभारी ॥ १ ॥ यूथयूथसखि याचलिआई,दतजशोदाकोगारी ॥ नंदनँदनकोजोर जुठोंनो।खैंचतअंचलसारी ॥२॥ रुमकझुमकमोहनच लिआए,नयननर्नीरभरिवारी॥ मुरलीमेरीछीनलईहैं, इनसखियनमोहिंमारी ॥ ३ ॥ हँसिमुसुकायकहतराधे जी,दूषणनाहिंहमारी ॥ श्यामसुंदरमैंतुम्हरेदरसको, चंद्रसखीबलिहारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

नेकचलोनंदरानीउहांलगि ॥टेक॥ देखोअपनेसुतकी करनी,दूधमिलावतपानी ॥ १ ॥ हमरेशिरकीनईचु नरिया,लैगोरसमेंसानी॥२ ॥हमरेउनसेकउनबादहै, हमेंदेखावतजवानी ॥ ३॥ तुम्हरेकुलकोऐसीबतियां, सोहमरेसबजानी॥४॥ पितातुम्हारेकंसघरबांधे,आ पकहावतदानी ५॥ यहब्रजकोबसबोहमत्यागो,आ परहोरजधानी ॥ ६ ॥ सूरदासऊषरकीवर्षा,थोरेजल उतरानी ॥ ७ ॥ ८ ॥

हरिजीसकौनदुहावतगैया ॥ टेक ॥ कारेआपकामरी कारी,आवतचोरकन्हैया ॥ १ ॥ कनकदोहनीसोंहैहा थमें,दुहनबैठेअधपैया ॥ २ ॥ खनदूहतखनधारचला वत चितवनमेंमुसकैया ॥ ३ ॥ गोपनछोड़िगहेमेरोअं चल,यहीसिखायोतेरीमैया ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजुबाल कृष्णछबि,चरणकमलबलिजैया ॥ ५ ॥ ९ ॥

यशोदामैयाकाहेनमंगलगावे ॥टेक॥ पूरणब्रह्मअखि

लअविनाशी,सोतेरीधेनुचरावै ॥ १ ॥ कोटिकोटिब्रह्मांडकेभर्ता,जपतध्याननहिँआवै॥नाजानोयहकौनपुण्यसे,यशुमातिगोदखेलावै ॥ २॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक,निगमनेतियशगावै ॥ शेषसहसमुखरटतनिरंतर,सोवाकोपारनपावै ॥३॥ सुंदरवदनकमलदललोचन,गोधनकेसंगआवै ॥ मातायशोदाकरतआरती,कबिरादर्शनपावै ॥ ४ ॥ १० ॥

बनहुँसेआवतधेनुचराये ॥टेक ॥आगेआगेधेनुपीछेयदुनंदन,ब्रजरजमुखलपटाये ॥ १ ॥ मोरमुकुटमकराकृतकुंडल,उरबनमालसुहाये ॥ बाहुविशालबिभूषणसोहै,करगहिकमलफिराये ॥ २॥ चंदनचर्चितअंगमनोहर,भृगुलक्षणछबिछाये॥शेषसहसमुखरटतनिरंतर,सोवाकोपारनपाये ॥ ३ ॥ कम्बुकंठकौस्तुभमणिराजै,शोभाबरणिनजाये ॥ घूंघरवारेअलकबदनपर,मधुकररहैंलोभाये ॥४॥ चढेबिमानदेवमुनिहर्षे,पुष्पमालझरिलाये॥कृष्णदासप्रभुकीछबिनिरखे,चरणकमलचितलाये ॥ ५ ॥ ॥ ११ ॥

बनहुँसेआवतगावतगौरी ॥टेक ॥ आगेआगेधेनुपीछेनँदनंदन,लालायशुमतिकोरी॥ १॥ अँटाचढ़ीब्रजबधूनिहारैं,निरखिपरमपदपावैरी॥आवतदेखेश्यामम्नोहरपुष्पमाललैदोरी ॥२॥अधरनमुरलीधरेमनमोहन,सबब्रजनारिठगोरी ॥ आजकीशोभामोसेबरणि

नजाई, ओढ़ेपीतपिछौरी ॥३॥ मोरमुकुटपीतांबरसो हैं, भालतिलकशिरखोरी ॥ नंददासप्रभुकीछबिनि रखें, भागबड़ोतिनकोरी ॥ ४ ॥ १२ ॥

वनहुँतेआवतधेनुचरानी ॥टेक॥ संध्यासमयश्यामले मुखपर, गोपदरजलपटानी ॥ १ ॥ देहीमुकुटशीसपर राजै, मधुकररहेलोभानी ॥ शोभालालिलालटकन की, जोनाउड़तउड़ानी॥२॥ बिधिवाहनभषतनकीमा ला, शोभतउरफहरानी ॥ मनहुँमँदागनिधसीअमलप र, जोनाफूलउड़ानी ॥ ३ ॥ बालगोपालनंदजीकेढोटा, ग्वालबनेएकठानी ॥ सूरदासप्रभुरासिकमुकुटपर, शो भावरणिनजानी ॥ ४ ॥ १३ ॥

हैहैकरतसुरारीगोवनसँग ॥ टेक ॥ जोदर्शनलगिसुरस बध्यावैं, ब्रह्माआदित्रिपुरारी ॥सोनँदलालग्वालसँग खेलत, महिमानाथतुम्हारी ॥ १ ॥ जोरजकोब्रह्मादिक नारद, खोजिखोजिमुनिहारी॥सोरजलैलैव्रजकीबनि ता, डारतडगरबुहारी ॥ २ ॥ जोभुजबलसबअसुरसँहा रे, रावणरिपुदलभारी॥सोभुजपकड़िकहतव्रजबाला, दांवदेवगिरिधारी॥ ३ ॥यहिविधिकौतुककरहुकृपा निधि, अलखपुरुषतनुधारी ॥ सूरदाससंतनकेसर्वस, नाथभक्तहितकारी ॥ ४ ॥ १४ ॥

खरिकबिचक्योंठाढ़ीराधाप्यारी ॥टेक॥ माथेहाथदि येकरशोचत,कहँलगितेरीत्यारी ॥देखेंगेसोकहाकहेंगे

सुनिऋतुराजकुमारी ॥ १ ॥ अबहींलालगयेगौवनमें, अत्रआवनकीत्यारी॥वंसीबाजिरहीमोहनकी, मोहिलईं ब्रजनारी ॥ २ ॥ तीनलोककीरूपलाड़िली, कंचनकी अनुहारी ॥ यहशोभामोपैबरणिनजाई, बिधिनाआप सवांरी ॥ ३ ॥ लाललाड़िलीमिलेखरिकमें, हृदयहर्षब्रज नारी ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछबि, तनमनधनबलिहारी ॥ ४ ॥ १५ ॥

सुनुसखीमोहनबेणुबजावै ॥ टेक ॥ सांझसमयगोधनके पीछे, आछेबनिठनिआवै ॥ १ ॥ कहूंपुष्पकहुँकुसुममंजरी, कहुँतुलसीदललावै ॥ गुंजमालबनमाललालउर, अंगअंगछबिछावै ॥ २ ॥ इंदुवदनअरबिंदनयनशिर, मुकुटमधुरसुरगावै ॥ कुंजभवनमारगउपबनमें, मोर चकोरनचावै ॥ ३ ॥ श्रुतिकुंडलझलकनअलकानिपर, हलकननयनासिरावै ॥ पीतदुकूलखौरकेसरकी, नवल सखीमनभावै ॥ ४ ॥ १६ ॥

ब्रजललनादुखमोचन, आवैमाईशरदकमलदललोचन ॥ टेक ॥ गोधनसँगपुनीतकरमुरली, तिलककियेगोरोचन ॥ १ ॥ आगेआगेधेनुपीछेयदुनंदन, करगहेकमलफिरावैं ॥ बालगोपालनंदजीकेढोटा, मधुरीसीबेणुबजावैं ॥ २ ॥ कटिपरलालकाछनीकाछे, ओढ़ेपीतपिछौरी ॥ आपुनहँसतहँसावतग्वालन, रागअलापतगौरी ॥ ३ ॥ तुलसीकोपत्रपुष्पकीमाला, झुँकग्वालिनपहि

गावे ॥ मोरमुकुटवैजंतीमाला, कुंडलझलकतआवे ॥४॥ चपंपुष्पहवमुनिहूपं,मोहीब्रजकीनारी॥कृष्णदा सप्रभुरसिकमुकुटपर,लालगोवर्धनधारी ॥ ५ ॥ १७ आवेमाइहलधरगिरिधरजोरी ॥टेक॥ हलधरकहेमेरी कारीकामर,गिरिधरकहेमेरीधोरी ॥ १ ॥ हलधरकर हलमूसलधारे,गिरिधरछत्रधरोरी ॥ हलधरओढ़ेनील नीलांबर,गिरिधरपीतपिछोरी ॥ २ ॥ हलधरकेसँग ग्वालबहुतहैं,गिरिधरझुंडकरोरी ॥ परमानंदयहध्या नधरतहै,मांगैमुक्तिकरजोरी ॥ ३ ॥ १८ ॥

राजा,एकमानोवचनहमारो ॥टेक ॥ भीष्मद्रोणकर्ण दुर्योधन,सबमिलिमतोविचारो॥पांचगाँवपांडवनको दीजै, औसबराजतिहारो ॥ १ ॥ दक्षिणदेशद्राविड कीनगरी, गौडदेशबंगालो ॥ गढ़गिरिनारकीबैठक दीजै,औसबराजतुम्हारो ॥ २ ॥ भूमिनदेऊंसुईकोना को,रणसंग्रामविचारो ॥क्षत्रियकुलकोयहीधर्महै,को इजीतैकोइहारो ॥ ३ ॥ भारतनाहिंभलोदुर्योधन,म नमेंसमुझविचरो॥कटिकटिसीसपड़ैंधरणीपर, खांड़ो चलैदुधारो॥४॥इतनीसुनिबोलेदुर्योधन,कौनकियोउ पचारो ॥ राजनीतिकोमर्मनजानै,गौवाचरावनहारो ॥५॥ मानतनाहींअंधकोजायो,हरिकोवचननकारो ॥ सूरदासप्रभुभरीसभामें,आयोकालतुम्हारो ॥६॥१९॥ आजुमैंहरिकोशस्त्रगहावौं ॥टेक ॥ जौलाजोंगंगाजन

नीको,संतनुसुतनकहावों ॥ सारथिमारिमहारथिमारों,कपिध्वजसहितउडावों ॥१॥ पांडवसेनसहितसंहारों,दुर्मतिनदीवहावों ॥ लागेनघावअंगमेरेमें,सन्मुखरथैनचावों ॥ २ ॥ जोजीतौंयशहोयजगतमें,जियतनिसानदुरावों ॥ जोमैंमारिमरोंबाणनसे, सुरपुरजाइबसावों ॥ ३ ॥ जोमैंभागौंशपथश्यामकी,क्षत्रियगतिनहिँपावों ॥ सूरदासयहिसमरभूमिमें,जियतनपीठदिखावों ॥ ४ ॥ २० ॥

इतिबुधवारकी गौरी समाप्त ।

अथ सांझसमय मंगलगानेके

दोहा प्रारंभः ।

दोहा–श्रीगुरुमूरतिचंद्रमा, सेवकनयनचकोर॥अष्टपहरनिरखतरहौं, गुरुमूरतिकीओर ॥ १॥श्रीगुरुचरणसरोजरज,निजमनमुकुरसुधार॥बरणौंरघुपतिबिमलयश,जोदायकफलचार ॥ २॥मंगलमयमरजादमय, सकलधर्ममयधीर ॥ऋधिबरसिधिबरमुक्तिबर,सीतावररघुबीर॥ ३ ॥ सुमिरनऐसोचाहिये, जाकोधरियेध्यान ॥सतत्रेताद्वापरकलि,चारौयुगपरमान ॥ ४ ॥ एकबुंदसरितावहै,भिन्नभावनहिँहोय ॥ संतमिलेभगवानसों,मिलिगावैसबकोइ ॥ ५ ॥बिनसत्संगनहरिकथा,ताबिनुमोहनभाग ॥ मोहगयेबिनुरामपद,होयन

दृढ़अनुराग ॥ ६ ॥ मोमेंगुणकछुहैनहीं, तुमगुणभरा
जहाज ॥ गुणअवगुणनविचारिये, बांहगहेकीलाज
॥ ७ ॥ बांहछोड़ायेजातहो, निर्बलजानिकैमोहिं ॥ हृद
येसेजवजावगे, मर्दवखानोंतोहिं ॥ ८ ॥ वारिवरोवरबा
रिहै, तापरवहतवयारि ॥ रघुवरपारउतारिये, अपनी
ओरनिहारि ॥ ९ ॥ बारबारबरमांगहूं, हर्षिदेवश्रीरंग ॥
पदसरोजअनपायिनी, भक्तिसदासतसंग ॥ १० ॥ सी
तापतिरघुनाथजी, तुमलगमेरीदौर ॥ जैसेकागजयंत
को, सूझतऔरनठौर ॥ ११ ॥ सीतापतिरघुनाथको, ने
कनवायोसीस ॥ कहाविभीषणलैमिलो, लंकदियोवक
सीस ॥ १२ ॥ सीतापतिकेकारने, सबधनडाराखोय ॥
मूरखजानेगिरिपऱ्यो, दिनादिनदूनाहोय ॥ १३ ॥ सी
तापतिकीकोठरी, चंदनजड़ेकेंवार ॥ तालेलागीप्रेम
की, खोलैराजकुमार ॥ १४ ॥ करगहिधनुषचढ़ाइये,
चकितभयेनवभूप ॥ मगनभईसियजानकी, निरखिरा
मकोरूप ॥ १५ ॥ रामबामदिशिजानकी, लषणदाहिनी
ओर ॥ ध्यानसकलकल्यानमय, सुरतरुतुलसीतोर ॥ १६
तुलसीमिटेनमोहतम, कियेकोटिगुणग्राम ॥ हृदयकम
लफूलैनहीं, विनरविकुलरविराम ॥ १७ ॥ तुलसीयहत
नखेतहै, मनवचकर्मकिसान ॥ पापपुण्यदोउवीजहैं,
ववैसोलुनैंनिदान ॥ १८ ॥ तुलसीविरवाबागमें, सींचतही
कुम्हिलाय ॥ रामभरोसेराखिये, पर्वतपरहरिआय ॥ १९ ॥

अजगरकरैनचाकरी, पंछीकरैनकाम ॥ दासमलूका योंकहै, सबकेदाताराम ॥२० ॥रामझरोखेबैठिकै, सब कामोजरालेत ॥ जाकीजैसीचाकरी, ताकोतैसादेत ॥ २१ ॥ रामरामतोसबकहैं, ठगठाकुरअरुचोर ॥ विनाप्रेमरीझैंनहीं, तुलसीराजाकिशोर ॥ २२ ॥ राम रामसबकोइकहै, दशरथकहैनकोइ ॥ एकबारदशरथ कहै, कोटियज्ञफलहोइ ॥ २३ ॥ रामभजनकोआ लसी, भोजनकोहुसियार ॥ तुलसीऐसेजीवको वारबारधिक्कार ॥ २४ ॥ रामनामकोआलसी, भो जनकोहुसियार ॥ भेड़िपूंछिभादोंनदी, किसबिधि उतरेपार ॥२५ ॥ रामनाममणिदीपधरु, जीहदेहरी द्वार ॥ तुलसीभीतरबाहरो, जोचाहैउजियार ॥ २६ ॥ तुलसीहायगरीबकी, हरिसोंसहीनजाइ ॥ मुएचामकी फूकसों, लोहभस्महोइजाय ॥ २७ ॥ नाहिँविद्याबलबांह बल, नाहिँखरचनकोदाम ॥ मोसेपतितअपंगकी, तुम पतिराखोराम ॥ २८ ॥ पड़ेरहोदरबारमें, धकाधनीके खान ॥ कबहुँकदीनदयालुके, शब्दपरेगोकान ॥ २९ ॥ संतमिलनकोजाइये, तजिमायाअभिमान ॥ ज्योंज्यों पगआगेपरें, त्योंत्योंयज्ञसमान ॥ ३० ॥ संतबड़ेपरमा रथी, शीतलउनकेअंग ॥ तपनिबुझावेंऔरकी, देदेअ पनारंग ॥ ३१ ॥ संतसंतसबएककहैं, जसआफरकोखे त ॥ कोइकुदरतीलालहै, औरसेतकेसेत ॥ ३२ ॥ रा

मनगरियारामकी,वसैगंगकेतीर॥अचलराजमहराज
की,चौकीहनुमतवीर॥ ३३ ॥अवधधामधामनपति,
अवतारनपतिराम॥सकलसिद्धिपतिजानकी,दासन
पतिहनुमान ॥ ३४ ॥ रामकथामंदाकिनी,चित्रकूट
चितचारु ॥ तुलसीसुभगसनेहवन,सियरघुवीरवि
हारु॥ ३५ ॥चित्रकूटसेकोटनहिं,अवधधामसेधाम॥
सुंदरवनसेवननहीं,रामनामसेनाम॥ ३६ ॥ चित्रकूट
माणिकवनो,भँवरकरैंगुंजार ॥ दुलहिनिप्यारीजान
की,दुलहराजकुमार ॥ ३७ ॥ सीताजीकेवदनपै,वें
दीशोभादेइ॥मानोंफूलकेतकी,भँवरवासनालेइ॥३९।
चित्रकूटचितरमिरह्यो,पैसरनीकेतीर॥ उहांकछुकदि
नरमिरहे,सियालषणरघुवीर ॥४॥ चित्रकूटकेघाटपै,
भइसंतनकीभीर॥तुलसिदासचंदनघिसैं,तिलककरत
रघुवीर ॥४१॥ चित्रकूटकीगैलमें,मुक्तिपरीबिलखाइ॥
मुक्तिकहैरघुनाथसे,मेरीमुक्तिवताइ ॥ ४२ ॥परीरहो
यहिगैलमें,साधुसंतचलिजात॥उडिउडिरजमस्तकप
रै,सहजमुक्तिहोइजात॥४३॥चित्रकूटकेवृक्षको,मर्मन
जानैकोइ॥एकपत्रसेवाकरै,स्वपचतर्भुजहोइ ॥४४ ॥
चित्रकूटकेछोहरा, औरदेशकेभूप ॥ वाकीसरवरको
करैवेचिरत्रातहैभूप ॥४५॥ चलौसखीवहँजाइये, ज
हांवसतव्रजराज॥गोरसवेचनहरिमिलै,एकपंथदोका
ज ॥ ४६ ॥व्रजचौरासीकोसमें, चारिगामनिजधा

म ॥ वृंदावनअरुमधुपुरी, बरसानोनँदगाम ॥४७॥
वृंदावनसेवननहीं,नंदगामसेगाम ॥ बंसीबटसेबटन
हीं,कृष्णनामसेनाम ॥ ४८ ॥ वृंदावनमाणिकबनो,
भँवरकरेंगुंजार ॥दुलहिनिप्यारीराधिका,दूलहनंदकु
मार॥४९॥तुलसीमथुरारामहैं,जोजानेकरिदोय ॥ता
केमुखमेंसोइहै,युगअक्षरबिचजोइ ॥५०॥ राधेतूबड़ि
भागिनी,कौनतपस्याकीन,तीनलोककेनाथहैं, सोते
रेआधीन ॥५१॥ आंकढांकसबकहतहैं, आंबघासअ
रुकैर ॥ तुलसीयहिव्रजभूमिमें,कहारामसेवैर ॥ ५२॥
मेरीभवबाधाहरौ,राधानागरिसोइ ॥ जातनकीझांईप
रे ,श्यामहरितद्युतिहोइ ॥५३ ॥ शीशमुकुटकटिकाछ
नी,करमुरलीउरमाल ॥यहिबानिकमोमनबसौ,सदा
विहारीलाल॥५४॥मोरमुकुटकीचंद्रिका,योंसाजतनँ
दनन्द।मानौंशशिशेखरअकस,कियेशिखरशतचन्द्र
सोहतओढ़ेपीतपट,श्यामसलोनेगात।मनौंनीलमणि
शैलपर,आतपपरोप्रभात५६व्रजबासीवल्लभसदा,मेरे
जीवनप्रान॥उनकोनेकनबीसरों,नंदरायकीआन५७
व्रजतजिअंतनजाइहौं,मेरेयेहीटेक।भूतलभारउतारि
हौं,धरिहौंरूपअनेक ॥५८ ॥कहाकहोंछबिआजुकी,
भलेबिराजेनाथ ॥ तुलसीमस्तकजबनवे,धनुषबाण
लेवहाथ ॥ ५९ ॥ कितमुरलीकितचंद्रिका,कित
गोपिनकोसाथ ॥अपनेजनकेकारने,कृष्णभयेरघुना

थ ॥ ६० ॥ अपनेअपनेइष्टको, नमनकरेसबको
इ ॥ परशुरामविनहितनवै, सोइमूरुखहोइ ॥ ॥ सूर
दाससगुणकथैं, निर्गुणकथैकबीर ॥ रामरत्नतुलसीक
थैं, जयजयासियरघुवीर ॥६२॥ कोटिकल्पकाशीवसै,
मथुराकल्पहजार। एकनिमिषसरजूबसै, तुलैनतुलसी
ताहि॥६३॥कोटिनतीरथकामता, कोटिनरहसविला
स ॥ रजधानीरघुनाथकी, गावततुलसीदास ॥ ६४॥
सियावररामचंद्रकीजय ॥ ६५ ॥ इतिसां. मं. सां.

अथ सातोंवारकी धुन.

अथ गुरुवारकी आरती-प्रारंभः

जयजयआरातिरामजीतुम्हारी, रामजीदयालुभक्तहि
तकारी॥टेक॥ जनहितप्रगटेहरिव्रतधारी, जनप्रह्लाद
प्रतिज्ञापाली ॥ १ ॥ द्रुपदसुताकोचीरबढ़ायो, गजके
काजपयादेधायो ॥ २ ॥ दशशिरछेदिवीसभुजतोरे, तें
तिसकोटिदेवबँदिछोरे ॥ ३ ॥ छत्रलियेकरलक्ष्मणभ्रा
ता, आरतिकरतकौसल्यामाता ॥ ४ ॥ शुकशारदना
रदमुनिध्यावैं, भरतशत्रुहनचँवरढुरावैं ५॥ रामजीके
चरणगहेमहावीरा, ध्रुवप्रह्लादवालिसुतवीरा ॥ ६॥ लं
काजीतिअवधहरिआये, सबसंतनमिलिमंगलगाये॥
॥ ७ ॥ सीतासहितसिंहासनसोहाये, रामनंदस्वामी
आरतिगाये ॥ ८ ॥ १ ॥

इति गुरुवारकी आरती समाप्त।

अथ गुरुवारकी धुन प्रारंभः ।

निरखतरूपसियारघुवरको, छबिनहिँजातबखानी ॥ टेक ॥ कनकथारगजमाणिकमोती, आरतिकरतकौशल्यारानी ॥ मान्योहैमानसकलभूपनको, महिमावेदवखानी ॥ १ ॥ तोरनधनुषयज्ञपूरणकरि, जनकरायजीकीलज्जाराखी ॥ परशुरामकोहितकरमानी, सुरपुरनारिअवधपुरवासी ॥ २ ॥ नचतनवलअप्सरामुदितमन, वर्षिसुमनमुसकानी ॥ रत्नसिंहासनरघुवरबैठे, आरतिकरतकौशल्यामाता, हर्षिनिरखिसुखमानी ॥ ६ ॥ दशरथसहितअवधपुरबासी, तुलसिदासअविचलयहजोरी ॥ भक्तिअभयपददानी ॥ ४ ॥ १ ॥

भजोअवधपुर, सियारघुवीर ॥ टेक ॥ अवधपुरीकोध्यानधरतही, जरामरणछूटैभवभीर ॥ १ ॥ राजादशरथजीकेचारिपुत्रहैं, तिनमेंरघुवीरश्यामशरीर ॥ २ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, विहरतहैंसरयूकेतीर ॥ ३ ॥ रुमकझुमकपगनूपुरबाजैं, गजजिमिचालचलैंरणधीर ॥ ४ ॥ कीटमुकुटमकराकृतिकुंडल, गलेविराजैंमुक्ताहीर ॥ ५ ॥ शारंगधनुषबाणकरराजैं, पीतांबरपहिरेपटचीर ॥ ६ ॥ बामअंगसियाजनकनंदिनी, दहिनेविराजेश्रीलक्ष्मणवीर ॥ ७ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, सेवतहैंनारदमुनिधीर ॥ ८ ॥ तुलसीदासहरिरूपनिहारै, नितउठिगावैगुणगंभीर ॥ ९ ॥ २ ॥

जयरघुवरस्वामीहरिअंतरयामी,आरतिउतारोंप्रभु अंतरयामी॥टेक॥भालविशालतिलकशिरसोहै,कीट मुकुटधारी।श्रवणनकुंडलझलकैं,अद्भुतछविन्यारी१ लोचनललितवदनअतिसुंदर,कंठेवनमाला॥भृगुलक्ष णउरराजै,दशरथसुतलाला ॥ २ ॥ रत्नसिंहासनआ पुविराजे,हरिरघुकुलकेतू॥अधमउधारननाथ,भवसा गरसेतू ॥ ३ ॥ जनकसुतासियजनकनंदिनी,सोहत बांयेअंगा ॥ सन्मुखपवनकुमार,लक्ष्मणदाहिनेअंगा ॥ ४ ॥ पीतवसनकरधनुपविराजैं,हरिबहुविधिसोहैं ॥ सुंदररूपनिहार,कोटिमदनसोहैं, ॥ ५ ॥ चरणकमल कोमलअतिसुंदर,छविवरणीनहिंजाय।सुखमकरंदम इवन,मुनिमनरहेलोभाय॥६॥शारदशेषाविमलयशगा वें,सनकादिकध्यावें ।सोइचरणनउरराखि, शिवनि शिदिनध्यावें ॥७॥आगमनिगमपुराणवखाने,अतिदु र्लभनरदेहु, तुलसीभजुरघुनाथ; जन्मसुफलकरिले हु ॥ ८ ॥ ३ ॥

जययदुवरस्वामीहरिअंतरयामी,आरतिउतारोंप्रभु अंतरयामी ॥टेक॥मथुरामेंहरिजन्मलियोहै,दुष्टनक्ष यकारी॥पृथ्वीभारउतारन,नरदेहीधारी ॥ १ ॥ मथु रासेहरिगोकुलआये,कंसखवरपाई ॥मौतआपनीजा नि,पूतनापहुँचाई ॥२॥ यमलार्जुनयेवृक्ष उपारे,शोभा अतिप्यारी॥नंदयशोदानिरखैं,आनंदउरधारी ॥३॥

रासरचोवृंदावनमोहन,शोभाअतिभारी॥मुरलीअध
रवजावैं,मोहैंब्रजनारी ॥४॥ रुमकझुमकपगनूपुरबा
जै,ठुमकचालभावै ॥ कटिपीतांबरराजै,शोभाअति
पावै ॥५॥ कुंडललोलकपोलविराजै,कंठेबनमाला ॥
भृगुलक्षणउरराजै,संगलियेब्रजबाला ॥ ६ ॥ मोरमुकु
टमकराकृतिकुंडल,लीलावपुधारी॥सूरदासहैशरण,
पलपलबलिहारी ॥ ७ ॥ ४

जयश्रीरघुनाथाजयजानकिनाथा, दोउकरजोरेविन
वोंप्रभुमेरीसुनुबाता ।टेक। तुमरघुनाथहमारे,प्राणपि
तामाता॥तुमहोसजनसंगाती,भक्तिमुक्तिदाता ॥१॥
चौरासीप्रभुबंदिछोड़ावो,मेंटोयमत्रासा॥ निशिदिन
प्रभुमोहिंराखो,अपनेसँगसाथा २ ॥रघुवरलक्ष्मणभर
तशत्रुहन, सँगचारोभैया॥ जगमगजोतिविराजै, शो
भाअतिरैया॥ ३॥ हनुमतनादबजावैं,नूपुरठुमठैया ॥
सुबर्णथालआरती, करतकौशल्यामैया॥ ४ ॥ रामक
बीरकृपाकरिबोले,बोलेउपकारी॥ उनहरिहमहिंबता
वो,सीतारामधनुषधारी ॥५॥ ब्रह्माविष्णुमहादेव, सा
यरसुखदाता॥धन्यतुम्हारोदर्शन,करिहोप्रतिपाला॥
॥६॥ क्रीटमुकुटमकराकृतिकुंडल,शोभाअतिभारी॥
मनीरामदर्शनको, पलपलबलिहारी ॥ ७॥ ५ ॥

जयश्रीयदुनाथाजयलाडिलिनाथा, श्यामसुँदरराधा
मोहनमेटोयमत्रासा॥टेक॥मथुरामेंहरिजन्मलियोहै,

गोकुलपगधारी ॥ झूलतहैंपलनामें, पूतनाप्राणहारी ॥
॥ १ ॥ यमुनाकेनीरेतीरे धेनुचरावें, वंसीअतिबाजी ॥
गौवनकेसंगविहरें, मोरमुकुटधारी ॥ २ ॥ पैठिपताल
कालीनागनाथे, फणपरनृत्यधारी ॥ तातार्थेईतातार्थे
ईउचरे, नटवरवपुधारी॥३ ॥इंद्रकोपचढ़योव्रजकेऊप
र, वर्षाअतिभारी ॥ नखपरागिरिवरधार, गौवनाहित
कारी॥४॥नारदबेनवजावैं, नूपुरठुमकैया ॥कंचनथार
आरती,करत यशोदामैया ॥ ५ ॥ दीनानाथदयाकरि
बोले, बोलेहितकारी ॥ उनहरिहमाहिँबतावो, मोरमु
कुटधारी ॥ ६ ॥ जगन्नाथवलभद्रसुभद्रा, शोभाअति
भारी ॥ सुरनरचँवरढुरावैं, अद्भुतछविन्यारी ॥ ७ ॥
शंखचक्रगदापद्मविराजैं, शोभाअतिभारी ॥ सूरदास
दर्शनको, पलपलबलिहारी ॥ ८ ॥ ६ ॥

जयश्रीरघुनंदाजयजानकिकंदा, आरतीउतारोजय
श्रीरघुनंदा।टेक।क्रीटमुकुटश्रुतिकुंडलसोहैं चक्रवली
राजे ॥ केसरतिलकविराजै, लखिदामिनिलाजै ॥ १ ॥
भृकुटीकोटिकामछविनिंदति,दृगअंजनसोहै ॥ चित
वनललितउदार, सियाकंतमनमोहै ॥२॥ नाकबुलाक
लालअतिसोहै, सुंदरमुसुकानी ॥ दशनअधरछविदे
खि,मोहैंमुनिज्ञानी॥३॥कंठाकंठयुगलकुंजर,मणिकौ
स्तुभउरभ्राजै॥पदिकहारवनमाल,सुंदरछविराजै ।४।
बाहुविशालविभूषण, पहिरेकरशर धनुसोहै॥सुंदररूप

निहारि,कोटिमदनमोहै ॥ ५॥ पीतवसनकटिकिंकिणिराजे,पटकोछविभारी॥ दुहुँछोरनमणिमोती,लागतअतिप्यारी ॥ ६ ॥ सुभगघुंघुरूपायनराजैं, नूपुररवकारी ॥ चरणकमलमृदुसुंदर, आरतभयहारी ॥ ७ ॥ संगसखासरजूतटविहरैं,हनुमतसँगकीन्हो ॥ भरतलखणरिपुसूदन, संगसखालीन्हो ॥ ८ ॥ पुष्पसिंहासनपरममनोहर, राजतसुखकारी ॥ जनकसुताबायेंअँगशोभित, सुकुमारी ॥ ९ ॥ अनुचरझुंडचहूँदिशिराजे, शोभाअतिभारी ॥ तुलसिदासछबिदेखि,पलपलबलिहारी ॥ १० ॥ ७॥

जयनटवरवेषाहरिनटवरवेषा, आरतीउतारोयदुवरजगदीशा॥टेक॥मोरमुकुटमस्तकपरराजे, कंठवनमाला॥श्रवणनकुंडलझलकैं,संगलियेब्रजबाला॥१॥रासरचोनारायणस्वामी,वृंदावनराधे॥तालपखावजबाजैं, मधुरेसुरगावैं ॥ २ ॥ ताथेइताथेइशब्दउचारे, तातापुरराजे॥ सुंदरभृकुटिविराजे, कोटिमदनलाजे ॥ ३ ॥ घुमकरघुमकरघुंघुरूघुमकै,घुमकघुमकघुमकै॥नाचताधामोहन, पायनठुमठुमकै॥४॥ऊंचेस्वरसेशब्दउचारे, मधुरेस्वरगावै॥ राधामोहनजोरी, मनमेंमोहिंभावै॥५॥निरतकरैंगोपाललालजी, शोभाताथेई ॥ केशवहरिमुखनिरखैं, केवलनिरछेई॥ ६ ॥८॥

जयसियमहारानीजयजानकिरानी, सुररंजिनिअघ

गंजिनिसेवतमुनिज्ञानी ॥टेक॥ कुंदरदनिशशिवदनी, दामिनि द्युतिगाता ॥ भूषणवसनसवांरे, करलियेजल जाता॥१॥बेंदीभालविशालविराजे,सुंदरसुमुकानी॥ग जगमनी॥चितरमनी, रघुवरमनमानी ॥ २ ॥ मृगलोच नि अघमोचनि,सखियनसँगसोहैं ॥ विहरतसरयूतीर लखिसुरत्रियमोहैं ॥ ३ ॥ विधिहरिहरतोहिध्यावें, नि जनिजपदपावें॥उमारमाब्रह्माणी,तुहिंनिशिदिनध्या वें ॥ ४ ॥ संतनसुखदरसावें,रघुवररूखलीने ॥सुखसा गरदोउविहरें,रामसेवकहिये ॥ ५ ॥ ९

जयराधेरमनीहरिराधेरमनी,दुखहरनीसुखकरनीगो विँदवशकरनी॥टेक ॥ वृंदावनमेंरासरचोहै,कोकहि सकैबखानी॥सबगोपियनकेमध्यराधेशशिवदनी॥१॥ वृंदावनकीकुंजगलिनमेंलीलासुखकरनी ॥ मोहनना चनचायो,जनकलमलहरनी ॥ २ ॥राधाहरिविज्ञाता गोपुरनिजधानी ॥ इंद्रचंद्रब्रह्मादिक,सकतनगुणव रनी ॥ ३ ॥ सनकादिककेवचनसत्यकरि,प्रकटीब्रज धानी ॥ लीलाअद्भुतकीन्हो,दुष्टनछलदलहीनी ॥ ४ ॥ राधाराधारटनकरतही,बाधाभ्रमहरनी ॥ पंचसखी सिलिवरनी,राधेजगजननी ॥ ५ ॥ १०

प्रकटेसीतारामजीअवधपुरमें ॥ टेक॥ राजादशरथ गृहरामजीजन्मलियो,नौनिधिआईउनकेघरमें ॥१॥ बाजाबजेइंद्रगाजे,जयजयकारभयोपुरमें ॥ २ ॥ व

पंतपुष्पदेवमुनिहर्षंत,आनँदभयोतीनोपुरमें ॥ ३ ॥
संगसखासरयूतटविहरें,धनुषबाणधरेकरमें ॥४॥ वि
श्वामित्रकोयज्ञसफलकरि,खलमारेएकाहिक्षणमें ॥ ५॥
जनकस्वयंवरपावनकीन्हो,तोरोधनुषजनकपुरमें॥६॥
सियाविवाहिअवधपुरआये,आनँदभयोनारीनरमें॥
॥ ७ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतिकुंडल,जनतुलसीधारे
उरमें ॥ ८ ॥ ११ ॥

राम लल्लाशिरटोपीदेखोसखि ॥ टेक ॥ छोटेछोटे
लरिकनसँगखेलैं,हाथलियेघृतरोटी ॥ १ ॥ हाथमेंल
लितपहुंचियासोहै,काननकुंडलरविकीजोती ॥ २ ॥
पगपैंजनियाअधिकसोहावैं,गलेबिचउज्वलमोती॥३॥
रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन,चारोभैयनकीजोटी ॥४॥
रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर,मातकौशल्याहँसिलो
टी ॥ ५ ॥१२ ॥

अच्छेरामजीलला,तुम्हारेवदनपरअनंतकला ।टेक॥
मुखमेंबीरानयनाविशाला,जितचितवैंतितकरतानिहा
ला॥१॥क्रीटमुकुटकुंडलवनमाला,भालतिलकसोहैंन
यनविशाला॥ २ ॥छोटीमोटीनदियागहिरगँभीर,क
ल्पवृक्षतरासियारघुवीर॥ ३ ॥संगसखनकीसोहैभीर,
भरतशत्रुहनलक्ष्मणवीर॥ ४ ॥छोटीसीधनुहियाराम
जी,छोटेमोटेतीरखेलतहैंसरजूकेतीर ॥ ५ ॥
जहँजहँपरेसंतनकेभीर,हर्षितआवेंसियारघुवीर ॥

॥ ६ ॥ प्रागदासगयेसरजूकेतीर, बीचमेंमिलिगये सियारघुवीर ॥ ७ ॥ १३ ॥

अँखियांमेंलागिरहेरघुवीर ॥ टेक ॥ निशिवासरमनला गरहतहै, नयनधरतनीहंधीर ॥ १ ॥ रूपकझुसकपग नूपुरबाजें, चालचलैरणधीर ॥ २ ॥ कीटमुकुटमकरा कृतिकुंडल, गलेबिचमुक्ताहीर ॥ ३ ॥ रघुवरलक्ष्मण भरतशत्रुहन, संगसखनकीभीर ॥ ४ ॥ पीतांबरकर धनुषविराजै, शोभितश्यामशरीर ॥ ५ ॥ तुलसिदास हरिरूपनिहारै, हरतसंतनकीपीर ॥ ६ ॥ १४ ॥

हँसिहँसिमनमोहेंरघुवीर ॥ टेक ॥ मैंसरजूजलभरन जातरही, भरनबिसरगईनीर ॥ १ ॥ कीटमुकुटमक राकृतिकुंडल, गलेबिचमुक्ताहीर ॥ २ ॥ संगसखासरजू तटविहरत, रामलखनदोउवीर ॥ ३ ॥ शारंगधनुषबाण कर राजें, पहिरेपीतांबरचीर ॥ ४ ॥ तुलसिदासहरिरूप निहारे, हरतसंतनकीपीर ॥ ५ ॥ १५ ॥

मोहिंभावेहोश्रीरामजीलला ॥ टेक ॥ चारोभैयारास जीचतुरसुजान, मैयागोदखेलावेहो ॥ १ ॥ कनककटो राअतरफुलेल, मर्दनअधिकसोहावेहो ॥ २ ॥ शिरसोहै जरकसकीपाग, काननकुंडलझलकावेहो ॥ ३ ॥ पीत झँगुलियासुंदरसोहैहरिकेहाथ, हरपिनिरखिपहिरावे हो ॥ ४ ॥ उरसोहेमोतियनकीमाला, बाजूबंदअधिकसो हावेहो ॥ ५ ॥ लालखरउवांसुंदरसोहैहरिकेपांव, अ

नयननभरिफिरिआवेंहो ॥ ६ ॥ प्रागदासजीकेसियारघु बीर, नयननमेंहलगावेंहो ॥ ७ ॥ १६ ॥

भरतरामसमोहिंभावेंहो, सुभगचालसुंदरअतिप्यारी ॥ टेक ॥ राजादशरथजीकेचारपुत्रहैं, शोभावरणिनजावेंहो ॥ १ ॥ सरजूकेतीरेखेलरचोहै, सुंदरबाणचलावेंहो ॥ २ ॥ सरजूनहानचलेरघुनंदन, चपलतुरंगनचावेंहो ॥ ३ ॥ अवधपुरीकीवधूअटाचढि, निरखिपरमपदपावेंहो ॥ ४ ॥ रामसेवकजीकेप्रभुसुखसागर, चारिवेदयशगावेंहो ॥ ५ ॥ १७ ॥

राग-आशावरी ॥ रामजन्मसुनिअपनेपतिसों, हँसिढाढिनियोंबोलीहो ॥ जाहुकंतराजादशरथके, दानकोठरीखोलीहो ॥ टेक ॥ तुमकोदेइँअंगकोबागो, औरदक्षिणाभरझोरीहो ॥ हमकोलीजोनखकोगहनो, पटरसुथाकीचोलीहो ॥ १ ॥ साजसहितयकघोड़ालीजो, गैयादूधअचोलीहो ॥ सहितअम्बारीहाथीलीजो, हथिनी अधिकअमोलीहो ॥ २ ॥ लीजोकंतकहारसहितयकहमहिंचढ़नकोडोलीहो ॥ सोलहवर्षकीसुंदरिलीजो, टहलकरनकोगोरीहो ॥ ३ ॥ सेजसहितएकपलँगालीजो, औपाननकीढोलीहो ॥ बीरीकारिकारिहमहिंखवावे, लीजोसुघरतमोलीहो ॥ ४ ॥ जन्मजन्मकाहूकेआगे, बहुरिनमांडोबोलीहो ॥ जनगोविंदरघुबीरयांचिके, भयेहैंअयाचकढोलीहो ॥ ५ ॥ १८ ॥

इति गुरुवारकी धुन समाप्त ॥

अथ शुक्रवारकी आरती प्रारंभः ।

आरतिलक्ष्मणबालजतीकी, असुरसंहारनरघुवरप्राण पतीकी ॥ टेक ॥ जगमगजोति अवधपुरराजैं, शेषाच लपैलक्ष्मणआपविराजैं ॥ १ ॥ घंटाताल पखावजबाजैं, कोटिदेवमुनिआरतिसाजैं ॥ २ ॥ किरीटमुकुटकर धनुष विराजैं, तीनलोकजाकीशोभाराजैं ॥ ३ ॥ कंचनथार कपूरसुहाई, आरतिकरतसुमित्रामाई ॥ ४ ॥ आरति कीजैहरिकीजैसीतैसी, ध्रुवप्रह्लादविभीषणजैसी ॥ ५ ॥ प्रेममगनहोयआरतिगावैं, बसिबैकुंठबहुरिनाहिंआवैं ॥ ६ ॥ भक्तिहेतुहरिकोलाडलडावैं, जनघनश्यामपर मपदपावैं ॥ ७ ॥ १ ॥

इति शुक्रवारकी आरती समाप्त ।

अथ शुक्रवारकी धुन प्रारंभः ।

आरतिकीजैराजारामचंद्रजीकी, हरिभक्तिकरोयम त्रासनदीजै॥टेक॥पहिलीआरतिपुष्पकीमाला,काली नागनाथिलायेमदनगोपाला ॥ १ ॥ दूसरिआरतिदे वकीनंदन, भक्तउबारनकंसनिकंदन ॥ २ ॥ तीसरि आरतित्रिभुवनमोहै, रत्नसिंहासनसीतारामजीको सोहै ॥ ३ ॥चौथीआरतिचहुंयुगपूजा,देवनिरंजनस्वा मीऔरनदूजा ॥ ४ ॥ पांचवीआरतिरामजीकोभावे, रामजीकोहरियशनामदेवगावे ॥ ५ ॥ १ ॥

मेरे मनबसिगये सीताराम, सीताराम सीताराम सीता राम ॥टेक॥ गौरबरन सिया जनकनंदिनी, रघुबर हैं घनसुंदर श्याम ॥१॥ दशरथपुत्र अयोध्यानायक, तिन पर चँवर ढुरावें हनुमान ॥ २॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो, गौतमनारि पठाये निजधाम ॥ ३ ॥ जटामुकुट मुनिवेष धरो है, कठिन धनुष लिये शारंगबाण ॥४॥ तुम जनि बिसरि जाव तन मनसे, तुम बिनु निकसि जाय मेरे प्राण ॥५॥ सरजूके तीर अयोध्यानगरी, जहँ बिहरें सिया लक्ष्मण राम ॥ ६ ॥ आशानंद कहै कर जोरे, चौंसठि घरी भजु आठौ याम ॥ ७ ॥ २ ॥

आवनकी मनभावनकी, बलिहारी रामजीके आवनकी ॥टेक॥ रघुबर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, श्याम सुरति मनभावनकी ॥१॥ क्रीटमुकुट मकराकृतिकुंडल, उर बनमाल सोहावनकी ॥ २ ॥ पीतांबरकी कछनी काछे, धनुषबाण कर धारनकी ॥३॥ रुमकझुमक पग नूपुर बाजैं, ठुमक चाल मन भावनकी ॥४॥ संग सखा सरजूतट बिहरें, चपल तुरंग नचावनकी ॥ ५ ॥ रामप्रसाद भक्तिबर माँगै, चरनकमल चित लावनकी ॥ ६ ॥ ३ ॥

जय संकटहरना हरि वेंकटरवना, आरति उतारों संतन हितकरना ॥टेक॥ सुंदर शैलशिखर शेषाचल, मुनिजन मनहरना ॥ अति उत्तम अस्थान, अगम निगम भवना ॥१॥ क्रीटमुकुट कर धनुष बिराजे, कुंडल छबि रचना

सुंदरनयनविशाला, चितवनमनहरना ॥२॥ शंखचक्रग दापद्मविराजे, वनमालाधरना ॥ कटिकिंकिणिअतिरा जे, अरुणकमलरचना ॥३॥ दीनानाथदयालुदया नि धि, दीननाहितकरना ॥ अग्रदासचरणनपरपलपल, चितधरना ॥ ४ ॥ ४ ॥

रघुवरमहाराजा२, तुमसबदेवनकेराजा ॥ टेक ॥ अव धपुरीमेंजन्मलियोहै, कल्पवृक्षकीछाया ॥ रत्नसिंहा सनआपुविराजे, दशरथकेसुतलाला ॥ १ ॥ शेषलिये करछत्र, भरतलियेचँवरढुराया। हनूमानकरजोरेठाढे, ब्रह्मावेदसुनाया ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतिकुंडल- उरवनमालसोहाया ॥ शारंगधनुषबाणकरराजै पीतां वरछविछाया ॥ ३ ॥ पायंनललितपैंजनियावाजैं, शो भावरणिनजाया ॥ मातुकौशल्याकरतआरती, सखि यनमंगलगाया॥४॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, नि गमनेतियशगाया ॥ तुलसीदासआसरघुवरकी, चर णकमलचितलाया ॥ ५ ॥ ५ ॥

टीकममहाराजा २- तेरोवेदविमलयशगावैं॥टेक॥तृ णसुमेरुरजकरसुमेरुकहँ, रंककोराजवनावैं॥अविना- शीअरुअंतरयामी, रविशशिनयनलजावैं ॥ १ ॥ सुर पतिशेषविमलयशगावैं, शारदचँवरढुराया ॥निशिवा सरशिवभृकुटिविलोकैं, ब्रह्मावेदसुनाया ॥२॥ नामस्व सतिहुँलोकवसहैं, अंडकटाहकहावें॥गिनिगिनिमुनि

जनपारनपावैं, कुक्षस्कालवजावैं ॥ ३ ॥ नामकलाअतिकोटिविराजै, सुरनरध्यानलगावैं ॥ इंद्रकुबेरनारदसनकादिक, हरिजनहरियशगावैं ॥ ४ ॥ अवधरधरणितुम्हारीकृपानिधि, कुदरतजानिनजावैं ॥ सरजूदासकरुणाकेसागर, पंछीमंगलगावैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

तेरेबाजैअनहदबाजा, लक्ष्मणमहाराजा० ॥ टेक ॥ त्रिपतीमेंसीतारामजीविराजैं, शेषनागकीछाया ॥ शेषाचलपरआपविराजैं, तीनलोककेराया ॥ १ ॥ कीटमुकुटकरधनुषविराजै, गलेवैजंतीमाला ॥ कमलनयनकरुणाकेसागर, वडेवडेभुजाविशाला ॥ २ ॥ ब्रह्माजाकोवेदसुनावें, सुरनरध्यानलगाया ॥ शेषसहसमुखरटतानिरंतर, सोवाकोपारनपाया ॥ ३ ॥ सप्तद्वीपपानीकेऊपर, लीलाअजबबनाया ॥ बिनाखंभअसमानखडाहै, नौलखताराछाया ॥ ४ ॥ भक्तवत्सलसंतनकेहेतु, हरिहैंसुखकेदाया ॥ चरणदासचरणनकीमहिमा, चरणकमलचितलाया ॥ ५ ॥ ७ ॥

दाऊमहाराजा २, तेरेबाजेनौबतबाजा ॥ टेक ॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै, गोवर्द्धनकीछाया ॥ व्रजमंडलमेंआयविराजे, गोलोककेराया ॥ १ ॥ हलमूसलहथियारविराजे, गलेविराजेपटुका ॥ गलेबिचहीराअधिकसोहावै, शिरपरकलँगीचीरा २ गऊलोकतीनोलोकऊपरहै, कृष्णचंद्रकीमाया ॥ शेपसहसमुखरटतनिरंतर, सोवाको

पारनपाया ॥ ३ ॥ सर्वतीर्थमथुरामेंआये,चारिधाम कीमाया।यमुनाकेनिकटकदमकीछैयां,तहांकरेंबिस रामा ॥ ४॥ सनकादिकजाकीविनतीकरतहें,नारद ध्यानलगाया॥इंद्रहुजाकीकरतआरती,ब्रह्मावेदसुना या ॥ ५ ॥ भक्तवत्सलसंतनकेहरे,हरिहैंसुखकेदाया॥ श्रीभटदानइहैप्रभुदीजे,चरणकमलचितलाया ॥६॥८ दर्शनदेवंकटरैया,तेरेदर्शनकोमेरोमनललचै ॥टेक॥ त्रिपतीमेंसीतारामजीविराजें,चौकीहैलक्ष्मणरैया ॥ ॥१॥शेषाचलपरआपविराजें,चौकीहैहनुमतरैया॥२॥ जयओविजयदोउपौरियाविराजेंविजयघंटधुनिहोरै या॥३॥आठपहरफूलनकेजामा, ऊपरचँवरढुरावेरैया ॥४ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजें,क्रीटमुकुटकुंडलरैया ॥ ५ ॥ भोगमढ़ीमेंभोगलगतहे,बेदनकीधुनहोरैया ॥ ॥६॥छप्पनभोगछत्तिसोव्यंजन, ऊपरतुलसीरामिरैया ॥ ७ ॥आसपासगिरिवरकीशोभा,बिचमेंकोयलझूकै या ॥ ८ ॥ जनहाथीरामजीवंकटजीके,शरणआवा गमननिवारैरैया ॥ ९ ॥ ९ ॥

सूर्यवंशउजागरनागर,जयजयलक्ष्मणबालजती॥टेक जयअनंतजयजयभुवनेश्वर,जयजयफणीपतालपती ॥१॥चौदहभुवनशीसपरराजें,भारनलागैएकरती॥२॥ दशरथपुत्रसुमित्रानंदन,कुँवरिउर्मिलाप्राणपती ॥३॥ क्रीटमुकुटमकराकृतिकुंडल,शिरचंदनकीखौरखँचौ

॥ ४ ॥ शारंगधनुषबाणकरराजै, पीतांबरसेकमरकसी ॥ ५ ॥ पचरँगबाणरामलक्ष्मणके, देखिअसुरनकीफाटिछती ॥ ६ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, पारनपावैंयतीसती ॥ ७ ॥ तुलसीदासयहध्यानधरतहैं, रामलषणअरुसियासती ॥ ८ ॥ १० ॥

जयवंकटसंकटहरना, चरणकमलकोदर्शनदीजै ।टेक। भवसागरमेंवहाजातहौं, बांहपकड़िझटपटधरना ॥ १ ॥ गहिरीनदियानावझांझरी, सेवकजानिदयाकरना ।२। जपतपनियमधर्मनहिंजानों, जानोंएकउदरभरना ।३ शंखचक्रगदापद्मविराजे, पीतांबरकछनीकछना ॥ ४ ॥ जनहाथीरामजीवंकटजीकेशरणै, निशिदिननामयहीरटना ॥ ५ ॥ ११ ॥

जयजयबोलोसाधु, लक्ष्मणबालाकी ॥ टेक ॥ दक्षिणदेशसवालखपर्वत, जगमगज्योतिदिवालाकी ॥ १ ॥ त्रिपतीमेंसीतारामजीविराजैं, चौकीलक्ष्मणबालाकी ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपबिराजैं, चौकीहनुमतलालाकी ॥ ३ ॥ जयऔविजयदोउपौंरियाबिराजैं, गहिरीचोपनगाराकी ॥ ४ ॥ आठपहरफूलनकोजामा, ऊपरमौजदुसालाकी ॥ ५ ॥ बालाजीकेरथपररत्नसिंहासन, मुकुटबन्योमोतीमालाकी ॥ ६ ॥ देशदेशकेयात्रीआये, मारपरेमृगछालाकी ॥ ७ ॥ आशानंदकहैकरजोरी, पतिराखोकंठीमालाकी ॥ ८ ॥ १२ ॥

गाल्यिांमतंदउ, तिलंगारंगा ॥ टेक॥ तुमहोतिलंगारं गाहमपरदेसीचंगा, तुम्हारोहमारोसतसंगा ॥१॥ त्रि पर्तीमेंसीतारामजीविराजैं, लक्ष्मीविराजैंदहिनेअंगा ॥ २ ॥ शेषाचलपरआपविराजैं, सन्मुखहैंवजरंगा ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतकुंडल, रूपधरेंवहुरंगा ॥४॥ अष्टपहरफूलनकेजामा, पीतांबरपचरंगा॥५॥ जय औविजयदोउपौंरियाविराजैं, ढिगपुष्करिणीगंगा॥६॥ शंखचक्रगदापद्मविराजैं, रूपवनोवहुरंगा ॥ ७ ॥ आ सपासागिरिवरकीशोभा, वीचमेंकोयलहैचंगा ॥ ८ ॥ जनहाथीरामजीव्यंकटजीकेशरणैं, नितउठिहोयस तसंगा ॥ ९ ॥ १३ ॥

इति शुक्रवारकी धुन समाप्त ।

अथ शनिवारकी आरती प्रारंभः ।

आरतिकीजैनरसिंहकुँवरकी, वेदविमलयशगाऊंमेरे प्रभुजीकी॥टेक॥ पहिलीआरतिप्रह्लादउवारे, हिरनाकु सनखउदरबिदारे॥१॥ दुसरीआरतिवामनसेवा, वलि केद्वारेपधारेहरिदेवा॥२॥ तीसरीआरतीव्रह्मपधारे, स हस्त्रबाहुकेभुजाउखारे॥३॥ चौथीआरतिअसुरसंहारे, भक्तविभीषणलंकपधारे॥ ४ ॥ पांचमीआरतिकंसप छारे, गोपीग्वालसखाप्रतिपाले ॥५॥ तुलसीकोपत्र कंठमणिहीरा, हरखिनिरखिगावैदासकबीरा॥६॥१॥

इति शनिवारकी आरती समाप्त ।

अथ शनिवारकी धुन प्रारंभः ।

नाचौंगीरँगराचौंगी, रघुनंदनआगेमैंना ०टेक।करि शृंगारहारतुलसीको, भालतिलकशिरराखौंगी ॥१॥ प्रेमप्रीतिकेबांधिघूंघुरा, सुरतिकीकछनीमैंकाछौंगी ॥२॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन,सांवलिसुरतिउरराखौंगी ॥ ३ ॥ चुनिचुनिकलियांमैहारवनैहौं,रघुवरउर पहिरावौंगी ॥ ४ ॥ नाचिनाचिरघुनाथरिझावौं, भक्तिरसीलीमैंयाचागी ॥ ५ ॥ लोकलाजकुलकीमर्यादा, इनमेंएकौनराखौंगी ॥ ६ ॥ सरजूकेतीरअयोध्यानगरी, बैठिझिरोंखामैंझांकौंगी ॥ ७ ॥ २ ॥

श्रीमन्नारायणनारायण, सुमिरसुमिरसुमिरभयेपारायण ॥टेक॥जाकोनामलेतअघनासै, कामक्रोधभयेपारायण॥१॥शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक,सुमिरसुमिरभयेपारायण।२।क्रीटमुकुटमकराकृतिकुंडल,शंखचक्रगदाधारायण॥३॥ सेवरीकेफलरुचिरुचिपाये, भक्तसुदामातारायण॥४॥ अजामीलसुतहेतपुकाऱ्यो नामलेतभयोपारायण ॥ ५ ॥ दुर्योधनघरमेवात्याग्यो सागविदुरघरपारायण ॥ ६ ॥ जलडूबतगजराजउबारे, चक्रसुदर्शधारायण ॥ ७ ॥ डूबतसेव्रजराखिलियोहै, करपरांगिरिवरधारायण ॥८॥ चारवेदअरुभगवद्गीता,वाल्मीकिजीकीरामायण ।९॥ माधवदासआसचरणनकी, भवसागरभयेपारायण ॥ १० ॥ ३ ॥

हमचाकररघुनाथकुँवरके ॥टेक॥माथेतिलकमनोहरबाना,द्वादशतिलकदखियमडरपे ॥ १ ॥ हालीवंदसआप्रभुतेरे,मचोंगुलामरावेरघरके ॥ २ ॥ गुरुकेवचनसत्यकरिराखो,सुमिरनकरतसियारघुवरके ॥ ३॥ तुमहिंयाचियाचोंनाहिँऔरहि नाहिँभरोसकोउनारीनरके॥४॥ अग्रदासयहपटालिखायो,दसखतदशरथसुतनिजकरके ॥ ५ ॥ ४ ॥

कबमिलिहैंरघुनाथहमारे ॥ टेक॥ जैसेमिलेप्रभुबलिराजाको, चारिमासहरिद्वारेठाढ़े ॥ १॥ जैसेमिलेप्रह्लादभक्तको, खंभफोरिहिरनाकुसमारे ॥२॥ जैसेमिलेप्रभुद्रुपदसुताको,खैंचतचीरदुशासनहारे ॥३॥ जैसेमिलेप्रभुजनकसुताको तोरोधनुषभूपसबहारे ॥ ४ ॥ तुलसीदासआसपतितनकी, प्रभुमोसेपतितअनेकउधारे ॥ ५ ॥ ५ ॥

अपनोजनप्रह्लादउबारो ॥टेक॥जलहुसेराखिअगिनिहुँसेराखे, राखिलियोगिरिवरहुसेडारो ॥ १ ॥ लक्ष्मीप्रभुकेनिकटनआवें,ऐसोरूपप्रभुकबहुँनधारो ॥ २ ॥ अपनेभक्तकोराजातिलकदियो,हस्तकमलमस्तकपरधारो ॥ ३ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक,हस्तकमलमस्तकपेधारो ॥ ४ ॥ लैप्रह्लादखंभसेबांधेअबकोहैतेरोराखनहारो ॥ ५ ॥ खंभफोरिप्रगटेनरहरिप्रभु,हिरनाकुशनखउदरविदारो ॥ ६ ॥ कौतुकदेखि

देवमुनिहर्षोगणगंधर्वगुणवेदउचारी ॥ ७ ॥ श्रीभटको प्रभुदियोअभयपद, भक्तहेतदानवकुलतारो ॥ ८ ॥ ६ ॥

धायगोविंदगजेंद्रउबारो२ महाग्राहमारो ॥ टेक ॥ खैंच तग्राहगजहिनैकोबल, नभयोतबहरिनामउचारो ॥ १ ॥ फहरफहरफहरातपीतांबर, चरणगमनाकियेगरुडवि सरो ॥ २ ॥ जबमोरिसूंढ़रहीजलऊपर, कमलपुष्पलैइया मकोचढ़ायो ॥ ३ ॥ काटेफंदचक्रधारासों, अघमोचन हरिनामतुम्हारो ॥ ४ ॥ देवनहर्षिदुंदुभीबजाईपुष्प वर्षिजयजयातिउचारो ॥ ५ ॥ अग्रदाससबपतितन कोप्रभु, इंद्रदमनवैकंठसिधारो ॥ ६ ॥ ७ ॥

जयुजैजैजैनरसिंहसही महाराजसही ॥ टेक ॥ खंभफोर हिरनाकुसमाऱ्योराखिलियोप्रह्लादसही ॥ १ ॥ योंहीराम जीनेरावणमारो, भक्तविभीषणलंकदई ॥ २ ॥ योंहीकृष्ण जीनेकंसपछारो उग्रसेनकोराजदई ॥ ३ ॥ उदरफारिमु खझारकियोहै तीनलोकजाकीगरजभई ॥ ४ ॥ शिवसन कादिआदिब्रह्मादिक निकटनआवेलक्ष्मीसही ॥ ५ ॥ तु लसिदासहरिरूपनिहारै भक्तवत्सलकीटेकगही ॥ ६ ॥ ८

नरहरियाप्रभुगिरिधारिया प्रल्हादउबारेनरहरिया ॥ ॥ टेक ॥ रामकृष्णदोउनामबड़ेहैं तारणतरणअभयक रिया ॥ १ ॥ वामनरूपछलेबलिराजा तीनपैरवसुधाकरि या ॥ २ ॥ खंभफोरहिरनाकुसमारेजनप्रल्हादअभयकरि या ॥ ३ ॥ रावणकेदशमस्तकछेदे, बीसभुजाखंडनकरिया

॥ ७॥ यमुनाकेनीरेतीरेधेनुचरावें, करमुरलीवनचनाफि
रिया ॥ ५॥ केशीसारकंसपछारे, उग्रसेनशिरछत्रधरिया
॥ ६॥ कहतकबीरासुनोभाईसाधो, अधमउधारननर
हरिया ॥ ७ ॥ ९ ॥

श्रीरामजाने, फकरियागलतान ॥ टेक ॥ पांचतत्त्वकी
वनीहैफकरी, पडीरहतचौगान ॥ १ ॥ सुरतनिरतकोटो
पवनीहै, धागापदनिर्वान ॥ २ ॥ नादेवेदेहोइपडीहै,
अनहदचर्ढीहैकमान ॥ ३ ॥ हमरोरहनारुखवृक्षतर, अ-
लखपुरुषकोध्यान ॥ ४ ॥ प्रेमकेवदरावर्षनलागे, भी
जतसंतसुजान ॥ ५ ॥ कहतकबीरामेरोअलखायोगी,
मिटगयोआवनजान ॥ ६ ॥ १० ॥

सुझेनदिलसेभूलेंप्यारेराम, सुझें० ॥ टेक ॥ स्याहीगईस
फेदीआई, चलनाहैवडीदूर ॥ १ ॥ डारडारमेंपातपातमें,
तुमहिरंगीलेफूल ॥ २ ॥ हैहजूरनहरिनाहिंनदूर, दि
लकीदुर्मतिभूल ॥ ३ ॥ गोपीचंदभरथरीराजा, शिरसें
डारेधूल ॥ ४ ॥ सेखफरीदकुआमेंलटकें, गिरेंतोचक
नाचूर ॥ ५ ॥ कहतकबीरासुनोभाईसाधो, हरिचरण
नमतिभूल ॥ ६ ॥ ११ ॥

रामजीरतनधनपाया, मायारा० ॥ टेक ॥ वस्तुअमोलक
दियोहैगुरुने, माथेतिलककराया ॥ १ ॥ रामनामकीभई
विभूती, जगमेंसाहकहाया ॥ २ ॥ देतलेतऔखावत
खरचत, दिनदिनहोतसवाया ॥ ३ ॥ राजनदंडेचोरन

छूटै, घरणीधरैनजाया ॥ ४ ॥ लेप्रल्हादखंभमेंबांधे, अबतेरोकौनसहाया ॥५॥ कहांतेरोरामबतावोमोहीं, हाथखड्गझटकाया ॥ ६ ॥ तोमेंमोमेंखड्गखंभमें, व्यापरहेरघुराया ॥ ७ ॥ खंभफोरिहिरनाकुसमारे, नामदेवकेरामजीसहाया ॥ ८ ॥ १२ ॥

बाबाझूंठीमाया, दुर्मतिमेंदिनखोया ॥टेक ॥ श्यामसुंदरसुमिरोनहींपलमें, अंतकालमेंरोया ॥ १ ॥ पहिरिपीतांबरपुष्पबिछाया, हीरामोतीपोया ॥ २ ॥हरिभक्तीबिनमुक्तिनहोगी, कहाभयोतनधोया ॥ ३ ॥ हस्तीघोड़ामालखजाना, नयननभरभरजोया ॥ ४॥ अबतोमूरखभयोबिराना, लंबीचादरसोया ॥ ५ ॥ यहसंसारजहरकीबारी,झूँठीसांचीगाया ॥ ६ ॥गयबीरामसंतनकेशरणै, मनकाधोखाखोया ॥ ७॥ १३ ॥

इति शनिवारकी धुन समाप्त ।

अथ रविवारकी आरती प्रारंभः ।

कहांलगिआरतिदासकरैंगे,सकलभुवनजाकीज्योतिविराजै॥टेक॥सातसमुद्रजाकेचरणनिवासे कहाभयोजलकुंभभरेहोराम ॥ १॥ कोटिभानुजाकेनखकीशोभा,कहाभयोमंदिरदीपधरेहोराम ॥ २ ॥ अठारहभाररोमावलीजाके, कहाभयोशिरपुष्पधरेहोराम।३।छप्पनभोगजाकेनित्यप्रतिलागें,कहाभयोनैवेद्यधरेहोराम ॥ ४ ॥ अनंतकोटिजाकेबाजाबाजैं॥कहाभयोझनकार

करेहोराम ॥ ५ ॥ चारवेदजाकेमुखकीशोभा, कहा
भयोब्रह्मावेदपढ़ेहोराम ॥ ६ ॥ शिवसनकादिआदिब्र
ह्मादिक, नारदमुनिजाकोध्यानधरेहोराम ॥ ७ ॥ हिं
ममंदारजाकोपवनझकोरे, कहाभयोशिरचँवरढुरेहो
राम॥८॥ लखचौरासीवंदछोड़ाये, केवलहरियशनाम
देवगाये ॥ ९ ॥ १ ॥

इति रविवाकी आरती समाप्त ।

अथ रविवारकीधुन प्रारंभः ।

टेरतहेरघुवरजीकीमैयारघुवरजीकीमैया,लक्ष्मणजी
कीमैया॥टेक॥ऊंचेऊंचेसुरलैशब्दउचारे, रघुकुलरघु
कुलरघुकुलरैया॥१॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन,नाहि
आवैंतजिबालसमैया ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतिकुं
डल,धनुषबाणकरधारहोरमैया ॥ ३ ॥ संगसखासरजू
तटविहरैं, भरतशत्रुहनलक्ष्मणभैया ॥ ४ ॥ शिवसन
कादिआदिब्रह्मादिक, नेतिनेतिगावैंनिगमैया ॥ ५ ॥
ताहिधरनकौशल्याधाई,ठुमकठुमकपगचलतरमैया
॥ ६ ॥ धूसरधूरिभरेतनुआये, बिहसतभूपगोदबैठैया
॥ ७ ॥ तुलसिदासप्रभुकीछबिनिरखे, हरषिनिरषिजन
नीलेतबलैया ॥ ८ ॥ १ ॥

नमोनमोतुलसीमहरानी, नमो० ॥टेक॥ जाकोनाम
लेतअघनाशै, महिमावेदपुराणबखानी॥१॥ शाखापत्र
मंजरीकोमल, श्रीपतिचरणकमललपटानी॥२॥ तुम

तुलसीपूरणतपकीन्हो,शालग्रामकीपटरानी॥३॥ धूपदीपनैवेद्यआरती, पुष्पनकीवरखावरखानी ॥४॥ छप्पनभोगछतीसोव्यंजन, विनतुलसीहरिएकनमानी ॥५॥शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, खोजतफिरतमहामुनिज्ञानी ॥ ६ ॥ प्रेमभक्तिकरिहरिबशकीन्हे, साँवरिसुरतिमेरेहियलपटानी॥ ७ ॥ साँवरीसखीमैयातेरोयशगावत, भक्तिदानदीजेमहारानी॥ ८॥ २

नमोनमोतुलसीकरजोरी ॥ टेक॥ हेमरत्नमणिहीररूपमय, शाखापत्रमंजरीतोरी ॥ १ ॥ परमसखीसियजानकीजीवन, सियारामबिहरैंयकठोरी॥२॥चरणशरणदासीशरणागत, प्रेमभक्तिकोकरतनिहोरी ॥ ॥३॥ सिंहासनसियबैठिरामसँग, तुलसीदासदरबाररहोरी ॥ ४ ॥ ३ ॥

वसवोश्रीअवधपुरीकोनीको२, नीकोनामहरीको॥ टेक। उत्तरखंड अयोध्यानगरि निर्मलजलसरजूको।१। रामघाटअस्नानकरनको, दर्शनराघवजीको ॥२॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, ढोटादशरथजीको ॥ ३ ॥ क्रीटमुकुटमकराकृतिकुंडल,शिरकेसरकोटीको॥४। सबभूपनकोमानमथनकियो,तोरोधनुषशिवजीको ॥ ॥ ५ ॥ अष्टपहरकरजोरेरहतहैं, हनूमानअँजनीको ॥ ॥ ६ ॥ तुलसिदासयहध्यानधरतहैं, रामलषणसियाजीको ॥ ७ ॥ ४ ॥

बसबोश्रीवृंदावनकोनीको ॥ टेक ॥ मध्यदेशएकमथु
रानगरी, निर्मलजलयमुनाको ॥१॥ चीरघाटअस्नान
करनको, दर्शनगोविंदजीको ॥ २॥ हलधरागिरिवरम
दनमनोहर, ढोटावसुदेवजीको ॥ ३॥ मोरमुकुटमक
राकृतिकुंडल, गोरोचनकोटीको ॥४॥ वृंदावनमेंबाग
बहुतहैं, बिचबिचवनतुलसीको ॥ ५॥ कुंजनकुंजनफि
रतराधिका, शब्दसुनतमुरलीको ॥ ६ ॥ अष्टपहरकर
जोररहतहैं, गरुड़देवविनतीके ॥ ७ ॥ सूरदासयह
ध्यानधरतहैं, श्यामरामराधाजीको ॥ ८ ॥ ५ ॥

भजु, रघुवरश्यामयुगलचरना ॥टेक॥ इतमेंअयोध्या
निर्मलसरजू, उतमथुराशीतलयमुना ॥ १॥ इतमेंदश
रथकुँवरकहाये, उतमेंकहायेनंदजीकेललना ॥ २ ॥इ
तमेंकौशल्यामैयागोदखेलावै, उतमेंयशोदाझुलावैप
लना ॥३॥ इतमेंकीटमुकुटशिरराजै, उतमेंमोरमुकुट
धरना ॥ ४ ॥इतमेंधनुपबाणकरराजै, उतमुरलीमुख
परधरना ॥५॥ इतमेंचरणअहल्यातारी, उतकुब्जासं
गकियोरमना ॥ ६ ॥ इतमेंजानकीबायेंविराजै, उतरा
धेसंगकियोरमना ॥७॥ इतमेंसागरशिलउतराये, उत
गिरिवरनखपरधरना॥८॥ रावणकेदशमस्तकछेदे, कं
सकोमारवहायोयमुना ॥ ९ ॥ इतमेंराजाविभीषणदी
न्हो, उग्रसेनकोकियोअपना ॥ १० ॥ इततुलसीउतसू
रकहाये, युगलचरणपरचितधरना ॥ ११ ॥ ६ ॥

रघुवंसीहोराम, मेरेमेंवसो ॥टेक॥ सीतामेरीमातापितामेरेराम, लक्ष्मणधनुषचढ़ायेकरवान ॥ १ ॥ गलेमेरेतुलसीमुखमेरेराम, हृदयविराजेंस्वामीशालग्राम॥२॥ हथियनऊपरघुरतानिसान, सुरनरमुनिचढ़िआयेहैंविमान॥३॥वांधेहैंसागरतरेहैंपखान, सियाजीकीखबरिपठायेहनुमान ॥ ४ ॥ तोड़ीगढ़लंकाफिरिगईआन, भक्तविभीषणपायोविश्राम ॥५ ॥ आगेआगेरामलक्ष्मणपीछेहनुमान, आयेहैंअयोध्यापुष्पविमान ॥६॥ तुम्हारोहिजपतपतुम्हारोहिध्यान, बालाजीकोसुमिरनराघवजीकोध्यान॥७॥कीटमुकुटकुंडलवनमाल,शोभाकोवरणिसकैगुणग्राम ॥ ८ ॥ पुरीहैअयोध्यापूरणधाम, रामानंदस्वामीपायेविश्राम ॥ ९ ॥ ७ ॥

भजुदशरथपुत्र, धनुषधरना ॥टेक॥ मातुपिताकीआज्ञामानी, अवधछोंड़िवनकोचलना ॥१॥ बनमेंजायवसेरघुनंदन, जनकसुतारावणहनना ॥ २॥ कपिदलजोरिचढ़ेरघुनंदन, सेतुबांधिसागरतरना ॥ ३॥ रावणकेदशमस्तकछेदे, वीसभुजाखंडनकरना ॥ ४॥ रावणमारिअसुरसवमारे, लंकाजारिगरदकरना ॥५॥ अपनेभक्तकोराजतिलकदियो, आयपरोहरिकेचरना ॥ ॥ ६॥ पुष्पविमानचढ़ेरघुनंदन, वाल्मीकिआश्रमअवना ॥ ७ ॥ सीतासहितअयोध्याआये, सुरनरजयजयकरना ॥ ८ ॥ सीतासहितसिंहासनवैठे, सबदेवनमंग

स्करना ॥ ९ ॥ तुलसिदासरघुवरकेशरणै, चरणकमल परचितधरना ॥ १० ॥ ८ ॥

भजुरेमन, रामसियाचरना ॥टेक॥ दशरथनंदनविधि शिववंदन, भक्तजननकेभयहरना॥ १ ॥विश्वामित्रको यज्ञसुफलकियो, धनुपभंजिसियवरना ॥ २ ॥ नौका सहितकीरकुलतारे, चरणकेछुवतशिलातरना॥४॥बा लिहिमारिसुग्रीवराजदियो,सप्ततालछेदनकरना॥५॥ महाअगाधसिंधुशतयोजन,रघुवरकपिगिरिवरतरना ॥ ६ ॥ रावणकेमस्तकदशछेदे, भक्तविभीषणनृपकर ना॥७॥आयेअवधपुररंगभवनमें,कौशल्याआरतिक रना ॥ ८ ॥ अतिकृपालुकरुणामयउरधरो, चतुरदास राघवशरना ॥ ९ ॥ ९ ॥

मिलिखेलतआवतरामजीलला, भरतशत्रुहनलखन लला ॥टेक॥ वृंदवृंदरघुवंशिनकेसुत,खेलतआवतकर तहला ॥ १ ॥लाडूलियेसकलनिजकरमें, चुगतकाग जोपरतथला ॥ २ ॥ धावतफिरतउठिचलतअजिरमें, करतकेलिवहुछिनर पला ॥ ३ ॥ काकभुशुण्डगहनक रचाहे,सप्तवरणमेंभ्रमतफिरा॥ ४॥नयनमूंदिगयोराम उदरमें, देखेवहुब्रह्मांडकला ॥५॥ खोजतफिरतकल्प शतनाते, बाहरउभयघरीवितला ॥६ ॥ अग्रदासधनि धनिकौशल्या, भाग्यउदयभयेआजुलला ॥ ७॥१० ॥

जयजयजयरघुनाथहरे,पूरणकरतमनोरथमनके ।टे-
क। पूर्णब्रह्मत्रेतामेंप्रगटे,दर्शनदेतनिहालकरे।१।उत्तर
खंडअयोध्यानगरी,निकटहिसरजूनीरबहे॥ २ ॥क्रीट
मुकुटमकराकृतिकुंडल,धनुषबाणकरधारिरहे ॥ ३ ॥र
त्नसिंहासनआपुविराजे,धूपदीपनैवेद्यधरे ॥ ४ ॥ भर
तशत्रुहनचँवरछत्रलिये,सनकादिककरजोरिरहे ॥५॥
माधवदासआसरघुवरके,हमसेपतितअनेकतरे ॥६॥
जयजयजयजगदीशहरे, पूरणकरतमनोरथमनके ॥
॥ टेक ॥ पूर्णब्रह्मद्वापरसेंप्रगटे,दर्शनदेतनिहालकरे ॥
॥ १ ॥ जगन्नाथबलभद्रसुभद्रा, चक्रसुदर्शननिकटधरे
॥ २ ॥ महाप्रसाददेवनकोदुर्लभ,सोनरपावतउदरभरे
॥३॥इंद्रदमनमार्कंडेतीरथ,सेतुगंगाअस्नानकरे॥ ४ ॥
नीलचक्रपरध्वजाविराजै,निकटमहोदधिनीरबहे ।५।
माधवदासआसचरणनकी,भवसागरसेपारकरे६ १२
श्रीगाइयेमहासुखपाइये, श्रीजगन्नाथजगतगुरुगाइये
॥टेक॥अठारहकिनारेचौकीलागै, यात्रीजाननपाइये
॥ १ ॥गृदरियाकोझारोमांगैं, नागालठबजाइये ॥ २ ॥
सिंहपौरपरसिंहविराजै, पंडाबेतलगाइये ॥३॥ इंद्रदम
नमार्कंडेतीरथ,सेतुगंगानहाइये॥४॥हुकुमभयोबलभ
द्रबलीको, बांहपकरकरछाइये॥ ५॥ नीलचक्रपरध्व
जाविराजै, निकटमहोदधिगाजै ॥६ ॥ गरुडखंभपर
गरुडविराजै,सनसुखदर्शनपाइये॥ ७॥जगन्नाथबलभ

कुसुमत्रा, इनतजि अनतन जाइये ।८॥धूपदीपनैवेद्यआ रतीकृष्णनमंगलगाइये॥९॥महाप्रसादकी अधिकहैम हिमा,वेदपुराणनगाइये १० थेइथेइथेइकरतसवसखि यां, वाजाविमलवजाइये॥११॥माधवदासआसचरण नकी, आवागवननिवारिये ॥ १२ ॥ १३ ॥

इति रविवारकी धुन समाप्त ॥

अथ सोमवारकी आरती प्रारंभः ॥

आरतीकरतजनककरजोरे, बडेभाग्यरामजीआये मोरे॥टेक॥ जीतिस्वयंवर धनुषचढाये,सवभूपनकोग र्वमिटाये ॥ १ ॥ तोरिपिनाककियेदुइखंडा,रघुकुलहर्ष रावणभयशंका ॥ २ ॥ आईहैसीतासंगसहेली, हरषि निरषिवरमालामेली ॥३॥गजमोतियनकेचौकपुराये, कनककलशभरिमंगलगाये ॥ ४ ॥ कंचनथारकपूरकी वाती, सुरनरमुनिजनआयेवराती ॥ ५ ॥ फिरतभां वरीवाजावाजे, सियाजीसहितरघुवीरविराजे॥६॥ध निधनिरामलषणदोउभाई, धनिदशरथकौशल्यामा ई॥७॥राजादशरथअरुजनकविदेही,भरतशत्रुहनपर मसनेही ॥ ८ ॥ मिथिलापुरमेंवजतवधाई, दाससुरा रिस्वामीआरतिगाई ॥ ९ ॥ १ ॥

इति सोमवारकी आरती समाप्त ॥

॥ अथ सोमवारकीधुन प्रारंभः ॥

आजुराजाद्वारे, वधैयावाजै॥टेक॥ मिथिलापुरआयेर

घुनंदन, घरघर युवतिन आरति साजै ।१। कीटमुकुटम कराकृति कुंडल, भालतिलक शिर छत्र बिराजै ।२। नख शिख सुंदर अंग मनोहर, कोटि भानु रतिपति छबि लाजै ।३। रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, संग सखा मिथिलापुर राजै ॥ ४ ॥ युगलप्रिया छबि कहां लगि वरणौं, यह मूरति मेरे हृदय बिराजै ॥ ५ ॥ १ ॥

राजत रास श्रीजनककिशोरी ॥टेक॥ सिया भई गौर पिया भये सांवर, रूप देखि शारद भइ भोरी ॥१॥ मंडप में दोउ मदन मनोहर, दशरथसुत अरु जनककिशोरी ॥२॥ राघवजी के सोहै जरकस जामा, सियाजी के सोहै पीत पिछौरी ॥३॥ कनककलश पर फिरत भांवरी, सखियन मंगलचार करोरी ॥४॥ इत में वशिष्ठ मुनि उत में सतानंद, वंशप्रशंस करत दोउ ओरी ॥५॥ इत मे अवधपुर उत मिथिलापुर, बीच में सरजू लेत हिलोरी ॥ ६॥ तुलसिदास हरि रूप निहारे, का वरणों रसना यह जोरी ॥ ७ ॥ २ ॥

जय जय जय, नृपजनककिशोरी ॥टेक॥ तेरो इ ध्यान धरत निशि वासर, नारद शारद शंकर गौरी ॥१॥ लियो उठाय धनुष तिनका ज्यों, बालकेलि लीला बपु धारी ॥२॥ कौतुक देखि भूप पण कीन्हो, धनुष तोरि याको बरसोरी ।३। तेरे यज्ञ भाग के कारण, सकल भये सुर नर एकठोरी ४ याहि धनुष दश सीस भूप भट, पचि पचि हारि चले मुख मोरी ॥५॥ सिंधुर चाल चलै मृगनयनी, रामचंद्र मुखचं

द्वचकोरी ॥६॥ लाहारामदासकान्हरमञ्जु,युगयुगरा मसियाकीजोरी ॥ ७ ॥ ३ ॥

राजतरामजानकीजोरी।टेक।श्यामसरोजजलजसुंद रवर, दुलहिनितड़ितवरणतनगोरी।१।व्याहसमयशो मितवितानतर, उपमाकहुँनलहतमतिमोरी।२।मनहुँ मदनमंजुलमंडपतर,छविसिंगारशोभायकठोरी ३ मं गलमयदोउअंगमनोहर,सुरंगचूनरीपीतापिछोरी४क नककलशपरदेतभांवरी,निरपिरूपशारदमइभोरी ५ मुदितजनकरनिवासरहसवस,चतुरनारिचितवहितृ णतोरी॥६॥नयननकोफलपायप्रेमवश,सकलअसीस हियेसहिहोरी ॥ ७ ॥ तुलसिदासआनंदमगनमन, कावरणौरसनामतिथोरी ॥ ८ ॥ ४ ॥

दुल्हराम,सियादुलहीरी॥टेक॥घनदामिनिवरवरणह रणमन,सुंदरतानखशिखनिबहीरी।१।व्याहविभूषण वसनविभूपित,सखिअवलीलखिठगीसीरहीरी २ जी वनजन्मलेहुलोचनफल, हैइतनोलेउआजुसहीरी।३। सुपमासुरभिसिंगारक्षीरदुहि, मयनअमियमयकियो दहीरी ॥४॥मथिमाखनसियरामसवाँरे,सकलभुवन छविमनहुँमहीरी ॥५॥ रूपराशिविरंचिविरचिमानो,सि लालवनरतिकालनहीरी ॥६॥ तुलसिदासदेखतयेजो री,शोभाअतुलनजातकहीरी ॥ ७ ॥ ५

लैलोरी. भरिलोचनलाहु ॥ टेक ॥ सखीसयानीमि

थिलापुरकी, घरघरशीखदेतसबकाहु ॥१॥ कबकबराम जनकपुरऐहें, कबतुमनारिअयोध्याजाहु ॥ २॥ दुर्लभ दरसहोयदम्पतिको, समुझिसमुझिफिरमनपछताहु ३ नहिंकोउछरीद्वारयहिअवसर, नारिपुरुषसबकरानिर वाहु ॥४॥ मनोकामनाकरिभरिपूरन, फिरिनरहैउरअं तरदाहु ॥ ५॥ शेषमहेशसकलमनरंजित, रामासिया कोहोतविवाहु ॥ ६ ॥ हर्षेदेवसुमनबहुबर्षे, सकल भुवनभरिरहाउछाहु ॥७॥ प्रेमउजागरसबगुणआगर प्रभुहिंविलोकिचकितचितचाउ ॥ ८॥ तुलसिदासध निभागजनककी, चितवतजातजानकीनाहु ॥ ९॥ ६ जनकलली, मधुरेसुरगावै ॥टेक॥ नईनईतानबनाय सहचरी, चंद्रकलाअलिबेणुबजावै ॥ १ ॥ कोउसखि तालमृदंगबजावै, कोउसखिरीझिरीझिगुणगावै॥२॥बै ठीरंगमहलमेंकिशोरी, बिनुसखियनकोइजाननपावै ॥३ ॥कोइसखिदेतपानमुखबीरी, मंदमंदकोइचँवरढु रावै ॥४॥ कोइसखिरैनादिवससुधिबिसरी कोउसखि वारबारशिरनावै ॥ ५॥ शूरकिशोरीबलैयालैहों, को उसखिब्याहकीबातचलावै ॥ ६ ॥ ७ ॥

पियाघनश्याम, सियातनगोरी ॥ टेक ॥ रूपसदनबि धुवदनमनोहर, रघुकुलमणिमिथिलेशकिशोरी ॥१॥ कहाकहुँशोभालालालडिली, छबिसिंगारमनहुँएकठो री॥२॥बैठीरंगमहलमेंकिशोरी, निरखतमुखलोचनठ

कजोरी ॥ ३ ॥ कीटमुकुटराघवजीकेसोहै, सियाजीकेसोहैसुंदरमोरी ॥ ४ ॥ सुमगरूपरातिमदनाविनिंदति, सीतारामसकैकहकोरी ॥ ५ ॥ रामप्रसादके रघुवरस्वामी, हृदयवसोयहसुंदरजोरी ॥ ६ ॥ ८ ॥

राजाराम, जानकीरानी ॥टेक॥ खासगुलामपवनसुतठाढ़े, ब्रह्माविष्णुशंभुदरवानी ॥१॥ सेवरीखासमहलकीदासी, वाहरउमारमाब्रह्मानी ॥२॥ तीनलोकअरुचौदहभुवनमें, नहिंऐसेराजानहिंरानी ॥ ३ ॥ तुलसीदासरूपकोसागर, अवमनमेंमहिमाहमजानी ॥४॥९

येदोउचंद्र, वसोउरमेरे॥टेक॥ दशरथसुतअरुजनकनंदिनी, अरुणकमलकरकमलनफेरे ॥१ ॥ बैठेसंगकुंजनसरजूतट, आसपासललनाघनघेरी ॥ २ ॥ चंद्रवतीशिरचँवरढुरावै, चंद्रकलातनहँसिहँसिहेरी ॥ ३ ॥ ललितभुजालियेअरसपरसझुकि, रहेहैकैसेकपोलननेरी ॥ ४ ॥ रामसखेअवकहिनपरतछावि, पानपीकमुखझुकिझुकिहेरी ॥ ५ ॥ १० ॥

मजुदशरथनंदन, जनकलली ॥टेक॥ राजादशरथजीकेरामजीजन्मालिये, राजजनकजीकेमईहैलली ॥ १ ॥ आगेआगेविश्वामित्रमहामुनि, पीछेलक्ष्मणअतुलवली ॥२॥ येदोउकुँवरजनकपुरआये, पुष्पविछायेगलीगली ॥३॥ तोरउधनुषभूपसवहारे, रायजनकजीकेमैहेभली ॥ ४ ॥ आईहैसीतासंगसहेली, वरमालापहिरा

यचली ॥ ५ ॥ गजमोतियनकीचौकपुराये, मंगलगा वेंपुरकीअली॥६॥ पूजतगौरिमनावतशंकर, बरपाये उरघुनाथवली ॥७॥ तुलसिदासहरिरूपनिहारे, यह जोरिमेरेमनमेंवसी ॥ ८ ॥ ११ ॥

इति सोमवारकी धुन समाप्त ।

अथ मंगलवारकी आरती प्रारंभः ।

आरतिकीजै,हनुमानजीललाकी ॥ दुष्टदलन, रघुनाथकलाकी ॥ टेक ॥ जाकेबलसेगिरिवरकांपे,रोगदोष जाकेनिकटनझांपै ॥१ ॥अंजनीकेपुत्रमहाबलदाई,संतनकेप्रभुसदासहाई ॥ २ ॥ देबीरारघुनाथपठाये, लंकाजारिसियासुधिलाये ॥ ३ ॥ लंकाअसकोटसमुद्र ऐसीखाई, जातपवनसुतबारनलाई ॥ ४ ॥ लंकाजारिअसुरसबमारे, राजारामजीकेकाजसंवारे ॥ ॥५॥लक्ष्मणमूर्छितपरेधरणीमें,आनिसजीवनप्राणउवारे ॥६॥ पैठिपतालतोरियमकातर, अहिरावणके भुजाउखारे॥ ७ ॥बायेंभुजासबअसुरसँहारे,दाहिनेभुजासबसंतउबारे ८ सुरनरमुनिजनआरतिउतारेजय जयजयहनुमानजीउचारे ९ कंचनथारकपूरकिबाती आरतिकरतअंजनीमाई॥१०॥ जोहनुमानजीकीआरतिगावैं, वसिवैकुंठबहुरिनहिंआवैं॥११॥ लंकविध्वंसकियोरघुराई,तुलसीदासस्वामीआरतिगाई॥१२॥

इति मंगलवारकी आरती समाप्त ।

अथ मंगलवारकी धुनप्रारंभः ॥

कहुकपिकुशल,लषनरघुवरके ॥ टेक ॥ बारबारबूझेमा
तुजानकी, बूझतकुशलनयनजलढरके ॥ १ ॥ जिनके
भोगविलासअवधमें, सोकसरहतछांहतरुवरके ॥ २॥
संगसखासरजूतटविहरें, बाणचलावेलषनधनुधरके॥
॥ ३ ॥ रत्नसिंहासनआपुविराजे,चँवरछत्रढुरेरघुवरके
॥ ४ ॥ कबरघुपतिलंकामेंऐहैं, वधकरिहैंरावणनिश्चर
के ॥५॥ रावणमारिअहिरावणमारे, नाशकियोनिश्च
रकुलके ॥ ६ ॥ लंकाजीतिरामघरआये, तुलसीदा
सचरणरजधरिके ॥ ७ ॥ १ ॥

सबदेवनकेराजा, हनुमतमहराजा ॥ टेक ॥ अंजनीके
पुत्ररामजीकेपायक,सारेरामरकेकाजा॥लंकापुरीमेंकू
दिपरेहैं,डरप्योरावणराजा ॥१॥ करिकिलकारकूदिग
येसागर,जातबारनहिंलाया॥लंकाजायसियासुधिली
न्हो,कीन्होप्रभुकोकाजा॥२॥शक्तिबाणलगेलक्ष्मणके,
जातबारनहिंलाया ॥ द्रोणगिरिलेलायेसजीवनि,कि
योरामकोकाजा ॥ ३ ॥ लंकाजीतिरामघरआये,सखि
यनमंगलगाया॥तुलसिदासअविचलयहजोरी,चरण
कमलचितलाया ॥ ४ ॥ २ ॥

जयश्रीहनुमंताजयश्रीबलवंता, तुमकोसुरमुनिध्यावैं
॥टेक॥तवअवतारविदितजगजाने,जानतसबबाता॥
जन्मलियोहैपवनसुत अंजनीगर्भजाता ॥ १ ॥ मारि

फलांगकूदिगयेसागर, देखिअरुणताता ॥ कोटिअग्नि समदेखे, मानोंफलराता ॥ २ ॥ सीतासुधिरघुनाथपठाये, कूदिगयेलंका ॥ सबकोभयउपजाये, राक्षसकुलहंता ॥ ३ ॥ उलटिपलटिलंकाकपिजारी, राक्षससंघाता ॥ कूदिपरेसागरमें, सिंधूभयकंपा ॥ ४ ॥ पूंछबुझायसियापहँआये, नायचरणमाथा ॥ अजरअमरसुत होहु, वरदियेजगमाता ॥ ५ ॥ तुरतहिरामलखनपहँआये, नायचरणमाथा ॥ हरिहँसिकंठलगाये, कहीकुशलबाता ॥ ६ ॥ शिवसनकादिआदिब्रह्मादिक, पावतनाहिंअंता ॥ अनभयदासकिबिनतीसुनिकै, सियपियकंता ॥ ७ ॥ ३ ॥

कृपाकरोहनुमान, जनपर ॥ टेक ॥ रामकेद्वारेतुमरखवारे, महावीरबलवान ॥ १ ॥ रामलखनकौशल्याजीके, जायेअंजनीकेहनुमान ॥ २ ॥ संकटमोचननामतुम्हारो, धरतसंतजनध्यान ॥ ३ ॥ हाथमेंसोंटालाललंगोटा, मुखमेंनागरपान ॥ ४ ॥ लक्ष्मणमूर्च्छिपरेधरणीमें, दियोसंजीवनिआन ॥ ५ ॥ जनकसुताकोशोकनिवारो, रघुवरसुयशबखान ॥ ६ ॥ पैठिपतालअहिरावणमारे, देवीकेहरिलियेप्रान ॥ ७ ॥ मकरध्वजकोराजातिलकदियो, राख्योतिनकोमान ॥ ८ ॥ रामलषणकोशोकनिवारो, दलमेंलेआयेहनुमान ॥ ९ ॥ तुलसिदासप्रभुकृपाकीजे, भक्तआपनोजान ॥ १० ॥ ४ ॥

हमपरकृपाकरो,महवीर ॥टेक॥रामकाजअवतारलियोहै,धर्मधुरंधरधीर ॥१॥ सियाखबररघुनाथपठाये,उतरेसिंधुगँभीर॥ २ ॥ लंकाजारिसियासुधिल्याये,आयेउलरिकेतीर ॥ ३ ॥ कपिदलसहितरामपहँआये,महातेजरणधीर ॥ ४ ॥ लाललँगोटासिंदूरविराजे,सुंदरगौरशरीर॥५॥सरजूदासपरअवकृपाकीजे,हरोविषमभवपीर ॥ ६ ॥ ५ ॥

अंजनीकुमारपवनसुतमेरी, अरजरामजीसोंकहियोजी ॥टेक॥ भवसागरमेंवहोजातहूं,बाहँपकरगहिलीजोजी ॥ १ ॥ यमकोदंडसकलजगऊपर,वाहूसेमोहिंवचैहोजी ॥ २ ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रहन,उनहूँसेमोहिंमिलैहोजी ॥ ३ ॥ तुमतोपायकरामचंद्रके,सनमुखहोकररहियोजी ॥ ४ ॥ नदियागहिरीनावपुरानी,वेरापारलगैहोजी॥ ५ ॥ तेलसिंदूरचढेंनिशिबासर,लड्डभोगलगैहोजी॥ ६ ॥ तुलसिदासहनुमानभरोसे,भक्तिदानमोहिंदीजोजी ॥ ७ ॥ ६ ॥

जयजयहनुमान,वीरबंका॥टेक॥अंजनिकेपुत्रमहाबलदायक,रामकाजपरकियोहंका ॥ १ ॥ करिकिलकारकूदगयेसागर, घरघरहूढ़ेगढ़लंका ॥ २ ॥ सियकोशुधिरघुनाथपठाये,छिनमेंजारीगढ़लंका ॥ ३ ॥ बागउखारसमुद्रमेंडारे,पानफूलकोकियोफंका ॥ ४ ॥ पँचरँगबाणरामलक्ष्मणके,देखिअसुरथरहरकंपा ॥५॥ अक्ष

कुमारवागविचमारे,मेघानदपराकियोहंका ॥६॥ रावणमारि अहिरावणमारे,कुंभकरणपराकियोहंका॥७॥ तुलसिदासहनुमानजीभरोसे, भक्तविभीषणपाइलंका ॥ ८ ॥ ७ ॥

रघुनाथतुम्हारेचरतिमनोहरललितमनोहर,गावतसकलअवधवासी॥टेक॥अतिउदारअवतारमनुजवपु, धन्योब्रह्मवरअविनाशी॥१॥प्रथमताडुकाहनिसुबाहुवांध,मखराख्योद्विजहितकारी॥देखिदुखितआतीशिलाशापवश,रघुवरविप्रनारितारी॥२॥सबभूपनकोगर्वहन्योहे,भंज्योशंभुचापभारी ॥३॥ तातवचनसुनिराजकाजतजि,चित्रकूटमुनिवेषधन्यो ॥एकनयनकीन्होसुरपतिसुत,वधिविराधऋषिशोकहन्यो॥ ४ ॥ पंचवटीपावनराघवकरि,सूर्पणखाकोरूपहन्यो ॥ खरदूषणसंहारिकपटमृग,गीधरायकोगतिदीन्हों ॥५॥ हतिकवंधसुग्रीवसखाकरि,वेधेताडबालिमान्यो॥बानरऋक्षसहायअनुजसँग,सिंधुबाँधियशविस्तान्यो ॥६॥ सकलपुत्रदलसहितदशानन, मारिअखिलसुरदुखटान्यो॥परमसाधुजियजानिविभीषण,लंकापुरीतिलकसान्यो॥७॥सीताअरुलक्ष्मणसँगलीन्हे,औरदासजेतेआय ॥नगरनिकटविमानआयोजब, नरनारीदेखनधाये॥८॥शिवसनकादिविरंचिआदिमुनि,अस्तुतिकरतविमलबानी॥चौदहभुवनचराचरहर्षित,आये

गामरजधानी ॥९॥ मिलेभरतजननीगुरुपरिजन, चाह
तपरमआनंदभरे। दुसहवियोगजनितदारुणदुख, राम
चरणदेखतबिसरे ॥१०॥ वेदपुराणविचारिलग्नशुभ, म
हाराजअभिषेककियो ॥ तुलसिदासजियजानिसुअव
सर, भक्तिदानवरमांगिलियो ॥ ११ ॥ ८ ॥
भजरेमनसियारघुनंदनको, जगवंदनको ॥ टेक ॥
दशरथनंदनआनँदकंदन, सूर्यवंशकुलमंडनको ॥ १ ॥
जानकीनायकसबसुखदायक, संतनकेमनरंजनको ॥
॥२॥ विश्वामित्रकोयज्ञसुफलकरि, गौतमनारिउधार
नको ॥३॥ जनकस्वयंवरपावनकीन्हो, कठिनधनुषके
भंजनको ॥४॥ पंचवटीपावनराघवकरि, खरदूषणसं
हारनको ॥५॥ जांबवंतसुग्रीवनीलनल, चरणकमल
रजवंदनको ॥६॥ सागरसेतुनामकोबांधे, कपिदलपा
रउतारनको ॥७॥ रावणकेदशमस्तकछेदे, बीसोंभुजा
उखारनको ॥ ८ ॥ तुलसिदासहरिरूपनिहारे, काट
तयमकेफंदनको ॥ ९ ॥ ९ ॥
पवनतनय, संतनहितकारी ॥टेक॥ हृदयविराजैंअव
धविहारी ॥ १॥ मंगलमूरतिमारुतिनंदन ॥ सकलअ
मंगलमूलनिकंदन ॥ २ ॥ बरणौंमातपितागुरुशारद ॥
उमासहितशंभूशुकनारद ॥ ३ ॥ चरणबंदिबिनवौंसब
काहू ॥ देहुरामपदभक्तिनिबाहू ॥ ४ ॥ बरणौंअवधपु
रीनरनारी॥जयरघुवरसियाजनकदुलारी ॥५॥ बरणौं

रायकौशल्यारानी ॥ करहुकृपानिजसेवकजानी ॥ ६ ॥ वाल्मीकिमुनिव्यासवरबानी ॥ सनकादिकऋषिअंतरजानी ॥ ७ ॥ भरतशत्रुहनसंगसुहाये ॥ हनूमानअंगदमनभाये ॥ ८ ॥ औरपरेकपिसुमिरौंतोहीं ॥ होउदयालुदरसदेहुमोहीं ॥ ९ ॥ वन्दौंरामलखनवैदेही ॥ जेतुलसीकेपरमसनेही ॥ १० ॥ १० ॥

गाइयेगणपति, जगवंदन ॥ शंकरसुवनभवानीकेनंदन ॥ टेक ॥ सिद्धिसदनगजवदनबिनायक, कृपासिंधुसुंदरसबलायक ॥ १ ॥ मोदकप्रियमुदमंगलदाता, विद्यावारिधिदबुद्धिविधाता ॥ २ ॥ मांगततुलसिदासकरजोरे, बसहुरामसियमानसमोरे ॥ ३ ॥ ११ ॥

इति मंगलवारकी धुन समाप्त।

अथ बुधवारकी आरती प्रारंभः।

आरतियुगलकिशोरकीकीजे ॥ तनमनधनहुँनिछावरकीजे ॥ टेक ॥ गौरश्यामसुखनिरखतलीजे, हरिकोस्वरूपनयनभरिपीजे ॥ १ ॥ रविशशिकोटिवदनकीशोभा, ताहिनिरखिमेरोमनलोभा ॥ २ ॥ ओढ़ेनीलपीतपटसारी, कुंजविहारीगिरिवरधारी ॥ ३ ॥ फूलनकीसेजफूलनवनमाला, रत्नसिंहासनबैठेनँदलाला ॥ ॥ ४ ॥ मोरमुकुटमुरलीकरसोहै, नटवरकलादेखिमनमोहै ॥ ५ ॥ कंचनथारकपूरकीबाती, हरिआयेनिर्मलभइछाती ॥ ६ ॥ श्रीपुरुषोत्तमगिरिवरधारी, आरतिक

रैंमकलव्रजनारी ॥ ७ ॥ नंदनँदनवृषभानुकिशोरी, परमानँदस्वामीअविचलजोरी ॥ ८ ॥ १ ॥

इति बुधवारकी आरती समाप्त ।

अथ बुधवारकी धुन प्रारंभः ।

सजोवृंदावनजययमुना २, जयवंशीवटजयफुलना॥ ॥टेक॥कृष्णचरणकोध्यानधरतही, छूटिगईमनकीभ्रमना ॥ १ ॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै, गोकुलमेंझूलेपलना ॥ २ ॥ इतमथुराउतगोकुलनगरी, बीचमेंदानचुकावैंललना ॥ ३ ॥ यमुनाकेनीरेतीरे धेनुचरावैं, मधुरीसीवेनुबजावैंललना ॥४॥ पैठिपतालकालियानाथे, फणपरनृत्यकरेललना ॥५॥ इंद्रकोपिचढ़ेब्रजकेऊपर, नखपरगिरिवरधारेललना ॥ ६ ॥ वृंदावनमेंरासरचोहै, गोपीग्वालनचावैंललना ॥ ७ ॥ सेवरीकेवैरसुदामाके तण्डुल, रुचिरुचिभोगलगायेललना ॥ ८ ॥ दुर्योधन घरमेवात्यागे, सागविदुरघरखायेललना ॥ ९ ॥ जल डूबतगजराजउबारे, चक्रसुदर्शनधारेललना ॥ १० ॥ केशीमारेकंसपछारे, यमुनामेंमारिबहायेललना ॥ ॥ ११ ॥ उग्रसेनकोराजातिलकदियो, उनहूँकेवंशबढ़ाये-ललना ॥ १२ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, हरिकेच-रणपर चितधरना ॥ १३ ॥ १२ ॥

नाचैंनंदलाल, नचावैमैया ॥ टेक ॥ मथुरामेंहरि जन्मलियोहै, गोकुलमेंपगधारोरीकन्हैया ॥ १ ॥ रुमक

झुमकपगनूपुरबाजैं, ठुमकठुमकपगधरोरी कन्हैया॥२॥ दूधनपीवैआदहियानखावैं, माखनकोलालावड़ोरी खवैया॥३॥सालदुसालाजाकेमनहुँनभावैं, कारीकामरिलालावड़ोरीओढ़ैया ॥ ४॥ मोरमुकुटपीतांवरसोहै वंसीकोलालावड़ोरीवजैया॥५॥ वृंदावनकोकुंजगलिनमें, सहसगोपीएकमयोरीकन्हैया॥ ६ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, चरणकमलकोमैंलेउँबलैया॥७॥३॥

नंदभवनकोभूपणमाई ॥टेक॥ यशुदाकोलालबीरहलधरको, राधाकोरमणपरमसुखदाई ॥ १ ॥ इंद्रकोइंद्रदेवदेवनको, ब्रह्मको ब्रह्मअधिकअधिकाई ॥ २॥ कालकोकालईशईशनको, अतुलितवलतउलोनहिँजाई ३॥ जाकोनिगमनेतियशगावैं, महिमावेदपुराणनगाई ॥ ॥ ४ ॥ चंद्रदासकेजीवनगिरिधर, गोकुलनायककुँवरकन्हाई ॥ ५ ॥ ४ ॥

मथुरामहोयरही, सर्वमई॥टेक॥ हमदधिवेंचनजातवृंदावन, मारगमेंमेरीवांहगही॥१॥मेरोरी कन्हैयापांचवरसको, सोकैसेतेरीवांहगही ॥ २ ॥ जिनगलियनमेरोफिरैरीकन्हैया. उनगलियनराधेकाहेकोगई ॥ ३॥ यमुनाकेतीरकदमकीछहियां मोहनमुरलीबाजिरही॥ ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, चरणकमलचितलायरही ॥ ५ ॥ ५ ॥

कुँवरिछबीलीश्रीराधेप्यारी, ब्रजवनितासवरूपला

पुखवारकी धुन.

कलिमलहरनी वेदनवरनी, प्रभुवसकरनी श्री
ड़िली॥टेक॥कलिमलहरनी वेदनवरनी, प्रभुवसकरनी श्री
श्रीराधे॥१॥हरिगुणमालाप्रेमरसाला, रूपविशालाश्री
राधे ॥२॥ छप्पनभोगछतीसोव्यंजन, लाडूमेंकछुकि
योराधे॥३॥कोरीकोरीमटुकीमेंदहीजमायो, माखन
मेंकछुकियोराधे ॥४॥ कत्थाचूनालौंगसुपारी, बिड़िय
नमेंकछुकियोराधे ॥५॥ चुनिचुनिकलियाहारबनायो,
गजरामेंकछुकियोराधे ॥६॥ श्रीभटकेप्रभुदियोहैअभ
यपद, अविचलराजकरोराधे ॥ ७ ॥ ६ ॥
वाजेवाजेलाल, तेरीपैंजनियां ॥ टेक॥पैंजनियाजेअ
धिकसोहावें,मोहिलियेसुरनरमुनिया ॥ १॥ नीलअंग
परपीतझँगुलिया, रत्नजड़ावकीपैंजनिया ॥ २ ॥ चंद
नचर्चितअंगमनोहर, शिरपरसोहतचौतनिया॥३॥य
शुमतिसुतकोचलनासिखावें,अंगुलीपकरिलियेदोउज
नियां ॥४॥ छोटेछोटे चरणचतुर्भुजमूरति, अलकझल
करहीनागिनिया॥५॥शिवब्रह्माजाकोपारनपावें, ता
हिनचावेंग्वालिनिया ॥ ६ ॥चंद्रसखीभजुबालकृष्णछ
वि, तीनलोककेतुमधनिया ॥ ७ ॥ ७ ॥
वाजेवाजै, रामजीकीपैंजनिया ॥टेक॥ पैंजनिवाजैअ
धिकसोहावें, मोहिलियेसुरनरमुनिया ॥ १ ॥जरकस
पागकेसरियाजामा,रत्नजड़ावकीपैंजनिया ॥ २ ॥ सुं
दरवदनकमलदललोचन,सिरपरसोहतचौतनिया ॥३॥
मातुकौसल्याचलनासिखावै, अंगुलिपकरिलियेदोउ

जनिया ॥४॥ कीटमुकुटमकराकृतिकुंडल, उरवनमालसोहावनिया ॥५॥ पीतांबरकीकछनीकाछे, धनुषबाणकरधारनिया ॥ ६ ॥ रुमकझुमकपगनूपुरबाजे, अलकझलकरहीनागिनिया ॥७॥ शिवब्रह्माजाकोपारनपावें, दशरथजीकेलालनिया ॥ ८ ॥ तुलसिदासहरिरूपनिहारे, तीनलोककेतुमधनिया ॥ ९ ॥ ८ ॥

भजुगोविंदगोविंदगोपाला ॥ टेक ॥ मथुरामेंहरिजन्मलियोहै, गोकुलझलेनँदलाला ॥ १ ॥ पूतनाकोजननीगतिदीनो, अधमउधारननंदलाला ॥२॥ मातुयशोदादहीबिलोवे, माखनखावैंनँदलाला ॥३॥ गोकुलसेहरिमथुरामेंआये, संगलियेसबब्रजबाला ॥ ४ ॥ मथुराआयेरजकलुटाये, पहिरायेसबब्रजबाला ॥५॥ कुब्जातोचंदनघसिल्याई, मालिनिल्याईफूलमाला॥ ६॥ अघासुरमारिबकासुरमारे, यमलार्जुनतारेनँदलाला ॥ ७॥ केशपकरिकैकंसपछारे, नंदभवनआयेनँदलाला ॥ ॥ ८ ॥ उग्रसेनकोराजतिलकदियो, कियेमथुराकेभूपाला ॥ ९ ॥ वनमालीहरिशरणेआये, प्रेमभक्तिकीफेरीमाला ॥ १० ॥ ९ ॥

भजुराधावरसुंदर, गिरिधारीरगिरिवरधारी ॥ टेक ॥ नंदनँदनआनंदमनोहर, प्रथमपूतनाकोतारी ॥ १ ॥ मोरमुकुटशिरधरेसांवरो, संगलियेब्रजकीनारी ॥२॥ यमुनाकेनिकटकदमकीछहियां, बिहरतहैंप्रीतमप्या

री॥३॥अघासुरमारिवकासुरमारे, जरासंधुकोमदहा
री ॥ ४ ॥ असुरनकुलनिर्वंशकियोहै, केशीकंसहते
भारी ॥ ५ ॥ यशुमतिलालगोपालचरणपर, चतुरदा
सकीवलिहारी ॥ ६ ॥ १० ॥

तेरेवांकेमुकुटकीछविन्यारी,शोभाभारी ॥ टेक ॥ य
मुनाकेनीरेतीरेधेनुचरावैं,कांधेकामरिहैकारी ॥ १ ॥
वृंदावनमेंरासरचोहै, सहसगोपिकाएकगिरिधारी ॥
॥ २ ॥ पीतांबरकीकछनीकाछे,मुरलीवजावैंगिरिधा
री ॥ ३ ॥ वृंदावनकीकुंजगलिनमें, विहरतहैंप्रीतम
प्यारी ॥ ४ ॥ चंद्रसखीभजुवालकृष्णछवि,चरणकम
लकीवलिहारी ॥ ५ ॥ ११ ॥

वृषभानुकीलली,सांवलियासेंनेहलगायकैचली ॥ टेक
आवोरेअहिरकेहमरीगली, चंदनछिरकोंतेरीपगरी॥
॥ १ ॥ हाथमेंगजरागुलाबकीछड़ी, ठाढ़ेरहियोलाल
जीमेंकवकीखड़ी॥२॥नयनमेंसुरमामुखभरिपान,छो
टीसीउमिरियाराधेवड़ोहैगुमान ॥३॥ छोटीमोटीमट्ठु
कीदधिसेभरी, रंगमहलमेंराधेजीखड़ी ॥४॥वृंदावनमें
रासविलास,यहधुनिगावेस्वामीकान्हरदास ॥५॥ १२
मेरेअँगनासेंमुरलीवजायगयोरे ॥टेक॥ छोटेछोटेचर
णवड़ेवड़ेनयना, वृंदावनकीकुंजगलिनसेंमारिगयोसै
ना॥१॥मेरीआलीमेरीआलीकहोकितजाऊं, मुरलीमें
गावैलैलैमेरोनाम ॥ २ ॥ ऊंचीनीचीघाटीमोमेचढ़उन

जाय. मुरलीकीधुनिसुनिरहउनजाय ॥ ३ ॥ कितगईगैयांकितगयेग्वाल, कितगयेवंसीवजावनहार ॥ ४ ॥ गोकुलगईगैयांवृंदावनगयेग्वाल, मथुरामेंवंसीवजावनहार ॥ ५ ॥ घरआईगइयांघरआयेग्वाल, अजहुंनआयेमेरे मदनगोपाल ॥ ६ ॥ मीराकेप्रभुगिरिधरलाल, पायेहैं दर्शनभईहैंनिहाल ॥ ७ ॥ १३ ॥

गिरिनपरेगोपाल, गिरिवर ॥ टेक ॥ ब्रजकीसखीसव पूजननिकसीं, भरिभरिमोतियनथार ॥ १ ॥ इंद्रहुकोपिचढ़िउब्रजऊपर, वर्षतमूसलधार ॥ २ ॥ सातदिवस मेघवाझरिलाये, ब्रजमेंपरीनफुहार ॥ ३ ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजें, बांकेनयनविशाल ॥ ४ ॥ ग्वालबालसबगिरिवरनीचे मुरलीवजावैनंदकोलाल ॥ ५ ॥ पीतांबरकीकछनीकाछे, नखपरगिरिवरधार ॥ ६ ॥ मोरमुकुटमकराकृतिकुंडल, तिलकविराजैभाल ॥ ७ ॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, निरखतमुखनंदलाल ॥ ८ ॥

अंखियामें, लागिरहेगोपाल ॥ टेक ॥ मैंयमुनाजलभरनजातरही, फैलायोजंजाल ॥ १ ॥ रुनुकझुनुकपगनूपुरबाजैं, चालचलतगजराज ॥ २ ॥ यमुनाकेनीरतीरधेनुचरावै, संगसखाव्रजराज ॥ ३ ॥ विनदेखेमोहिंकलनपरतहै, निशिदिनरहतविहाल ॥ ४ ॥ लोकलाजकुलकीमरयादा, निपटसुभ्रमकाजाऊ ॥ ५ ॥ वृंदावनमेंरासरच्योहै, सहसगोपीएकलाल ॥ ६ ॥ मोरमुकुटपीतांवर

सोहै, गलेवैजंतीमाल ॥ ७ ॥ शंखचक्रगदापद्मविरा
जें, वांकेनयनविशाल ॥८॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्ण
छवि, चिरंजीवरहोनंदकेलाल ॥ ९ ॥ १५ ॥

भजोसुंदरश्याम, मुकुटधारी ॥टेक॥ वदनकमलपर
कुंडलझलकें, अलकेंसोहैंघुंघुरवारी ॥१॥ उरवैजंती
मालविराजै, वनमालासोहैगुंजनवारी ॥ २ ॥ केशर
भालतिलकाशिरसोहै, मुरलीकीछविहैन्यारी ॥ ३ ॥
पांयनमेंपंजनियांसोहै, झूमझूमआवतगिरिधारी॥४॥
वंसीवटतटरासरचोहै, संगलियेराधाप्यारी ॥ ५ ॥ वृं
दावनमेंखेलतडोलत, विहारकरतहैंवनमाली ॥ ६ ॥
चंद्रसखीभजुराधावल्लभ, चरणकमलकीबलिहारी ॥
॥ ७ ॥ १६ ॥

मनअटकीमेरोदिलअटकी, होमुकुटलटकमेरोमन
अटकी।टेक। माथेमुकुटखौरचंदनकी,शोभाहैपीरेप-
टकी ॥१॥ शंखचक्रगदापद्मविराजै, गुंजमालमेरहिये
अटकी।२। अंतरध्यानभयेगोपियनमें, सुधनरहीयमु
नातटकी॥३॥ पातपातवृंदावनढूंढे, कुंजकुंजराधेभट
की ॥ ४॥ यमुनाकेनीरेतीरेधेनुचरावै, सुरतरहीवंसी
वटकी ॥ ५ ॥ फूलनकेजामाकदमकीछैयां, गोपियन
कीमटुकीपटकी ॥ ६ ॥ मीराकेप्रभुगिरिधरनागर, जा
नेंसबकेघटकी ॥ ७ ॥ १७ ॥

कैसेआवौंहोलाल, तेरीव्रजनगरीगोकुलनगरी। टेक।

इतमथुराउतगोकुलनगरी, बीचबहेयमुनागहिरी ॥ १ ॥ पाँवधरोंसिरीपायलभीजै, कूदिपरौंबहिजाउँसगरी ॥ २ ॥ सैंदाखिंचनजातवृंदावन, मारगमेंमोहनझगरी ॥ ३ ॥ बरजोयशोदासैयाअपनेलालको, छीनिलियोमेरीनथलरी ॥ ४ ॥ रहुरहुग्वालिनिझूँठनबोलो, कान्हअकेलातुमसगरी ॥ ५ ॥ हमरोकन्हैयापांचबरसको, तुमग्वालिनिअलमस्तभई ॥ ६ ॥ जायपुकारोकंसराजासे, न्यारनहींमथुरानगरी ॥ ७ ॥ वृंदावनकीकुंजगलिनमें, बांहपकरराधेझगरी ॥ ८ ॥ मीराकेप्रभुगिरिधरनागर, साधुसंगकरिहमसुधरी ॥ ९ ॥ १८ ॥

मोकोचाकरराखोजीसांवलिया, गिरिधारीलालटेक ॥ चाकररहतीबागलगाती, नितउठिदर्शनपाती ॥ वृंदावनकीकुंजगलिनमें, गोविंदलीलागाती ॥ १ ॥ चाकरीसैंमैंदर्शनपावों, सुमिरनपावोंखरची ॥ भावभक्तिजागीरीपावों, तीनलोककोखरची । २ ॥ मोदीपूछेमदनमोहनसों, कहामहिमापायो ॥ तीनलोकजागीरीपायों, निर्भयपटोलिखायो ॥ ३ ॥ योगीआयेयोगकरनको तपकरनेसंन्यासी ॥ रामभजनकोसाधूआये, वृंदावनकेवासी ॥ ४ ॥ ऊंचेऊंचेमहलबनायों, बिचबिचराखोंबारी ॥ सांवलियाकेआगेनाचूं, ओढ़िपीतांबरसारी ॥ ॥ ५ ॥ मोरमुकुटपीतांबरसोहै, गलेबैजंतीमाला ॥ वृंदावनमेंधेनुचरावै, मोहनमुरलीवारा ॥ ६ ॥ चौकादेउँ

गिझारूदेउंगी, गोवरउठाऊंनासी ॥ सांझसवेरेजलभ
रिलाऊं,सवसंतनकीदासी॥७॥मीराकेप्रभुगिरिधरला
ल, ग्वालिनिकोप्रभुदर्शनदीनोयमुनाजीकेतीर॥८॥१९
जेजेयशोदानंदनकी, जगवंदनकी ॥टेक॥ भालविशा
लमालमोतियनकी, खौरविराजैचंदनकी ॥१॥ पैठि
पातालकालिनागनाथो, फणपरानिरतकरावनकी॥२॥
यमुनाकेनीरतीरेधेनुचरावैं,हाथलकुटियाचंदनकी ॥
॥३॥इंद्रकोपाकियेव्रजऊपर, नखपरागिरिवरधारनकी
॥४॥केसीमारेकंसपछारे, असुरनकेदलभंजनकी॥५॥
उग्रसेनकोराजतिलकदियो,रक्षाकरीसबसंतनकी॥६॥
शंखचक्रगदापद्मविराजैं,भक्तवत्सलभवभंजनकी॥७॥
घंटातालपखावजबाजैं, गहेरीधुनसवसंतनकी ॥८॥
आपनजायद्वारकाछाये, पलपललहरतरंगनकी ॥९॥
आसपासरत्नाकरसागर, गोमतिकरतकिलोलनकी॥
॥१०॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, चरणकमलरज
वंदनकी ॥ ११ ॥ २० ॥

घरआवोगेपनघटपर, मुरलीवजावोगे ॥टेक॥ साधो
पहिलीप्रीतिजानोगे, हरिकोकहांपहिचानोगे ॥१॥सा
धोगौरश्यामसुखराचीहै, प्रभुपूरणब्रह्मआविनाशीहै॥२॥
साधोगिरिवरधेनुचरावोगे, सबगोपीग्वालनचावो
गे॥३॥ साधोराहघाटमोहिरोकतहै, कान्हदहीमेरोलू
टतहै॥४॥साधोमोरमुकुटवनमालाहैंअच्छेसुंदरनयन

विशालहैं ॥५॥ साधोपीतवसनकरमुरलीहै, बाजूबँद मुद्रिकापहुँचीहै ॥ ६ ॥ साधोऔरकोजपतपकाशीहै, हमतोवृंदावनवासीहै ॥ ७॥ साधोरामकृष्णगुणगावोगे, भवसागरफेरनआवोगे ॥८॥ राघवदासआनंदपदपावोगे, हरिचरणननेहलगावोगे ॥ ९ ॥ २१ ॥

बलिहारीलालतेरेआवनकी, मनभावनकी ॥टेक॥ इतमथुराउतगोकुलनगरी, बीचमेंरासरमावनकी॥१॥ चुनिचुनिकलियामेंहारवनाऊं, यदुवरउरपहिरावनकी।२।मोरमुकुटपीतांवरसोहै, मधुरमधुरमुसकावनकी।३।यमुनाकेनीरेतीरेधेनुचरावैं, मधुरीसीवेणुबजानकी ॥४॥ पैठिपातालकालियानाथे, फणपरनिरतकरावनकी॥५॥इंद्रकोपचढ़ेव्रजकेऊपर, नखपरगिरिवरधारनकी॥६॥केशपकरिहरिकंसपछारे, यमुनामेंमारवहावनकी ॥७॥ उग्रसेनकोराजतिलकदियो, उनहुंकेवंशवढ़ावनकी ॥ ८॥ वृंदावनमेंरासराचोहै, सहसगोपीएककान्हाकी ॥ ९ ॥ जलडूबतगजराजउबारे, चक्रसुदर्शनधारनकी।१०।दुर्योधनघरमेवात्यागो, सागविदुरघरपावनकी ॥११॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछवि, हरिकेचरणचितलावनकी ॥ १२ ॥ २२ ॥

इति बुधवारकी धुन समाप्त ।

अथ शयनसमयकी ब्यारू ।

आनकरोकछुब्यारी, रामजीकोटेरतहैंमहतारी टेक

रजनीबहुतगईमेरेप्यारे, आयिकरोकछुब्यारी ॥ १ ॥ रंगमहलचाढ़िटेरेकौशल्या, लैलेअवधविहारी ॥ २ ॥ खाझाखुरमातपतजलेबी, सोरासरससुहारी ॥३॥ भांतिभांतिकेधरेहैंअथाने, नानाविधितरकारी ॥४॥ हितकरिदूधजानकीलाई मेवामिसिरीमिलाइ ॥५॥आपनजीमेंभरतजीसोंबूझैं, कैसीभईभैयाब्यारी ॥६॥ चारोंभैयामिलजेवनवैठे, परसतजनकदुलारी ॥७॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, दशरथआजिरविहारी ॥८॥ निर्मलजलसरजूकोअँचवन, रत्नजड़ाधाकिझारी॥९॥ तुलसीदासप्रभुद्वारेठाढ़े, जूठनकेअधिकारी ॥१॥ १॥ करतवियारूमोहनहँसिहँसि,करतवियारूमोहन॥चितवनमेंचितचोरलेतहैं, नखशिखसुंदररूपसगोहन॥ ॥टेक॥ औटोदूधकनककेलामरि,लैललिताआईहेगोहन॥ फूंकतापिवतसेरातसांवरो, अंचलदेदेमातजसोहन ॥१॥ देखतबनेकहतनाहिँआवे, सुधिभूलीहैमोहिंसोहन॥ कृष्णदासगिरिधरनलाड़िली, चितचोरोहैमृदुसुकोहन ॥ २ ॥ २ ॥

भलियभांतिसोंकीन्होभोजन, भलियभांतिसोंकीन्हो॥पटरसव्यंजनवरासलोना,मांगिमांगिहरिलीन्हे॥टेक॥ हँसतलसतपरसेंनँदरानी,वालकेलिरसभीनी । परमा नंदवद्योपनवारो,बांटसखनकोदीन्हो॥१॥३॥ मोहनलालवियारूकीजै,व्यंजनमीठखाटेखारे,रुचि

सोंमांगिजननिसोंलीजे ॥टेक॥ खोवामिसिरीऔरख
र्मूधी,ताऊपरतातोपयपीजे॥जोरमंडलीभोजनकीजे
जूंठनआशकरनकोदीजे ॥ १ ॥ ४ ॥

सुखनिधिरघुवर, करतवियारी॥मधुमेवापकवानसर
सअति,प्रेमसहितपरसेंमहातारी।टेक।गुंझालाडूउज-
रीफनी,पुरीसरपुरीपुवासुहारी। घेवरपापरतमजलेबी
मिश्रीसीरासरससवांरी॥१॥सूरन आमकरोंदाजेंवत
आदोनिंबूअतिरुचिकारी॥ औटोदूधधरोलैआगे, पि
योलालजननीवलिहारी॥२॥अतिसुगंधसरयूजलसिय
रो, रत्नजडितभारिलाईझारी ।भोजनाकियोलियोप्रभु
अँचवन,राजिवनयनवयनबलिहारी॥३॥बीरीदेतासि
याकरअपने, गरीकपूरभरिलौंगसुपारी॥ गोकुलदास
द्वारेयशगावें, पावतजूंठरहैंकछुथारी ॥ ४ ॥ ५ ॥

रामजिवुनारचलेहोउनींदे, नयनरतनारेरामजिवुना
रचले।टेक॥ब्रह्माआदिकथारीलाये, नारदलायेझारी।
दूधभातकौशल्यालाई, रघुवरकरोहोबियारी ॥ राम
जिवुनारचले॥१॥खाझाखुरमातमजलेबी, अजबबनी
तरकारी॥ रामलक्ष्मणजीजेंवनवैठे, परमतजनकदु-
लारी ॥२ ॥ खासामलमलऔरदरियाई, फूलनसेजव
नाई॥रामलक्ष्मणजीपौढनलागे,अनुचरचवंरढुराई३
सबदेवतामिलिचौकीआये,वीरासनहनुमान ।राम०।
तुलसिदासप्रभुद्वारठाढे,कनकडबाभरिपान॥ ४ ॥६॥

करतभावनीजोरीब्यारी॥टेक ॥षटरसब्यंजनविविध बनाये, सखीकहतपरसोरी॥राजिवलोचनिपंकजनयनी, पायोश्यामसियागोरी ॥१॥जेंवतरामजनकमंदिरमें,होतपरस्परअद्भुतगारी ॥२॥ जालछिद्रनिरखतयुवतीजन, वाढ़ीप्रीतिनथोरी ॥३॥ तुलसिदासप्रभुजानेतृणतोरे, देतप्राणआकोरी ॥ ४ ॥ ७ ॥

दाखदारूदेदान, दूधमिठाईबदाम ॥टेक ॥सेवसिंघाडाफातीपिस्ता, गुझीविसेस॥ १ ॥ खिरनीखजूरखोपराकलाखर,गुंझाखारकमधुमाखन ॥मधुसूदनपीलेउलाड़िले,लैआईललितविशाखा ॥ २ ॥ मालपुआऔअमृतगुटीके, छप्पनभोगलेआई॥ करमाबाईपरकिरपाकीजो, लालजीकोभोगलगाई ॥ ३ ॥

पियोपय,लडकेरघुराई ॥टेक॥रत्नजड़ितकोबनोहैकटोरो, कौशल्यालेआई॥ १ ॥आछोनीकोऔटबनायो, मेवामिश्रीमिलाई॥जननीहेतपियोक्योंनरुचिसे, सखावड़ेअधिराई ॥ २ ॥ रामजीलक्ष्मणभरतशत्रुहन, संगविराजेचारोंभाई ॥ विट्ठलकेप्रभुहोतभोरही,मेवादूधमिठाई ॥ ३ ॥ ९ ॥

अजीब्यारूकरनहेतसोमैया, रघुवरबोलिपठायेजी ॥ रामजीसियावरबोलिपठायेजी ॥ टेक॥अजीरघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, राजतअवधविहारीजी ॥ १ ॥चारोंभैयामिलिजेंवनबैठे,परसतहैमहतारीजी ॥ २ ॥खा

आन्यूरमातसजलेबी, सीरासरससुहारीजी ॥ ३ ॥ भां तिभांतिकोधन्योहैअथानो, नानाविधितरकारीजी ॥ ॥ ४ ॥ दूधजानकीहितकरिअवटो, मेवामिसिरीघोरी जी ॥ ५ ॥ आपनजीसेंभरतजीसेपूछें, कहापन्योमहता रीजी ॥ ६ ॥ निर्मलजलसरयूकोअँचवत, रत्नजड़ित भरिझारीजी ॥ ७ ॥ तुलसिदासद्वारेयशगावें, जूंठनको अधिकारीजी ॥ ८ ॥ १० ॥

कोशल्याकुँवरावियारूकीजै, प्रेमसहितबोलेकौश ल्या, जगतईशजननीसुखदीजै ॥ टेक ॥ मीठापाकजले बीपेड़ा, मेवलाडुमोतिलाडुमुगदबनाये ॥ पुरीसरपुरी मनोहरगुटका, खाझाखुरमारामसमनभाये ॥ १ ॥ रायतो दहीमिसिरीमेंघोन्यो, विविधभांतिकेबड़ेबनाये ॥ आ दौनिबूऔरअथानो, कचरीकरोंदाकरेमँगाये ॥ २ ॥ औ टोदूधखोवाभरिआन्यों, वारीजायमातग्रासदुइली जै ॥ बीरीआरोगिपलँगमेंपधारो, जूंठनज्ञानदेवकोदी जै ॥ ३ ॥ ११ ॥

इति शयनसमयकी व्यारू समाप्त ।

अथ दूधपीवनप्रारंभः ।

हँसिहँसिदूधपिवैं, गोपीनाथ ॥ मधुरकोमलवचनकहि कहि, प्राणप्यारीसाथ ॥ टेक ॥ कनककटोरभरेहैंअमृ त, लियेहैललिताहाथ ॥ लाड़िलीअँचवायपहिले, पा छेआपअघात ॥ १ ॥ चिंतामणिचितवसोरसिजनी,

निरखिपियमुसकात।श्यामाश्यामकीयुगलछविपर, रसिकवलिवलिजात ॥ २ ॥ १ ॥

दूधलाइ यशुमतिमैया।दूधपियोमेरेकुँवरलाडिले, तेरीविनीवदैगीमैया॥टेक॥ अच्छोनीकोऔटसेरायो, तामेंमधुरमिठैया ॥ परमानंदप्रभुअबदूधपीजे, भोर उठतहींदेउँगीधैया ॥ १ ॥ २ ॥

दूधपियोमनमोहनप्यारे वलिवलिजाउँगहरजानिकर हो,कमलनयनअँखियनकेतारे॥टेक॥भरवेलापीजेसु खदीजे, औरपियोवलभद्रापियारे ॥परमानंददासके ठाकुर, भोरउठतकरोधैयारे ॥ १ ॥ ३ ॥

इति दूधपीवन समाप्त ।

अथ शयनकी आरती ।

शीतलकरतआरतीमैया ॥टेक॥चारिरत्नकेचारिसिं हासन, रविशशिकोटिउदैया ॥१॥ रघुवरलक्ष्मणभ रतशत्रुहन,राजादशरथजीकेछैया॥२॥रत्नजडितको पलँगवनोहै,ऊपरलालदुलैया॥३॥मातुकौशल्याकर तआरती, दोउकरलेतबलैया ॥४॥ क्रीटमुकुटमक राकृतिकुंडल,करसोहैवाणधनुहिया ॥५॥मानदास जीकेतनमनवारौं, सुंदररामरमैया ॥ ६ ॥ १ ॥

इति शयनकी आरती ।

अथ शयन प्रारंभः ।

जगन्नाथदयालपौढे,श्रीजगन्नाथदयालु॥ज्येष्ठहलधर

रागनिसुभद्रा, चक्रअसुरनकाल ॥ टेक ॥ रत्नभवनावि चित्रपुतली, लसतहीरालाल ॥ व्यालमणिशशिकोटि वारों,वारोंरविकोटिवाल ॥ १॥जरीचँदवेचंदानिदोहि, तारनमोतिनमाल ॥ अमियतिनतेझरतझिमिझिमि, अखिलतिनमेंख्याल ॥ २॥ सेजबनकैअनुपआभा, रतिहुदेखिविहाल ॥ कनकपत्रनघनीवस्तुन,लियेयुव तीजाल॥ ३॥रमाआरतीकरतमोहीं, करतकंचनथा ल॥वल्लभीदेखतवालवालनिहाल ॥ ४ ॥ १ ॥

वलभद्रदेवअनंतपोढे, वलभद्रदेवअनंत ॥ देवीसुभद्रा चक्रसुदर्शन, सहितकमलाकंत॥टेक ॥धोयमंदिरचले पंडा, पलँगविछेगजदंत ॥ जगदीशरातबहुतगई,सो येसकलजीवजंत ॥ १ ॥ शयनआरतीदेखसुरमुनि वंदतजयजयसंत॥ धन्यहलधरधन्यमाधव,माधवदा सभनंत ॥ २ ॥ २ ॥

रागकेदारा॥बैठसुखपालललाल,आवतमहलमेंजू । आ लसभरेउनींदेसुलोचन,अतिअलसानेकछुमदनगहल मेंजू ॥टेक॥ चुनिचुनिकलियामैंसेजबनाई, चोवाचंद नचरचूंचहलमेंजू ॥ पौढैश्रीदशरथराजकुँवरवर,अग्र अलीजहँदासीटहलमेंजू ॥ १ ॥ ३ ॥

रागकेदारा ॥ भवनगवनप्रभुकीजैसेजाविछी, भवनग वनप्रभुकीजै॥टेक ॥परिश्रमभयेसभासबबैठे, सबको आयसुदीजै॥रामकृतहनुमानपवनसुत, सँगचौकीको

लीजे ॥ १ ॥ कमलमुखीकमलामगहेरै, प्रेमप्रीतिरस भीजे ॥ मनक्रमवचनतुम्हेंप्रभुसेवैं, चपलाअचलकरीजे ॥ २ ॥ मंदमंदमुसकातछबीले, बोलतवचनरसीले ॥ बालानंदकोदेहिंकिंकरी, श्रीपतिऐसेसुशीले ॥ ३ ॥ ४ ॥

मुजरोमानियेमहाराज ॥ सबसाधुनकीवीनतीप्रभु,हम गेतुमकोलाज ॥ टेक ॥ प्रल्हादकीप्रतिज्ञाराखी,खंभमांहिअवाज ॥ द्रवतसोंगजराजराखेध्रुवकोअविचलराज ॥ १ ॥ द्रौपदीकीलाजराखी, चीरकेरेकाज ॥ विभीषणकोलंकबकसी, सागरबांधीपाज ॥ २ ॥ ॥ नवरंगतकियापलँगराजै रंगमहलअवास ॥ सूरकेप्रभुश्यामपौढे, कीजेभोगविलास ॥ ३ ॥ ५ ॥

रंगमहलगोविंदपौढेमाईरंगमहलगोविंद ॥ संगराधेशरदरजनी,उदितपूरणचंद ॥ टेक ॥ चित्रविचित्रअनेकचितलिये, कोटिकौतुकफंद ॥ हर्षिनिरखिविलासविलसत, दंपतीरसकंद ॥ १ ॥ चोवाचंदनअगरकुमकुमा, उठतलहरसुगंद ॥ पुष्पव्यजनचमरढोरैं,सजनिपरमानंद ॥ २ ॥ ६ ॥

सुखपौढेहरिकुँवर,कन्हाई ॥ नौतमवसनविविधकुसुमावलि, मैंअपनेकरसेजबनाई ॥ टेक ॥ नाहिंनसमयसखीकाहूको, ग्वालमंडलीसँगबहुराई ॥ आसकरनप्रभुमोहननागर नागरिकोललिताले आई ॥ १ ॥ ७ ॥

तुमपौढोमैंचँवरढोरावों ॥ चरणरहोंचापतनिर्मलयश

मधुरेस्वरसेंगावों॥टेक॥सहचरिचतुरअवैआवतहैं,दं
पतिछबिनयनादेखलावों॥ आसकरणप्रभुमोहननाग
र, येसुखश्यामसदामेंपावों ॥ १ ॥ ८ ॥

जगन्नाथअलसानेसलोने,जगन्नाथअलसाने ॥लोचन
कमलश्यामशिथिलाने, सुघरअधिकअरुणाने॥टेक॥
श्रीभुजदक्षिणश्रीकिकंधधरिअंगिरानेजँभुवाने॥औंघ
तझुकतचौंकितकियाधरें,प्यारीहँसिसुसकाने॥१॥अ
द्भुतरूपस्वरूपश्यामको,रतिपतिकोटिलजाने ॥ वल्ल
भिविहँसिसेजरचवावैलागीदासीसुयशबखानै ॥२॥९

रागकेदारा.॥पौढ़ेश्रीरघुवरप्राणअधाराजू॥ जनककुवँ
रिवरचरणपलोटतशारदगावतरागकेदाराजू ॥टेक॥
चुनिचुनिकलियामेंसेजबनाई सोंधेंअरगजाचरचमह
लमेंजू ॥ जनदेवप्रभुजीकोबिरियाखवावत सीतारम
जोनितप्रतिकरतविहारजू ॥ १ ॥ १० ॥

नयननअरुणताछाईलालजीके, नयननअरुणता
छाई ॥ छिटकिछिटकिकरपल्लवसुखपर, ऐढ़ेंलेतजों
हाई ॥ टेक ॥ पांचसखीमिलिसेजबनाई,श्रीमंदिरसु
खदाई ॥ पुष्पसुवासखासलियेठाढ़े पौढौश्रीयदुरा
ई ॥१॥११॥

सेजसुंदरिबनीहरिकी,सेजसुंदरिबनी ॥हस्तिदंतअनू
पपाया, जड़ितमाणिकमनी ॥ टेक॥हेमसीरोसोनपा
टी, लसतनानाकनी ॥ दिव्यरेसमदेवदुर्लभ,नीकेनी

केतनी ॥ १ ॥ पलँगऊपरअनूपअंबर, तुलातामेंछनी॥
विविधतापरवसनसोहैं, मोहैंनिजमोहनी ॥ २ ॥ सेज
चंदजड़ावजब्बी, तकियाबहुअनगनी ॥ सेजशीतलसु
मगकोमल, मनोरविशशिजनी ॥ ३ ॥ भलीसेजअनू
पआषा,सुसद्राछ्छाविघनी ।अमितशोभास्वामीशय्या
जगत्पतिजोधनी ॥४॥ चोवाचंदनकपूरकस्तुरी, पुण्य
गंधोंसनी॥ चराचिरचिरचिअखिलफूलन, वल्लभोकिछु
मनी ॥ ५ ॥ १२ ॥

सखिरीतू, पुष्पसेजवनाय ॥ जानकीश्रीरामराजा,पौ
ढिहैंप्रभुआय।टेक ॥ कनकपलँगारत्नजड़िया, अगर
चंदनलाय ॥ केतकीकमलगुलाबपाड़र, गोहिरचिंपा
जाय ॥१ ॥ पाननागरपरमसुंदर, लीजियेरघुराय
लोंगसहितकपूरबीरी, लेहोरुचिउपजाय ॥ २ ॥ चर
णचापतरहोंमैंनिशिदिन,रावरोयशगाय ॥दासतुल
सीशरणआये, लेहोप्रभुअपनाय ॥ ३ ॥ १३ ॥

अबप्रभुकीजिये उठिशैन।लटाकिआईचांदनीप्रभुबहु
तबीतीरैन ॥टेक॥ उठेराजसमाजतेप्रभुसुनिसखीके
वैन॥प्राणनाथप्रवीनहैंप्रभु,जानकीसुखदैन ॥१॥१४

पौढ़ेसुखसेजसीताराम ॥टेक॥ आनँदकंदअयोध्या
नायक,जानकीभुजवाम ॥१॥ कनकमंदिरपुष्पसेजा
कोटिउदयभयेसान ॥२॥ देवतासबचौकीआये, स
नमुखआयेहनुमान ॥३॥ रामराजागावेंगंजन,सकल

पूरनकाम ॥४॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, कनकडवा भरिपान ॥५॥ तुलसिदासप्रभुलियेठाढ़े मेवाद्राखब दाम ॥ ६ ॥ १५ ॥

हनुमानजीकीचौकीआईसाधोभाई, कपिकीचौकी० ॥ टेक॥ बड़ेबड़ेयोधाहैंकपिदलमें, रहतमहलपरछाई ॥ १ नाकाहूकोकरियेभरोसो, नाकाहूपतिआई ॥२॥ बेगबिलंबनकीजै, सिखसरवनसुनिपाई ॥३॥ तुलसिदासहनुमानभरोसेसुखपौढ़ेरघुराई ॥ ४ ॥ १६ ॥

सोयेअवधकिशोर चलोसखी ॥टेक॥ रत्नजड़ावको पलंगमनोहर, ताकीछबिअतिजोर ॥ १ ॥ जनकनंदिनीचरणपलोटे, रसवशभयेघनघोर ॥ रामसखेपियदर्शनकारण, आइयेउठिभोर ॥ २ ॥ १७ ॥

सैनकरोनारायणदेवा, चरणपलोटकरोंहरिसेवा ।टेक सैनकरोतुमअंतर्यामी, मनसावाचाकरूंगुलामी ॥१॥ फूलनगेंड़ावागजमुक्ता, सोहैदेखतपलँगनासदेवमोहा ॥ २ ॥ १८ ॥

पौढ़ौपौढ़ौसारंगपानी, नैनोंमेंनींदलघुलानी ॥ टेक ॥ प्रभुमुखसुवायेआवे, हरिकौशल्यारामजावे॥ लक्ष्मणजीकोआज्ञादीजे, महलनमेंआवनकीजे॥१॥ प्रभुसीतासखीसुकुमारी, जिनसुघहरिसेजसवांरी॥प्रभुधनुषबाणकरमेलसेजपे, ओढ़ोतुमगरुदुसालो॥प्रभुघरिकैआलससबमेटो, पीतपटुकाकमरतेछोरो॥प्रभुकहतसुलककोबिलजानो, मोहतनीअरजमेरीमानो॥३॥१९॥

मंदिरमांहिदोऊमिलिपौढ़े॥टेक॥दशरथसुतऔरजन
कनंदनी,डारगलबांहें ॥ १ ॥ हासविनोदसुधारससींचत,सुखउपजोमनमांही॥बालअलीहरिकेचरणपलोटें, चरणकमलबलिजाही ॥ २ ॥ २० ॥

बतियांकरत,लागगयेनैन ॥टेक॥ दशरथसुतओजनकनंदिनी,रूपशीलगुणऐन ॥१॥ मधुरबीनरबबांकीनरधुनि,रागउठैघनचैन॥मधुरआलीमधुरेस्वरगावैं,बोलतअमृतबैन ॥ २ ॥ २१ ॥

मंदिरपौढ़िये,रघुराई॥टेक॥काहेकोपलँगकाहेकेपाये,काहेबाणबनाई ॥१॥ सोनेकोपलँगरूपेकेपाये, रेसमबाणबनाई ॥ काहेकीसेजकाहेकेगेडुवा, काहेकीओढ़रजाई॥२॥ फूलनकीसेजफूलनकेगेडुवा, फूलनओढ़ेरजाई॥सीतारामदोऊमिलिपौढ़े॥बसीरावाई ॥३॥२२

पौढ़ेस्वामी,द्वारकारणछोड़ ॥टेक॥मंदिरमंदिरझालरबाजे,शंखनकीघनघोर ॥१॥गोमतीजीजाकेचरणपरलोटे,सागरकरतकल्लोल॥२॥कनकमंदिरपुष्पशय्या,कोटिउदयमयेभान ॥३॥रुक्मिणीअपनेरंगमहलमें,विनतीकरतकरजोर॥४॥रणछोड़टीकममाधवपुरुषोत्तम,कुँवरकल्याणकिशोर ॥५॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, कनकडबाभरिपान ॥६॥ शेषसुमिरनकरतनिशिदिन,धरतशंकरध्यान ॥ ७ ॥ दासपीपाद्वारेठाढ़ोदर्शनदियेरणछोड ॥ ८ ॥ १८ ॥

इति शयन समाप्त ।

अथ हरिनारायण प्रारंभः ।

रामकृष्ण अवतारमनोहर, हरिमाधवमधुसूदननाम ॥ कालियमर्दनकंसनिकंदन, देवकीनंदनतुमसरना ॥ मच्छकच्छवाराहमहीधर, जलशायीमंगलकरना ॥ इहि हरिनामजपोनिशिवासर, जन्मजन्मकेभयहरना ॥ जयगोविंदपरमानंदभजुगोविंदरामानागरनवलकिशोरमनोहर, मूरतिसुंदरश्याम ॥ वृंदावनमेंरासरचोहै, सहसगोपीएककान्ह ॥ मोरमुकटपीतांबरसोहैं, कुंडलझलकेंकान ॥ शंखचक्रगदापद्मविराजैंगलेवैजंतीमाल यमुनाकेतीरेतीरेधेनुचरावैं, मोहनमुरलीवाल ॥ वंसीबजाईमेरोमनहरिलीनो, लगेप्रेमकेबान ॥ केशवरायकमलदललोचन, अगमअगोचरभवहरना ॥ श्रीपुरुषोत्तमश्रीअविनाशीभक्तवत्सलअभिराम ॥ सरजूकेतीरअयोध्यानगरीचित्रकूटविश्राम ॥ मथुरानगरीयमुनातीरथवृंदावनविश्राम ॥ उजैननगरीसफरातीरथ, अंगपातविश्राम ॥ नासिकनगरगोदावरितीरथ, पंचवटीविश्राम ॥ गुरुपरतापसाधुकीसंगति, नामदेवजीआयेहरिसरनं ॥ ब्रह्माजाकोपारनपावैं, गावतसनकसनंदनं ॥ बोलोसीताराम, लक्ष्मणभरतशत्रुहनहनुमानहरिनमोनमो ॥ जगन्नाथवलभद्रसुभद्रा, चक्रसुदर्शननमोनमो ॥ राजिवलोचनसवदुखमोचन, सेवरीनार ।

चरणनमोनमो॥रामनाथरामानुजस्वामी,परमभागवतनमोनमो॥श्रीद्वारिकामेंरणछोड़विराजें,गोमतीसंगतनमोनमो॥उत्तरखंडबद्रीनाथविराजै,गरुड़सिंहासननमोनमो॥हरिद्वारमेंहरीविराजै,हरिकेचरणनमोनमो॥मथुरामेंकेशवरायविराजैं,चीरघाटहरिनमोनमो॥नीमसारनीमानुजस्वामी,परमभागतनमोनमो॥महापवित्रमाधवाचारी,विष्णुस्वामीहरिनमोनमो॥कहैंप्रह्लादमुनीभाईसाधू,हमहुपढ़ेंसोतुमहुपढ़ो॥श्रीजानकीजीवनपतितपावन,दशरथनंदनजयसियाराम॥श्रीहरिनारायणदुष्टनिवारण,परमानंदपरमपुरुषोत्तम॥भक्तवत्सलसियापंकजलोचन,नारायणप्रभुवासुदेवहरे।रामानंदमुकुन्दमुरारी,वामनमाधवगोविंद ॥श्रीधरकेशवराधेराधे,कृष्णलक्ष्मीजीनायकनरसिंह।अच्युतंकेशवंरामनारायणंकृष्णदामोदरंवासुदेवंहरे ॥ श्रीधरंमाधवंगोपिकावल्लभंश्रीजानकीनायकंरामचंद्रंभजे॥बालाजीबिहारी,रामशरणतुम्हारीराम॥नरहरिरनरसिंहभजुरामा२,रघुवररामजीहरे।श्रीराधे२कृष्णागोविंदे,भजुमनरामानुजहरि ॥ कहुमन, भरतलखनरघुबीर॥भजुमनरामकृष्णगोविंद ॥सांवलियानारायणहरि॥त्वमेवमाताचपितात्वमेव, त्वमेवबंधुश्चसखात्वमेव त्वमेवविद्याचगुरुस्त्वमेव त्वमेवसर्वंममदेवदेव ॥१॥सियारामरामराम॥राधेश्यामश्यामश्याम ॥१॥

इति हरिनारायण समाप्त ।

अथ स्तुति प्रारंभः ।

श्रीरामचंद्रकृपालुभजुमन, हरणभवभयदारुणम् ॥ नव कंजलोचनकंजमुखकर, कंजपदकंजारुणं ॥ कंदर्पअगणित अमितछबि, नवनीलनीरजसुंदरं ॥ पटपीतमानहुतडितरुचिशुचि, नौमिजनकसुतावरं ॥ भजुदीनबंधु दिनेशदानवदैत्यवंशनिकंदनं ॥ रघुनाथआनँदकंदकोशलचंद, दशरथनंदनं ॥ शिरमुकुटकुंडलतिलकचारु, उदार अंगविभूषणं ॥ आजानुभुजशरचापधर, संग्राम जितखरदूषणं ॥ इतिवदततुलसीदासशंकर, शेषमुनि मनरंजनं ॥ ममहृदयकंजनिवासकरु, कामादिखलदल गंजनं ॥ मनजाहिराचोमिलहिसोवर, सहजसुंदरसाँवरो ॥ करुणानिधानसुजान, शीलसनेहजानतरावरो ॥ यहिभांतिगौरिअशीशसुनि, सियसहितहियहर्षितअली ॥ तुलसीभवानिहिंपूजिपुनिपुनि, मुदितमनमंदिरचली ॥ सोरठा ॥ जानिगौरिअनुकूल, सियहियहर्षनजायकहि ॥ मंजुलमंगलमूल, वामअंगफरकनलगे ॥ सियावररामचंद्रकीजय ॥ १ ॥ हेरामापुरुषोत्तमानरहरे, नारायणाकेशवा ॥ गोविंदागरुडध्वजागुणनिधे, दामोदरामाधवा ॥ हेकृष्णाकमलापतेयदुपते, सीतापतेश्रीपते ॥ वैकुंठाधिपतेचराचरपते, लक्ष्मीपतेपाहिमाम् ॥ १ ॥ आदौरामतपोवनाधिगमनंहत्वामृगंकांचनम्, वैदेही

हरणंजटायुमरणंसुग्रीवसंभाषणम्।वालीनिर्दलनंसमुद्रतरणंलंकापुरीदाहनं,पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननमेतद्धिरामायणम्॥२॥आदौदेवकिदेवगर्भजननंगोपीगृहेवर्धनम्,मायापूतनजीवितापहरणंगोवर्धनोद्धारणम्।कंसच्छेदनकौरवादिहननंकुंतीसुतापालनम्, एतद्भागवतंपुराणकथितंश्रीकृष्णलीलामृतम्।३।हेरामानुजहेजगत्रयगुरोहेपुंडरीकेक्षण,हेगोपीजननाथपालनपरंज्ञानंविनात्वंविना ॥हेगोपालकहेकृपाजलनिधेहेसिंधुकन्यापते,हेकंसांतकहेगजेंद्रकरुणापारेणहेमाधव॥४

कस्तूरीतिलकंललाटपटलेवक्षःस्थलेकौस्तुभं, नासाग्रेगजमौक्तिकंकरतलेवेणुःकरेकंकणम् ॥सर्वांगेहरिचंदनंसुललितंकंठेचमुक्तावली, गोपस्त्रीपरिवेष्टितोविजयतेगोपालचूडामणिः॥५॥ श्रीरंगंकरशैलमञ्जनगिरौशेषाचलस्थासनम्, श्रीकुर्वन्पुरुषोत्तमंचवदरीनारायणंनिर्मलम् ॥श्रीमद्वारवतीप्रयागमथुरायोध्यागयापुष्करं, शालग्रामनिवासकृद्विजयतेरामानुजोऽयंमुनिः॥६।ॐपार्थायप्रतिबोधितांभगवतानारायणेनस्वयम्व्यासेनग्रथितांपुराणमुनिनामध्येमहाभारतम् ॥अद्वैतामृतवर्षिणींभगवतीमष्टादशाध्यायिनींमंबत्वामनुसंदधामिभगवद्गीतेभवद्वेषिणीम्॥७॥हेराधेवृषभानुभूपतनये, गंधर्विकेराधिकेहेकृष्णाननपङ्कजभ्रमरिकेकृष्णप्रियेमाधवि ॥ हेवृंदावननागरीगुणगृहदामो

दरप्रेयसि, हेहेश्रीललितादिकप्रियसखेप्राणान्तिकेपा
हिमाम् ॥ ८ ॥ विष्णोःपादअवंतिकागुणवतीमध्येच
कांचीपुरी, नाभौद्वारवतीतथाचहृदयेमायापुरीपुण्य
दा॥ग्रीवामूलमुदाहरंतिमथुरांनासाग्रवाराणसीं, एत
द्ब्रह्मविदोवदंतिमुनयोऽयोध्यापुरीमस्तके॥९॥२॥

इति स्तुतिः समाप्ता।

अथ रामचंद्र केबसंत ।

बसंतबधावाचलोअवधधाम, जहँसुभगसिंहासनबैठे
राम॥टेक॥सुरनरमुनिजनसकलदेवता,विश्वामित्रबि
राजे॥बाजाविविधभांतिबहुबाजें,घनदामिनिज्योंगा
जे॥१॥हाथलियेपिचकारीप्यारी,सोंधेसोंभरिल्याई॥
पंचसखीमिलिकलशबनायो,भलीभांतिबनिआई।२
मधुरमधुरसुरगानकरतहैं,देतहोरिनकीगारी ॥सबस
खिमिलिकेगुलालउड़ावत,भरिभरिकंचनथारी ॥३॥
चोवाचंदनऔरअरगजा,कीचमच्योअतिभारी॥ उ
ड़तगुलालअरुणभयोअंबर,सोंधेभीनीसारी॥४॥ प्रथ
मपंचमीबैठिसिंहासन,कौतूहलसबकीजै ॥ अग्रदास
कीयेहीविनती,भक्तिदानमोहिंदीजै ॥५॥१॥

बसंतबधावाचलोअवधधाम, जहँरत्नसिंहासनबैठे
राम।टेक।अतिपवित्रसुउदारनाम,लावण्यकलेवरको
टिकाम॥रघुवंशसरोवरहंसचारि,जहँहरिबिहरतशुभ

रूपधारि॥१॥सजिकनककलशजवआंवमोर, वनिता नवृंदजहँअतिकिशोर।गृहगृहरमणीकरिकरिसिंगार, जहँकंठविलोकैंमुक्तहार ॥२॥बाजैंमृदंगडफझांझताल, जहँगंधर्वगावैंगुणरसाल ॥ अवतारशिरोमणिधर्मधाम,कहेतुलसिदासप्रभुसीताराम, ॥३॥२॥

खेलतवसंतकोसलकुमार, राजीवनयनसुषमाअपार ॥टेक॥ लियेभरतलखणरिपुसूदनसंग,छविसुभगनिरखिमोहैअनंग॥गोदनिभरिलीन्हेवहुगुलाल, करपिचकारीलसतिलकभाल॥१॥काननशुभकुंडलचपलनैन हालैंवोलैंसवमीठेवैन॥सजिवरनवरनराजैंअनूप, नरनारिथकितभयेदेखिरूप॥२॥शिरलसतपागजरकसी लाल,कलँगीजड़ावतापररसाल।प्रभुवनिठनिआयेसिंहपौरि,तवसखामिलेसवदौरिदौरि ॥३॥मच्योखेलकछुकहिनजाय,अवनीआकाशरंगरह्योछाय॥ पिचकारीजिततितछुटैंअपार,भीजहिंपुकारहिंदेहिंडार ॥४॥ मुखमोरिछांड़ैवहुनचाय,मुसकातमनहिंमनरामराय। सुरवर्षिसुमनकरिजैजैकार, चिरंजीवकोसलकुमार ५मुखनिरखिअसीसतसकलमात,आनँदभरिविहरोमेरतात॥रससिंधुवढ्योनसमातगात,वलिहारीरघुवरदासजात ॥६॥३॥

खेलतवंसतराजाधिराज,नभकौतुकदेखैंसुरसमाज ॥ ॥टेक॥इतअनुजसखारघुनाथसाथ,औलियेअवीरपि

चकारीहाथ॥बाजतमृदंगडफतालवेणु, छिरकतसुगं धपरमलरेणु॥१॥इतयुवतियूथजानकीसंग, पहिरेपट भूषणविविधरंग॥छरीबेतसोंधैविभाग, गावैंचाचरि झमरिसरसराग॥२॥चढ़िपूरणवधुतनस्वांगसाज,कर कूटनिपटगईमोरिलाज॥भजिनारिपरस्परगारिदेत, अतिहँसतरामभाइनसमेत॥३॥कटिकिंकिणिनूपुरधु निसुहाय,ललनागनिअंगनधरेहैंधाय॥राजीवलोच नफगुवामँगाय,छांड़नचायहाहाकराय॥४॥ वर्षैंप्रसून सुरविविधवृंद,जैजैश्रीरघुवरसुकुंद॥ब्रह्मादिप्रशंसैंअ वधवास,कलकीरतिगावैतुलसिदास॥५॥४॥

रसहोरीखेलैंश्रीजानराय,सबकुँवरिझरोखेझांकैंआय ।टेक।महादेवसाजेमृदंग,ऋषिनारदनाचैंलियेउपंग॥ ताललियेगावैंजेदेव,जहँनाचतपीपानामदेव।१।रइदा सवजावैंनवरवागावैं,आशाटोड़ीवसंतराग॥सनका दिकखेलैंमँझार,जहँनिगमउचारैंजैजैकार॥२॥ कुम कुमकेसरकेभरेहैंमाट,जहँसेनभक्तदेबांटबांट॥ पिच कारीबलभद्रहाथ,प्रह्लादविभीषणविदुरसाथ॥३॥ उड़तगुलालहैअरुणआस जहँआनतानंदध्रुवकृष्णदा स॥अग्रकीलचरचैंअबीर,जहँअंबरीषशुकदेवधीर ४ रंकाबंकाकालूकेवलदास,जहँदासदेवकरैंबहुप्रकास॥ खोजीनरसीआसपास, जहँप्रेमसहितगावैंमीरादास ॥ ५ ॥ श्रीरामानंदकथैंब्रह्मज्ञान, जहँकबी

रचलावैंशब्दवान॥नीमानंदअरुविष्णुश्याम,माधवा चार्यकरैंबहुवखान॥६॥होरीखेलतमनवढ्योरंग, जहँ अनंतकोटितिर्थेसाधुसंग॥अबकोवेरमेरोराखोमान, जननाभाकोदीजैभक्तिदान ॥ ७ ॥ ५ ॥

रागवसंत॥बंदौरघुपतिकरुणानिधान, जातेछुटिजाय भवभेदज्ञान॥टेक॥रघुवंशकुमुदसुखप्रदनिशेश, सेव हिंपदपंकजअजमहेश ॥अतिप्रबलमोहतममारतंड, अज्ञानदहनपावकप्रचंड।१।रागादिसर्पगणपन्नगारि, कंदर्पनागमृगपतिमुरारि।अभिमानसिंधुकोभजउदा र,सुररंजनभंजनभूमिभार॥२॥भवजलधिपोतचरणा रविंद,जानकीरमणआनंदकंद॥ निजभक्तहृदयपाथो दभृंग,लावण्यवपुषअगणितअनंग॥४॥हनुमंतप्रेमवा पीमराल,निहकामकामधुकगोदयाल॥त्रैलोक्यतिल कगुणगहनराम,भजुतुलसिदासविश्रामधाम ॥४॥६॥

जानकीहोरीखेलनआई ॥टेक॥ श्रुतिकीरतिउर्मिला मांडवी,संगसहेलीसुहाई॥केसररंगभरेघटकंचन,चंद नसुगंधमिलाई।प्रीतमकोछिरकनआई।१।इतरघुनाथ सखासँगलीन्हे,भरतशत्रुहनभाई॥करकंकनकंचनपि चकारी,लक्ष्मणकरसोंचलाई॥किशोरकीशयनबुझाई ॥२॥धाईगहिलक्ष्मणकोलीने,पीतांबरपटछोरी॥ फगु वालियेमनभावतअंजनदृगअंजनअँजवाई।बहुविधि

विनतीकराई॥ ३॥ अरसपरसपरमोदभयोहै, प्रेमप्रीति उरछाई॥ ऊंचीआरीऊंचेझरोखा, जननीफगुवादेखा ई॥ हीरामणिमाललुटाई ॥ ४॥ शिवसनकादिकनारद शारद, वेदपुराणनगाई॥ सुरनरमुनिजनकौतुकदेखैं, ऐसीछविउरछाई ॥ रामदासबलिजाई ॥ ५ ॥ ७ ॥

रागसारंग ॥ अवधपुरीकीनारीसवे, मिलिखेलतआई होरीहो॥ नखशिखरूपअनूपकिशोरीबनीहैंमनोहरजोरीहो॥टेक॥ फागुनफागसुहायोआयोसहितझुमकड़ाबोलेहो ॥ कुलवधूलाजकाननाहिंमानैं, असनवसनपट खोलेहो॥१॥यकसुरचंगउपंगवेणुडफ, यककरतालबजावेंहो॥ एकएकनसोंछयलछबीली, अतिअद्भुतसुरगावेंहो॥ २॥ मीठीध्वनिसुनिआयेरघुबर, जगमंगलहितकारीहो॥ तननवघनपीतांबरभूषणभूषितअवधबिहारीहो ॥ ३॥ लछिमनभरतबोलायोशत्रुहन, जनकसुतासुधिपाईहो॥ श्रुतिकीरतिउर्मिलामाण्डवी, बनिठनियेसबआईहो॥ ४॥ इंदुवदनिसवकंठकपोतिनि, मृदुवचनीमृगनयनीहो॥ गजगामिनिभामिनिसीतासँग, गानकरतपिकबैनीहो॥ ५॥ भरिभरिलाईहैंकनकपिचकारी, छबिसोंछैलछबीलीहो॥ मानोहेमकोटतेउतरी, धारारंगरँगीलीहो॥ ६॥ बूकासुरंगगुलालउड़ावत, अबिरभरेभरिझोरीहो॥ अरसपरसमिलिभरतभरावत, गिननलकाहूकियोरीहो ॥ ७ ॥ रघुवरधाइभरेवैदेही, सहच

रीसंगअपाराहो ॥ दामिनिसीफिरिचहूंदिशि, एकैरराजकुमाराहो ॥ ८ ॥ करसोंकरजवगह्योल ड़ैती,काजरआंखिअँजाईहो ॥ मुखमाड़थोनीकेकरि नागरि,बन्योहैमनोरथभारीहो॥९॥फगुवागोदभराइ परमरुचि,पटभूषणपहिराईहो ॥ तनमनप्राणकरत न्योछावर,बाँटतवहुतवधाईहो॥१॥ सरयूजलक्रीड़त सियारघुवर,संतजननसुखदाईहो॥तुलसीदासजाइब लिहारी,जनकसुतारघुराईहो ॥११॥८॥

इति रामचंद्रके बसंत समाप्त ।

अथ कृष्णचंद्रके बसंत प्रारंभः ।

रागवसंत।प्रथमसमाजआजवृंदाबन,बिहरतलालबि हारी॥पंचमिनवलबसंतवधावा,उमँगिचलींव्रजनारी। टेक॥कंचनथारलियेब्रजसुंदरि,मधिवृषभानुदुलारी॥ फलदलजवनवनीतमंजरी, कनककलशशुभकारी १ गावतगीतबजावतबाजा,मैनसैनउनहारी॥ दरसपर समयमोदबढ़ावत,राजतछबिअतिभारी ॥२॥ चोवा चंदनअगरकुमकुमा,भरिकेसरपिचकारी॥ छिरकत फिरतछवीलीगातन, रंगअनूपअपारी ॥३॥ विपिन विलासहासरसवर्षत,उतप्रीतमइतप्यारी ॥ हितहरि वंशनिरखियहशोभा, अँखियांटरतनटारी॥४॥१॥वसं तवधावाचलोव्रजकीनारि, सखीनंदपौरिठाढ़ेमुरारि

॥टेक॥राधाचन्द्रभागाचंद्रावलि,भामाललितासुशीले
संज्यावलीकनकघटशिरधरि,आंबमोरजवलीन्हे॥१॥
नयेनयेचीरकुसुंभीसारी, वसंतअमरनसाजियहो ॥
नयेनयेकेलिकरमोहनसगँ,नवललालपियाभजियेहो
॥२॥चोवाचंदनबूकावंदन,उड़तगुलालअबीरे ॥खेलैं
फागभागवड़गोपी,छिरकतश्यामशरीरे ॥३॥ तालमृ
दंगढोलडफमहुखर,बीनाजंत्ररसाला ॥मीराकेप्रभुगि
रिधरनागर,हँसीकरायगोपाला॥४।२॥सांवरे, रंगडा
री॥टेक।।सहजसुभावजातियमुनाकोपहिरिजरकसी
सारी॥वहुरेठाढ़ेकदमकीछहियां,करहिंकनकपिचका
री ॥ लालमेरेसनमुखडारी ॥१॥ सासुबुरीघरननँद
हठीली,झुँकिझुँकिदेमोहिगारी ॥ सेरनआंसुचुवावै
सखीरी,उनकीरीतिहैन्यारी ॥ मोहिडरलागतभारी
॥२॥ अविरगुलालमेरेमुखडारत,तनकनसकैबिचारी
नवलदासयहीअचरजहैरी,आपहिढीठबिहारी ॥ ला
लचितवनिपरवारी ॥३॥

सांवरेसे, कहियोमोरी ॥ टेक ॥ शीसनवायचरणग
हिलीजो, करिबिनतीकरजोरी ॥ ऐसीचूककहापरी
मोसेप्रीतिपाछिलीतोरी॥सुरतिनहिलीनीमोरी ॥१॥
भूषणवसनसवैहमत्यागे,खानपानबिसरोरी ॥ भभूत
लगाइयोगिनहोयबैठी, तेरोहिध्यानधरोरी ॥ बेगच
लिआवोकिशोरी ॥२॥ निशिदिनव्याकुलफिरताराधि

का, विरहव्यथातनघेरी ॥ श्यामतुम्हैंढूंढ़तकुंजनमें, शीसजटाकरजोरी ॥ कहेंहरिहेरेहोरी ॥ ३ ॥ रोमरो ममदछायरहीहै, मधुमेरेबैरपरोरी ॥ मोरकरेजाजरादियोरी, अबमेंकैसेकरोंरी॥धीरजनहिंजातधरोरी॥४ सूरदासप्रभुकोजायकहियो, अवधिआशरहीथोरी ॥ प्राणदानदीजैनँदनंदन, गावतकीरतितोरी ॥ सुरततुमकरियोवहोरी ॥ ५ ॥ ४ ॥

इति कृष्णचंद्रके बसंत समाप्त ।

अथ श्रीरामचंद्रकी होरी प्रारंभः ।

रागधनाश्री ॥ खेलैंनगरअयोध्याफागरघुवरजानकी ॥ कस्तूरीकोतिलकविराजे, मैंबलिजांवमुखपानकी ॥ टेक ॥ इततेआईजनकनंदिनी, कीन्हेसबशृंगार ॥ उततेआयेलाड़िलेहो, दशरथराजकुमार ॥ १ ॥ सीतानेशैनदईसाखियनको, रघुवरपकरेधाय ॥ केतुमतोलदेउलक्ष्मणको, फगुवादेहोमँगाय ॥ २ ॥ बाजततालमृदंगझांझरी, डफबाजनहनुमानकी॥तुलसिदासप्रभुतुम्हरेमिलनको, मोहिंगतिनाहिंनआनकी ॥ ३ ॥ १ ॥

रागसारँग॥रघुबरखेलतहोरी ॥ संगलियेजनककिशोरी ॥टेक॥ अनुजसहितपिचकारीकरगहे, ठाढ़ेअवधबिहारी ॥ उतेसखीगणबहुतकलीन्हे, निकसीजनकदुलारी ॥ बाजततालमृदंगझांझडफ, अरुबाजतकरता

री॥चोवाचंदनअगरकुमकुमा,भरिकेसरपिचकारी॥
॥१॥ अँगनाआईधाईसियादोउ, खेलनकोहुलसाने॥
लाजमाजिदुरगईभवनमें,शंकनकोऊमाने॥जनुगयंद
मदकेअतिगर्वित,ऐंड़भरेऐंड़ाने ॥छबिकेभरेछबीलेदो
ऊ,छकेरहैंनहिंछाने ॥२॥ लियेलुकाइअरगजालालन,
सियाशीशपरढोरी॥तारीदेहँसिकहेपियारे,होहोहोहो
होरी ॥मृगमदमलयकपूरसुबांकी,कंचनघटबहुघोरे॥
मानखेलमेंरहतजुकैसे, भरनपरस्परहोरे ॥३॥ एकसु
सुखिसखिसियाबोलिकै,मंत्रजुअद्भुतठान्यो॥कछुलल
चाइलालकेढिगसों, भरतआपमेंआन्यो॥अबहमकहैं
सोइतुमकरिहो,कह्योजुहमरोमानो॥तुमअग्रजकोजैसे
तैसे, हमकरनिकटजुआनो॥४॥ भरतचतुरचितचोर
लालको, कछुयकरुचिउपजाई ॥ बेरँगकोलियेनारिरँ
गीली,झुमकिपियापैआई॥धाइउमिलागह्योपीतपट,
अंजनआंखिअँजाइ॥रोरीकरिमुखमांडनकीन्हो, ज
नकसुतामुसकाई ॥५॥ सियानयनकीशैनदईजब, ल
क्ष्मणकोपकरायो॥अरीयेसबहीमहाढीठहैं,करोसखी
मनभायो ॥ शत्रुजीतछलसोंगहिआन्यो,वाकेढिगबै
ठायो॥राजकुवँरिदौरिभरोभरतनें, दांवभलोबनिआ
यो ॥६॥ चहुँभाइन्हकोअबमुखमांडो, सखिरीपकरि
नचावो ॥ कैतुमउनसोंकहोलड़ैती, संगहमारेगावो ॥
कैतुमजायकहोमहरानी,तुमकोआनछोड़ावो॥कैतुम

पांयपरीसीताके,मंत्रजुमलीचताचो ॥७॥मानोघनदा
मिनीमुनमके,नवललालढिगडोलैं॥ छांडतनहींछबी
लीपियाको,कामिनिकरतकिलोलैं॥ अवयहवानिक
बनतनकाहूं,परें आनवशिभोलैं॥करतकटाक्षपरस्पर
युवती,हँसिहँसिप्रतिमाबोलैं ॥ ८ ॥ बीचकियोकौश
ल्यारानी,फागलोगकोच्यायो॥भूषणवसनमंगाइभवन
सों,सकलवधूपहिरायो॥श्रीनरहरिवपुधारिअवनिपर,
अवधपुरीचलिआयो॥चिरंजीवहुकौशल्यानंदन, वि
ष्णुदासगुणगायो ॥ ९ ॥ २ ॥

रागसारंग॥खेलतरामअवधपुरहोरी, जोड़ीपरमसुहा
ईहो॥इतहीसखिनमध्यसियराजै,उतहिसखासुखदा
ईहो ॥टेक॥ बाजतढोलदुंदुभीभेरी,महुअरिअरुसह
नाईहो॥गीतपुनीतगावतफगुवाके,बहुविधिसबहर्षाई
हो ॥१॥ गजगामिनिभामिनिदामिनिसी,होहोकरि
करिधाईहो॥उतदौरेरघुवीरऔलक्ष्मण, भरतशत्रुहन
भाईहो ॥२॥ अविरगुलालकुमकुमाभरिभरि, पोटनि
मारमचाईहो॥इतहिजयतिजयजनकललीकी, उतद
शरथसुतधाईहो ॥ ३ ॥ उड़तगुलाललालभयोअंबर,
धूंधचहूंदिशिछाईहो॥मृगमदकेशरभरिभरिछोड़त,यं
त्रनयुक्तिलगाईहो ॥ ४ ॥ एकसखीपीछेतेलक्ष्मण, ग
हीअचानकजाईहो॥दौरीबालतालदैहँसिकें, गहिला
लनकोल्याईहो ॥५॥ अबसबभयोभावतोमनको, रा

खोंगीउरलपटाईहो ॥ अवकरिहैंहमनकोभायो, ह्यांन चलतिचतुराईहो ॥ ६ ॥ तुमजिनजानोहमछुटिजैहैं, छाड़ेंगीवहुतरिझाईहो ॥ व्यंग्यवचनसुनिगयकूदिकै, सवैरहींखिसियाईहो ॥ ७ ॥ जानकिवल्लभफगुवादीन्हों, मेवासरसमिठाईहो ॥ चलीकिशोरीभरिभरिझोरी, संतदासवलिजाईहो ॥ ८ ॥ ३ ॥

रागसारंग ॥ खेलतरामरघुपुरीरुचिसों, बहुभांतिनसुखदाईहो ॥ इतहैजानकीयुवतियूथमें, उतसोहैंसँगभाईहो ॥टेक॥ चमरछत्रवरध्वजापताका, रचनारुचिरबनाईहो ॥ सकलफागकोसाजसज्योहै, कबहुंकनिकटनजाईहो ॥१॥ बाजेबजनलगेचहुंदिशिते, गावतगारिसोहाईहो ॥ मनोद्विरछूटेमदमाते, भिरतपरस्परधाईहो ॥ २ ॥ केसरिगारिकुमकुमाभरिभरि, छूटतछविपिचकारीहो ॥ प्रेरितपवनमनहुंपावसऋतु, घनवर्षतयकवारीहो ॥ ३ ॥ मृगमदमलयअबीरसखासव, अगरनकीचमचाईहो ॥ उमँगचलेअरगजापनारे, वीथिननदीवहाईहो ॥४ ॥ केसरअगरसोंभरेहैंचहबचा, धूपधूमछविछाईहो ॥ सोंधेलहरमहोदधिमानो, पुरजनप्रीतिवढ़ाईहो ॥ ५ ॥ चोवाचंदनछलवलकरके, प्रीतममुखलपटाईहो ॥ राजिवनयनलेतजबवदलो, तवसियादेतदोहाईहो ॥६॥ श्रुतकीरतिउर्मिलामाण्डवी, रघुवरघेरेजाईहो ॥ हाहाकिय्येतवैपलछुटिहो, कह

सियाशीशनवाईहो ॥७॥ भरतभरावतकुँवरिकुँवरपै, हलैदैकिलकाईहो ॥ मानोमघवाध्वनिव्यापिरहीहै, उठतमहलमेंझाईहो ॥ ८ ॥ खंभखंभप्रतिविंबरामको, जहँजहँदेतादिखाईहो ॥ कुशध्वजकुँवरिभरतहठ्भ्रम सों, हांसीकरतखिसाईहो॥९॥पलटेपकरेजायशत्रुहन, काजरआंखिअँजाईहो ॥ करतसकलभामिनिमनभायो, बंधुतोलेहुछुड़ाईहो ॥१०॥ पकरोतावीरनमेंपक्षी, मिसकरिहाथदिवाईहो ॥खेलनलगेउड़िगईचिरैयां,हरिहँसितालवजाईहो ॥ ११ ॥ जालरंध्रमुखनिरखतजननी,आनँदउरनसमाईहो ॥ तनमनप्राणकरतनौछावर, बांटतबहुतवधाईहो ॥ १२ ॥ रँगेरँगेडोलतरायकेअँगना,जनकसुतारघुराईहो॥रीझिसुमनवर्षतसुरसंघट, दिव्यदुंदुभीवजाईहो ॥ १३ ॥ बीचकियोकौशल्यारानी, फगुवागोदभराईहो ॥सीतारामविनोदफागुपर, अग्रअलीवलिजाईहो ॥ १४ ॥ ४ ॥

रागकाफी॥खेलतरघुवररंगभरे होहोमेरेप्यारे,अवधपुरीकेप्रान ॥टेक ॥घरघरतोरणध्वजापताका, मुक्तावंदनवार ॥इंदुवदनिमृगशावकनयनी, गावतगीतरसाल॥१॥बाजाबहुविधिसाजवजावें,मधुरमधुरसुरगान॥ देखनआयेदेवताहो, चढ़िव्योमविमान ॥ २ ॥ उतरघुवरभूषणबहुभूषित, पीतांबरछविदेत ॥लक्ष्मणभरतशत्रुहनसुंदर, बोलिसखासबलेत ॥३॥ नखशिखकि

योशृंगारलाड़िली, चलीहैंसहचरीओट ॥ श्रुतिकीर्ति उर्मिलमाण्डवी, वनीछबीलीजोट॥४॥चोवाचंदन औरकुमकुमा, अरगजामाटभराये ॥ बूकाबंदनमंगलभुंजन, कुँवरिलियेअमनाये॥५॥भरिभरिलईकनक पिचकारी, अपनेअपनेहाथ ॥ मानोछूटीघनधारचहूंदिशि, रँग्योसियाजीकोसाथ॥ ६॥रघुवरभऱ्योजबप्राणपियारी, बहुविधिरंगकेशार।मानोसांवरगिरितेउतरी, रंगरँगीलीथार॥७॥वरयोबहुविधिलईसामग्री, दूरिआनिहरिओर ॥ उड़ेगुलालछयउसुरवरतन, मानहुंऊगेउभोर॥ ८॥खेलतमगनभयेनरनारी, अरगजागारी॥जहांतहांछूटेचलैंपनारे, मानोपावसवारी॥९ ॥कर सोंकरजबगह्योलड़ैती, काजरआंखिअंजाई॥जोयेरघुवरतुम्हरेप्यारेहैं, अबक्योंनलेहुछोडाई।१०।अहिबेली भाजनलियोरघुवर, हियोसहचरीहाथ ॥ जिनिछीयोयोंकहेलड़ैती, छलकीन्होरघुनाथ॥११॥सजलअमीहंसिआंजेलोचन, हँसिपकराईदीन ॥ खंजनखरेकहांते निकसे, पावकभीनेमीन ॥ १२ ॥ सुखसागरपियनागरझलत, वाढ़ेउरंगअपार ॥ गहेअँचरागोरीकहैंहरिसों फगुवादेहुकुंमार ॥१३ ॥ फगुवादियेमँगाइसबयनको, अंगवनिताअनुकूल ॥ जयजयसियारामध्वनिउचरैं, सुरगणवर्षैंफूल॥१४॥ इंद्रादिकयोंकहैंपरस्पर, धन्यअयोध्यावास ॥ क्योंनकियोविधनाहमनिजपुर,रघुवर

दासीदास ॥ १५ ॥ सुंदरदासचलेगुणगावत, सरजूक रिअस्नान ॥ मणिभूषणअवधेशयुगुलपर, वारदेतहैदा न ॥ १६ ॥ ५ ॥

रागकाफी॥रघुवंशीसुंदरअतिबनेहो, बनेहोदशरथरा जकुमार ॥टेक॥सरयूतीरअयोध्यानगरी, अधिकरा जबड़भाग ॥ सुरनरमुनिअरुदेवतेंतीसो, खेलनआये हैंफाग ॥ १ ॥ कनकखंभमिलिडोलरच्योहै, झूलतसी ताराम ॥मानोसिंधुकीउठततरंगें, वर्षतकुसुमविमान ॥२ ॥रामऔलक्ष्मणभरतशत्रुहन, राजतकुँवरकिशो र ॥ खेलतफिरतसबैरँगभीने, इंद्ररह्योकरजोर ॥ ३ ॥ कीटमुकुटमकराकृतिकुंडल, अलकभ्रमरभ्रमभूल ।मृ गमदातिलकमालमुक्ताहल, पीतवसनअनुकूल॥४॥ढो लझांझसहनाईबाजें, यंत्रपखावजताल ॥ भेरिमृदंग औरायगिड़गड़ी, विचविचवेणुरसाल॥ ५ ॥ चोवा चंदनऔरअरगजा, केसरवहुतसुवास।रंगभरेखेलतर घुवंशी, मानोवर्षतभादोंमास॥६॥सबसखियनमिलम तोउपायो, लक्ष्मणपकरेधाय।आंजेनयनकपोलकरन गहे, लीन्होंहैधनुषछिनाय॥७॥रघुवररीझिदेतपीतांब र, मेवावहुतमँगाय ॥ वर्णवर्णपहिरायपटंबर, आनँद उरनसमाय॥८॥धन्यसुधन्यअयोध्यानगरी, धनिपुर वासीलोग ॥ लघुहरिदासधन्यदशरथसुत, वारोंकोटि इंद्रभोग ॥ ९ ॥ ६ ॥

रागकाफी ॥ अविनाशीदूलहकबमिलिहैं, होमेरेप्यारे मिलहितोजानेनदेहुँ ॥ टेक ॥ जलउपजीजलसेनहिंनेहा, रटतपियासपियास॥मैंविरहिनठाढ़ीमगजोऊं,रामिलनकीआस ॥१ ॥ दिवसनभूँखरैनिनहिंनिद्रा,गृहअंगनानसुहाय॥ सेजरियावैरनभइमोको, जागूंतोरैनिविहाय ॥२ ॥ छोड़ोगृहनेहहमजोड़ो, तुमसोंभई चरणलवलीन॥ तलफितलफिप्रेरीप्रेमकीफांसी,जैसेहोजलविनमीन ॥ ३ ॥ हमतोतुम्हारीदासीहोमोहन, तुमहमरेशिरताज॥दीनदयालुदयाकरमाधो,साईंसिरजनहार ॥ ४ ॥ कैहमप्राणतजतहूंमोहन, कैअपनी करलेहु ॥ दासकवीरविरहअतिबाढ्यो, हमहुकदर्शन देहु ॥ ५ ॥ ७ ॥

इति रामचंद्रकी होरी समाप्त ।

अथ श्रीकृष्णचन्द्रकी होरी प्रारंभः ।

रागगूजरी ॥श्रीराधेनवलकिशोरडोलैंगूजरी ॥ कनकमथनियांशिरधरिबाबा, नंदजीकेद्वारखरी ॥ टेक ॥हरियेकुसुमकोघाँघरो,ओढ़नकोचूनरी ॥ अँगियाबनीहैकटावकी, मानोंफूलीचंपकली ॥१॥अनवटबिछुवाघूंघरहो, जेवरअजबबनी ॥ चालचलैमदहस्तीकिमानो, यौवनगर्वभरी ॥ २ ॥ हारहियेहारेकीचौकी, बनीफगुवारिदुलारी ॥ विंदाबन्योहैजड़ावकोमानों,मो

तियनमांगभरी ॥ ३ ॥ विद्यापतिवर्णोंमेंकहांलों, अंग अंगसुघरी ॥ ४ ॥ १ ॥

रागसारंग॥बाघंबर ओढ़ेसांवरोहोहो, मेरीआलीइनमें योगीकोलक्षणकौन ॥ टेक ॥ शंखशब्दध्वनिसुनिजि ततिततें, जुरिआईंव्रजनारी ॥ वदनविलोकिकुँवरिरा धेको, बैठेहेंआसनमारी ॥ १ ॥ कौनदिशासूँआयेहोरा वर, कहांतेरोमनसाजाई॥ आपनमौनगहेमनमोहन, दक्षिणदियोहैबताई ॥ २ ॥ हँसिवृझतवृषभानुनंदिनी, रावरउत्तरदेहु ॥ कारणकवनभेपतपस्वीको, वनतजि आयेहोगेहु ॥ ३ ॥ झोलिनपात्रविभूतिनवटुवा, मुद्रा नाहिंनकान ॥ योगीनहिंकोउवड़ोहैवियोगी, भोगीहै परमनिधान ॥ ४ ॥ सिंगीनादनदंडकमंडलु, शिरचंद नकीखौरी ॥ मेरेमनउनमानसखीरी, कंथविसारेहैगो री॥५॥चुटकीविभूतिदईहैराधेको, चलेहैंबाघंबरझार॥ तनकचितवनमेंमनहरिलीन्हो, गोहनलागीहैकुँवार॥ ॥६॥नगरनगरयोगीडगरडगरमें, निशिदिनफिरतउ दास ॥ नयनचकोरभयेराधेके, हरिमिलनेकीआस ॥ ॥ ७ ॥ तीनलोकब्रह्मांडखंडमें, घटघटरहेसमाय ॥ सोयोगीवृषभानुकुँवरिके, ठाढ़ेहैंपौरदुआर॥८ ॥तनक तनककरिमनहरिलीन्हो, निरखिनयनकीकोर ॥ ज गन्नाथजीवनधनमाधव, प्रीतिबढ़ीदोउओर ॥९ ॥ २॥

रागसारंग ॥ मोहनखेलतहोरी, श्रीवृषभानुगोपकी

पैरी ॥ टेक ॥ वंशीवटयमुनातटकुंजन, तरठाढ़ेबनवा
री ॥ इतसखियनकोमंडलजोरे, श्रीवृषभानुदुलारी॥
होहाहोईहोतपरस्पर, देतआनंदकीगारी। उड़तगुला
लकुमकुमाकेसरकरकंचनपिचकारी। १ ।बाजतवेणुबां
सुरीकीगर, अरुमहुअरमुंहचंगा ॥ अमृतकुंडलीसरमं
डलमें, सबतेसरसअपंगा॥बाजततालमृदंगझांझडफ,
सुरकेउठततरंगा ॥ नाचतहँसतकरतकौतूहल, केसर
छिनकतरंगा २ तबहिंश्यामसबसखाबोलाये, सबकोम
तोसुनायो ॥ भैयारेतुमचौकसरहियो, मतकोउदेहुग
हायो॥ जोवेतुमकोपकरेपावहिं, करिहैंमनकोभायो॥
तातेसावधानहोयरहियो, हमतुमकोसमुझायो ॥ ३ ॥
सबैकिशोरीराधागोरी, मनमेंमतोजुकीन्हो ॥ सखी
जोएकबोलायआपनी, भेषग्वालकोकीन्हो ॥ ताको
मिलनचलेमनमोहन, सखानकाहूचीन्हो ॥ एक
नबातलगायलालको, पाछेसेगहिलीन्हो ॥ १४ ॥आ
ईसमिटसकलब्रजवनिता, मोहनपकरेजबहीं ॥ हम
मांगतहैंयाविधनापै, दावँपरैगोकबहीं ॥ जबतुमची
रहेरेजूहमो, हाहाखाईहमसबहीं ॥ अबहमबसनछी
नसबलेहैं, हाहाखाइहोतुमहीं ॥ ५ ॥ एकसखीआ
चानकआई, मोरपक्षगहिलीनो ॥एकसखीपाछेतेआ
ई, पीतांबरगहिछीनो ॥ एकनेआंखआंजिमुखमांडे,
ऊपरगुलचादीनो ॥ मानतकौनफागमेंप्रभुता, मनमा

नोसोंकीनो ॥६॥एकसखियासुंदरभईठाढ़ी, घुंघटपट मुखढांके ॥ एकसखीमधुरेसुरगावे, मुखसोंगारिनभा के॥एकसखीहरिकोमुखनिरखे, तनुकीदशानताके ॥ गिरिधरचरित्रकोउनहिंजानै,सवहुनकोदिशिताके ॥ ॥७॥ एककहेवाकोवदनउघारो,हमहूंदर्शनपावें ॥ श्री मुखकमलनयनमेरेमधुकर,तनुकीतपनबुझावें॥एकक हैयाकीवेणीगूंथो, रुचिकरमांगवनावें ॥ ८ ॥ एककहें बोलोवलभय्या,वेतुमभलेछुड़ावें ।सखाएकतुमघरको पठावो, यशुमतिहूँलेआवें ॥जानतहूंछलवलकरछूटें, गहेनछूटनपावें॥पांयनपरोकुँवरिराधेके, वोतुम्हैंभले छोड़ावें ॥९ ॥दूरहितेवलआवतदेखो, सबैसखीउठधा ई॥छलवलकरिजैसेअरुतैसे,उनहूंकोगहिलाई॥ आन कियेयकठौरहिठाढ़े,हरिहलधरदोउभाई ।वाहूकीआं खिआंजिमुखमांडो,राधेजूशयनवताई॥ १० ॥ हँसि हँसिकहतमोहनप्रीतमसों,मानोसुखकीभीजे ॥छांड़ो हमेजायँघरअपने, पीतांवरमेरोदीजे।करजोरेहरिहल धरठाढ़े,आज्ञाहमकोदीजे ।जोइजोइइच्छाहोयतुम्हा री,सोइसोइफगुवालीजे॥११ ॥ तवदेखेंब्रह्माशिवनार द,मनहीमनपछताई॥वड़ोभाग्यहैव्रजवनितनको, ह मसुखकहोनजाई ॥ जाकारणहमध्यानधरतहैं,ध्यान हुआवतनाईं ॥सोदेखाव्रजयुवतिनआगे, जोरेठाढ़ेवां ॥ १२ ॥ तवेश्यामसवसखानोलाये, फगुवावहुतमें

गायो॥जोजाकेजैसोमनभायो, सोइसोइताहिपाहिरा यो॥श्रीजगन्नाथरायचिरजीवहुजोड़ी, सबकोभलोम नायो।बाढ़ोवंशनंदबाबाको, माधवदासगुणगावे १३

रागसारंग॥मेरेनयनमेंजिनडारो, पियापिचकारी॥ औनिवसनअंगलपटाने, भीजरहीतनुसारी॥टेक॥खंज नमीनमरालऔदधिसुत, मानोकनककुँवारी॥मृगरि पुमगरपपैयाकोकिला, मानोविधिसांचेढारी।१॥दर्पण लियोकुँवरिकरअपने, मोतियनमांगसवांरी॥तीनलो ककोरूपराधिका, रसवशकियोहैबिहारी॥२॥केस रमेंसरीअँगियासानी, सूंधेभीनीसारी॥सुकनककीन कवेसरभीनी, मोतियनकीलरन्यारी॥३॥केसरघोर मँगायलाड़िली, नवललालपरडारी॥गोरेसेबदनभये नँदनंदन, हँसतत्रियादैतारी॥४॥मृगमदघोरभरेह रिश्यामा, अँगअँगभयेहैंकारी॥अरसपरसदोउलाल लाड़िली, रंगउपज्योरसभारी॥५॥ललनाधायगहेम नमोहन, नयनशयनदेप्यारी॥फगुवादेहोतबैभलेछु टिहौ, कहैंवृषभानुदुलारी॥६॥फगुवाबहुतमँगायला ड़िले, हँसिहँसिदेइँगिरिधारी॥योंसुखसिंधुकहांलौंब र्णौं, लीलामंगलकारी॥७॥धनिधनिभाग्यभूरिव्रज वनिता, जासँगरमतमुरारी॥लालला़ड़िलीकीछबि ऊपर, अग्रदासबलिहारी॥८॥४॥

रागसारंग॥रसहोरीखेलैसाँवरोहो, अहोमेरीआलीत

टयमुनाकेतीर ॥ टेक॥ लालगगनभयेलालमगनभये, वृक्षलालफलपात॥ लालहिलालवनीव्रजवनिता,लाल हिलालजीकेसाथ ।१॥ कंचनकेरकटोराकेसर,घसिल लितालियेहाथ ॥ अंचलदेवृषभानुनांदनी, छिरकतह रिजीकोगात ॥ २ ॥ भरिपिचकारीसुवरसुदामा,देहें कृष्णजीकेओर॥चितवतचोटकरतमनमोहन, भीज गईमृगमदरवोर ॥३॥ इतभयेग्वालउतेव्रजवनिता,ग येहेंनंददरवार ॥ वांसनमारपरतअतिभारी,जीतेहेंनं दकुमार ॥ ४ ॥ विद्यापतिप्रभुफगुवादीन्हो, सेवासर सभगाय ॥ देआशीशचलींव्रजवनिता, चिरजीवोनं दलाल ॥ ५ ॥ ५ ॥

इति श्रीकृष्णचंद्रकी होरी समाप्त ।

अथ शेषाचलहोरी प्रारंभः ।

रागकाफी ॥ शेषाचलधामसुहावनोहो, होसेरेप्यारेज हांखेलतनिकटफाग ॥ टेक ॥ वापर्वतकीकहाछविव र्णों,विकटवैठेआय ॥ पुष्करिणीजीनिकटविराजें, कोटिकतीरथमांझ ॥१॥ कंचनमंडपछायरह्योहै,सन्मु खहैंहनुमान ॥जयऔविजयदोउपौरियाविराजें,भीर भईहैघनघोर ॥२॥ गरुड़वाहनअसवारीनिकसी, भई हैनगाराकीवंव॥रत्नजड़ितशिरमुकुटविराजे,यहशो भावर्णीनहिंजाय ॥३॥ मारिफलागरथऊपरवैठे,इंद्र

जोवनचोर ॥ब्रह्मादिकस्तुतिकरतहैं, धन्यधन्यभाग्य पुरवासीलोग॥४॥केसरियोबागोजुबन्योहै,लक्ष्मीरही लपटाय ॥ दासहाथीरामकोदर्शभयोहै, चितवनसं तनओर ॥५॥१॥

इति शेषाचलहोरी समाप्त ।

अथ गिरिहोरी प्रारंभः ॥

रागकाफी।नवरंगीकेसरहमबोइहैं, अहोमेरीआलीअ पनेबालमजीकेकाज ॥ टेक ॥वापर्वतपरकेसरबोई, मिरगाचुगिचुगिजाय ॥ क्योंरेमृगातूमानतनाहीं, मारोंगीधनुपचढ़ाय॥१॥आसपासहमकेसरबोई, बिच बिचबोयोहैगुलाव ॥ वाकोवाससुवासउड़तहै, गूथूंगी नवसरहार ॥ २ ॥ कनककटोराकेसरघोरैं,औयमुना कोनीर।कृष्णजिवनजीकोबागोचरचौंगी,राधेजीको चीर ॥३॥ वृंदावनवंशीबजीमोहन, ध्वनिसुनिरह्योन जाय ॥ वेगिमिलोहरिवंशकेस्वामी, रूठीकोलेहुम नाय ॥ ४ ॥ १ ॥

रागकाफी ॥ गिरिलालविहारीहोरीखेलैंहो ॥ अहो मेरीआलीखेलतसंतसमाज ॥ टेक ॥ निकटमहोद धिरत्नसिंहासन,रथपरश्रीजगन्नाथ॥पुष्पविमानचढ़े बलदाऊ,देवीसहोद्राहैसाथ ॥१॥ दोनामरुवाअधिक विराजैं,पहिरेपुष्पअपार ॥सखिनसहितलक्ष्मीसँगरा जैं, पहिरेंनौतमचीर ॥२॥ जगजीवनखेलनकोपधारे,

इंद्रदमनदरबार ॥ गोपरूपसोंधेरैगभीनें, चलेहैंभरि भरिभार ॥ ३ ॥ महिमाअधिकजातनहिंवर्णी,सबदेव नकेदेव ॥ आयोशरणदासजनमाधव, प्रभुअपनोक रिलेव ॥ ४ ॥ २ ॥

इति गिरिहोरी समाप्त ।

अथ रामडोल प्रारंभः ॥

रागधनाश्री॥बैठेडोलविराजैं,आजुश्रीरघुवरजानकी नरअरुनारिसबैमिलिगावत,रागरागनीतासुकी॥टेक पुरटजड़ितपटिनीपटसोहैं,रचनारचीहैवितानकी ॥ झलकिरहीकहिजातनझलरी,झुमकनिगजमुक्तानकी १सखीचखीमृगझुमकझुलावत बीरीखवावतपानकी सियपियपरहँसिचोटचलावत,लोचनकोयनवानकी ॥२॥ अबीरगुलालअरगजासोंछबि, कबिहैभानुकुल भानुकी॥३॥युगलबिलोकिवदनविधुसुंदर, गतिगइम दनगुमानकी ॥ ४ ॥ १ ॥

रागधनाश्री॥खेलैंअरसपरसमिलिफागुआगागरी॥द शरथसुतऔजनकनंदिनी,इनकोपरमसुहागरी॥टेक। चोवाचंदनऔरअरगजा,भरिभरिकेसरिगागरी ॥पि यप्यारीप्यारीपियऊपर,बाढ्योअतिअनुरागरी॥१॥ पकरिलालकेगालल्लपेटे, धाँयेछुटत्तनदागरी॥होहावो लेहोरीखेलें,तोऱ्योलाजकोतागरी ॥ २ ॥ बाजतता

लमृदंगझांझडफ,मच्यौघनाश्रीरागरी ॥ दोउमिलिफ गुवारिझदेतहैं,लघुमोहनकोभागरी ॥ ३ ॥ २ ॥

रागसारँग ॥ झूलतडोलतअवधविहारी ॥अरुणवसन अलबेलीवनिता,गावतकोकिलकंठरी ॥ टेक ॥ सबहि सखीदामिनिज्योंदमकहिं,पहिरेअनूपमसारी ॥ अप नोअपनोमाटधरेसब,मृगमदकेसरिगारी १ आपआ पकझमकेचालत,देतपरस्परतारी ॥ लाजकानिकाहू कीनमानत,प्रेमभरीमतवारी ॥ २ ॥ झूंकचलतहैंतट सरयूके,गावतरागधमारी ॥ अलबेलीहटक्योनहिंमा नत, सियानिरखिरतिहारी ॥३॥ औरख्यालकोकोग निसकै, अनंगरतिदोउहारी ॥कहिनपरतकछुछाबिरा घाकी, शोभितरूपअपारी ॥ ४ ॥ फूलनहीकीपागवि राजै, फूलनपेंचसवांरी ॥ फूलनकीमालाजुबिराजैं,फू लीफिरतपुरनारी॥५॥फूलहिफूलबनेपुलिननमें,फूलन कीपिचकारी ॥ फूलनहीकीअलकगुहाई, फूलनमांझ सवांरी ॥ ६ ॥ फूलनहीकीआँगियाबिराजे, फूलनही कीसारी॥फूलनहीकोबन्योघाँघरो, फूलनछरीसवांरी ॥७॥ फूलनहीकोअटारअटारी, फूलनडोलसवांरी ॥ फूलनहीकोबन्योझरोखा,फूलनहीकीबारी ॥८॥ फूलन हीकीरौसबनाई,फूलनहीकीचिकडारी, सकलफूलकी छातिबनाई,अरुणफूलडंडकारी ॥ ९ ॥ पीतफूलकीझां कीराखी, फूलकुशुंभाजारी॥नीलफूलकेपरदाडारे, झू

लतिजनकदुलारी ॥ १० ॥ फूलनहीकीभूमिविराजै, फूलतालटकाई ॥ फूलनहींकेखंभविराजैं, फूलनतनीस वांरी ॥ ११ ॥ फूलीनारिअद्भुतअतिगावहिं, मानौंमनोज लजाई ॥ दशरथनंदनजनकदुलारी, झूलतहैंभुजजोरी ॥ १२ ॥ घनदामिनिद्युतिराजतदोऊ, कहिनपरतछवि भारी ॥ अनंगलज्योरघुवरछविदेखत, सियानिरखिर तिहारी ॥ १३ ॥ निशिदिनसुखब्रह्मादिकवांछत, संशयर हतसुरनारी ॥ विनपुरवासीकोउनहिंपावै, अवधआ नसुखकारी ॥ १४ ॥ सीतारामअभयपदमोको, दीजै भक्तसुखभारी ॥ निशिदिनध्यानधरौंहृदयेबिच, तुल सीछविपरवारी ॥ १५ ॥ ३ ॥

इति रामडोल समाप्त ।

अथ कृष्णडोलप्रारंभः ।

रागधनाश्री ॥ चलोसखीदेखनजइये, डोलसोहावनो ॥ ऋतुबसंतफूलेपतिपत्नी, गृहगृहआनँदबधावनो ॥ ॥ टेक ॥ नववृंदावननवबंशीवट, बेलिसघनबनफूले ॥ धीरसमीरकुंजजहँयमुना, देखिमहामुनिभूले ॥ १ ॥ ताम धिडोलरच्योविश्वकर्मा, अद्भुतचित्रबनाई ॥ वर्णोकहा एकमुखरसना, शेषहुवरणिनजाई ॥ २ ॥ कनकखंभनग जड़ितापिरोजा, लगेहैंलालमणिमोती ॥ हीरानगनबनी चित्रायनि, शशिउडुगणसमज्योती ॥ ३ ॥ रेसमडोरील्है

सखनसंगलीन्ह, नवललालललपटावै॥झूलतश्रीराधेआनँद वन, नीतमनारिझुलावैं ॥४॥ लहँगालालकुसुंभीअँगिया, पहरिवसंतीसारी॥ चंद्रवदनिमृगलोचनिराधे, श्री वृषभानुदुलारी ॥ ५ ॥ चोवाचंदनअगरकुमकुमा, अविरगुलालउड़ावें॥खेलतब्रजवनितामोहनसँग, अमर पुष्पवर्षावें ॥ ६ ॥ तालमृदंगझांझडफबाजैं, रंगरह्यो रसभारी॥लाललाड़िलीकीछविऊपर, जनकेशवबलिहारी ॥ ७ ॥ १ ॥

इति कृष्णडोल समाप्त ।

अथ अन्य विशेष होरी ।

दशरथकेद्वारमचीहोरी ॥टेक॥आयेवसिष्ठसंगद्विजसोहें, केसरतिलकअबीरकिझोरी॥पुत्रनसहितउठेराजादशरथ, शीसनायकहकरजोरी ॥२॥ हिलिमिलिफागपरस्परखेलैं, दानादियेसेभयमतिभोरी॥ ३ ॥ ब्रह्माखेलें महादेवखेलें, सुरपतिखेलैंरँगबोरी ॥ ४ ॥ कौतुकदेखिपतंगभुलाने, शारदकीभईमतिभोरी ॥ ५ ॥ तुलसीदासआसरघुवरकी, चितवनमोररामओरी ॥ ६ ॥ १ ॥

होरीखेलत, रामअवधवासी ॥टेक॥ कितसेआयेराम रँगीले, कितसेआईसियसुखरासी ॥ १ ॥ केतनेबर्षके रामरँगीले, केतनेबर्षकीसियसुखरासी ॥२॥ बारहवर्षकेरामरँगीले, सातवर्षकीसियसुखरासी ॥ ३ ॥ उड़त

गुलालमयबादर ॥ रँगवर्षतकेसरखासी ॥ ४ ॥ रामसेवकजोकेप्रभुसुखसागर, अचलवसैंतरीअविनासी ॥ ५ ॥ २ ॥

होरीखेलतराम, अवधहोरी॥टेक ॥लषनरामदोउभरतशत्रुहन, अबिरगुलालभरेझोरी ॥१ ॥चारोबरनघरनकीयुवती, सकलयुवामदवोरी ॥ २ ॥ चलिभलिविधिफागुनकीमहिमा,कुशलवड़ीसवकेओरी॥३ ॥बाजाविविधवजावतगावत, होतसोरबहुचहुँओरी ॥४॥ मनहुँमदनरतिसैनापतिकी,कीन्होचोषनथोरीथोरी॥ ॥ ५ ॥ चंदनकेसरमृगमदभाजन, लियेभरेसवकरघोरी ॥ ६ ॥ लाजकाजमरजादलोककी,सकलतजीयहमदवोरी ॥७ ॥ इतरघुवंशीछैलछबीले, उतअलबेलीवेलीरी ॥८ ॥ खेलहिफागअबीरदोउदिशि, उड़तबढ़योआनँदभारी ॥ ९ ॥ अवीरगुलालगाइभलीविधि, रंगनतेअंगनबोरी ॥ १० ॥ रामसेवकएकरामपरस्पर, धरतकरतवरजोरीजोरी ॥ ११ ॥ ३ ॥

होरीखेलतरामअवधपुरमें॥टेक॥क्रीटमुकुटमकराकृतिकुंडल,मोतियनमालवनीउरमें ॥१॥बाजततालमृदंगझांझडफ,हनुमतनाचेडफधरमें ॥ २ ॥ रामसेवकजोकेप्रभुसुखसागर,याजोरीवसोमेरेउरमें ॥ ३ ॥४॥

सरजूतटआजुमचीहोरी ॥ टेक ॥ रघुवरलक्ष्मणभरतशत्रुहन, खेलतहैंजोरीजोरी ॥ १ ॥ अवीरगुलालकुम

कुमाघोरी, केसरकीचमचोरी ॥ २ ॥ क्रीटमुकुटमकरा कृतिकुंडल, सिरसोहैसुंदरसारी ॥ ३ ॥ सुंदरश्यामराम छविराजत, पीतांवरकटिकेसरखरोरी ॥ ४ ॥ उड़तगुला ललालमयेबादर, धनुषबाणरँगमेंबोरी ॥ ५ ॥ हिलि मिलिफागपरस्परखेलें, अविरगुलालभरेझोरी ॥ ६ ॥ रामसेवकरसरसिकशिरोमणि, चितवतश्यामराममा री ॥ ७ ॥ ५ ॥

होरीरचिरहिछैलछबीलेकी ॥ टेक ॥ रोंकेघाटबाटजल ओरी, झिलिमिलियूथरँगीलेकी ॥ १ ॥ सरजूतीरनीर भरिबेको, जिनजैहोरँगभीनेकी ॥ २ ॥ झिलिमिलिजू थअँटारीनाचहिं ॥ चढ़िदेखहिंफागरसीलेकी ॥ ३ ॥ कुमकुममाठहाथसरजूजल, देदेमारअबीरोंकी ॥ ४ ॥ रामसेवकरतिरामचरणसिय, अद्भुतख्यालफनोसो की ॥ ५ ॥ ६ ॥

दशरथकेलालखेलेंहोरी ॥ टेक ॥ कौनकेहाथघुमरडफ बाजे, कौनकेहाथमंजीराजोरी ॥ १ ॥ लक्ष्मणहाथघुम रडफबाजे, शत्रुहनहाथमंजीराजोरी ॥ २ ॥ कौनकेहा थकनकपिचकारी, कौनकेहाथअबीरकिझोरी ॥ ३ ॥ रामजीकेहाथकनकपिचकारी, भरतकेहाथअबीरझो री ॥ ४ ॥ हिलिमिलिफागपरस्परखेलैं, आनँदउमगकौ नकोरी ॥ ५ ॥ तुलसिदासछबिदेखिमगनभये, चिरं जीवरहोयुगलजोरी ॥ ६ ॥ ७ ॥

होरीखेलतफिरत, अवधवासी ॥ टेक ॥ बाजततालमृ दंगझांझडफ, नौमतमंचोपघोररासी ॥ १ ॥ अतर अबीर भरेकेसरघट, फेंकतगुलालकरेंहांसी ॥ २ ॥ सुररंजन भंजनमहिभारा, करतचरित्रलगेहांसी ॥ ३ ॥ रघुवर लक्ष्मणभरतशत्रुहन, अंसनसहितसिधुरासी ॥ ४ ॥ तुल सिदासछविदेखिमगनभये, देखतपरेप्रेमफांसी ॥ ५ ॥ ७ ॥
तुमकोहरिहोरीखेलावों ॥ टेक ॥ आजुतुम्हैंधरिकैरघुनंद न, सुखभरिरंगलगावों ॥ १ ॥ छीनिलेउँकरसेपिचकारी, तबसियसखीकहावों ॥ २ ॥ अनुजसहितधरिरामलख नको, सुंदररूपबनावों ॥ ३ ॥ लैजैहौंमिथिलेशललीपहँ, सियाजीकेपांयपरावों ॥ ४ ॥ तुलसिदासहँसिलपनक- हें प्रभु, सबसखियनधरिल्यावों ॥ ५ ॥ छीनिलेउँअंगपट अरुभूषण, रँगसेनहवावों ॥ ६ ॥ ९ ॥
दशरथसुतचारोखेलहैंहोरी ॥ टेक ॥ उड़तगुलाललालभये बादर, घटाउमँगिआयेदौरी ॥ १ ॥ कौनकेहाथरंगापि चकारी, कौनकेहाथअबीरझोरी ॥ २ ॥ लक्ष्मणहाथ रंगपिचकारी, रघुवरहाथअबीरझोरी ॥ ३ ॥ इतरघुना थसखासँगलीन्हे, जनकसुतासखियनजोरी ॥ ४ ॥ गौतमनारिअयोध्यापुरकी, सुभगचारुउमँगेनथोरी ॥ ५ ॥ चोवाचंदनऔरअरगजा, मटुकीमेंकेसरघो री ॥ ६ ॥ सीतासेनदियोसखियनको, झुंडझुंडउठि धाइंसगरी ॥ ७ ॥ फगुवादेवमँगायलालजू, बहुमेवा

भरिभरिझोरी ॥ ८ ॥ तुलसिदासछबिदेखिमगनभये, गोरश्यामसुंदरजोरी ॥ ९ ॥ १० ॥

खेलतरसियासंगहोरी ॥ टेक ॥ पिचकारीछोड़तछबि छलसों, चितवतचंद्रसखीचहुँओरी ॥१॥ चोवाचंदन और अरगजा, केसरमाठभरेधरेघोरी ॥ २ ॥ पियपियारीप्यारेकेऊपर, भरतपरस्परकुँवरिकिशोरी॥३॥तबमहारानीअतिअकुलानी,साजिलियेसन्मुखदौरी॥ ॥४॥ देतनिकंदशंकनहिंमानत, दियोहैदांवआयोबरजोरी ॥ ५ ॥ इतहिरामउतसियासुंदरी, नयननिसैनकरतइकओरी ॥ ६ ॥ अतिआनंदनिरखियहशोभा, तुलसिदासशरणागततोरी ॥ ७ ॥ ११ ॥

होरीखेलत, रामलखनप्यारे ॥ टेक ॥ रविशशिकोटि वदनकीशोभा, कोटिकामऊपरवारे ॥१॥क्रीटमुकुट मकराकृतिकुंडल, शोभाश्यागरामप्यारे ॥ २॥ पीतांवरपगनूपुरवाजें, चरणकमलमुनिमनभाया॥३॥तीन लोकअरुचौदहभुवनमें,रामनाममहिमाभारी ॥४॥ तुलसीदासकहैकरजोरे,रामनामचितधरुप्यारे ॥५॥१२

होरीखेलतअवधनगरमें ॥ टेक॥ संगसखालीन्हेरघुवंशी,सियसमाजमहलनमें॥१॥बाजततालमृदंगझांझडफ, अरुवाजेमहलनमें ॥ २ ॥ रंगभरेठाढ़ेरघुवंशी, सियाठाढ़िअंगनमें ॥ ३॥ अविरगुलालकीधूममचीहै, पिचकारीहाथनमें ॥४॥सखियनमिलिपीतांबरपकरे

रंगरीलगाइंमुखनमें ॥ ५ ॥ जगजीवनप्रभुकीछबिनि
रखै, यहजोरीमेरेमनमें ॥ ६ ॥ १३ ॥

होरीखेलूंगीदशरथलालासे॥टेक॥मेरेफागफागुनऋतु
आई,मिलहुँगीउरमालासे १केसरघोरिअंगछिरकूंगी,
मुखमारोंगीलालगुलालनसे २रामसेवकगहिबांहलेउँ
गी, फगुवाकोशलपालासे ॥ ३ ॥ १४ ॥

रामखेलत, अनोखीहोरी॥टेक॥अबिरगुलालआंखि
नमेंमसलत, बहियांपकरिझकझोरी ॥ १ ॥ हमेलाजतु
म्हेंलाजनआती, करतफिरतबरजोरी ॥ २ ॥ अवधग
लिनमेंछयलछकेभिरे, सखियांसकलरँगबोरी॥३॥ तु
लसिदासप्रभुरूपनिरखिकै, डारतहैंतृणतोरी ४॥१५

होरीखेलनरामलखनआये॥टेक॥लगेवसंतबौरिगये
आमा, चंपाकेसररँगछाये ॥ १ ॥ रघुवरलक्ष्मणभर
तशत्रुहन, संगसखाहनुमतआये ॥ २ ॥ फेंटगुलाल
हाथपिचकारी, केशरकलशभरेआये ॥ ३ ॥ हिलिमि
लिफागपरस्परखेलैं, रामलखनसखियनभाये ॥ ४ ॥
तुलसिदासछबिदेखिमगनभये, चरणकमलचित
लाये ॥ ५ ॥ १६ ॥

मिथिलापुरआजुमचीहोरी ॥टेक॥ इतउतकोसलपति
मिथिलापति, खेलतहैंजोरीजोरी ॥ १ ॥ फेंटगुलाल
हाथपिचकारी, अबिरगुलालभरेझोरी ॥ २ ॥ रघुवरल
क्ष्मणभरतशत्रुहन,झुंडझुंडउठिधाईगोरी ॥ ३ ॥ उड़

तगुलाललालभयेबादर, कीचमचीखोरीखोरी ॥ ४॥ हिलिमिलिफागपरस्परखेलत, फेंकतहैंझोरीझोरी ॥ ६ ॥ तुलसिदासछबिदेखिमगनभये, चितवनमोर रामओरी ॥ ६ ॥ १७ ॥

अंजनिसुत,हरिकेमनभाये॥टेक॥ लाललँगोटबनोअतिसुंदर, तेलसेंदूरचढ़ाये ॥१॥ एकहाथगदादूजेद्रोणगिरि, भरतजीबाणचलाये ॥२॥लागोबाणगिरेधरणीमें,रामनाममुखआये॥ ३॥ अचरजभयोभरतजीकेमनमें,रामेकोइदूतपठाये॥४॥कौनकेपुत्रकौनकेपायक, कौनहिलेनपठाये॥५॥ अंजनीकेपुत्ररामजीकेपायक, लक्ष्मणलेनपठाये॥६॥कौनराजाकीकरतचाकरी,कहँवांसेतुमआये।७।रामराजाकीकरतचाकरी, लंकापुरीसेआये॥८॥आवोपवनसुतबैठबाणपर, बाणविमानबनाये।९।पर्वतसहितपवनसुतबैठे, बाणअकाशचढ़ाये ॥ १० ॥ तुलसिदासहनुमानभरोसे, हरिअपनेमुखगाये ॥ ११ ॥ १८ ॥

श्रीठाकुरकलँगीआपुधरे॥टेक॥ कवनमासमेंबनीकलंगी, कवनमासहरिसीसधरी ॥ १॥ माघमासमेंबनीकलंगी, फागुनमेंहरिसीसधरी ॥ २ ॥ काहेकीतेरीबनीकलंगी, काहेरत्नजड़ावजड़ी ॥ ३॥ मोरपंखकीबनीकलंगी, हीरारत्नजड़ावजड़ी ॥ ४ ॥ सूरदासछबिदेखिमगनभये, हरिकेचरणपरसीसधरी ॥ ५ ॥ १९ ॥

गतिहोइगी,रामगुणगायेसे ॥टेक॥ अवधपुरीपयकर

माकरिकै, सरजूगंगनहायेसे ॥ १ ॥ जगन्नाथपयकर
मादेके, सेतुगंगानहायेसे ॥ २ ॥ रामेश्वरपरकरमादे
के, धनुपतीरथनहायेसे ॥ ३ ॥ द्वारिकाधीशपयकरमा
देके, गोमतीगंगनहायेसे ॥ ४ ॥ बद्रीनाथपयकरमादे
के, तपतकुंडसुनहायेसे ॥ ५ ॥ वृंदावनपयकरमादेके, य
मुनागंगनहायेसे ॥ ६ ॥ माधवदासआसरघुवरकी, ह
रिकेचरणचितलायेसे ॥ ७ ॥ २० ॥

उठिमिलिलेभरत, रामआये ॥ टेक ॥ मकुनाहाथीजरद
अमारी, ऊपरचँवरढुरतआये ॥ १ ॥ पीतांबरकेपरेबि
छौना, तापरचरणधरतआये ॥ २ ॥ रामजीभीआयेल
क्ष्मणआये, सखियनसँगसीताआये ॥ ३ ॥ भुजापसा
रिमिलेचारोभैया, नयनननीरझरतआये ॥ ४ ॥ तुल
सीदासआसरघुवरकी, चरणकमलपरचितलाये ५ २१

शिवमठपरसोहै, लालध्वजा ॥ टेक ॥ कौनकेसोहैहरी
पीरीचुरियां, कौनकेसोहैभसमगोला ॥ १ ॥ गौरीके
सोहैहरीपीरीचुरियां, शिवकेसोहैभसमगोला ॥ २ ॥
कौनशिखरपरगौरिविराजैं, कौनशिखरपरबम्भोला
॥ ३ ॥ उत्तरशिखरपरगौरिविराजैं, दक्षिणशिखरपरब
म्भोला ॥ ४ ॥ मीराकेप्रभुगिरिधरनागर, हरिकेचरण
परचितमोरा ॥ ५ ॥ २२ ॥

शिवकेमनमाहिंबसीकासी ॥ टेक ॥ आधीकाशीब्राह्म
णबनिया, आधीकाशीसंन्यासी ॥ १ ॥ काहकरनको

ब्राह्मणबनिया, काहकरनकोसंन्यासी ॥२॥नेमधरम कोब्राह्मणबनिया, तपकरनेकोसंन्यासी ॥३॥कौनशिखरपरगौरिविराजें, कौनशिखरपरअविनाशी ॥ ४ ॥ उत्तरशिखरपरगौरिविराजें,दक्षिणशिखरपरअविनाशी ॥ ५ ॥मीराकेप्रभुगिरिधरनागर, हरिकेचरणपर मेंदासी ॥ ६ ॥ २३ ॥

अथ प्रल्हादको वसंत प्रारंभः ।

नहिंछांडुंबाबारामनाम॥मेरेऔरपढनसोंकौनकाम ॥ ॥टेक॥ प्रल्हादपधारेपढनसार, जहँसंगसखालियेबहुतबाल, कहारेपढावोपांडेआलजाल, मेरीपाटीमेंलिखदेश्रीगोपाल ॥ १ ॥ पांडेमूरखाकहेजाई, प्रल्हाद बँधावोवेगिआई ॥रामकहनेकीछाँड़िबान, तोहिंअब हिंछुड़ावोंमेरोकह्योमान ॥२॥कहारेडरावोपांड़ेबारबार, मोहिंजलथलगिरिसेकियोप्रहार ॥ मारिडारिबहावोदेहजारि, हरिनामछांडोंतोमेरेगुरुकीगारि ॥ ३ ॥ खड्गकाढ्योरिसाय, तेरोराखनहारोमोहिंबताय ॥ खंभफारिप्रगटेमुरार, हरनाकुशमाऱ्योनखबिदार ॥ ४ ॥ २४ ॥

इति प्रल्हादको वसंत समाप्त ।

अथ अन्यविशेषहोरी प्रारंभः ।

प्रभुखेलतफागमचीहोरी॥टेक॥माघउतरऋतुफागुन आये, घरघरश्यामकरतफेरी ॥१॥फेंटगुलालहाथपि

चकारी, केसरिकेरँगमेंबोरी ॥ २ ॥ ब्रह्माखेलैंमहादेव खेलैं,सुरपतिखेलैंवरजोरी ॥ ३ ॥सूरदासछबिदेखिमग नभये, हरिकेचरणपरलागीडोरी ॥ ४ ॥ २५ ॥

चेदरदीबांसुरीबाजी ॥ टेक ॥ राधेजीसोवेंअपनेमहल में, कछुसोवेंकछुजागें ॥ १ ॥ कौनदिशामेंबाजीबांसुरी कौनदिशामेंगाजें ॥ २ ॥ पूरबदिशामेंबाजीबांसुरी,प छिमदिशामेंगाजें ॥ ३ ॥ इतमथुराउतगोकुलनगरी, बीचमेंयमुनामेंगाजें॥४॥वृंदावनमेंरासरच्योहै, राधा मोहननाचैं॥५॥सूरश्यामप्रभुतुम्हरेमिलनको, चरण कमलचितराचैं ॥ ६ ॥ २६ ॥

मेरेआयेरेश्याम, नटवरबनिकै ॥टेक॥ गाडोबांसढो लढमकावो, चढ़िगयोबांसपकरिकै ॥ १ ॥ पीतांबर कीकारीधोती, लालकाछनीकछिकै ॥२ ॥ हाथमेंथाल गुलालफेंटमें, मारतमुट्ठीभरिकै ॥ ३ ॥ अबिरगुलाल कीधूममचीहै, केसररंगवरसकै ॥ ४ ॥ सूरश्यामहरि फगुवाखेलैं, दोउदोउमूठसबनकै ॥ ५ ॥ २७ ॥

रसियाबनो, मदनमोहनप्यारो ॥टेक॥ फेंटगुलालहा थपिचकारी, युवतीजनमोहनप्यारो ॥१॥पीतांबरकी कछनीकाछे, कुंडलमुकुटलकुटवारो॥२॥बाजतताल मृदंगझांझडफ,बीनाउपंगचंगन्यारो॥३ ॥चंद्रसखीभ जुबालकृष्णछवि, तनमनधनतोपैवारो ॥ ४ ॥ २८॥

उडिजारेभँवर,तोहिमारोंगी॥टेक॥उडिभँवरावाकोछ

तियनबैठो,तेरोकैसेबोझसम्हारोंगी ॥ १ ॥एकभँवरसे
क्षानहमारो,कैसेदूजेओरनिहारोंगी ॥ २॥ दयासखी
यनिभँवरहमारे,कोटिभँवरतोपैवारोंगी ॥ ३ ॥ २९ ॥
नेकठाढ़ेरहोरसिया,रँगडारों ॥ टेक ॥ अबिरगुलालम
लोंमुखतेरे,गालनपरगुलचामारों ॥ १ ॥ चोवाचंदन
औरअरगजा,घिसिघिसितोपैडारों ॥ २॥ चंद्रसखीभ
जुबालकृष्णछवि, तनमनधनतोपैवारों ॥ ३ ॥ ३० ॥
व्रजमेंहरिहोरीमचाई ॥टेक॥ बाजततालमृदंगझांझड
फ,मंजीरासहनाई ॥१॥ उड़तगुलाललालभयेबादल,
रहतसकलव्रजछाई ॥ २ ॥ इतसेआईसुघरराधिका,
उतसेकुँवरकन्हाई॥३॥हिलिमिलिफागपरस्परखेलत
शोभावरणिनजाई ॥४॥ राधेजीशयनदियोसखियन
को,झुंडझुंडउठिधाई ॥ ५ ॥ लपटिझपटिगईश्यामसुंद
रको,वरवसपकड़िलैआई ॥६॥ छीनिलियोमुखमुरली
पीतांवर, शिरसेचुनरीओढ़ाई ॥७॥ बेंदीभालनयनबि
चकाजर, नकवेसरिपहिराई ॥ ८ ॥सुसुकतहोमुखमो
रिमोरिकै,कहांगईचतुराई॥९॥कहांगयेतेरेनंदबाबाजू,
कहांयशोमतिमाई ॥ १० ॥ फगुवालियेबिनजानदे
हों, करिहोकोटिउपाई ॥ ११ ॥ लैहौंचुकाइकसरिसब
दिनकी,तुमहोचोरकन्हाई ॥ १२ ॥ सुरदासप्रभुचतुर
कन्हैया,श्यामकोराधामनाई॥ १३ ॥ ३१ ॥
सांवरोकहाँ, होरीमचाई॥ टेक॥मैंयमुनाजलभरनजा

तती,मिलिगयेकुँवरकन्हाई ॥ १॥ सन्मुखआइगुला लहुडरो,वंसीकिचोरीलगाई ॥ २॥ पांयपकरिग्वालि निजवबोली,गुलचीचारिलगाई ॥३॥ कंसरायपैपक रिमँगावों,तौवृषभानुकीजाई ॥ ४ ॥ हरिमुसकायच लेमनमोहन,छतियनहाथचलाई ॥ ५॥ नंदरायजीके कानकहतहौ,जिनकेकुँवरकन्हाई ॥ गिरिधरऐसीहो रीखेलाई ॥ ६ ॥ ३२ ॥

वृंदावनश्याम,रचीहोरी॥टेक॥ बाजततालमृदंगझांझ डफ,वर्षतरंगउड़तरोरी॥१॥ कितसेआयेकुँवर कन्हैया कितसेआईराधागोरी ॥२॥ वृंदावनसेकुँवरकन्हैया, वर्षानेसेराधागोरी ॥३ ॥कौनकेहाथकनकपिचकारी कौनकेहाथअबीरझोरी॥ ४ ॥कृष्णकेहाथकनकपिच कारी,राधेकेहाथअबीरझोरी ॥ ५॥ अबिरगुलालकी धूममचीहै,फेंकतहैंभरभरझोरी ॥ ६॥ सूरदासछविदे खिमगनभये,राधेश्यामयुगलजोरी ॥ ७॥ ३३ ॥

डफबाजोछैलमतवारेको॥टेक॥डफकेधूमसेसवघरहा ल्यो,हाल्योखंभतेवारेको ॥१॥ बाजूबंदखहेलासोहै, गलेसोहैखगधारेको ॥२॥ मैंबरजौंजानिजाहुअकेली, ठाढ़ोछैलनँदवारेको ।३॥सूरदासप्रभुतुम्हरेमिलनको, तनमनधनचोवारेको ॥ ४ ॥ ३४ ॥

कान्हाधरेरेमुकुट,खेलैंहोरी॥टेक॥कितसेआयेकुंवर कन्हैया,कितसेआईराधागोरी ॥१॥इतसेआयेकुंवर

कन्हैया, ३ तसे आईराधागोरी ॥ २ ॥ केतनेबरसके कुँवरकन्हैया, केतनेवरसकीराधागोरी॥३॥बारावरसके कुंवरकन्हैया, सातवरसकीराधागोरी ॥४॥ हिलिमिलिफागपरस्परखेलत, अबीरगुलालभरेझोरी ॥५॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछबियुगलचरणपरचितमोरी ॥ ६ ॥ ३५ ॥

मृगनयनीनारि, नवलरसिया ॥ टेक॥ अतलसकोजाकालहँगासोहै, झमकसारीमखमललसिया ॥ १॥ पियरीगोरीपियरोईरसिया, लालपलँगपचरंगीतकिया॥ ॥ २ ॥ बांहवराबाजूबंदसोहै, हियेहमेलदियेछतिया॥ ॥३॥छोटीछोटीअँगुरीमेंमुंदरीसोहैं, झलकैअरसीअछुतिया ॥४ ॥सूरदासहरिरूपनिहारे, चरणकमलपरचितवसिया ॥ ५ ॥ ३६ ॥

व्रजमेंसखिरंगमचोरी ॥टेक॥ जातिरहीबंसीबटयमुना, बीचमेंरंगउड़ोरी ॥१॥ काहूकेबसनकेसारिसोंभीजे, काहूकेछीटपरोरी ॥ २॥एककहैमैंतोसगरीभीजिगई, अबमैंकैसीकरोंरी ॥ ३ ॥सबसखियनमिलमतोकियोहै, कृष्णकोजापकरोरी ४फेंटपकरिरंगछिड़कनलागीं, राधेहँसीमुखमोरी ॥५॥ दामिनिसीदमकैंद्युतिमानों, पूरणचंद्रउजोरी ॥ ६ ॥ रामप्रसादअनोखोरूपलपि, मानोमरालकीजोरी ॥ ७ ॥ ३७ ॥

यमुनातटआजुमचीहोरी॥टेक॥ हलधरगिरिधरमदन मनोहर, खेलतहैंजोरीजोरी॥१॥ अबिरगुलालकुमकुमाकेसर, कंचमचींखोरीखोरी।२। मोरमुकुटमकराकृतिकुंडल,सोहतहैंसुंदरजोरी॥३॥ फेंटगुलालहाथपिचकारी, अबिरगुलालभरेझोरी।४।सुंदरश्यामकामछबिलाजत, शिरसोहेंसुंदरसारी॥५।हिलिमिलिफागपरस्परखेलत,फेंकतहैंझोरीझोरी॥६॥उड़तगुलाललालभयेबादर,करमुरलीरँगमेंबोरी॥७॥ सूरदासप्रभुरसिकाशिरोमणि, चितवनमोरश्यामओरी ॥ ८ ॥ ३८ ॥

राधेफूलनमथुराछाई ॥टेक॥ कीतोफूलस्वर्गसोंउतरे कीतोमालिनिल्याई ॥१॥ नहिंतोफूलस्वर्गसोंउतारे नहिंतोमालिनिल्याई॥२॥ उड़िउड़िफूलपरेयमुनामें, राधेवीननआई ॥३॥ चुनिचुनिकलियांमैंहारबनाये, श्यामकेउरपहिराई ॥४॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछबिहरिकेचरणचितलाई ॥ ५ ॥ ३९ ॥

बरसानेमेंमहललाड़िलीके।टेक । एबरसानेमेंबागबहुतहैं,बिचबिचपेड़मालतीके।१। एबरसानेमेंमहलबहुतहैं बिचबिचचौकचांदनीके॥२॥ एबरसानेमेंनारिबहुतहैं,बिचबिचझुंडग्वालिनीके ॥ ३ ॥ बसोरेआलीएबरसाने, पिहरेराधेगोरीके॥४॥ श्यामकन्हैयानिशिदिनविहरैं, जबसेदिनआयेहोरीके॥५॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्णछबि, चरणकमलचितचोरीके॥ ६ ॥ ४० ॥

दधिपीलेश्यामसलोना ॥ टेक ॥ काहेकीतेरीबनीहैम थनियां,कौनपत्रकेदोना ॥१॥ आठकाठकीबनीहैम थनियां,कदमपत्रकेदोना ॥२॥ कौनघाटपरग्वालछु रेहैं,कौनघाटपरकान्हा ॥३॥ चीरघाटपरग्वालछुरे हैं,कालिंदीपरकान्हा ॥४॥ चंद्रसखीभजुबालकृष्ण छवि,हरिकेचरणचितहोना ॥५॥ ४१ ॥

वृंदावनमोहनदधिलूटी॥टेक॥ कहांतेरोहारकहांनक बेसरि,कौनगलिनमेंलरटूटी॥१॥ मथुराहारगोकुलन कबेसरि,कुंजगलिनमेंलरटूटी ॥२॥ चंद्रसखीभजुबा लकृष्णछवि,हरिकेचरणग्वालिनलूटी ॥३॥ ४२ ॥

मथुराजनिजाहुकान्हप्यारे॥टेक॥ यहमथुराकीगैलबु रीहै,अवघटघाटनदीनारे ॥१॥ यहमथुराकेलोगबुरे हैं, टेढ़ीटेढ़ीपागपेंचन्यारे ॥२॥ यहमथुर[redacted] हैं,लंबेलंबेकेशभँवरकारे ॥ ३ ॥ यहमथुराकीगली बुरीहै,बड़बड़कुलुफजड़ेतारे ॥ ४ ॥ सूरदासमथुराके बासी,राखेनारिप्रेमप्यारे ॥५॥ ४३ ॥

इति अन्यविशेष होरी समाप्त ।

अथ हिंडोराझूलन प्रारंभः ।

रागमलार ॥ युगलवरझूलतफूलहिंडोरे॥श्रीवृषभानुसु तानँदनंदन,फूलेलेतमचोरे ॥ युग० ॥ टेक ॥ फूलन केखंभफूलनकीडांड़ी,फूलनकेगुहिडोरे ॥ फूलनकीपटु

लीअतिसुंदर,तामधिफूलकिरोरे ॥युग०॥१॥वेलनमरु वाअपारफूलनके,फूलनसाजसवघोरे ॥फूलनकेफहरा तझमका, सौरभउड़तझकोरे ॥युगल०॥२॥ फूलनको लहँगाफूलनकिसारी, फूलनकंचुकीकोरे ॥ फूलनकी पागजामाफूलनको,फूलनकोपटकासरोरे ॥ युगल०॥ ॥ ३ ॥ नखशिखलौंआभूषणफूलनके, शोभाहोतनथो रे ॥अहोसुखजातकवनपैवरण्यो, शारदहूमतिभोरे ॥ युगल० ॥ ४ ॥ १ ॥

रागमलार ॥ हिंडोरेमाईझूलतराधागोपाल ॥ नवयौ वनीरूपगुणसुंदरि, झुराझुरआईबाल ॥ हिंडोरे० ॥ ॥ टेक॥ तैसेहिहरितभूमिहैखनिद्रुम,तैसेहिवनेहैंतमा ल ॥ तैसेहिघटाघुमड़िछायाकी,तैसेहिवनीवरमाल॥ हिंडोरे० ॥१॥ तैसेहीवनकुसुमितप्रफुलित, तैसेहिख गरवजाल॥तैसेहिमंदसुगंधशीतयुत, पवनवहततेहि काल॥ हिंडोरे०॥२ ॥ तैसेहिमणिकंचनआभूषण,तै सेहिवसनसबलाल ॥ झूलिझुलायकियेमनपूरण,जन परहोहिंदयाल ॥ हिंडोरे० ॥ ३ ॥ २ ॥

रागमलार॥सरसहिंडोरना, वृषभानुजूकेद्वार ॥टेक॥ दोअखंभकनकजड़ायकिडांडी,लागेरतनअपार ॥ही रापन्नामरुवामनोहर,कलशराजतचार॥सर०॥१॥पटु लीजुहीगलहेमचर्चित, इंद्रकीधजसुधार॥झूलतश्रीरा धामदनमोहन, वढ्योरंगअपार ॥ सरस० ॥ २ ॥साव

नमोंताईतीज आई, सखियनकियोहैसिंगार ॥ तनउबट नचमतभामिनी, सजिपेंहेरेबनहार ॥ सरस० ॥ ३ ॥ गु फनपरीनलसुताग सुंदर, नवलजोबनभार ॥ गावतश्री श्यामाश्यामगुणगण, जस्योरागमलार ॥ सरस० ॥ ४ ॥ सुरपुरनरपुरनागपुरकी, तुकबनीटरनारि ॥ शब्दजय जयहोतचहुँदिशि, पुष्पअंजुलिडार ॥ सरस० ॥ ५ ॥ ३ ॥ रागमलार ॥ सुरँगहिंडोरनाआली, झूलतनंदकुमार ॥ टेक ॥ मृगनयनीमृदुबयनी, सजेसकलसिंगार ॥ स रसखंभकदंबकेबने, मलयमरुवेसुढार ॥ सुरँग० ॥ १ ॥ लालडांड़ीडहडहीं, पचिपचीहैसुतहार ॥ जड़ितपटुली कनककीले, गढीसरससोनार ॥ सुरँग० ॥ २ ॥ चहूँ ओरतरुअरुणबसनी, किंकिणीझनकार ॥ रंगभरेउतं गउरजनि, कंठझलकतहार ॥ सुरँग० ॥ ३ ॥ चलत चकफहरातअंचल, लसतलंबेबार ॥ मृगमदअगरकपू रकुंकुम, बासकीउरगार ॥ सुरँग० ॥ ४ ॥ मुखभरेपा ननश्यामाश्याम, दोऊपरमउदार ॥ गीतगावतसुखद के, रसरीतिकीटकसार ॥ सुरँग० ॥ ५ ॥ ग्रामसुरघट श्वाससीधे, तानतालअपार ॥ रीझिरीझेजलहिभीजे, जस्योरागमलार ॥ सुरँग० ॥ ६ ॥ मोरचकोरकोकिलास व, सुरनपरीहठताल ॥ मेघगरजतरसभरे, बरखतअखं डितधार ॥ सुरँग० ॥ ७ ॥ लजतजेलपटातलालहित जेवेदविचार ॥ छबिरहीफबिमधुसूदनहिँ, बलिहारि

कोटिकबार ॥ चिरजीवोपर्वतप्राणपति, सबजगतप्रा
णअधार ॥ सुरंग० ॥ ८ ॥ ४ ॥

रेखता ॥ आयोहैसासरसावन, इकमानकह्योप्यारी ॥ चल
झूलियेहिंडोरे, वृषभानुकीदुलारी ॥ यमुनाकेतीरबं
सीवट, कैसीछबिछाई ॥ शीतलसुगंधमंदपवन, चलत
अतिसुहाई ॥ करतीहैशोरयमुना, उठतेतरंगभारी ॥
प्रतिकुंजकुंजछायरह्यो, हैपरागरी ॥ लागतपरमसुहाई,
अवलोकिनागरी ॥ फूलीलताद्रुमनकी, धरणीझुकीहैडा
री ॥ जापैमलिंदघूमे, मकरंदहेतछाए ॥ नाचतहैमोरबन
में, लागतपरमसुहाए ॥ सातीकोयलपुकारे, बैठीकदम
किडारी ॥ कालिंदयाकेतटपै, झूलतहैसबसहेली ॥ नव
सतसिंगारसाजे, एकएकतेनबेली ॥ तुमहूंप्रियासिधारो
कीजेनअबअबेरी ॥ झूलैंनिकुंजअपनी, अबहींचलोपि
यारे ॥ कीजेबिहारहमसों, तुमनंदकेदुलारे ॥ तबसंगले
पियाको, सुनिकुंजमेंसिधारी ॥ बैठोकुँवरिहिंडोरे, अब
मैंतुम्हैंझुलाऊं ॥ गाऊंतुम्हैंरिझाऊं, छबिदेखदृगसराऊं ॥
बैठोसुरंगपटली, डोरीगहोसँभारी ॥ बादैनरमकमोह
न, टुकसंदतीझुलाओ ॥ डरपैहियोहमारो, पियारम
कनावढाओ ॥ यहबातसुनप्रियाकी, उरसोंलईलगाई ॥
भीजेगीलालसारी, कारीघटाजोआई ॥ लीजेउढायमो
को, कामरकुँवरकन्हाई ॥ तबहँसरासिकबिहारी, का
मरउढाईकारी ॥ चल ॥ ९ ॥

रागमलार॥आजकछुकुंजनमेंवर्षासी।बादरगणमें देखनखीरी,चमकतहेचपलासी।नान्हीनान्हीबूंदनकछुरखासी,पवनवहतसुखरासी।मंदमंदगर्जनसीसुनियत,नाचतमोरसभासी ॥ इंद्रधनुषमेंबगांमिलडोलत, बोलतकोककलासी॥इंद्रवधूछबिछायरहीहे, गिरिपर श्यामघटासी।उमगमहीरुहसेमहिकंपत,फूलीमृगमालासी ॥ रटतव्यासचातककीरसना, रसपीवतहौं प्यासी ॥ ६ ॥

रागमलार॥व्रजपरनीकीआजघटा॥नान्हीनान्हीबूंद सुहावनिलागत, चमकतविज्जुछटा ॥ गरजतगगनमृदंगवजावत,नाचतमोरनटा ।गावतसुरहिंदेतचातक पिक,प्रगटयोमदनभटा।सबमिलिभेंटदेतनँदलालहिं वैठेऊंचीअटा ।चतुर्भुजप्रभुगिरिधरनलालशिर,कुसुमीपीतपटा ॥ ७ ॥

रागमलार॥तेरीझमकझुलनकटिलचकजात, प्यारी रमकरँगीलीअतिसोहै।तूगुणरूपयोवनरँगरसभरी,ते रीउपमाकोकोहै ।हाथनचूरीमहाउरमेंहदी,चटकचौगुनीसोहै॥रसिकगोविंदअभिरामश्यामघन, तूदामिनिमनमोहै ॥८॥

रागमलार।आईबदरियावरसनहारी।गरजगरजदामिनिदमकावे, ज्योंचुँदरीमेंझलककिनारी ॥मधुरमधुर कोयलवनबोले,भवनभवनगावतव्रजनारी ।चलतपव

नशीतलनारायण, परतफुहारलगतअतिप्यारी ॥ ९॥

रागमलार॥हर्षझुलाइये मनभावन ॥ उघरपऱ्योहिय हेतगहगह्यो,झोंकादियोचितचावन॥ यहजोकल्पतरु यहरविजोतट,वहवनघनझुकआवन॥वृंदावनहितरु पवलिगई, वहहरियालीसावन ॥ १० ॥

रागमलार ॥ देखयुगलछवि,सावनलाजे ॥ उतघनइत घनश्यामलाड़िलो,उतदामिनिइतप्रियासँगराजे।उत वर्षतबूंदनकीलरियां, इतगलमोतियनहारबिराजे॥उ तदादुरइतवजतबांसुरी,उतगरजतइतनूपुरबाजे।उत रँगकेबादरइतबागे, उतेधनुषवनमालइतसाजे ॥उत घनघुमड़इतैदृगघूमत, नारायणवर्षासुखआजे॥११॥

रागमलार॥श्यामसुनानियरेहीं, आयोमेह ॥ भीजैगी मेरीसुरँगचुनरिया, ओढ़पीतांबरलेह॥दामिनिसोंडर पतहौंमोहन,निकटआपनेलेह॥कुंभनदासलालगिरि धरसों, बाढ़ोअधिकसनेह ॥ १२ ॥

रागदेशमलार॥सावनघनगरजैंघूमझूम॥ वरसतशीत लजलझूमझूम ॥ कोयलकीरकोकिलाबोलैं,हंसचकोर चहुंदिशिडोलैं।नाचतवनअतिकरतकलोलैं,मोरमोर नीचूमचूम॥गावेंरागरागिनीभामिन,दमकरहीमानो छबिदामिन॥झोंकादेतरपटगजगामिनि,पायलगाजे झूमझूम ॥ जयजयकरतसुमनसुरवर्षत, इंद्रनिशानब जावत ॥ हर्षतदासगणेशयुगलछवि, निरखतछायर

होमुरूमरूम ॥ १३ ॥

रागसोरठ॥कौनसमयरूठतकोप्यारी झूलोललिताहिं
डोरे॥रंगबेरंगघटानभछाई, बिचबिचचपलाचमकसु
हाई॥परतफुहारपरमसुखदाई,चलतसमीरझकोरे॥बि
विधभांतिपक्षीबनबोलें, मृगिनसहितमृगविहरतडो
लें॥जलजंतूहुमिलकरतकलोलें,येहीअचरजमनमोरे॥
कुसुमचीरपहरब्रजनारी,साजसमाजआजहैभारी ॥
नारायणबलिजाऊंतिहारी,प्रीतमकरतनिहोरे॥१४॥
रागसोरठ ॥झूलोमेरीराधाप्यारी,रंगीलोहिंडोरना ॥
डारीचारुसुदेशबनाई,हीराखम्भनझुम्मकलाई॥जग
मगजगमगहोयरविशशिडोरना ॥ उमँगिघटाघुमर
घिरआई, रिमझिमरिमझिमबूंदसुहाई ॥ दमकदमक
दामिनियादमकै,बोलेमोरना ॥ गावतरागमलारअ
बाई ॥ शीतलमंदसुगंधसुहाई, तानतरंगनललितभा
नतृणतोरना ॥ १५ ॥

रागसोरठ।धवलमहलचढ़रत्नबँगला,झूलोसुरँगहिंडो
र॥नवकिशोरसुकुमारछबीली,नेहनवलभजुजोर॥सु
रँगकुसुमीसारीप्यारी, हरितजंगालीकोर॥हितअलि
रूपलालरुच, औरपियाछबिउठतहिलोर ॥ १६ ॥
रागखेमटा ॥ युगलबरझूलत,डालगलबाहीं,रत्नजड़ि
तकोबन्योहैहिंडोरा, सघनकुंजकेमाहीं ॥रेशमडोरप
वनपुरवैया, लखरतिकामलजाहीं ॥ सखीसखादोउ

औरझुलावत,मधुरमधुरसुरगाहीं।मध्यश्यामश्याम। दोउहिमिल,पुनिपुनिहियहर्षाहीं ॥ ऊंचीडारतोरक लियनदोउ,निजनिजकलिनसराहीं ॥याछविनिरखि प्रियाकीप्रीतम,मोहनमननअघाहीं ॥ १७ ॥

रागखेमटा ॥ झूलनचलोहिंडोरने,वृषभानुनंदिनी ॥ सावनकितीजआई,नभघोरघटाछाई ॥ मेघनझरील गाई परेंबूंदमेदिनी ॥ सुंदरकदमाकिडारी,झूलापऱ्योहै प्यारी,देखोकुंवरहहारीसबदुखनिकंदिनी ॥पहरोसुरं गसारी, मानोविनयहमारी,मुखचंद्रकीउजारी, मृदु हासफंदिनी ॥ ममममानसीखलीजे, सुंदरनदेरकीजे, हमतोविलोककीजतुहैगतिगयंदिनी ॥ शोभालखोवि पिनकीफूलीलताहैंवनकी, सुनअरजरसिकजनकी करोंचरण वंदिनी ॥ १८ ॥

रागखेमटा॥हिंडोरेआज,झूलतरँगरह्यो ॥ अचलसुहा गसुभगश्यामाको, दिनप्रतिहोतनयो ॥हरितभूमिबं सीवटयमुना,सोसुखदृगनलह्यो ॥ रसिकप्रीतममिल गावतभावत,ब्रजसबरीझरह्यो ॥ १९ ॥

रागखेमटा ॥युगलबरझूलत,देगरबाहीं ॥ बादरबर सैंचपलाचमकै,सघनकदमकीछाहीं ।इतउतपोंगबढ़ा वतसुंदर,मदनउमँगमनमाहीं॥ललितकिशोरी हिंडो राझूले, बढ़यमुनालौंजाहीं ॥ २० ॥

रागरेखता॥ झूलनयुगलकिशोरकी,दिलमेंमेरेबसी ॥

बैठेहैंरँगहिंडोरनाकरतेहैंरसमसी।फहरातपीतपटुका दुपटाजोछोरदार ॥ शिरपैसुरंगसारी,प्यारीकेक्याल सी॥बेसरबुलाकबेनीदीनजोभालपै, हीरोंकाहारउरपै कटिकाछनीकसी॥ जोबनकेजोरशोरसोंरमकेंबढ़ाव तीं॥ललिताकिशोरीश्यामकी,छबिदेखकेहँसी ॥२१॥

रागरेखता ॥प्यारीप्रीतमकेसंग, झूलैंरँगहिंडोरना ॥ दोखंभहैंजड़ाऊ,जड़ेचितकेचोरना ॥ डांड़ीमरुवेलगन लगी,चलनअमोलना॥पटुलीसंदलकीसाफ, देखोखूब बनी॥लागेहैंउसकेबीचमें, हीराचुनीमनी॥चुंदरीघुंघ टकीओटमें,नयनाविशालहैं॥खंजनभुलामनेके, घेर नकोजालहैं।मुझकोरसिकगोविंदकी, छबिहीमेंझूलना। प्यारीअनूपरूपको, दिलसेनभूलना ॥ २२ ॥

रागझिंझोटी॥श्यामाजीझूलें,परीपोखरपार ॥गावत हैंऊंचेस्वर,कोकिलरहीमौनमुखधार ॥ रमनकीदम कननगभूषण, शोभाविपिननिहार ॥ चौकीचमकन परडारूं श्वेतदामिनीवार॥थरकतहैंअतरसअतरोटा शिरपरसूहीसार ॥खुबैबनीउरपीतकंचुकी,मुखपरश्र मकणवार।सजनीरीझकेसांवरीआई, झूलनकोरिझवा र॥ताकेसंगझूलतहैप्यारी, करतअधिकमनुहार ॥कौ नगामक्यानामतिहारो,कहियेकृपाविचार ॥तरुणन मेंअतिसुंदरप्यारी,चतुरनमेंवरनार ॥ललिताकहेबो लरीसांवर,नातरदेहौंउतार ॥राजसुतासंगझूलनआई

दियांढोठडरडार॥डोरीगहिलीनीललिताने, दोऊदिये उतार ॥ चितवनिचपलवलैयांलेवें, कोउपीवतजलवार॥सैननमेंसमझावतमुखसे, वचननसकेउचार ॥नंदगामकीओरवतावें, ऊंचेहाथपसार ॥ अँचराकीसरकनमें कौस्तुभ,,मणिकीपरीचिन्हार ॥ हरहरहँसतसकलव्रजसुंदरि, यहवोहीखिलवार॥ नईपाहुनीआईझूलन, वैठीघुंघुटमार ॥ वृंदावनहितरूपवलिगई, छद्मनसकतउघार ॥ २३ ॥

रागझिंझोटी॥बांकीछबिसोंझूलतप्यारी ॥ बांकीआपविहारीवांके, बांकीसँगसुकुमारी॥बांकीघटाघिरीइतचमकन, चपलाह्रकीन्यारी॥ ललितकिशोरीबांकीमुसकन, वंकपोंगपरवारी ॥ २४ ॥

रागइमन॥झूलतकोश्यामाजूकेसँग, सखीसांवरीप्यारीहै।कजरेनयनसैनसोंवतियां, अँखियनकोरकटारीहै॥जोवनजोरमरोरभौंहकी,ललितकीशोरीवारीहै ॥ ललिताकरपरिहासकरीयह,नागरनंददुलारीहै॥ २५॥

रागइमन॥झोंकादीजोसम्हार, मेरीसारीनलटके॥सघनकुंजद्रुमडारकँटीली,काहुछोरजिनअटके॥उनवातनअवभेटनहींकछु, औरधोखेजिनभटके ॥ललितकिशोरीलालजाओघर, काहेकोचटमटके ॥ २६ ॥

रागपीलू॥सोतूराखलेरीझोंकातरभए॥इतनवकुंजकदमलौंपरसत, उतयमुनालौंगए॥आवतजातलतानि

चोरत, कुसुमवितानछए ॥ कल्याणकेप्रभुरीझिविव शभए, झूलतनएनए ॥ २७ ॥

रागपीलू ॥ मेरोछांड़देअँचरवा, मैंतोन्यारीझूलोंगी ॥ झोंकनकेमिस्मोहनलँगरिया, अजहूंटहोकतनाभूलोंगी ॥ ललितासंगरंगालेझूलें, झूलमनहिमनफूलोंगी ॥ ललितकिशोरीतरलपोंगकर, लालनतोसँगतूलोंगी ॥ २८ ॥

रागपीलू ॥ खेमटेकीराहमें ॥ कौनचढ़ेपहलेसुरंगहिंडोरे ॥ सोईकरतमनोहराहियहित, रमकदेतजोराजोरे ॥ गावतरागतानमधुरेसुर, कोटिकामचितचोरे ॥ रसिकप्रीतमयहहोइपियापरी, रीझदेततृणतोरे ॥ २९ ॥

रागपीलू ॥ चलोपियावाहीकदमतरेझूलैं ॥ झुकीहैंलताअतिसघनप्रफुल्लित, कालिंदीकेकूलैं ॥ बोलतमोरचकोरकोकिला, अलिगणगुंजतभूलैं ॥ ललितकिशोरीमगवतलावें, कहकहवातियांफूलैं ॥ ३० ॥

रागदेश ॥ चलझूलिये, हिंडोरेश्रीवृषभानुकीलली ॥ तेरेकाजआजइकमैंने, विरचीकुंजभली ॥ रत्नजड़ितकोबन्योहिंडोरो, कैसीडलाझली ॥ व्रजबानिताझूलतअनेकतहँ, एकएकनवली ॥ शब्दकरतजहँकीरकोकिला, गुंजतमोरवली ॥ रसिकविहारीकीसुनवानी, तुरतहिंकुँवरिचली ॥ ३१ ॥

रागदेश ॥ आजबन्योरसरंगहिंडोरो, कदमतरे ॥ सघनलताझुकसुमनसुगंधन, अलिगणगुंजकरे ॥ वर्णव

णंतनुभूषणचुनरी, श्यामाजूपहरे ॥ लाललड़ायचाय
हितचितसों, रूपसमुद्रभरे ॥ ३२ ॥
रागदेश॥झूलोप्यारीआजनिकुंज,हिंडोरना ॥ बोलत
चातकमोर,पवनझकझोरना॥सघनलतानिधिवनकी,
आजुसुहाई है ॥ श्यामघटनसोंपरत,बूंदसुखदाईहै॥तै
सीहीदामिनिचमक,चमकछबिछाई है ॥ मनोडरतब्रु
अतेज,लाजदरशाईहै॥हरितभूमिहुलसी, तुअआगम
जानके॥मनोबिछौनाकियो, मदनमदभानके ॥ ३३ ॥
रागदेश॥चलोइकेलेझूलेंबनमें,प्यारीमेरेप्रान॥तुमनई
नागररूपउजागर,सुखसागरछबिखान॥वर्णवर्णकेबा
दरछाये, मानोगगनावितान ॥ वर्षतबूंदसोईमोतियन
की,झालरशोभावान॥बोलतखगमृगडोलतइतउत,सो
हींजातबखान॥रंगरंगकेफूलखिलेहैं,भ्रमरकरतरसपा
न॥ऐसेसमयबिपिनसुखबिलसे, एरीपरमसुजान ॥ ना
रायणउठवेगिपधारो, कुलदीपकवृषभान ॥ ३४ ॥
रागदेश॥झूलतश्याम, श्यामासंग ॥अतितरंगशोभा
केमानो, लहतयमुनागंग॥ झलकतभूषणजितचोरत,
श्यामगोरेअंग ॥ललितकिशोरीहिंडोरनपै, आजबर
सतरंग ॥ ३५ ॥
रागखेमटा ॥ आजदोउ,झूलतरंगभरे॥झोंकाखरेलेत
कबहुँकसखि,कबहूंहरेहरे॥कर्णफूलकुंडलमिलभेटत,
मानोशशिभानलरे॥चंद्रमालहलकतउरराधे,हरिबन
मालगरे ॥ बिहँसतदमकउठतदशनावलि,अवनीसुम

नजरे ॥ ललितकिशोरीटरतनलखिछबि, दृगशिशुअ रनअरे ॥ ३६ ॥

रागदादरा ॥ मुनसखिआज, झुलननहिंजैहों ॥ श्या मसुंदरपियारसलंपटहै, अतिहींढीठयोंदेत ॥झोकात लकेरपाछेते, धायभुजनभरलेत ॥ चितवनचपलचु रावतअनते, हमेजनावतनेह ॥ रसिकगोविंदअभि रामश्यामसँग, क्योंनजायरसलेह ॥ ३७ ॥

रागजंगला सिंध॥बलिबलिजांदियां, झूलनपर ॥प्या रीपहरेकुसमलसारी, प्यारेकेमनभांदियां ॥ चहूंओ रसखसखीझुलावें,झुकझुकझूठेखांदियां ॥पुरुषोत्तमप्र भुकीछबिनिरखत, तनमननयनसरादियां ॥ ३८ ॥

राग कान्हरो ध्रुवपद ॥ फूलनकीचंद्रकलाशीशफूलफू लनकी,फूलनकेझुमकाश्रवणसुकुमारीके॥फूलनकीबं दनीविशालनथफूलनकी,फूलनकोबिंदाभालराजतदु लारीके॥फूलनकीचंपकलीहारगलेफूलनके, फूलनके गजरालिलतकरप्यारीके॥फूलनकीपगमेंपायलनारा यण,फूलेफूलेभागसदालाड़िलीहमारीके॥३९॥रागसा रंग।फूलनकेबंगलेमें, राजैपियाप्यारीहो॥ फूलनकेभू षणविचित्रसोहैंअँगअँग,फूलनकेबसनबदनछबिन्या रीहो। फूलसेमुखारविंदवचनहैंफूलनसम, फूलीसखी तनमनशोभालखभारीहो।जैसोहीसमाजसाजआज नारायण, मानोंकुंजभवनमेंफूलीफुलवारीहो ॥४०॥

राग सोरठ ॥ गायचरायकेगिरिधऱ्यो,तुम्हेझूलनसम
झकहाहै ॥ अतिसुकुमारप्रियागोरांगी, तासँहझूलोही
चाहै ॥ हमजोसिखावेंतैसेहीसीखो, कहाफिरतहोभरे
ऊमँगहै।वृंदावनहितरूपबलिगई,ह्यांपायोकेवांहै।४१।
राग वड़हंसमलार ॥ हिंडोलनामेंकांईछै,झूलोराज ॥
म्हाराझूलतहींयालरजे,रत्नजड़ितकेखंभजड़ाये अग
रचंदनकेपटा।रेशमडोरपवनपुरवैया,जुरआईसावन
कीघटा।श्यामाझूलेंश्यामझुलावें, कालिंदीकेतटा॥उ
ड़उड़अँचरापरतभुजनपर,निरखतनागरनटा॥४२॥
रागगौरी ॥ झूलनहार, नईकौनहै ॥ श्यामाकेसँगरँग
भरीसोहत, सखीनबेल ॥ अतिसुंदरतनुसामरीमनो,
नीलमणिनकीबेल॥श्वेतकंपरोमांचहो, जानपरतकछु
और ॥ झुँकझुँकझोकनमेंमिले, हंसकुँवरजोईहोत ॥
निरखोझूलननेहकीसखी, चतुरशिरमौर ॥ हमजानी
जानीसभीसखी, यहझूलनकछुऔर ॥ सभीकछांईना
गरी,दृगनसुधारसप्याय॥कपटरूपधरमोहनी,प्रगट
भईब्रजआय ॥ ४३ ॥

रागवरवासारंग॥तेरीझूलनअतिरससानीसुखदानी,
श्रीराधावल्लभलाड़ले ॥ गावतबजावतरिझावतप्रिया
को, तानतरंगनसबमिलआवरे॥सबशृंगारहारफूलन
के,प्यारीकोपहरावतमनमेंचावरे ।राधेवरकृष्णयाही
कृपाकर, विपिनबसावोअनतनजावरे ॥ ४४ ॥

कवित्त॥फूलनचंदोआतनेफूलनफरशाबिछी, फूलनकी सेजओंरफूलछबिछैरही ॥ फूलनकीगरेमालफूलनक ननफूल, फूलनकोटीकोमांगफूलनभरैरही ॥ फूलन केचत्रओश्रृंगारसबफूलनके, विक्रममृगेशमनुउप सावनेरही ॥ फूलीफुलवारीजामेंबैठीप्राणप्यारीअहै, देखतबसंतयाबसंतऋतुह्वैरही ॥ ४५ ॥

कवित्त ॥फूलनकेखंभापाटपटरीसुफूलनकी,फूलनके फंदनेफँदेहैंलालडोरेमें ॥कहैपदमाकरवितानतनेफूल नके,फूलनकीझालरेंसुझूललझकोरेमें ॥ फूलरहीफूलन सुफूलफुलवारीतहां, औरफूलहीकेफर्शफबेकुंजकोरे में ॥ झलझरीफूलभरीफूलझरीफूलनमें, फूलहीसीफूल रहीलफूकोहिंडोरेमें ॥ ४६ ॥

इति हिंडोराझूलन समाप्त ।

अथ गुरुमहिमाके दोहा ।

सद्गुरुचरणहिंसेवते, टलेत्रिविधाविधिताप ॥ परम पदहिंपावेपुनि, मिटेसकलपरिताप ॥ १ ॥गुरुसमदा ताकोउनाहिं,गुरुहीपरमकृपाल॥गुरुगोविंदसेअधिक हैं,गुरुकीमतीविशाल॥ २ ॥गुरुकेचरणनजोनमै, पा पहोतहैंभस्म ॥ सेवासेसुकृतहुबढ़ै, गुरुगोविंदगणेश ॥ ३ ॥ गुरुदर्शनसेजातहैं, सकलपापअरुदोष ॥ स द्गुरुकीकिरपाबढ़ै, काव्यबनैनिर्दोष ॥ ४ ॥ सद्गुरु कीनिंदासुने,जायनरककेद्वार॥जोनिंदामुखसेकरै,क

भीनहींउद्धार ॥५॥ सद्गुरुसेजेपावहीं, धरतकोउअज्ञान॥नरनरकेसीधावगें,करैंकोटिगोदान॥६॥देखहिँनारिकुदृष्टिजे,निरखेसद्गुरुआप।अंधहोयगीयुवती, वहुतपरेपरिताप ॥७॥ गुरुनारायणरूपहै, गुरुज्ञानकोघाट ॥ सद्गुरुवचनप्रतापसे, मनकेमिटेउचाट ॥ ८ ॥ गुरुभवसागरतारहीं, गुरुवचननिर्वान ॥ गुरुकेशब्दैजोचढ़े, प्रगटमिलैंभगवान ॥ ९ ॥ गुरुसेवासुंदरभुमी, दर्शनवारंवार ॥ ओहिमगुप्रभुतुमथके, सतसंगतिसुखकार ॥ १० ॥ गुरुब्रह्मागुरुसरस्वती, गुरुगंगागुरुज्ञान ॥ सद्गुरुकेसेवनथकी, टलेदेहअभिमान ॥ ११ ॥ गुरुकेगुणहुअथाहहैं,मुखसेकहेनजायँ॥शेषरटेंनिशिदिनपुनी, कवहूंपारनपायँ ॥ १२ ॥ गुरुमहिमागिनतीकिये, थाकेशेषमहेश ॥शारदनारदअमरहू,प्रेमकरैंपरवेश ॥ १३ ॥ मुनिजनगुरुकेचरणमें,मूकैंशीसनरेश॥ सद्गुरुनामसुधासमैं, चाखतचतुरहमेश ॥ १४ ॥ सद्गुरुकेरेचरणको, परसचरणकोरज्ज ॥ चढ़हिअखिलब्रह्मांडमें, सवसेहोतहैध्वज्ज ॥ १५ ॥ गुरुगुणगिनतीहोतनहिं, सकलगुनीअभिराम ॥ पावनपदरजगुरुतणी, कहतहैपरमाराम ॥ १६ ॥

इति गुरुमहिमा समाप्त ।

अन्यविशेषपद ।

रागगजल ॥ जिनप्रेमरसचाख्यानहीं, अमृतपियातो

क्याहुआ॥ जिनइश्कमेंशिरनादिया, युगयुगजियातो क्याहुआ।मशहूरहूआपंथमें, साबितनकीयाआपको आलिमऔरफाजिलबना, दानाहुआतोक्याहुआ॥दि लमेंदरदनहींपियाको, बैठामुशाइखहोयके॥ दिलका रहटफिरतानहीं, तसबीफिरीतोक्याहुआ।औरांनसी हततूकरे, आपअमलकरतानहीं।दिलकाकुफरटूटान हीं, हाजीहुआतोक्याहुआ॥ जबइश्ककेदरियावमें, गड़कावतूहोतानहीं॥ गंगायमुनागोदावरी, पीपीजो करतेजोनीदिया॥ मतलबहासिलनाहुआ, रोरोमुआ तोक्याहुआ॥

रागकाफी॥नाजानूंमेराराम कैसाहै॥ मुल्लाहोकेबांग जोदेवें, क्यातेरासाहिबबहराहै॥कीड़ीकेपगनूपुरबाजें सोभीसाहिबसुनताहै॥ मालापहरकेतिलकलगाया, लंबीजटाबढ़ाताहै॥ अंतरतेरेकुफरकटारी, यूंनहिंसा हिबमिलताहै॥ कौड़ीकौड़ीमायाजोड़ी, जोड़जमींपर धरताहै।चलनेकीजबत्यारीहोई, हाथपसारेचलताहै॥ हीराहोवेपरखदिखावे, कौड़ीपरखनतैसाहै॥कहतक बीरसुनोभाईसाधो, हरिजैसेकोतैसाहै॥

इति अन्यविशेषपद समाप्त।

अथ जगन्नाथजीके भजन।

भलेविराजोजी॥ ओड़ीसाजगन्नाथपुरीमें, भलेबिरा

जोजी ॥बलिभद्रकेभैया० ॥ टेक॥ कबसेछोंड़ीमथुरानगरी, कबसेछोंड़ीकासी ॥ कलियुगमेंआइबिराजो, विंद्रावनकेवासी॥ ठा० ॥१॥ शतयुगछोड़ीमथुरानगरी,द्वापरछोड़ीकाशी ॥ कलियुगमेंआइबिराजो, विंद्रावनकेवासी ॥ठा०॥२॥ उड़ियासाँगेंखिचड़ी, वंगालीमाँगेंभात॥साधुमांगेंदर्शन, महापरसाद॥ठा०॥३॥ दालरांधूभातरांधू,परवरकीतरकारी ॥मछलीमारकेभोगलगावें,अधमजातवंगाली ॥ठा० ॥४॥ गांवगांवमेंबागवगीचा,गलीगलीफुलवाड़ी ॥घरघरदेखोकेलानारियल,घरहीठाकुरवाड़ी ॥ठा०॥५॥ दोदोकोशपरअँटालगाया,पांचकोशपरचट्टी ॥ चलतेचलतेपांवपिराने,शरीरहोगयामट्टी॥ठा० ॥६॥ चट्टीचट्टीबनियालूटैं,औरलूटैंफिरंगी ॥ सिंहदरवाजेपंडालूटैंयात्रीभयेउदासी॥ठा०॥७॥सोलहाथकीसाड़ीपहेरेंऊपरधरेंकिनारी॥सासुससुरकीलाजनराखें,आधीटांगउघारी ॥ ठा०॥८॥वंगालीकीवेटीपरमसुंदरी,उनकीलंबीचोटी॥ भावभक्तिकोमर्मनजानें,उनकीगर्दनमोटी॥ठा०॥९॥ नीलचक्रपरध्वजाबिराजे, मस्तकसोहेहीरा ॥ ठाकुरआगेदासीनाचैं,गावेदासकबीरा ॥ठा० ॥ १०॥ १ ॥

इति श्रीजगन्नाथजीके भजनसंपूर्ण ।

अथ होली रंचक ।

होरीखेलतसंतसुजान,आत्मारामसों॥टेक॥कर्मोलोग

खेलैंसवकर्मनसों,खरचाकियेवहुदानसों॥१॥होरी० ॥ भक्तलोगखेलैंशुभरूपसों,ध्यानीखेलैंसवध्यानसों॥२॥होरी० ॥ भिक्षुअहर्निशब्रह्मविचारैं,ख्यालनहींदूजेकामसों ॥३॥ होरी०॥ नारायणभिक्षुअलखनिरंजन,मगनभयेपूर्णज्ञानसों ॥४॥ होरीखेलतसंतसुजानआत्मारामसों ॥ १ ॥

ऐसीसंतोंनेधूममचाई,मुर्जेयभर्मकीउड़ाई॥टेक॥कामक्रोधयेइसहीनगरमेंसवदिनहैंदुखदाई ॥ लोभमोहयेपायकइनके, निशिदिनकरतलड़ाई,धर्मसोंठहराई॥१ ऐसीसंतों०॥ इसहीनगरकेदसदर्वाजे सबदिनठाढ़ेसिपाही ॥ दयाधर्मकालगावनहींहैंनीचोंनेधूममचाईनाथविसराई॥२॥ऐसीसंतोंने०॥ भर्मबुरजकेपांचकोटहैंअपनिभूलहैखाई,लड़नेवालाकैसेलड़ेगा, होवेंगेनाथसहाईकरोनाचढ़ाई ॥ ३॥ ऐसीसंतोंनेधूम०॥ शमदमसाधनवारूदवनायाधर्मकितोपवनाई । जपतपगोलाभीतरडारासतकेतखतचढ़ाईसूधिमैंनेगढ़कोलगाई४ ऐसीसंतोंने०॥ गुरुशरणहोवाक्यसुनावैंज्ञानकीबातीजराई फूंकपलीतादियावाहीक्षणमैं, ध्यानकीशिस्टिलगाई॥बुरजमैंनेजड़सोंउड़ाई॥५॥ऐसीसं०।तत्वविचारकियासवदिनमैंयुक्तिकरीहैसहाई,खोजतखोजनिजानन्दपाया, मनकीतपनबुझाई, शांतिमैंनेअवहींपाई ऐसीसं० जीवब्रह्मकोएकसमझकर,एकहिसुरतलगाई

जन्ममरणयेदोनोहिंमेंट, भेदाकिग्रंथिउड़ाईनाथमेंरहे समाई ॥ ७ ॥ ऐसीसं० ॥नारायणभिक्षुअलखनिरंजन एकहिदेतदिखाई, अपनेरूपमेंसदाहीमग्नहैं, मुक्तिपरमपदपाईवेदसबचारोंनेगाई॥८॥ ऐसीसंतोनेधूममचाईजुजेंयभमकीउड़ाई ॥ १ ॥

इति होलीरंचक ।

अथ भजनविलास ।

शंकरध्यानधराजबमनसे,डूबतनावउबारीहैजी।टेक भवसागरयेगहिरबहुतहै, लहरीयाकीभारीहैंजी।नाव पुरानीकोइनहिंखेवट, अबगतिकवनहमारीहैजी॥१॥ शंकरध्यान० । गलहमरेमेंबहुतबखेड़ा, पोटधरीशिरभारीहैजी॥तुमबिनस्वामीकौनउतारै, अबयहीअर्जहमारीहैजी ॥२॥ शंकर० ॥ध्रुवउतरेप्रह्लादउतारे, गौतमनारीउतारीहैजी।गरीबकहैंकरजोड़ेस्वामी,अबकीबारहमारीहैजी ॥३॥शंकर० ॥कामक्रोधयेसबहीछोड़े, शंकरओरसँभारीहैजी॥रटतरटतशिवशंकरजागे, ममताठगनीमारीहैजी।४॥शंकर० ॥ एकनिरंजनघटघटराजै,अद्भुतजोतउजारीहैजी ॥ जिनजानासोइपारभयाहै,ग्रंथीभेदविदारीहैजी॥५॥शंकर० ॥चिदाकाशआनन्दआपतू,आपहिखेलखिलारीहैजी।नारायणजबऐसेजाना,कवनगतीतबन्यारीहैजी॥६॥ शंकर० ॥१ ॥

इति भजनविलासः ।

अथ चेतावनी ।

सवैया—छौंड़िसबैभ्रमजालकुचालसुकामऔक्रोधको तौजिनहाई ॥ वृषभानुकुमारिकोनामजपौतुमकोसब ठौरजहांतसहाई ॥ पुत्रऔदारासबैपरिवारसोस्वारथ हेतरहेलपटाई ॥प्रियादासगोपालकीभक्तिगहौनरदेह धरेकोयहेफलभाई ॥ १ ॥

राग (बिलावल)—सबतजिभजोकृष्णसुखदाईआगे होहिंसहाई ॥ आस्ताई॥नरतनुकोअबसुकृतयहीहैभ जोश्यामसबकामबिहाई॥ रसिकनकीसेवाचितधारौ जोकछुबनैबनाई ॥ विषयिनकोअबसंगछौड़्योबैठोर सिकनकेढिगजाई ॥ कामक्रोधमदलोभमोहतजिहरि केचरणचितलाई॥ नितप्रतिचरितश्यामश्यामाकेसु नोसोप्रीतिबढ़ाई ॥ भक्ष्याभक्ष्यभोजनकोत्यागौ हरि प्रसादलबपाई॥ जिनजिनसुमिऱ्योनामश्यामको ति नकोगयोदुखदंदनशाई ॥ प्रियादासतुमश्यामनामग होअरुसबदेवबिहाई ॥ १ ॥

राग-(गौरी) अबमनकाहेफिरतभुलाना,काहेकोदेखि लुभाना॥आस्ताई ॥ भाईबंधुकुटुँबनरनारीसोतूआप नजाना ॥ इनकीप्रीतितवैलगितुमपरजबलगिलायख वाना॥धृतिधृतिधनइन्हैखवावतअपनाऔरबिराना। ताकोज्वाबकहातूदेहैजाकेआगेजाना ।वृद्धापनकीख बरनहींतोहिँज्वानीमेंबनादिवाना ॥ कालबलीसँगही

संगडोलैउससंकठिनवचिजाना ॥ करुकछुधर्मसंगर सिकनकोतौतूबड़ोसयाना ॥प्रियादासतूयुगलचरणग हुछोंड़देअपनाविराना ॥ २ ॥

राग-(रामकली)-मनतोहिंसूझतनाहिंअगारी ॥पग क्योंधरतपिछारीआस्ताई॥जहँसतसंगतहांअतिआ लसपरनिंदाअतिप्यारी॥विषयकर्ममेंप्रीतिबढ़ावतता हीमेंरुचिभारी ॥कर्मधर्महरिभजनभावतजिसोवतपां वपसारी ॥यहभवनिधिकोकैसेतरिहौसोऊकछुलेवबि चारी॥देहैंदुखयमराजमूढसुनतिनसोंकहिहैकामुखते उचारी ॥ प्रियादासब्रजबासकरौअबकुमतिकोउरते टारी॥नातरह्वैहौखराबजगतमेंनरहँसिदेहैंतारी ॥ ३ ॥

राग(भैरवी)-सबतजियुगुलनामचितधारो ॥ झूठज गतव्योहारो॥आस्ताई ॥ मातपिताभ्रातासुतनारीइ नमेंकोईनतिहारो॥धूतिधूतिधनग्रामदेशतेनाहकइन मेंडारो ॥कामक्रोधमदलोभमोहअरिइनतेकरौकिना रो ॥ करिकछुधर्मरासिकजनसेवायेनरतनुकोतारो ॥ मायामोहमेंफँसोरहतहैजन्मपायकेतूनेविगारो ॥ तजु परपंचझूठकेझगड़ेसबसेकरोकिनारो ॥भवसागरयक कठिनमार्गहैताकोउरहिसँभारो॥ प्रियादासतजिआ शजगतकीब्रजमंडलहिसिधारो ॥ ४ ॥

राग-(श्यामकल्यान)- जोकछुरहीसोताहिसँभारो॥

आस्ताई ॥ नातरजातजातनहिंजानतपीछेहैहैबिगा
रो॥श्यामाश्यामसोंनेहलगावोसवतेकरौकिनारो ॥
प्रियादासब्रजवासकरौचलिअबबिलंबजिनधारो ५
सवैया ॥प्रातसमयउठिकैमनरेवृषभानुसुतापदनेहल
गावो ॥ छोंड़िसबैछलछंदनकोनँदनंदनकीशरणागत
जावो ॥ऐहैंनकामकोऊतुम्हरेजिनकेलियेरातदिनाउ
मधावो ॥ प्रियादासविचारकरौउरमेंहरिभक्तिबिना
सबकालगँवावो ॥ २ ॥
राग-(परज)-मनतुममेंसबभरीखोटाई ॥आस्ताई॥
ऐसोकपटभर्योहैगोतूज्योंमेंहदीकेपत्रललाई ॥कबहूं
नामनश्यामकोलीन्हौंनाहिंरसिकनसेवकाई ॥ विषय
नमांयोंधायमिलतुहैजैसेसगीलुगाई ॥ परनिंदातोहिं
अतिप्रियलागतजैसेदूधमलाई ॥ लीलाचरितश्या
मश्यामाकोसुनतमहाकरूआई ॥ प्रियादासकछुसमु
झिबूझिकैऐसीकुमतिकोदेवबहाई ॥ ६ ॥
गजल॥छोंड़िसबभ्रमजालकोनँदलालपदध्यायाकरो।
औरहूइनकीप्राणप्यारीकाचरितगायाकरो॥ दूरिकर
विषयिनकिसोहवतख्यालकरकेदेखलो ॥जेरसिकरा
धानामकेतिनकेनिकटजायाकरोजोकरैंउपदेशवेसो
तुमसुनोचितलायकै उनसभोंकेसारकोहिरदेमेंबसा
याकरो॥जेकुटुंबीदेहकेतिनकेनिकटतुममतरहो ॥मो
हकोभ्रमकारइस्सेतोभीडेरायाकरो।खातेपीतेसोतेच

लतेएशऔआराममें॥नामराधेश्यामकोमतभूलमेंला
याकरो॥प्यारीलगैहैंतुझेजोसूरतेंइन्सानकी॥तोप्रिया
प्रीतमकीसूरतकोभीलखायाकरो॥आसकरब्रजबास
कीवृंदाविपिनकीकुंजमें॥ तोसुनोप्रियादासतुमविन
तीकोसुनायाकरो ॥ १ ॥

कवित्त-श्यामाश्यामसहायलखौप्रियादाससुनोसब
भांतितिहारे ॥ दीखतनाहिंतुम्हैंकछुहूनिजसंकटतेतु
म्हैंवेइउबारे॥ ताहूपैतूतजिभक्तिगोपालकीऔरनपैश
ठहाथपसारे ॥ नेहकरौप्रियाप्रीतमकेपदहोवसबैपरि
वारसोंन्यारे ॥ १ ॥

राग-(जैजैवंती) यहधनमतिमोहिंदेवकन्हाई ॥ आ
स्ताई ॥याधनकेबाधकबहुदीखतविश्वचोरगृहलोगलु
गाई ॥ वैरभावसबसेहैजैहैंकारिहैंअधिकलराई ॥ धर्म
कर्मसबहीछुटिजैहैंजबयेधनगृहआई॥ उरविचशोक
संतापअधिकअंतिरक्षाहितसोंकोटिउपाई ।नामप्रभू
कोयादनऐहैनेमप्रेमसबजैहैंभुलाई॥ यहआपदादेखदु
खलागतबारबारमनमेंरोडराई ॥ ऐसोधनलैकाहकरौं
प्रभुजामेंबहुसंतापदिखाई ॥ प्रियादासधननामश्याम
कोबाधकनहिंकोउचोरचबाई ॥ ७ ॥

राग-(सहानो जौनपुरी)मनसुनकृष्णनामधनभारी॥
सोक्योंनधरतासिधारी ॥आस्ताई॥याधनकोकोउचो
रनहींहैचहौतहांदेधारी॥रातिव्यतीतप्रातउठिजल्दी

सोमनलेहों सम्हारी॥ वा धनकोतो बांटिलेतहैं लोगकुटु म्बनरनारी। या धनकोतो बिरलोग्राहकजापैकृपाकरत बनवारी। तातेकृष्णनाममणिकरमेंगहिलेकांचैदेतूडा री॥ वाधनकेतोहिंचोरबताऊंसुजनरसिकअतिभारी। तिनसज्जनकेपासबैठिहौतौमिलिहैधनभारी ॥ प्रिया दासतोहिंबहुसमुझायोआगेखुसीतिहारी ॥ ८ ॥

कवित्त-श्यामाश्यामसोंनेहलग्योफिरिदेहकीलाज मेंकाजकहारी ॥ पारसपायअकिंचनज्योंफिरिराज औपाटकीचाहविचारी॥ त्योंप्रियादासगोपालकीभ क्तिगहीजिननेतिननेहीसम्हारी ॥ नातरकालकेगाल मेंजायविलायजैहैयहदेहहूसारी ॥२॥

उपदेश.

राग-(खेमटा) जोकोउराधानामकोध्यावे ॥ आस्ता ई ॥ योगयज्ञजपतपव्रतकोफलबिनप्रयाससोपावे॥ जी वनमुक्तसोईयहिजगमेंचरितकुँवरिकेगावे ॥ छूटिजा यमतअसतभावनावासकुंजमेंपावे ॥ प्रियादासरसि कनमुखवानीभेदयेवेदबतावे ॥ ९ ॥

राग-(परज) लाड़िलीपरमकृपाकीखान॥ आस्ताई ॥ भक्तनहितब्रजमेंसोप्रगटीगावतवेदपुरान ॥ रसिक अनन्यनकोबिनश्रमहीदेतीपदनिरबान ॥ निजनिकुं जमेंसदासखिनसँगकरतयुगुलयशगान॥ प्रियादासत

वशरणकुवँरिकौफिरिचाहतकल्यान॥तातेवसौवेगि
श्रीवनमेंतजिकुलकोअभिमान ॥ १० ॥
राग-(भैरवी)-प्रेमपायफिरिगृहतजिजइये॥आस्ताई॥
आंखीमीचिनिकसिघरतेंरराधाराधागइये ॥ करिये
वासविपिनगहवरमेंयमुनानित्यनहइये ॥ अनुभव
करौयुगुललीलाकोसोरसहृदयवसइये ॥ प्रियादास
गृहकीकोचालैग्रामदेशनाअइये ॥ ११ ॥
खेमटा-विनब्रजवासदुःखअतिभाई ॥ आस्ताई ॥ र
सिकनकोतोऐसेहैगोसोनहिंसकतवताई ॥ स्वपनेहुदं
पतिकीलीलाकोहोतजोअनुभवआई ॥ तोफिरिऐसी
दशापिंजरामेंजैसेखगअकुलाई ॥ नहिंसंगतरसिकन
कोस्वपनेहुयहोमहादुखदाई॥ स्वपनेहुदंपतिचारितश्र
वणनहिंकीजैकौनउपाई ॥ प्रियादासतातेरसिकनहि
तवृन्दाबनहैपरमसुखदाई ॥ १२ ॥
राग-(भैरवी)-संगतिरसिकनकीसुखदाई ॥आस्ताई॥
कामक्रोधमदलोभनव्यापतऔरमोहकीकौनचलाई॥
अनुभवप्रगटहोतलीलाकोजबवेकहतसुनाई ॥कुंजम
हलकोचरितामृतजोश्रवणमार्गह्वैदेतपिआई ॥औरहु
लखिजिज्ञासुआरतीदंपतिछाविदेदृगनवसाई ॥प्रिया
दासकहैहमअधमनकोतिनकेदर्शनदुर्लभभाई ॥१३॥
राग-(भैरवी)-कीजैरसिकनकोसहवास ॥ आस्ताई॥
जेनितचरितयुगलकेगावतप्रेमानंदहुलास॥औरहुग्रस

केलिरमकोयश अनुभवहितहैतोहिँप्रकाश॥ निशिबा मर आनँदमेंबीततदुखनहिंआवतपास ॥प्रियादासक हैयेंदृगनमोंनिरखोगेफिरियुगुलविलास ॥ १४ ॥

राग-(देश)प्रियाप्रीतमकोदूरिनिवास ॥ आस्ताई ॥ एमेंजायसकतनाकोउबृथाकरतहैआस ॥संगतिकर तहांइमनकेरीफिरिराजासहवास ॥ बिष्ठाकोटबैठिढूं ढ़तहोंकेवड़ाकेरिसुवास ॥ प्रियादासदिनकररसिकन विनहोइनमोहतमनास ॥ १५ ॥

राग-(पूर्वी) हमेंइनबातनसोंकाकाज ॥ आस्ताई ॥ भलेहीशीलसमुद्रमेंडूबोपरैलाजपैगाज ॥बनीरहैयक प्रीतिअचलमेरीजासोंमिलैंब्रजराज ॥ प्रियादासउन विनसबअटकीरसिकनकेसिरताज ॥ १६ ॥

राग-(इमनकली)-एतेगुणजामेंसोईरसिककहावे॥ आ स्ताई ॥ एकनामप्रियाप्रीतमकोहीअष्टयामजोगावे॥ सुनिलीलाअनुभवताकोकरिदृगनसोंनीरबहावे॥चरि तविशदवृषभानुकुवँरिकेविमलविमलजोगावे ॥ प्रि यादाससंगतिरसिकनकीऔरहिंदेखिडरावे ॥ १७ ॥

कवित्त-होतप्रभाततेसांझसमयलगिखोवतहो तुमका लवृथाहीं ॥बूझेविनातुमकाहूसेबातकहौहितसोंकोउ मानिहैनाहीं ॥ राधिकानामकीजापकरौअहैठीकस बैविधिवेदबताहीं ॥ भावेतुम्हारेकरौकुछकोउसोमौ नगहौप्रियादासमनाहीं ॥ ३ ॥

कुंडलिया-करिनिश्चयकोअनन्यव्रत, साधोचतुरसु जान॥श्रीराधाकीशरणविन,अंतनहींकल्यान॥अंतन हींकल्यानवृथाभरमतहौभाई॥नाहकदेखतशास्त्रक्लेश करिदेहिंधिलगाई ॥ प्रियादासप्रियानामसुधाकोमुखैल गावो॥जपतपव्रतसवनेमइन्हैअवमाथनवावो॥१॥कुं डलिया-अवकहूंककुछप्रीतिको, प्रियप्रीतमकेमाहिं । हैहैसुखदुखछटिहै, संशययामेंनाहिं ॥ संशययामें नाहिं प्रेमसोंजापैगेहो ॥ यहमुखराधानामछोंड़िकुछ औरनकैहो॥तौपैहौव्रजवासमध्यवृंदावनकेरो॥प्रिया दासमुखभयोतहांरसिकनकोचेरो ॥ २॥

राग-(इमनकली) सोइअनन्यजेहिंमतिअसभाई ॥ ॥आस्ताई॥श्रीराधाकोचरितमनोहरगावतमोदवढ़ा ई ॥ वासकरतवृंदावनभीतरभूलिनवाहरजाई॥अन्य ग्रंथमतचरितविलोकतदूरिहितसकुचाई ॥ प्रियादास ऐसेनकीसंगतिकीन्हेवहुतभलाई ॥ १८ ॥

कुंडलिया-रसिकअनन्यनकीचलन, काजानैमतिमं द ॥ श्रीराधाकेशरणतजि,श्यामचौथकोचंद॥श्याम चौथकोचंदऔरकहुँलेखमाहीं॥तजिवृंदावनवासऔ रतीरथजेजाहीं॥करतेअमृतछोंड़िवारिकोघररधाहीं। प्रियादासकविरसिकहमैंतोदीखतनाहीं ॥ यहमुख राधानामऔरस्वपनेहुनाहिंकाहीं ॥ ३ ॥

राग-(इमन) वाछविकवममदृगदरसैहो ॥ आस्ताई॥

हो त्रिभंगवंशीवटनटवरमुरलीमधुरबजैहो ॥ गोपिनयूथमध्यनिरतौंगराग अनेकनगेहो॥ प्रियादासप्रभुभानुकुंवरिकरपागकेपंचकसेहो ॥ १९ ॥

राग-(इमन देश) करोकृपावृषभानुनंदिनीहरोदुःखसबमेरे॥ आस्ताई ॥ निशिबासरविषयाबशभरमतहोतलोभकेचेरे ॥ निजस्वारथहितकहँलौंकहौंमैरचतउपायघनेरे ॥ जोअनुभवलीलाकोकरनचहौंबाधाकोटिनघेरे॥ प्रियादाससोछुटिजांयगेकोरनैनकीहेरे ॥ २७॥

राग-(परज) कुंवरिकछुसुनियेअर्जहमारी ॥ आस्ताई॥ जोतुमसुनोकहोंतोमुखतेनहींरहौंचुपधारी॥ जानिगइचकोहमहिंकहंफिर अपनेमुखहिंउचारी॥ धनसंपतिसुतसुखनाहिंमांगतकुंजमहलकीटहलदुलारी ॥ प्रियादासकेउरअंतरकीमनसापुजवोभानुकुमारी ॥ २० ॥

कुंडलिया-व्रतअनन्यसबतेकठिन, ज्योंखांड़ेकीधार। तातेजोबचिजाइगो, लखीसोयुगुलबिहार ॥ लखीसोयुगुलबिहारकुंजमहलोंमेंजाइ ॥ औगोपिनकोसंगमहामंगलसुखदाइ ॥ प्रियादासतेअलीसबैकुछदेतशिखाइ॥ केलिकुंजकीटहलऔरदर्शनअधिकाई ॥ ४ ॥

राग-(विलावल) मनकीपीरमनहिपहिंचाने॥ आस्ताइ॥ जोमैंकहौंयत्नकोटिनतेतौकोउसांचनमाने ॥ तातेमौनभयेहमबैठदुखकेहाथबिकाने ॥ विनाकृपाभयेकुंवरिलालकेटारिहैंनदुःखसयाने ॥ हैअतिगुप्तभावजो

चाहततापैवजतदिवाने ॥प्रियादासकहैपीरप्रसूतीवां झताहिकाजाने ॥ २१ ॥

राग-(कल्यान)-यातेमोहिँराधाकोनामप्रियभाई ॥ ॥आस्ताई॥ जपतपयोगतीर्थनहिंकीन्हेनाहिंसमाधि लगाई॥ दानपुण्यस्वपनेवनहिंकीन्होजागतकीतौको नचलाई ॥ परनिंदापरदारातातकीपरधनहऱ्योकरि कोटिउपाई ॥ ऐसेनपैनिरहेतुकृपाकरिलियोहमैंअप नाई ॥ लीलाकुंजमहलकीअद्भुतसोसवदियेदरसाई॥ गूढचरितजेयुगुलकेलिकेसोसवउरमेंदियोबसाई ॥ ता कोअनुभवकरतसदाहीआनंदप्रेमबढ़ाई॥प्रियादासये नामस्वप्नमेंधन्योअलिनकीआज्ञापाई ॥ तबतेजपत रहतनिशिवासरउरअंतरहर्षाई ॥ २२ ॥

गजल॥रसिकोंकीसोहबतकेअसरकीअबमजाआनेल गी॥लीलासुश्यामाश्यामकीवोअबहमैंभानेलगी॥छो ड़केपरपंचवातैंयेजवांमेरीजोहै ॥ खूबमजेऔप्यारसे घनश्यामगुनगानेलगी ॥ सबतरफसेखींचदिलकोला केअपनेकाबूमें ॥लाड़िलीऔलालकीसूरतपैललचाने लगी॥चलतेफिरतेखातेपीतेऐशऔआराममें॥सबतर फसबयाममेंअबनेहसरसानेलगी ॥आंखेंभीयेउदास होकहतीहैंप्रियादाससों॥प्रेमकेउमड़ेहैंवादरपानीवर्षा नेलगीं ॥२॥

राग-(खेमटा)अबडरनाहिं निर्भयहमभाई॥आस्ताई॥ भलेहीहँसैंलोगसबमोकोकहिकहिचोरचवाई ॥ कहि

कहिभ्रष्टतजैंसबमोकोभलेहीलोगलुगाई ॥ तजैंनएक रसिकजनमोकोअंतसमयलगिजेसुखदाई ॥जेचरित्र देवनकोदुर्लभसोसबकहतसुनाई ॥ प्रियादासब्रजवा सीहोनकीतिननेंयुक्तिबताई ॥ २३ ॥

राग-(जिला) यंकनहिंमानेंगेकिसीकीवृंदावनजाते हैं॥आस्ताई ॥ तोड़ताड़दुनियाँकेझगड़ेऔरसभीसे नातेहैं ॥कहनेदोकुछडरनहिंहमकोभलेहीपागलबना तेहैं ॥ भलेहीपागलऔरदिवानेपैश्यामागुणगातेहैं ॥ प्रियादासकुछदिनकेतुम्हरेफिरतोजिनकेकहातेहैं।उ न्हींकेधाममेंजायबसेंगेवेहमैंखुदीबुलातेहैं ॥२४॥

राग-(आसावरी योगिया) मैयामैंतोबर्षानेकोजैहौं आस्ताई॥ करिहौंनिवासनिकटगहबरबनभानुसुता कोनेंहैहौं॥ जूंठटूकब्रजवासिनकेलैखायकैदिवसबिते हौं॥सिहपवँरिकीझाडूदेहौंरजलैअंगचढ़ैहौं ॥ प्रिया दासवृषभानुनगरतजिअंतकहूंनाजैहौं ॥२५॥

राग-(परज)हमतेनाहकनेहबढ़ावत ॥आस्ताई॥ स्व पनेंवकामतिहारेकेनहिंनाहकमोहसरसावत ॥ एकना मराधाकोतजिकैऔरनकछुसोहावत ॥प्रियादासबां धेनहिंरहैंयहनिश्चयडरआवत ॥ २६ ॥

राग-(इमन)देहसंबंधिनतेपरनाम ॥आस्ताई॥अबल गिरहिसुखपायोतुमसेंवासितुम्हरेहीधाम ॥ भईमेज वानीबहुतदिननकीअबजैवेनिजगाम ॥वृंदाबनऔर

रसिककुटुंबीजिनसुखराधानाम॥प्रियादासतिनकेढि
गरहिकेअनुभवकरिकरिवेबिसराम ॥ २७ ॥

कवित्त॥राजदिगमतिकाहूकेजाबमलीविधिवातयेहै
सुविचारी ॥ मानकीहानिनितैप्रतिहोतसोप्रीतिकारी
तहूहोतहैन्यारी ॥ तातेरहौप्रियादासजुदूरियेबातसवै
विधिमानिहमारी ॥ मूरखजानतहैंमनमेंअकिआवत
स्वारथकेहितकारी ॥ ३ ॥

गजल-फिदांहमउसपैहैंयारोजोगायोंकोचराताहै॥अ
जवक्याखूबसूरतहैगजववंसीवजाताहै ॥लियेसँगग्वा
लवालोंकोविपिनमेंघूमताहर्दम ॥ मजाकीमस्करीहां
सीकिरवेलोंकोखिलाताहै ॥ दगामेंभूलगरगोपीवगरउ
स्मंजोआनिकली॥मगरझटधायकेमोहनझगरदधिल
टिखाताहै ॥ लुटासवहीदहीउनकाखड़ाहोदूरफिरजा
के॥लगाकेग्वालवालोंकोओगालीखूबदेताहै ॥कभीय
कलेहुएवनमेंतोक्याहीखबकहेनाहै ॥चरित्तरलाड़िली
जीकेविविधमुरलीमेंगाताहै॥लगाकेध्यानदंपतिकाहूं
गोंसेजलवहाताहै।लखीजवख्वावमेंमूरतमुझेअवकुछ
नभाताहै।कहैप्रियादासवसक्याहैगरजहमेंरोयआता
है ३ गजल-युगुलदरवारमेंहमनेभीअर्जीयकलगाईहै।व
जाक्याहैकहोकोईकिअवतकनासुनाईहै ॥नहींकुछभू
लहैउनकीकिजिनसेमैंलिखाईहै।हैंवाकिफकारकमों
केवकालतउनकीआईहै॥मिहंतानाकियवजीमेंचरण

कोमेंवका ईहै। नहींकुछदोषहैउनकायेकिस्मतकीबुरा
ईहै।करतेहैंजोरकुरमनयेवड़ालोभाजिनकाभाईहै।भज
नओंमावमेंहमनेंमजाकोकरतेआईहै।रसिकजनग्वा
तेमेंरकुटुंवोंउनमहाईहै। वोलाकेपूंछोरासिकोंसेकिकि
स्कोयेबुराईहै। अर्जीप्रियादासकोदीखतनश्यामाकर
मेंपाईहै॥नहींतोपढ़केसववातेंवोलातीमैंगवाईहै ॥४॥
गजल-जागीहैकिस्मतमेरीदिननीकेअबआनेलगे ॥
हरतरहसेंनींकेपनकीसूरतकोदिखानेलगे।देखकेमुख
फेरतेथेजोरसिकजनएमुझे॥ बड़ेअबप्यारसेनिजतीर
वेठानेलगे ॥ करतेथेहांसीमजाकीऐशकोबिषयोंके
घरजानेलगे॥उनसवोंकोदूरिकररसिकोंकेघरजानेल
गे॥रातदिनखानाकमानाऐशबाजीकेलिये ॥ खैरत
वसअबकुछीदिनभजनमेंजानेलगे॥भातेथेठुमरीऔ
रटप्पाख्यालबाजोंकेकही॥अबतोकरकेप्यारकोश्या
माश्यामयशगानेलगे ॥ देखकेनारीकिसूरतहोतेथेउ
स्पैहमफिदा॥अबतोश्यामाश्यामकीसूरतपैललचाने
लगे।सूंघतेथेलाससेकेवड़ागुलाबोंकाअतर ॥ अबतो
कुछखुशबूरसिकताकेभीहैंआनेलगे॥मैंकहांतकअब
सुनाऊंहेइवारतयेवड़ी॥प्रियादासकीआखोंमेंश्यामा
श्यामझलकानेलगे ॥ ५ ॥
कवित्त॥ध्यानमेंमेरेश्रीराधिकानामहैगानमेंराधिका
नामकोगाऊं ॥ आननतेकढ़ेराधिकानामसोबारअने

कपहीवरपाऊं ॥ तीरथमेरेश्रीराधिकानामहैराधिका नामहिकोमेंहनाऊं ॥ प्रियादासकीआसयहैविसवास सोकुंजकेवासपैचित्तरमाऊं ॥ १ ॥

अथ सुंदरदासकृत सवैया ।

प्रेतभयोकिपिशाचभयोकिनिशाचरसोजितहीतित डोलै ॥ तूअपनीसुधिभूलिगयोमुखतेकछुऔरकिऔ रहिबोलै ॥ सोइउपायकरैजुसरैपचिबंधनतौकवहूंन हिंखोलै ॥ सुन्दरजातनुमें हरिपावत सोतनुनाशभ योमतिमोलै ॥ १ ॥

पेटतेबाहेरहोतहिबालकआयजुमातुपयोधरपीनो ॥ सोहबंढ्योदिनहीं दिनऔरतरुनभयोतियकेरसभी नो ॥पुत्रप्रपुत्रबंध्योपरिवारसोंऐसेहिभांतिगयेपनती नो ॥ सुन्दररामकोनामबिसारिसुआपहिआपकोबं धनकीनो ॥ २ ॥

देहसनेहनछांड़तहैनरजानतहैथिरहैयहदेहा ॥ छीजत जातघटैदिनहींदिनदीसतहैघटकोनितछेहा ॥कालअ चानकआइगहैकरठाहगिरायकरैतनखेहा। सुन्दरजा नियहैनिहचैधरिएकनिरंजनसोंकरुनेहा ॥ ३ ॥

तूकछुऔरविचारतहैनरतोरविचारधरोहिरहैगो ॥को टिउपायकरैधनकेहितभागलिख्योतितनोहिलहैगो॥ भोरकिसांझघरीपलमांझसुकालअचानकआइगहैगो

॥ गमभज्यौंनाकियोकछुसुकृतसुन्दरयोंपछिताइर हैंगो ॥ ४ ॥

वैश्रवनारसनामुखवैंसाहिवैंसाहिनासिकावैंसाहिअंखी ॥ वैंकरवैंपगवैंसवद्वारसुवैंनखशीसाहिरोमअसंखी ॥ वैसाहिदेहपराणुनिर्दोसतएकविनासबलागतखंखी ॥ सुन्दरकोउनजानिसकैयहबोलतहैसुकहाँगयोपंखी ॥५॥

मातपितायुवतीसुतबांधवलागतहैसबकोअतिप्यारो ॥ लोककुटुंबखरोहितराखतहोयनहींहमतेकहुँन्यारो ॥ देहसनेहजहाँलगिजानहुबोलतहैमुखशब्दउचारो ॥ सुन्दरचेतनशक्तिगईतबवेगिकहैंघरबारनिकारो ॥६॥

पाँवदियेचलनेफिरनेकहँहाथदियेहरिकृत्यकरायो ॥ कानदियेसुनियेहरिकोयशनैनदियेतनुमार्गदिखायो ॥ नाकदईमुखशोभितताकरिजीभदईहरिकोगुणगायो ॥ सुन्दरसाजदियेपरमेश्वरपेटदियोबड़ोपापलगायो ॥७॥

होयनिचिंतकरैमातिचिंताहिचोंचदईवहिचिंतकरैगो ॥ पाँवपसारिपऱ्योकिनसोवतपेटदियोवहीपेटभरैगो ॥ जीवजितेजलकेथलकेपुनिपाहनमेंपहुँचायधरैगो ॥ भूंखहिभूंखपुकारतहैनरसुन्दरतूकहभूखोमरैगो ॥८॥

॥ इति भजनरत्नमाला संपूर्णा ॥

आम्रजंबुत्वक्कुभं चूर्णं क्षौद्रजले क्षिपेत् ॥२॥
हिमं तत्पिबेत्प्रातः सक्षौद्रं रक्तपित्तजित् ॥
आम्रादिहिमरक्तपित्ताके उपर हैं.

ओर आंबाकी छाल १ जामुनकी छाल २ अर्जुनसादड्याकी छाल ३ ऐसा तीन छाल एक पल प्रमाण लेकर फिर चूर्ण करिके और छै ६ पल पाणी मटकीमें घालीकर तें चूर्ण डालीकर फिर रात्रीकों भिजावना और प्रातःकालमें तें पानी छानीकर फिर सध मिलाकर पावना जब रक्तपित्त दूर होता है ॥२॥

मरीचं मधुयष्टीच काकोदुंबरपल्लवैः ॥३॥ नीलोत्पलं हिमस्तज्जस्तृष्णाछर्दिनिवारणः ॥
अथ मरीचादि हिमतृष्णादिकाके उपर हैं.

टीका मिरच १ ज्येष्ठमध २ कालाउंबरका पत्ते ३ तथा नीलाकमल ४ ऐसा च्यार ४ औषधाका एक पल लेना फिर अच्छा कुटना पीछे छै ६ पल पानी कोरा बरतनमें घालीकर फिर भीजोवना. रात्रीको और प्रातःकालमें तेपानीको छानीकर पावना. जदी प्यास तथा ओकारी दूर होता हैं ॥३॥

नीलोत्पलं बलाद्राक्षा मधूकं मधुकं तथा ॥४॥ उशीरं पद्मकं चैव काश्मरीं चपरूपकम् ॥ रात्रौ शीतकषायस्तु वातपित्तज्वरान्जयेत् ॥५॥ सप्रलापभ्रमछर्दिमोहतृष्णानिवारणः ॥
अथ नीलोत्पलादि हिमवायुपित्तकज्वर के उपर हैं.

टीका. ओर नीलाकमल १ चिकणामूल २ द्राक्ष ३ मोहा ४ ज्येष्ठमध ५ वाला ६ पद्मकाष्ठ ७ शिवण ८ फालसे ९ पहनव १० औषधाका

कर्दर्भ· · ··· हिम करिके पीवावना· जदी, वात, पित्त, ज्वर, त
··· ··· ··· भ्रम, ओकारी, और मूर्च्छा, प्यास, यह रोग दू
र होताहै· ॥ ८ ॥ ५ ॥

अमृताया हिमः पेयो जीर्णज्वरहरस्मृतः ॥ ६ ॥

अथ अमृत हिम जीर्णज्वर के उपर है·

टीका· पहेली कयाहै जीसी प्रमाणें गुडवेलका हिम करिके पावनाज
दी जीर्णज्वर दूर होताहै· ॥ ६ ॥

वासाया श्च हिमः कासरक्तपित्तज्वरानूजयेत् ॥

अथ वासाहिम रक्तपित्तज्वर के उपर है·

और अरडुशाका हिम करिके पावनाजब हिम कास तथा रक्तपित्तज्व
र यह नाश होताहै·

प्रातः सशर्करः पेयो हिमो धान्याकसंभवः ॥ ७ ॥ अं
तर्दाहं तथा तृष्णांजयेत्स्त्रोतोविशोधनः ॥

अथ धान्यका हिम अंतर्दाह के उपर है·

टीका· रात्रीमें धणा पानीमें भीजोकर फिर प्रातःकालमें छानीका ओ
रसाकर मिलाकर पीवावना जदी शरीरका दाह प्यास ऐसा रोग दूर
होताहै और मूत्रका रक्ताका सोधन होताहै ॥ ७ ॥

धान्याकधात्रीवासानांद्राक्षापर्पटयाहिमः ॥ ८ ॥ र
क्तपित्तंज्वरंदाहं तृष्णांशोषंचनाशयेत् ॥

अथ धान्यादिहिमरक्तपित्तके उपर है·

टीका· धणा१ आवला२ अरडुसा३ द्राक्ष४ पित्तपापडा५ यह पांच
५ औषधाका हिम करिके पीवावनाजब रक्तपित्त, ज्वर, दाह, प्या
स, मुखशोषन, यह रोग दूर होताहै ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीदामोद· ·नु शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहि

तायांनिरूहास्थानेह्रिमकल्पनान्तुर्योऽध्यायः॥४॥

अथपंचमोऽध्यायः॥५॥

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टं शुष्कंवासजलंभवेत्॥प्रक्षे
पावापकल्कास्तेतन्मानंकर्षसंमितम्॥१॥कल्केम
धुघृतंतैलंदेयंद्विगुणमात्रया॥सितागुडौसमौद
द्याद्द्रवादेयाश्चतुर्गुणाः॥२॥

टीका· ओलागील· आणीकरचटणीकेमाफक बारीकवाटना· तथासुका औषध होयतोपानीघालीकर फिरबारीकवाटना तीनकोंकल्ककहतेहैं· तीनकाखानेका १एक कर्षप्रमानेजानना· औरकल्कमध्येमध, घीरत, तेल, यहघालनाहोयतोदूणा२ घालना औरसाकर, तथागुल, यहप दार्थ घालना होयतो कल्ककेबराबरघालना· फिरदूध, तथापानी, औ रपातलापदार्थ घालनाहोयतो कल्ककाच्यार ४ गुणा घालनाचाही येहैं॥१।२॥

त्रिवृद्ध्यापंचवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथवाकणाः॥पिबे
त्पिष्टादशदिनंतास्तथैवापकर्षयेत्॥३॥एवंविंशद्दि
नैःसिद्धंपिप्पलीवर्धमानकम्॥अनेनपांडुवाताश्चका
सश्वासारुचिज्वराः॥४॥उदरार्शःक्षयश्लेष्मवाता
नश्यंतुरोग्रहाः॥

अथवर्धमानपिंपलीपांडुरोगाकेउपरहैं·

टीका· एकदिन३दूजेदिन छे६तीजेदिन नव९ ऐसारोजदिनअधिकक रना· तथापाच५, तथासात७ अधीककरनाते पिंपलकोंबारीकवाटी कर फिरकल्ककरना, तेकल्कका च्यार ४ गुणा दूधतथापाणीघाली कर दशदिन १०पचेंतपिंपल पीवावनाजवतीनसों पांडुरोगतथावायु

[illegible] उदर, तथामूलजेमशरोग, क्षय, कफ, वायु
[illegible] नाशहोताहैं· ऐसा पिंपलाका औषधकौवर्द्धमान पिं
[illegible] ताहैं॥३।४॥

दंतान्निंबदलैः कल्कोव्रणशोधन रोपणः॥५॥ भ
क्षणाच्छर्दिकुष्ठानिपित्तश्लेष्मकृमान्जयेत्॥

अथनिंबकल्कव्रणरोगाकेउपरहैं·

और वडकानिंबकापान वाटीकर, फिरकल्ककरिके तेकल्ककालेप व्रणजे गुमडच्याकेउपर लेपकीयापीछे फिर व्रणका शोधन करिके फिर भरताहै· जब औकारी, कुष्ट, तथा पित्तकफ, यह दूरहोताहैं ॥५॥

महानिंबजटाकल्कोगृध्रसीनाशनः स्मृतः॥६॥

अथमहानिंबकल्कगृध्रसीवायुकेउपरहैं·

टीका· वकाणनिंबका मूल आणीकर फिर वाटना, कल्ककरना, छाननापीछे पीनावना· जवगृध्रसी वायुरोग दूरहोताहैं ॥६॥

शन्हूकल्कोरसोनस्य तिलतैलेनमिश्रितः॥वातरो
गान्जयेतीव्रान्विषमज्वरनाशनः॥७॥

अथरसोनकल्कवायुविषमज्वरकेउपरहैं·

टीका· लसनका कल्ककरिकेतीनमध्येंतिलकातेल मिलाकर खाना, तीनसोंदारुणवायुकारोगतथाविषमज्वर दूरहोताहैं· ॥७॥

पक्वकंदरसोनस्य गुलिकानिस्तुषीकृता॥ पाटयित्वा
चमध्यस्थं दूरीकुर्यात्तदंकुरम्॥८॥ तदुग्रगंधनाशा
यरात्रौतक्रेविनिक्षिपेत्॥ अपनीयच्चतन्मध्याच्छि
लायांपेषयेत्ततः॥९॥ तन्मध्येपं[illegible]
विनिक्षिपेत्॥ सौवर्चलंयवानीञ्चभर्जितंहिंगुसैंधव
म्॥१०॥ कटुत्रिकंजीरकञ्चसमभागानिचूर्णयेत्॥

एकीकृत्यततःसर्वं कल्कं कर्षप्रमाणतः ॥ ११ ॥ खादेदग्निबलापेक्षीऋतुदोषाद्यपेक्षया ॥ अनुपानंततः कुर्यादेरंडशृतमन्वहम् ॥ १२ ॥ सर्वांगैकांगजंवातमर्दितंचापतंत्रकम् ॥ अपस्मारमथोन्मादमूरुस्तंभंचगृध्रसीम् ॥ १३ ॥ उरःपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीडाकृमीन्जयेत् ॥ अजीर्णमातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् १४ रसोनमश्नपुरुषस्त्यजेदेतान्निरंतरम् ॥ मद्यंमांसंतथाम्लंचरसंसेवेतनित्यशः ॥ १५ ॥

अथदुसरा २ रसोनकल्क वायुरोगाके उपरहैं.

टीका. अच्छापकीलसूण लेकर फिरउपरकी छाल काढीकर फिरतीनकीगुली अंकुर काढीकर तेलसनकी वास आताहैं जीसौंरात्रीकोंताछमध्यें भीजोवना, औ़र प्रातःकालीं तेलसन काढीकर बारीक वाटीकरकल्ककरना फिर, पादंरलुण १ अजमोद २ सेकेलाहिंग ३ सेंधवलुण ४ सुंठ ५ कालीमीरच ६ पिपली ७ तथाजिरा ८ ऐसाआठऔषधाकाचूर्ण तेलसणकाकल्कका पांचमा ५ हिंसालेकरतेकल्कमध्यें मिलाकरएकत्रकरना, और एरंडकामूलकाकाढा करिके फिरतेकल्कएक १ कर्षप्रमाणेंनाखिकर पीवावना, और आपकीशक्तिदेखिकरतथाऋतुकालदेखिकर, जेसापचेतैसालेना. तोनसौंसर्ववायु, अथवा एकांगवायु, मुखवाकाहोयते अर्धांवायु, धनुर्वायु, फिरताहैं. औरउन्मादरोग, तथाजांघाकोंपकडताहें तथापेटमेंवायु, औरग्रीध्रसीवायु, पीठमें, कमरसें, कांखामें शूलहोयतथाजीवकाविकारइतनारोगनाशहोताहैं ॥ ८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंभल्लातकफलानिच ॥ एतत्कल्कश्वससक्षौद्रऊरुस्तंभनिवारणः ॥ १६ ॥

अथपिप्पल्यादिकल्कऊरुस्तंभनकेउपरहैं.

टीका- पिपली १ पिपलामूल २ भीलामा ३ यह तीन औषधा पानीमेंवा टीके फिर कल्क करना. तीनमें मध मिलाकर खावना. जबऊरूजे पेट में वायुकारोग दूरहोताहैं ॥१६॥

विष्णुकांताजटाकल्कः सिताक्षौद्रघृतैर्युतः ॥ परिणामभवंशूलं नाशयेत्सप्तभिर्दिनैः ॥ १७॥

अथविष्णुकांता कल्कपरिणामशूलाकेउपरहैं.

टीका- विष्णुकांत- तीनका मूलका कल्क करिके, तीनमें साकर, मध, घी मत, मिलाकरखाना. जबपरिणामशूलचालताहैं तेसात ७ दिनमेंजाताहैं ॥ १७॥

शुंठीतिलगुडैः कल्कंदुग्धेनसहयोजयेत् ॥ परिणामभवंशूलमामवातंचनाशयेत् ॥ १८॥

अथदूसरा शुंठिकल्क हैं.

टीका- संठ १ तिल २ गुल ३ इनकादूणा यह तीनु ३ औषधाकाकल्क करिके फिर गाईका च्यार ४ गुणादूधमेंपीवना. जबपरिणाम शूल तथा आमवायुरोगदूरहोताहैं. औरअन्नकापाचनसमेंशूल होताहैं, तीनकोपरिणामशूल कहतेहैं ॥ १८॥

अपामार्गस्यबीजानांकल्कस्तंदुलवारिणा ॥ पीतोरक्तार्शसांनाशंकुरुतेनात्रसंशयः ॥ १९॥

अथअपामार्गकल्करक्ताकेउपरहैं.

टीका- आघेडा काबीजकाकल्क करिके तांदुल चावल कोधोयकरच्यार ४ गुणा पानीमेंपावना, जदी मूल व्याधीजे (मसा) कारक्तपडताहैं ते मूलव्याधीरोग दूरहोताहैं ॥ १९॥

बदरीमूलकल्केन तिलकल्कश्चयोजितः ॥ मधु

क्षीरप्लुतः कुर्याद्रक्तातीसारनाशनम् ॥ २० ॥

अथ बदरीमूलकल्क अतिसारके उपर है.

टीका. छोटा बोरकी मूल १ तिल २ इसीका कल्क जुदा जुदा तयार करिके फिर एकठिकाने करिके और मध मिलाकर फिर गाई का दूध में तथा शेलीका दूध में पीवावना जब रक्तका अतिसार दूर होता है ॥ २० ॥

कूष्मांडकरसोपेता लाक्षाकर्षद्वयं पिबेत् ॥ रक्तक्षयमुरोघातं क्षयरोगंच नाशयेत् ॥ २१ ॥

अथ लाक्षाकल्क रक्तक्षयादिकावर है.

टीका. चोरका तथा पिंपलकी लाख. दोई तोला बारीक करिके फिर कोहोलाका च्यार ४ गुणा रसमें पावना जब तीन सौं रक्तक्षय तथा थोडा पेटमें दुखता है और क्षयरोग यह सर्व नाश होता है ॥ २१ ॥

तंदुलीयजटाकल्कः सक्षौद्रः सरसांजनः ॥ तंदुलोदकसंपीतो रक्तप्रदरनाशनः ॥ २२ ॥

अथ तांदुलका कल्क है.

टीका. चावलाका मूल बाटीकर कल्क करना, तीनमें मध, तथा रसांजन, मिलाकर फिर चावलाको धोयकर पानी पावना. जब स्त्रियाका रोग प्रदर बंध होता है ॥ २२ ॥

अंकोलमूलकल्कश्च सक्षौद्रस्तंदुलांबुना ॥ अतिसारहरः प्रोक्तस्तथा विषहरः स्मृतः ॥ २३ ॥

अथ अंकोलकल्क अतिसाररोगाके उपर है.

टीका. अंकोल वृक्षका मूल बाटीकर कल्क करना. तीनमें मध मिलाकर चावलाका पानी पावना. जदी अतिसाररोग दूर होता है. और बचनाग तथा सर्पका विष जाता है. ॥ २३ ॥

वंध्याककोंटिकामूलं पाटलायाजटा तथा ॥ घृतेन वि

त्वमूलं नाशयेद्विषं नाशयेद्विषम्॥ २४॥

अथकर्कोटिकल्कविषकेउपरहैं.

टीका- और बाज्जककर्कोटिकामूल १ पहाडमूल २ वेलकामूल ३ यहतीन ३ मूलमध्येंसोंजोंमिलेगातेमूल आनीकर फिर वाटिना, कल्ककरना. औरथीरत घालीकर पीवावना. तीनसो वच्चनागादिक विष, तथा सर्पादिकाकाविषरोगदूरहोताहै ॥ २४॥

अभयासैंधवकणाशुंठी कल्कस्त्रिदोषहा॥ पथ्यासैंधवशुंठीभिः कल्कोदीपनपाचनः॥ २५॥

अथ अभयादिकल्कदीपन पाचनकेऊपरहैं.

टीका- चालहिरडे १ सैंधवलुण २ पिंपली ३ सुंठ ४ ऐसाच्यार औषधाकाचूर्णकरना, फिर पाणीमेंवाटीकर कल्क करिके पावना. तीनसोवायु, पित्त, कफ, इनकाकोप दूरहोता है. और तैसाई छोटीहिरडे १ सैंधवलुण २ तथासुंठ ३ यहतीन ३ औषधाकाकल्क करना, औरपीवावना, जब अन्नकापचनहोताहैं. तथा अग्निप्रदीसहोताहै ॥ २५॥

त्रिवृत्पलाशबीजानिपारसीयथवाहिका॥ कंपिल्लकं विडंगंचगुडश्चसमभागकः॥ २६॥ तक्रेणकल्कमेतेषांपिबेत्कृमिगणापहम्॥

अथत्रिवृतादिकल्कजीवजंतुकेउपरहैं.

टीका- निशोत्तर १ पलासबीज २ किरजानिअजमा ३ कपिला ४ और वावविडंग ५ ऐसापांच ५ औषधाकाचूर्ण करना, तीनकेबराबर गुललेकर सर्वमेलाकरना, पीछेकल्ककरना, और चाछमें पावना. जीनसों जंतुरोग दूरहोताहै. तथा प्रातःकालमें थंडापानीमें पीवना ते कृमिरोगनाशहोताहै ॥ २६॥

नवनीततिलैःकल्कोजेतारक्तार्शसंस्मृता॥ २७॥

नवनीतसितानागकेशरैश्चापित्तहृद्बुधः

अथनवनीतकल्करक्तार्शोकेउपरहैं·

टीका- तीनचांदीकरलुणीइसीमेंकल्ककरना, अथवानागकेशरवा टीकरलोणी तथा खडीसाकरमेंकल्ककरना, औरपीवावना जवतीनसौंजेमूलमसामाहैसोरक्तपडताहैं तेरोगजाताहैं ॥ २७ ॥

पीतोमसूरयूषेणकल्कःशुंठीशलाटुजः ॥ जयेत्सं ग्रहणींतद्वत्तक्रेणाह्वहतोभव ॥ २८ ॥

अथमसूरकल्कसंग्रहणीकेउपरहैं·

टीका- सूंठ १ छोटाकच्चावेलफल २ यह औषधाकाकल्ककरना, औरमसूरकायूष, पहेलीकियाहैं तेप्रमाणेंकरिके, तीनमेंकल्कडालीकरपीवावना, ऐसाप्रमाणें रिंगणीकाफलका कल्ककरिके फिर मसुरकायूषमेंपावनातीनसौंसंग्रहणीदूरहोताहैं ॥ २८ ॥

॥ इतिश्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरेणविरचितायांसंहितायांचिकित्सास्थानेकल्ककल्पनाऽध्यायःपंचमः ५

॥ अथषष्ठोऽध्यायप्रारंभः ॥ ६ ॥

अत्यंतशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम् ॥ तत्स्याच्चूर्णंरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसंमिता ॥ १ ॥ चूर्णेगुडःसमोदेयःशर्कराद्विगुणाभवेत् ॥ चूर्णेषुभर्जितंहिंगुदेयंनोद्देयंनोत्क्लेदकृद्भवेत् ॥ २ ॥ लिहेच्चूर्णंद्रवैःसर्वैःघृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः ॥ पिबेच्चतुर्गुणैरेवचूर्णमालोडितंद्रवैः ॥ ३ ॥ चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानामनुपानकम् ॥ पित्तवातकफातंकेत्रिद्व्येकपलमाहरेत् ॥ ४ ॥ तथातैलंजलेसिमशागेनैवप्रसर्पति ॥ अनुपानव

शाद्रंगेण यासपैति भेषजम् ॥५॥ द्रवेण यावता सम्यक् चूर्णं सर्वं प्लुतं भवेत् ॥ भावनायाः प्रमाणं तु चूर्णे प्रोक्तं भिषग्वरैः ॥६॥

अथ चूर्णकी कल्पना हैं.

टीका. अच्छे सूके औषध आणीकर फिर कुटना, और वस्त्रसौं छाननाः तीनकौं चूर्ण कहते हैं. ते चूर्णका नाम दोई २ हैं. रज १ क्षोद २ ऐसा जाननाः ते चूर्णका भक्षन करनेका नेम है, एक १ कर्ष लेना और चूर्णमें गूल घालना जव चूर्णके बराबर घालना, और साकर लुणी घालनी, और हिंगसे केली घालनी फिर घीरत, मध, वगेरे चिकणापदार्थमें चूर्ण घालना, पदार्थ चूर्णका दूणा २ घालना, और दूध गोमूत्र, पानी और पातला पदार्थ चूर्णका च्यार ४ गुणा लेकर फिर चूर्ण डालीकर पीवावना. और चूर्ण अवलेह जे चाटना तथा गुटीका कल्क इसीका प्रमान कीया हैं. जे पित्त रोग होय जव तीन पल प्रमाणें लेना, और वायुरोग होय जब दोई २ पल प्रमाणें लेनाः और कफरोग होय जब एक १ पल लेना, तीनसो औषध अच्छा गुण कर्ता हैं, इसीका कारण दृष्टांत हैं की, जैसा पानीमध्यें तेलका बिंदु नारवताई पसरता हैं तैसाही औषध अनुपानका बलकरिके फिर शरीरमें पसरता हैं ऐसा जानना, और चूर्णमें निंबूका रसका तथा दुसरा २ वनस्पतीका रसका पुट देना जब चूर्ण रसमें डुबीजाय वाहा पर्यंत पुट देना. यह प्रकार चूर्णकी कल्पना जानना ॥१।२।३।४।५।६॥

आमलं त्रित्रकः पथ्या पिप्पली सैंधवं तथा ॥ चूर्णितोऽयं गणो ज्ञेयः सर्वज्वरविनाशनः ॥७॥ भेदी रुचिकरः श्लेष्मजेता दीपनपाचनः ॥

अथ आमलक्यादिचूर्ण सर्वज्वराकेउपरहै.

टीका- आमलकी १ चित्रक २ छोटीहिरडे ३ पिंपली ४ और सेंधव ५ ऐसापांच ५ औषधी समबराबर लेकर फिर चूर्णकरना और खाना-तब सर्वज्वर नाशहोताहै फिर मलसाफहोय भोजनमें रुचीहोय और कफनाशहोय. अग्निप्रदीप्तहोते और अन्नकापचनहोताहै॥७

मधुनापिप्पलीचूर्णंलिहेत्कासज्वरापहम्॥८॥
हिक्काश्वासहरंकण्ठ्यंप्लीहघ्नंबालकोचितम्॥

अथपिप्पलीचूर्णज्वराकेउपरहै.

टीका- एकमासा १ पिंपलीकाचूर्ण मधमेंचाटना, तीनसो खासी,ज्वर, हुचकी, श्वास, यहरोगदूर होताहै. यहचूर्ण कंठमें गुणदाई कहै, और कवलुरोगको दूरकर्ताहै, फिर बालकाको गुणकर्ता है॥८॥

एकाहरीतकीयोज्याद्वौचयोज्यौबिभीतकौ॥९॥
चत्वार्यामलकान्येवत्रिफलेषाप्रकीर्तिता॥त्रिफला
शोथमेहघ्नीनाशयेद्विषमज्वरान्॥१०॥दीपनीश्ले
ष्मपित्तघ्नीकुष्ठहन्त्रीरसायनी॥सर्पिर्मधुभ्यांसंयु
क्तासैवनेत्रामयान्जयेत्॥११॥

अथत्रिफलाचूर्णमेहादिकाकेउपरहै.

टीका- हिरडा १ बहेडा २ आमला ३ ऐसातीन ३ औषधाकाचूर्णकरना, इसीको त्रिफलाऐसाकहतेहैं, यहत्रिफलाखायासो परमा, सोजा, विषमज्वर, कफ, पित्त, कुष्ठ, यहरोगदूर होताहै. और अग्निप्रदीप्त होय. यहत्रिफलारसायनीहै, औरमध दोइ २ भागमिलाकरत्रिफलाखाताहै तोसर्वनेत्ररोगनाशहोताहै.

पिप्पलीमरिचंशुण्ठीत्रिभिस्त्र्यूषणमुच्यते॥दीपनंश्ले
ष्ममेदोघ्नंकुष्ठपीनसनाशनम्॥१२॥जयेदरोचकं-

सामं मेदगुल्मगलामयान्॥

अथत्र्यूषणचूर्णकफादिकाकेउपरहैं·

टीका- पिंपली १ मिरचकाली २ औरसूंठ ३ यह तीन ३ औषधाकोत्र्यूष णऐसाकहतेहैं, इसीका चूर्णकरना, औररवाना जब अग्निप्रदीप्तहोता हैं· औरकफ, कुष्ट, मेद, पिनस्या, शरीर आवा फुवा, परमा, कंठ, गुल्मरोग, यहरोगदूरहोताहैं ॥१२॥

पिप्पलीचव्यविश्वाह्वपिप्पलीमूलचित्रकैः॥१३॥पं चकोलमितिख्यातंरुच्यंपाचनदीपनम्॥ आनाह प्लीहगुल्मघ्नंशूलश्लेष्मोदरापहम् ॥१४॥

अथपंचकोलचूर्णरुच्यादिकाकेउपरहैं·

टीका- और पिंपली १ चवक २ सूंठ ३ पिंपलामूल ४ औरचित्रक ५ ऐसा पांच ५ औषधाको पंचकोलऐसा कहतेहैं· फिर पंचकोलाकाचूर्ण करना और रवाना जवमुखमें भोजनकी रुचीहोय, फिरअग्निप्रदीप्त होताहैं, और अन्नकापचनहोय, तथा मलबंद्धाहोय, कवलरोग, गुल्म, शूल, और कफ, उदरकारोग, यहदूरहोताहैं ॥१३।१४॥

त्रिगंधमेलात्वकूपत्रैश्चतुर्जातंसकेसरैः॥त्रिगंधंस चतुर्जातंरूक्षोष्णंलघुपित्तकृत्॥१५॥वर्ण्यंरुचिकरं तीक्ष्णंपित्तश्लेष्मामयान्जयेत् ॥

अथत्रिगंधतथाचतुर्जातचूर्ण

टीका-वेलदोडा १ दालचिनी २ तमालपत्र ३ यह तीन ३ औषधाकोत्रि गंधकहतेहैं· औरतीनमेंचवथा ४ नागकेशरमिलाना, जबतीनको चतुर्जातकहतेहैं, औरते त्रिगंध चतुर्जातरसीकाचूर्णवीर्यकोस्तंभनकरनारा· और पित्तकोवढानेवाली, भोजनमेंरुचीकरनेवाली फिरपित्तसंबंधीरोगदूरकरनेवाला हैं ॥१५॥

कृष्णारुणामुस्तकशृंगिकाणां तुल्येन चूर्णेन समाक्षिकेण ॥ ज्वरातिसारः प्रशमं प्रयाति सश्वासकासैः सवमिः शिशूनाम् ॥ १६ ॥

अथ कृष्णादिचूर्ण बालकका ज्वरके उपर हैं.

टीका- पिंपली१ अतिविष२ नागरमोथा३ काकडाशिंगी ४ यह च्यार ४ औषधाका चूर्ण मधमें बालकाकों देना, जब श्वास, कास, ओकारी, ऐसा उपद्रवयुक्त ज्वर अतिसाररोग बंद होता हैं ॥ १६ ॥

काकोली क्षीरकाकोली जीवकर्षभकौ तथा ॥ १७ ॥ मेदा चान्या महामेदा जीवंती मधुकं तथा ॥ मुद्गपर्णी माषपर्णी जीवनीयो गणस्त्वयम् ॥ १८ ॥ जीवनीयो गणः स्वादुर्गर्भसंधानकृद्गुरुः ॥ स्तन्यकृद्बृंहणो वृष्यः स्निग्धः शीतस्तृषापहः ॥ १९ ॥ रक्तपित्तक्षतं शोषं ज्वरदाहानिलाज्जयेत् ॥

अथ जीवनीयगणवर्गका गुण हैं.

टीका- काकोली १ क्षीरकाकोली २ जीवक ३ ऋषभक ४ मेदा ५ महामेदा ६ हरणवेल ७ ज्येष्टमध ८ मुग ९ उडीद १० यह दश १० औषधाकों जीवनीयगण कहते हैं. यह जीवनीगण मधुर गर्भको उत्पन्न करनेवाला और शरीरपुष्टी तथा स्त्रीगमन विषे हर्ष देनेवाला, अथवा स्निग्ध, प्यास, रक्तपित्त, क्षत शोष, ज्वर, दाह, वायु इसीका नाशकर्ता हैं ॥ १७ । १८ । १९ ॥

द्वे मेदे द्वे च काकोल्यौ जीवकर्षभकौ तथा ॥ २० ॥ ऋद्धिर्वृद्धिश्च तैः सर्वैरष्टवर्ग उदाहृतः ॥ अष्टवर्गो बुधैः प्रोक्तो जीवनीयसमं गुणैः ॥ २१ ॥

अथ अष्टवर्गतीनका गुण हैं.

टीका– मेदा १ महामेदा २ काकोली ३ क्षीरकाकोली ४ जीवक ५ ऋषभ क ६ ऋद्धि ७ और वृद्धि ८ ऐसा आठ औषधाका समूहको अष्टवर्ग कहतेहैं· और यह आठ ८ औषधा मेलानजीक पास मिलतानही हैं कदाच काश्मीर देशमें हिमालयकेउपर प्रसिद्धहैं· इसीसों इन का अभावी औषधा कहताहुं· की मेदा, महामेदा, यहदोईके बदले ज्येष्ठ मध लेना· और काकोली, तथा क्षीरकाकोली, यहदोईके बदले आसंध लेना· जीवक, तथा ऋषभक, यहदोई २ के बदले विदारीकंद, और भुईकोहोला लेना· और ऋद्धि, और वृद्धि, यहदोई २ के बदले वाराहीकंद लेना· जब अष्टवर्गका, जीवनीयगण सरीखा गुणहैं ॥२०॥२१॥

सिंधुसौवर्चलंचैवविडंसामुद्रिकंगडम् ॥ एकद्वित्रि चतुःपंचलवणानिक्रमाद्विदुः ॥२२॥ लेषुमुख्यंसैंधवं स्याद्दुक्ते तच्चयोजयेत् ॥ सैंधवाद्यंरोमकांतंज्ञेयंल वणपंचकम् ॥२३॥ मधुरंसृष्टविण्मूत्रंस्निग्धंसूक्ष्मं बलापहम् ॥ वीर्योष्णंदीपनं तीक्ष्णं कफपित्तविवर्ध नम् ॥२४॥

अथलवणपंचकचूर्ण तीनकागुणहैं·

टीका– सैंधवलुण १ पादेलुण २ विडलोण ३ समुद्रमीठोजेलुण ४ औ रसावरकालुण ५ यह पांचलवण कहतेहैं· यहपांच ५ लुणामध्यें सैं धव मुख्यहै· जीनसें जहां लवण लेना होय तथा लीखा होय वहां सैंध वलुण लेना· यह पांच ५ लवण मधुरहैं इसीसों मल मूत्र अच्छा होता हैं, और स्निग्ध थोडा होय तो बलहीन कर्त्ता हैं, तथा वीर्य उष्ण होय तब अग्निप्रदीप्त करताहैं· और तीक्ष्ण होय तो कफपित्त को वधाताहैं ॥२२॥२३॥२४॥

स्वर्जिकायावशूकेश्च क्षारयुग्ममुदाहृतम् ॥ ज्ञेयौवह्नि समौक्षारौस्वर्जिकायावशूकजौ ॥२५॥ क्षाराश्चान्ये ऽपि गुल्मार्शोग्रहणीरुक्छिदः सराः ॥ पाचनाः कृमिपुंस्त्वघ्नाः शर्कराश्मरिनाशनाः ॥२६॥

अथक्षारकथनगुल्मादिकाकेउपरहैं.

टीका- मार्जारखार१ जवखार२ यहदोहीं२ खार अग्निसरीखापाचकहैं ऐसाजानना. औररुई१ आमली२ चणाकारखार३ औरऔषधाकाक्षार ते गुल्मकामुळरोग, औरसंग्रहणी, यहरोगाको दूरकरताहैं. औरसारहोयतो अग्निप्रदीप्तकर्ताहैं, फिरजंतुवीकाररोगपुरुषका, औरमूत्रखडा यहरोगाकानाशकर्ताहैं ॥२५।२६॥

त्रिफलारजनीयुग्मंकंटकारीयुगंसठी॥ त्रिकटुग्रंथिकंमूर्वागुडूचीधन्ययासकः ॥२७॥ कटुकापर्पटोमुस्तंत्रायमाणाचबालकम् ॥ निंबः पुष्करमूलंचमधुयष्टीचवत्सकम् ॥२८॥ यवानींद्रयवोभार्गीशिग्रुबीजस्फुराष्ट्रजा ॥ वचात्वक्पद्मकोशीरचंदनातिविषाबलाः ॥२९॥ शालिपर्णीपृष्टिपर्णीविडंगंतगरंतथा ॥ चित्रकोदेवकाष्ठंचचव्यंपत्रंपटोलजम् ॥३०॥ जीवकर्षभकौचैवलवंगवंशरोचना ॥ पुंडरीकंचकाकोलीपत्रकंजातिपत्रकम् ॥३१॥ तालीसपत्रंचतथा. समभागानिचूर्णयेत् ॥ सर्वचूर्णस्यचार्धांशंकिरातंप्रक्षिपेत्सुधीः ॥३२॥ एतत्सुदर्शननामचूर्णंदोषत्रयापहम् ॥ ज्वरांश्चनिखिलान्हन्यान्नात्रकार्याविचारणा॥ ३३ ॥पृथग्द्वंद्वागंतुजांश्चधातुस्थान्विषमज्वरान् ॥ सन्निपातोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ॥३४॥

शीतज्वरैकाहिकादीन् मोहंतंद्राभ्रमंतृषाम्॥ श्वासं कासंचपांडुंच हृद्रोगंहंतिकामलाम्॥३५॥ त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनिवारणम्॥ शीतांबुनापिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये॥३६॥ सुदर्शनंयथाचक्रंदानवानांविनाशनम्॥ तद्वज्ज्वराणांसर्वेषामिदंचूर्णंविनाशनम्॥३७॥

अथ सुदर्शनचूर्ण सर्वज्वरके उपर हैं.

टीका- हिरडा १ बेहेडा २ आमला ३ हलद ४ दारुहलद ५ रिंगणी ६ कचोरा ७ मोटीरिंगणी ८ सूंठ ९ कालीमिरच १० पिंपली ११ औरपिंपलामूल १२ मोरवेल १३ गुडवेल १४ धमासा १५ कुटकी १६ पित्तपापडा १७ नागरमोथा १८ त्रायमाण १९ नेत्रबाला २० कडवानीब २१ पुष्करमूल २२ ज्येष्ठमध २३ कुडाकी मूल २४ अजमोदा २५ इंद्रजव २६ भारंगमूल २८ शेवग्याकाबीज २७ अथवाजलीमाटी २९ वेरखंड ३० दालचिनी ३१ पद्मकाष्ट ३२ वाला ३३ सुपेतचंदन ३४ अतिविष ३५ चिकणामूल ३६ गांजा ३७ भांग ३८ वायविडंग ३९ तगर ४० चित्रक ४१ देवदार ४२ चवक ४३ पटोलपत्र ४४ जीवक तथा ऋषभक यह दोहो २ मिलता नहीं है जीनसौं ते विदारीकंद ४५ लवंग ४६ और वंशलोचन ४७ सुपेतकमल ४८ औरकाकाली मिलतानहीं तीनके बदले ज्येष्ठमध ४९ तमालपत्र ५० जायपत्री ५१ और तालीमपत्र ५२॥ ऐसा बावन ५२ औषधासमजे बराबरलेना और सारा औषधाकी बराबर किराइता लेना, फिर चूर्ण करना, इसीको सुदर्शनचूर्ण कहते हैं. यह चूर्ण थंडा पानीमें लेना. जब वायु, पित्त, कफ, द्वंद्व, सन्निपात, इसीके पाससो होनेवालाजोज्वर, विषमज्वर, तथा आगज्वर, और धातुजन्यज्वर, मानसज्वर, विषमज्वर, सर्वसंपूर्णज्वर, भ्रम, तृषा, श्वास, कास, पां